क्रम :

तारा सापट नै

ऊगता घूंटा नै ग्रीखम री तपती लूवां, खुणचियां खुणचियां पांणी पाय आपौ संभळायौ, अबै इण लांठै तरवर विरखा वूठै, बादळा तूठै तौ ई वां खुणचियां रौ जस कीकर भूलीजै, वै तपती लूवां कीकर बिसराईजै !

बिज्जी

मनोविज्ञान के क्षेत्र में लोक-कथा

कोमल कोठारी

[प्रस्तुत निबंध में सी. जी. जुंग के पशुरूपात्मक प्रतीकवाद का अविकल अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है — जिससे मानस-शास्त्र के एक पक्ष का रहस्योद्‌घाटन हो सके]

लोक कथा सुनने में जितनी सहज और सुलभ है, उसे अपने अन्तरंगतम रूप में समझ पाना उतना ही कठिन है। इस कठिनता का कारण इतना ही नहीं है कि लोक कथा की मान्यताओं और विश्वासों को शाब्दिक जंजाल में उलझा दिया जाय अथवा होनी-अनहोनी का ताना-वाना उसके इर्द गिर्द बुन दिया जाय। यह अनुभवसिद्ध सत्य बन चुका है कि लोक कथाओं का उद्‌भव मनुष्य के एक ऐसे सामूहिक अथवा संगृहीत मानस की अभिव्यक्ति है, जो अपने साथ मनुष्य की अनेकानेक मानसिक ग्रंथियों, विश्वासों, कुंठाओं, आशाओं और धारणाओं को अपने में समाहित कर चुका है। जिस प्रकार सूर्य सत्य है, चंद्र सत्य है, दिन सत्य है और रात सत्य है ठीक उसी प्रकार मनुष्य का रंग-विरंगा, नित्य-नित्य परिवर्तित होने वाला मानस भी उतना ही सत्य है। सत्य का एक छोर यदि वास्तविक और प्राकृत जगत की गोदी में खेल रहा है तो दूसरा सत्य अपने ही बौद्धिक एवं मानसिक सत्य में भी जीवित सत्ता धारण किये हुए है। न मनुष्य वस्तु-जगत से नकार सकता है और न अपने मानसिक जगत से। दोनों के बीच ही में मनुष्य के जीवन-संघर्ष की पुण्यमयी और विकट यात्रा चला करती है।

इस द्वैत पूर्ण द्वंद की यात्रा में मनुष्य का मन अपनी कल्पनाओं में खोया हुआ लोक कथाओं के माध्यम से अपनी ग्रंथियों को खोलता हुआ मिलता है। इस सत्य के उद्‌घाटन के प्रति, सच है, मनुष्य स्वयं चेतन नहीं है। वह इस सत्य

को भी सहजतम मानकर स्वीकार कर लेता है। उसके मन में यह चिन्ता जागृत नहीं होती कि अन्ततः उसकी कल्पनायें स्वप्नवत् क्यों हैं, उसके मानसिक उद्वेलन का कारण क्या है, उसके जीवन में वर्जनाओं ने क्यों घर कर लिया है ? वह क्यों एक कार्य तो व्यक्त हंसी खुशी के बीच संपन्न कर लेता है और ठीक दूसरे हो पल अपने ही कार्य के प्रति ठिठक कर पाप की भावना से प्रताड़ित हो उठता है। क्या यह सभी कुछ व्यक्तिगत है ? वैयक्तिक है ? क्या उसका भी कोई कारण है, कोई इतिहास है, कोई पृष्ठभूमि है ?

आप और हम कितनी सहजता से यह स्वीकार कर लेना चाहते हैं कि आत्मा का कार्यव्यापार भौतिक जीवन की आवश्यकताओं के बीच में व्यर्थ है। लेकिन जब जीवन के प्रति कोई दृष्टिकोण व्यक्त करने की बात होती है तो बुद्धि और मूर्खता, तर्क और वितर्क, विवेक और अविवेक, पुण्य और पाप, मंगल और अमंगल, आत्मा और परमात्मा की गुत्थियों में क्यों डूबने उतराने लगते हैं ?

लोक कथाएं ऐसी ही गुत्थियों के बीच में हमें कुछ कहना चाहती हैं। अपनी सामूहिक चेतना की निधि से कुछ अमूल्य रत्न भेंट करना चाहती हैं—जिससे हम अपने जीवन को संवार न भी सकें तो कम से कम मानवीय क्रिया-कलापों की विकटतम और जटिलतम समस्याओं को आंख भर देख तो सकें। यों तो लोक कथाएं अपने विषय की विविधता, अनेकता और विभिन्नता की दृष्टि से अथाह एवं विस्तीर्ण समुद्र की भांति विश्व-मानस में व्याप्त हैं किन्तु आज उस संपूर्ण राशि को समझने का प्रयास करें तो अनायास ही वर्तमान वैज्ञानिक युग की मांग के अनुसार हमें विभिन्न अनुशासित विषयों की सीमाओं के बीच में ही विचार करना पड़ेगा।

अत्यंत संक्षिप्त रूप से भी देखने का प्रयत्न करें कि ऐसे कौन कौन से मानव-ज्ञान के विषय हैं जो लोक कथाओं से अध्ययन और अनुभव की सामग्री को एकत्रित कर लेना चाहते हैं। सबसे पहिला विषय तो साहित्य है—जो कथा को कथा के रूप में, उसके संगठनात्मक सौन्दर्य में और संवेगात्मक अनुभूति के रूप में सोचने समझने का उपक्रम करता है। यह विषय भाषा को देखता है, वस्तु-तथ्य को देखता है और उसकी सौन्दर्यानुभूति के कल्पना जगत में खो जाता है। दूसरा विषय समाजशास्त्र है, जो लोक कथाओं के माध्यम से समाज और व्यक्ति के संबंधों को परख लेना चाहता है, व्यक्ति और व्यक्ति के व्यवहार को जान लेना चाहता है, उसके विश्वासों, उसकी मान्यताओं और उसकी ऐतिहासिक गहराई में पहुँच

जाना चाहता है। तीसरा विषय नृ-विज्ञान है—जो मनुष्य के आत्मिक और शारीरिक संबंधों के बीच में लोक कथाओं को एक चेतन सत्ता के रूप में ग्रहण करके मनुष्य को सुलझा कर देख लेना चाहता है। मनुष्य का वंश कौनसा है, जाति कौनसी है, वह किस देश का है, उसकी बनावट कैसी है, कौनसी प्राकृतिक अवस्थितियों में वह जी रहा है आदि आदि विषयों के बीच में लोक कथाओं के उद्भव और विकास की परंपरा को खोज लेना चाहता है। इन मुख्य विषयों के साथ साथ अनगिनत अलग अलग प्रसांगिक विषय भी हैं जो लोक कथाओं से अपनी सामग्री का चयन करते हैं।

लेकिन आज हमें एक अन्य विषय की गहराई के माध्यम से लोक कथाओं के एक पक्ष को देखना है। यह विषय है मनोविज्ञान। मनुष्य के मानसिक गठन और चिन्ताओं पर वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने वाले इस विषय को लोक कथाओं से बहुत कुछ ग्रहण करना पड़ा और बहुत कुछ सीखना पड़ा। विश्व के महान वैज्ञानिक फ्रॉयड एवं जुंग ने विस्तार से लोक कथाओं पर लिखा है। उन्हें समझने के माध्यम से मनुष्य के अचेतन एवं चेतन मन की अवस्थाओं पर अपने विचार व्यक्त किये। सच तो यह है कि लोक कथाओं का गठन एक सामूहिक स्वप्न के रूप में हुआ, जिसमें व्यक्ति का अचेतन, समूह का अचेतन सत्य बना रहा और समूह का अचेतन, व्यक्ति के चिन्तन का व्यक्त रूप भी बन गया। अतः समूह को [समाज] समझने और व्यक्ति को समझने का अत्यंत सहज और महत्वपूर्ण साधन लोक कथाओं में प्राप्त हो गया। मन की वायवी सत्ता ने किस कल्पना का सृजन कर दिया और किसका वर्जन कर दिया; किसे सद् मान लिया किसे असद् कह कर धिक्कार दिया; किसे पुण्य मान लिया, किसे पाप मान लिया; किसे धर्म मान लिया और किसे अधर्म मान लिया—इसी मान लेने और नहीं मान लेने के ऊहापोह के बीच मनुष्य का मन गतिशील संभ्रम में नियोजित होता चला गया। मनुष्य ने सभ्यता या भौतिक दृष्टि से चाहे कितनी ही प्रगति क्यों न कर ली हो—अपनी मानसिक अवस्था में वह आज भी या तो आदिम मूल-वृत्तियों का प्रतिरूप है या बालक के कौतुहलपूर्ण जिज्ञासा का प्रतिफलन मात्र है। पुराने विश्वास अगर आज अंधविश्वास बन गये तो आज नये अंधविश्वासों ने उतनी ही तीव्रता से मनुष्य के मन को ग्रस लिया है। आदिम मनुष्य की ही तरह वह भी आज असंख्य प्राकृतिक सत्ताओं को आश्चर्य और विस्मय की टकटकी से देख रहा है। उनके प्रति अपने विश्वासों को व्यक्त करने

में वर्जन - तर्जन के नये रूप बनाता जा रहा है। वस्तु का स्वरूप अवश्य बदल रहा है— लेकिन वस्तु के विनाश का क्षितिज अभी भी दूर ही बना हुआ है ।

सी. जी. जुंग ने परी कथाओं [लोक कथा का एक प्रकार] के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के दौरान में लिखा है कि 'वैज्ञानिक खोज का यह अटल नियम है कि खोज कर्ता अपने लिए वही विषय वस्तु चुने जिस पर वह तथ्यात्मक निरूपण प्रस्तुत कर सके । तथ्य से यहां इतना ही अर्थ है कि जिसे सत्यापन की कसौटी पर कसा जा सके ।' इसके पश्चात् वे प्रश्न करते हैं कि क्या मनोविज्ञान ऐसा विषय है जो तथ्यात्मक निरूपण करने में समर्थ हो सकता है ? उनका उत्तर है : 'किसी भी विषय के वस्तु - तथ्य का निरूपण केवल प्राकृतिक विज्ञान में संभव है ।........ मानस के अध्ययन में बाह्य कुछ भी नहीं हैं ; अत: मानस ही मानस का निरीक्षण कर सकता है । फलस्वरूप मानस के वस्तु का ज्ञान हमारे लिए असंभव है। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि भविष्य के अणु - विज्ञानी भी किसी ऐसे नियम की स्थापना नहीं कर सकेंगे ।' आगे उन्होंने बताया कि मनोविज्ञान केवल इतना ही बता सकता है कि 'मानस इस प्रकार व्यवहार करता है ।'

मानस के इसी व्यवहार की खोज में जुंग परी - कथाओं की आत्मा के निरीक्षण - क्षेत्र में जा पहुँचे । उन्होंने अपनी वैज्ञानिक धारणा को स्पष्ट करते हुए बताया कि वे केवल व्यक्तियों के स्वप्नों के माध्यम से मानस पर प्रकाश डाल सकते हैं किन्तु वे सभी स्वीकृत उल्लेख, मात्र एक व्यक्ति से संबंधित होंगे और सहज ही यह प्रश्न उठेगा कि यह प्रयास एक व्यक्ति की समस्या से अधिक तथ्य निश्चित नहीं कर सकता । अत: उन्होंने पौराणिक कथा [मिथ] और परी - कथाओं के आधार पर मानस की कहानी को समझने का उपक्रम प्रारंभ किया ।

सी. जी. जुंग का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लोक कथा के अध्येता को एक ऐसे शून्य में ले जाकर छोड़ देता है जो स्वयं अथाह और निर्गम्य अचेतन में दिशा-हीन होकर, व्याकुल हो उठता है। लोक कथा के प्रेत, राक्षस, डायन, पशु, पक्षी, राजा, राजकुमार, राजकुमारी, बूढ़ा बुद्धिमान, बौना, परी और सभी तरह के स्त्री-पुरुष अचानक मानस की सजीव सत्ता बनकर सामने खड़े हो जाते हैं और जीने के लाखों - लाखों पहलुओं से अध्येता पर आक्रमण कर देते हैं । जुंग को लोक कथाओं के प्रति क्या मान्यता है उसे उन्हीं के शब्दों में समझना संभवतया अत्यंत महत्व-पूर्ण है ।

अतः उनके एक पशुरूपात्मक प्रतीकवाद पर लिखे गये निवन्ध का अनुवाद देना ही उचित होगा। इस निवन्ध को पढ़ने से एक ओर तो लोक कथा के मनोवैज्ञानिक विश्लेपण की पद्धति का ज्ञान हो सकेगा और साथ ही साथ राजस्थान एवं भारत में प्रचलित लोक कथाओं के समान-धर्मी तत्वों को समझने में सहायता भी मिलेगी। जुंग के निवन्ध के पश्चात् जैन साधुओं द्वारा लिखित एक अन्य समानान्तर कथा का रूप भी प्रस्तुत किया जा रहा है। विश्वास है कि पाठकों के सामने ऐसे अन्य ही समानान्तर कथा-रूप भी आये होंगे। उन्हें जोड़ते चले जाने से मनोवैज्ञानिक निरीक्षण में हर वार कुछ न कुछ नये तथ्य सामने आ सकेंगे।

२

परी कथाओं में पशुरूपात्मक प्रतीकवाद

४२१. परी-कथाओं में मनुष्य की सहायता पहुंचाने वाले पशु-पक्षियों के वरावर उल्लेख मिलते हैं। ये प्राणी मनुष्यों की तरह ही कार्य संपादित करते हैं, मनुष्य की ही वाणी में बोलते हैं और अपने कार्यव्यापारों द्वारा मनुष्य से कुछ अधिक ज्ञान एवं चारित्रिक पुष्टता स्थापित करते हैं। अतः हम सहज ही कह सकते हैं कि इन पशु-पक्षियों के माध्यम से आत्मा का मूल-स्थपित (आर्चटाईप)[1] व्यक्त किया जा रहा है। जर्मनी की एक परी-कथा में एक घटना आई है जिसमें एक युवक खोई हुई राजकुमारी की तलाश में एक भेड़िये से मिलता है। भेड़िया उससे पूछता है, 'मुझसे डरो मत, वताओ तुम कहां जाना चाहते हो?' नवयुवक की वात सुनकर भेड़िया उसे अपने शरीर के तीन जादुई वाल भेंट करता है और कहता है, 'इन

१ अंग्रेजी भाषा के Archetype शब्द का हिन्दी में विभिन्न रूप से शाब्दिक अनुवाद हुआ है। हमने डॉ. सत्येन्द्र द्वारा अनुवादित स्वरूप को प्रयुक्त किया है। आर्चटाइप का वेब्सटर डिक्शनरी ने यह अर्थ दिया है:

In Psychology, according to the theory of the psychologist Jung, an idea or way of thinking that has been inherited from tne experience of the race and remains in the consciousness of the individual, influencing his perception of the world.

वालों के सहारे जब तुम्हें जरूरत हो, मुझे बुला सकते हो।' वस्तुतः भेड़िये की यह सहायता 'वृद्ध व्यक्ति' के मार्ग प्रदर्शन के रूप में आती है।[1] इसी कथा में मूल-स्थपित [आर्चेटाईप] दूसरा पक्ष भी व्यक्त करता है। यह पक्ष अमंगल सूचक है। इस तथ्य को स्पष्ट करने की दृष्टि से मैं कथा का संक्षिप्त रूप दे रहा हूं:

४२२. किसी जंगल में एक युवक अपने पालतू सूअरों को चराता हुआ एक विशाल वृक्ष के पास जा पहुँचा। इस वृक्ष की शाखा-प्रशाखाएं ऊंचे आकाश में लहरा रही थीं। इस युवक ने मन ही मन सोचा कि अगर इस पेड़ की ऊंचाई से दुनिया को देखा जाय तो कितना आनंद आये। सोचते ही वह पेड़ पर चढ़ने लगा। सारे दिन चढ़ता रहा और चढ़ता ही रहा। लेकिन सांझ होने तक तो वह पहली शाखा तक ही पहुँच पाया। रात को उसने पेड़ और शाखा के बीच की जगह पर सोने की ठान ली। दूसरे दिन सुबह होते ही उसने फिर चढ़ना शुरू कर दिया। किसी तरह दोपहर तक वह कुछ टहनियों तक पहुँचा। चढ़ते चढ़ते फिर दूसरी सांझ हो गई। उसने देखा कि टहनियों के बीच में घोंसले की तरह एक गांव बसा हुआ है। वह गांव में चला गया। वहां किसानों ने उसकी आवभगत की, खाना खिलाया व रात को सोने का प्रबन्ध कर दिया। अलस सवेरे उसने फिर चढ़ना शुरू कर दिया। दोपहर तक उसको एक किला दिखाई दिया। किले में पहुँचने पर उसने सुकुमार युवती को देखा। उसे पता लगा कि यह युवती एक राजकुमारी है और उसे एक शैतान जादूगर ने कैद कर रखा है। युवक उसी राजकुमारी के साथ रहने लगा। राजकुमारी ने यों तो उसे किले के सभी कमरों में घूमने फिरने की इजाजत दे दी थी। लेकिन एक खास कमरे में जाने की सख्त मुमानियत कर दी। लेकिन वह युवक अपनी जिज्ञासा को नहीं रोक सका और एक दिन उस कमरे में चला ही गया। कमरे में वह क्या देखता है कि एक बड़ा पक्षी [रेवेन] तीन कीलों से दीवार पर जड़ा हुआ है। उस पक्षी ने युवक को देखते ही प्यास की शिकायत की। युवक के मन में दया उमड़ पड़ी और उसने

---

१ लेखक ने लोक-कथाओं के 'बुद्धिमान व्यक्ति' के रूप में अन्यत्र लिखा है। वहां लोक-कथाओं में वृद्ध व्यक्ति की मार्ग-दर्शन संबंधी सामान्य धारणा का विवेचन किया है।

पक्षी को पानी दे दिया । उस पक्षी ने ज्यों ज्यों एक एक घूंट पिया त्यों त्यों एक एक कील गिरने लगी और देखते ही देखते वह आजाद हो गया । आजाद होते ही खिड़की की राह से उड़ गया । जब राजकुमारी को पता लगा कि शैतान पक्षी उड़ गया तो वह व्याकुल हो गई और उसने बताया कि इस जादूगर ने ही उसे कैद कर रखा था और अब वह मुझे वापस उड़ा ले जायेगा । एक दिन सुबह ठीक यही हुआ । राजकुमारी किले से अलोप हो गई ।

४२३. युवक पुनः राजकुमारी की तलाश में निकल गया । जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया — इसी जगह युवक को एक सूअर मिला, उसने अपने कुछ जादुई बाल उसे दे दिये । इसके अलावा एक सिंह ने उसे बता दिया कि राजकुमारी निकट ही एक शिकारगाह में बंद है । युवक उसी शिकारगाह में पहुंच गया और राजकुमारी से मिल लिया । लेकिन राजकुमारी ने कहा कि उसका यहां से निकलना मुश्किल है क्योंकि जादूगर के पास एक तीन पांवों वाली समझदार घोड़ी है जो सब कुछ जानकर जादूगर को सचेत कर देती है । इस बात के पता लग जाने के बाद भी युवक ने राजकुमारी को भगा ले जाने का प्रयत्न किया । लेकिन वह असफल हो गया । जादूगर ने उसका पीछा किया और उन्हें रास्ते में ही पकड़ लिया । परन्तु, चूंकि युवक ने एक दिन जादूगर की प्यास को बुझाकर जान बचाई थी इसलिये उसको छोड़ दिया और राजकुमारी को वापस ले आया । जादूगर उसकी आंखों से ओझल हो गया तो वह लुके-छिपे वापस शिकारगाह में पहुंच गया । उसने समझा बुझाकर राजकुमारी को इस बात के लिये राजी कर लिया कि वह किसी तरह यह जान ले कि इस जादूगर ने सफेद और चालाक घोड़ी को कहां से व किस तरह प्राप्त किया है । राजकुमारी ने रात को जादूगर को फुसलाया और उससे घोड़ी का रहस्य जान लिया । युवक भी छिपकर उसी कमरे में पलंग के नीचे पड़ा था । जादूगर ने बताया कि उसके शिकारगाह से कोई दस-बीस कोस दूर एक बूढ़ी डायन रहा करती है । वह जादुई घोड़े तैयार करती है । अगर कोई उस डायन के बछेरों [शावक घोड़ों] को तीन दिन पहरे में रख ले तो वह एक घोड़ा भेंट में दे देती है । उसने बताया कि वह बारह भेड़ें भी दिया करती है । इन भेड़ों को उसके प्रभाव के क्षेत्र से निकलने के पहिले बारह खूंखार भेड़ियों को खिला देना पड़ता है अन्यथा वहां से निकलना बड़ा मुश्किल है । उस डायन ने

जादूगर को भेड़ें नहीं दी थीं, इसलिये भेड़ियों ने उसका पीछा किया और उसके क्षेत्र से निकलते-निकलते भेड़ियों ने घोड़ी के एक पांव के खुर को काट लिया। इसीलिये घोड़ी के तीन ही पांव रह गये।

४२४. यह सुनकर युवक किसी तरह डायन के यहां जा पहुंचा और तीन दिन तक पहरा देने की शर्तें तय करलीं। उसने तय कर लिया कि डायन उसे बारह भेड़ें भी देगी। अब डायन ने युवक को गहरा सुला देने के लिए खूब शराब पिला दिया और उधर बछेरों को हुक्म दे दिया कि वे दूर दूर भाग जायें। पर उसने पहिले दिन सूअर, दूसरे दिन भालू और तीसरे दिन सिंह की सहायता से बछेरों को कब्जे में ले लिया। अपनी शर्त पूरी करके वह इनाम का हकदार हो गया। इसी बीच डायन की सबसे छोटी लड़की ने उसे बता दिया कि उसकी मां किस घोड़े पर बैठा करती है। सच है कि यही घोड़ा चतुर, तेज और बलवान घोड़ा था। इधर तो युवक ने अस्तबल से घोड़े को चुना कि उधर डायन ने घोड़े के एक खुर के मार्फत उसकी हड्डी की सारी मज्जा चूस ली। उसने मज्जा की चक्कियां बना कर युवक को दे दी। मज्जा के बिना घोड़ा एकदम मरियल और कमजोर दिखाई देने लगा। लेकिन उन चक्कियों को पुन: खिलाते ही घोड़ा तो था जैसा ही बन गया। तत्पश्चात् युवक बारह भेड़ियों को बारह ही भेड़ें भेंट चढ़ा कर डायन के प्रभाव-क्षेत्र से निकल गया। सीधा राजकुमारी के पास पहुंचा और उसे अपने घोड़े पर बिठा कर भाग निकला। किन्तु उधर तीन पांवों वाली घोड़ी ने शैतान शिकारी को सचेत कर दिया और बात ही बात में वह भी पीछा करने लगा। थोड़ी ही दूर पर वह युवक एवं राजकुमारी के पास जा पहुंचा। यों तो युवक का घोड़ा तेज था लेकिन वह किसी कारण से दुड़की नहीं लगा रहा था। ज्यों ही शैतान की घोड़ी नजदीक पहुंची, घोड़े ने जोर से कहा 'बहिन! सवार को झटक कर गिरादो।' इतना कहना हुआ कि घोड़ी ने उसे वाकई गिरा दिया और फिर दोनों ने मिलकर खुरों से कुचल डाला। युवक ने राजकुमारी को अब घोड़ी पर सवार करा दिया और वह सभी के साथ सीधे राजकुमारी के पिता के राज्य में जा पहुंचा। यहीं उनका धूमधाम से विवाह हुआ। विवाह के बाद घोड़े-घोड़ी ने युवक से कहा कि वह दोनों के सिर अपनी तलवार से काट दे और अगर वह यह कार्य नहीं करेगा तो उसका बड़ा नुकसान होगा। युवक को

उनकी बात माननी पड़ी और ज्यों ही उसने उनके सिर काटे वे दोनों एक सुन्दर राजकुमार एवं राजकुमारी के रूप में प्रकट हो गये। इन दोनों को इसी शैतान ने घोड़ा-घोड़ी बनाया था। युवक के प्रति कृतज्ञता बताते हुए दोनों ने उससे छुट्टी ली और अपने राज्य की ओर चल दिये।

४२५. इस कथा में पशु-रूपक [थिरियोमॉर्फिक] के प्रतीकत्व के अलावा घोड़े-घोड़ी के जानने व अन्तर्ज्ञान की सहज शक्ति की बात भी विशेष महत्व रखती है। इस तथ्य का यह अर्थ भी हो सकता है कि आत्मा को कोई अन्य सत्ता अपने कब्जे में भी रख सकती है। अथवा अन्य किसी की अनुचारिणी सत्ता भी हो सकती है। यही कारण है कि तीन पांवों वाली घोड़ी शैतान-जादूगर और चार पांवों वाला घोड़ा डायन के हुक्म में है और उन्हीं की आज्ञाओं का परिपालन करते हैं। आत्मा [स्पिरिट] यहां एक ऐसा सत्व जो अपने कुछ अंशों में किसी वस्तु [घोड़े] की तरह अपने मालिक को बदल भी सकती है। किन्तु कुछ अंशों में वह स्वतंत्र विषय [शैतान का घोड़ी पर अधिकार] भी है। वस्तुतः चार पांवों वाले घोड़े को हमारा कथा नायक डायन के कब्जे से निकाल कर एक 'आत्मा' [स्पिरिट] को मुक्त करता है अथवा एक विशिष्ट 'विचार' को अचेतन की गिरफ्त से मुक्त करता है। ऐसी अन्य स्थितियों की ही भांति डायन यहां मूल मातृसत्तात्मक [मेटर नेचुरा अथवा ऑरिजिनल मेट्रिआरकल] अचेतन का प्रतिनिधित्व करती है, जो उस मानसिक अवस्था को व्यक्त करती है जिसमें निर्बल एवं निर्भर चेतना का विरोध अचेतन मन से बराबर बना रहता है। चार पांवों वाला घोड़ा अपने आपको तीन पांवों वाली घोड़ी से अधिक शक्तिशाली सिद्ध करता है क्योंकि वह उसे आज्ञा देने की स्थिति में है। यों चार की संख्या प्रतीकात्मक रूप से पूर्णत्व को व्यक्त करती है और यही पूर्णत्व अचेतन मन के कल्पना जगत में महत्वपूर्ण भाग अदा करता है। अतः चार पांवों की तीन पांवों पर विजय असंभाव्य नहीं है, स्वाभाविक है। लेकिन हमारे लिए विकट समस्या तो यह है कि चार और तीन के विरोध का अर्थ क्या है ? अर्थात् तीन की तुलना में चार [पूर्णत्व] की ही विजय क्यों हो ? अलकेमी [1] में इस समस्या को 'मारिआ के सिद्धान्त'

---

१ अलकेमी — वह रसायन शास्त्र है जिसमें सामान्य धातु से सोना बनाने का प्रयत्न किया गया। दूसरी शताब्दी तक पहुंचते हुए यह शास्त्र रहस्यपूर्ण जादुई तथ्य

के अनुसार समझने का प्रयत्न किया जाता है। यह सिद्धान्त इस विशिष्ट दर्शन शास्त्र में गत हजार वर्षों से चला आ रहा है। इसी मान्यता के अनुसार हमें डॉ. फॉस्ट में 'केबिरी' का दृश्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार साहित्य के इतिहास में पहिला उल्लेख प्लेटो द्वारा रचित 'तिमिग्रस' के प्रारंभिक अंश में भी मिलता है जिसका पुनरोल्लेख गेटे में मिलता है। एलकेमिस्ट दर्शन शास्त्रियों की मान्यताओं में हम स्पष्ट देख सकते हैं उच्च दैविक त्रिमूर्ति का स्वरूप किस प्रकार अपभ्रष्ट एवं समानान्तर निम्न असुरावृत्ति की त्रिक कल्पना में परिवर्तित हो गया।[1] इस मान्यता के प्रतीकवाद के द्वारा एक सिद्धान्त का प्रतिवादन होता है कि इस संपूर्ण मान्यता का गहरा लगाव पाप एवं बुराई से है। किन्तु साथ ही साथ दृढ़ता पूर्वक यह कहना भी संभव नहीं है कि पाप का बुराई के अलावा इस सिद्धान्त में और कुछ है ही नहीं। वस्तुतः इस सिद्धान्त के द्वारा यही प्रतिपादित होता है कि पाप वृत्ति एवं तत्संवंधी प्रतीकवाद का सीधा संवंध संख्याओं या अंकों से है जो दुष्ट-वृत्ति, रात्रि के अंधियारे की कुटिलता, नीच एवं असुर-वृत्ति का वर्णन करती है। इस प्रतीक-तत्व में निम्नतम अपने विपरीत क्रमानुपात में उच्चतम से समरूपता[2] ग्रहण करने लगता है। अन्य शब्दों में : उच्च की ही भांति निम्न अपने त्रिक की स्थापना कर लेता है। तीन [जो पुल्लिग शब्द है] का संवंध शैतान-जादूगर से रखा गया है। अेलकेमिक दृष्टि-कोण से इसे निम्न का त्रैत ही माना जायेगा। इसी प्रकार चार [जो स्त्रीलिंग शब्द है] का संवंध डायन के साथ जोड़ गया है।[3] समझने एवं बोल सकने वाले दोनों पशु [घोड़े-घोड़ी] चमत्कारिक तथ्य हैं और इसी कारणवश वे अचेतन मन का ही प्रतिनिधित्व करते हैं और उनके स्वामी के रूप में एक शैतान-जादूगर है तथा दूसरी बुढ़िया डायन है।

का ज्ञान बन गया। अनेक देवताओं से संवंधित बनकर, यह भी एक दर्शन की शाखा बन गई।

१ इटेलियन कवि दांते द्वारा व्यक्त तीन मस्तकों का शैतान द्रष्टव्य है।

२ एक कहावत है: That which is below is like that which is above.

३ संख्याओं के लिंग का आधार यूरोपीय भाषायें हैं।

४२६ तीन और चार के बीच पुरुष एवं स्त्री के सत्वों का एक तात्विक विरोध है, किन्तु यहां भी चार पूर्णत्व का प्रतीक है और तीन खंडित है, पूर्ण नहीं है। इवर अेलकेमी के अनुसार तीन की संख्या अपूर्ण विभेद-तत्व को व्यक्त तो करती है लेकिन एक त्रैत के साथ अन्य त्रैत का जन्म भी हो जाता है। यह ठीक उसी प्रकार हो जाया करता है जैसे उच्च निम्न की अवधारणा कर लेता है, प्रकाश अंधकार की कल्पना कर लेता है और पुण्य पाप की स्थापना कर लेता है। शक्ति की धारणा के अनुसार विभेद-तत्व का अर्थ है: एक क्रियाशील सत्ता के जन्म की संभावना। जिसके द्वारा बल के आन्तरिक एवं पारिस्परिक घर्षण की स्थिति जन्म लेती है। इसके परिणाम स्वरूप वहां विद्युत है, घटनाओं का प्रवाह है और विरोधात्मक [द्वंदात्मक] तनाव में संतुलन प्राप्त करने का प्रयत्न अन्तर्निहित है। यदि हम चार की संख्या को रेखागणित की दृष्टि से एक वर्ग [स्क्वेयर] मान लें और उसे विकर्ण [डायगनिल] से बांट लें तो हमें दो त्रिकोण मिल जायेंगे। इन दोनों त्रिकोणों के शिखर बिल्कुल दो भिन्न दिशाओं में होंगे। अतः हम रूपक की भाषा में कह सकते हैं कि चार के प्रतीकात्मक पूर्णत्व को यदि बराबर हिस्सों में किया जाये तो उससे दो विरोधी त्रिकोणों का उद्भव हो जायेगा। इस रेखागणित धारणा के द्वारा हम सहज ही, क्यों व कैसे चार की संख्या से तीन का उद्भव हो जाता है, समझ सकते हैं। इसी दृष्टि से कथा में शैतान-जादूगर राजकुमारी को समझाता है कि उसकी चार पांवों वाली घोड़ी के तीन ही पांव कैसे रह गये और अन्ततः क्यों व कैसे बारह भेड़ियों ने एक खुर को काट लिया। घोड़ी के तीन पांव एक दुर्घटना के कारण रह गये थे किन्तु यह दुर्घटना ठीक उस समय हुई जब घोड़ी अपनी दुष्ट डायन रूपी मां को छोड़ रही थी। मनोविज्ञान की भाषा में हमें कहना पड़ेगा कि जब अचेतन का पूर्णत्व स्वयं को अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है अर्थात् अचेतन को छोड़कर चेतन स्तर तक आने लगता है तो चार में से एक पीछे छूट जाता है, जिसे अचेतन का भय रूपी शून्य [होरर वेक्यूआई] स्वयं से पृथक नहीं कर पाता। इस तरह त्रैत की धारणा जन्म ले लेती है और यह धारणा भी परी-कथाओं के द्वारा नहीं अपितु प्रतीकवाद के इतिहास का परिणाम सिद्ध होती है। साथ ही साथ यह धारणा दो विरोधात्मक त्रिकोणों को जन्म दे देती है—जिसके फल स्वरूप एक आन्तरिक संघर्ष छिड़ जाता है। यहां सुकरात की भांति हम भी पूछ सकते है:

'प्रिय तिमिअस—एक, दो, तीन जिन्होंने कल तो भोजन किया था और आज जिन्होंने भोजन के लिए निमंत्रित, उनमें चौथा कहां है ?'[1] वस्तुतः वह दुष्ट मां के क्षेत्र में ही रह गया है जहां अचेतन भय-प्रद लालच ने उसे जकड़ लिया है और यह लोभी अचेतन मन उस तत्व को अपने जादुई शिकंजे से तब तक मुक्त करने को तैयार नहीं—जब तक कि मुंह मांगा वलिदान उसे नहीं कर दिया जाय।

४२७. कथा में आये हुए शैतान-जादूगर और बुढ़िया डायन अचेतन मन के जादुई-संसार में नकारात्मक पैतृक प्रतिबिम्ब [प्रेतात्मा] हैं। शैतान-शिकारी पहिले एक वड़े काले पक्षी [रेवेन—वड़ा कौवे] के रूप में आता है। उसने राजकुमारी को उड़ाकर अपना कैदी बना लिया। राजकुमारी उसे शैतान [डेविल] कहती है। लेकिन विस्मय की वात तो यह है कि शैतान स्वयं किले के एक निषिद्ध कमरे में कैद है और तीनों कीलों से दीवार में जड़ा हुआ है—मानो उसे भी ईसा मसीह की भांति सूली पर चढ़ा दिया गया हो। वह अपनी ही जेल में आबद्ध है, जैसे हर पहरेदार कैद होता है और ठीक वैसे ही वंधा हुआ भी है जैसे हर अभिशाप देने वाला वंधा रहता है। शैतान और राजकुमारी—दोनों एक ही किले में कैद हैं। किला एक वृहदाकार वृक्ष पर वना हुआ है। संभवतया यह वृक्ष एक विश्व-वृक्ष है। राजकुमारी दिव्य-प्रकाश के उच्च स्तर की निवासिनी है और सूर्य के निकट उसका निवास है। वह विश्व-वृक्ष पर वैठी हुई है। मानो वह एक ऐसी विश्व-आत्मा है जिसे अंधकार ने ग्रस लिया है। लेकिन, संभवतया अंधकार के इस शिकार से शैतान को कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि वह स्वयं भी वहीं गिरफ्तार हो गया और ऊपर से तीनों कीलों की सूली पर भी चढ़ना पड़ गया। यह स्थिति उसके लिये दर्द पूर्ण वंधन और संशयात्मक अनिश्चय की सूचक है। प्रोमिथियस की वेवकूफी के समान जो अन्तर्विरोधी सिद्धान्तों की परिधि में उलझ जाता है, उसको ऐसे दंड का भागीदार वनना पड़ता है। पक्षी या शिकारी ने प्रकाश के उच्च संसार से एक अमूल्य आत्मा को छलने का प्रयत्न करके गहरी भूल की। फलस्वरूप उसे कैद होना पड़ा और सूली की सजा भी भुगतनी पड़ी। यहां स्पष्टतः अनुमान किया जा सकता

१ यह पेरेग्राफ प्लेटो की उन उक्तियों में से है—जिसे अव तक समझा नहीं जा सका है।

है कि वह पूर्ण घटना मूल क्रिश्चियन कल्पना की उल्टी हुई प्रतिच्छाया है। अर्थात्, जिस प्रकार एक दयालु प्रभु ईसा ने एक लौकिक राजकुमार के पीड़ामय राज्य से मानवता की आत्मा को मुक्त करने का प्रयास किया और उसी प्रयास के फलस्वरूप उन्हें सूली की सजा मिली, ठीक इसी प्रकार अलौकिक विश्व-वृक्ष पर बसे हुए संसार में लुटेरे व शैतान-पक्षी को अनधिकार दखल देने के एवज में कीलों की सूली भुगतनी पड़ी। हमारी परी-कथा में जादू की अपरम्पार माया का माध्यम 'तीन कीलें' हैं। दुष्ट पक्षी को किसने कैद किया, इसका उल्लेख नहीं है किन्तु ऐसा महसूस होता है कि उस पर [शैतान] 'एक में तीन की स्थिति' का माया मंत्र फूंका गया था।[१]

४२८. हमारा नायक विश्व-वृक्ष का आरोहण कर राजकुमारी को शैतान के पंजे से छुड़ाने के लिए जादुई किले में पहुंच गया। लेकिन यहां उसे एक कमरे को छोड़कर हर कमरे में जाने की इजाजत ही मिली, यह कमरा ठीक वही था जिसमें पक्षी सूली पर चढ़ा हुआ कैद था। यों स्वर्ग में भी ठीक ऐसा ही पेड़ था जिसके फल चखने की मुमानियत थी। कमरे में प्रवेश निषेध की भावना भी यही थी। लेकिन निषेध का सीधा और साफ मतलब यही बनता है कि पहिले ही मौके पर उसे खोल दिया जाय। निषेध से जितनी शीघ्र हमारी जिज्ञासा जागृत हो जाती है—उतनी संभवतया अन्य किसी कार्य से नहीं होती। निषेध से अधिक सशक्त तथ्य और कोई नहीं हो सकता जो अवज्ञा का भाव पैदा कर सके। कथा का तथ्य तो मानो यह लगता है कि किसी रहस्यपूर्ण योजना के द्वारा, राजकुमारी से कहीं अधिक रुचि विकट पक्षी को मुक्त करने की है। इधर तो नायक पक्षी के कमरे में घुसता है कि वह गहरी प्यास की शिकायत करने लगता है। हमारे नायक के मन में दया उमड़ पड़ती है और वह किसी किस्म के थोड़े पानी की तलाश के बिना ही पूरा पानी दे देता है। फलस्वरूप तीनों कीलें गिर पड़ती हैं और वह भयंकर पक्षी खिड़की की राह से उड़ जाता है। इस प्रकार मायात्मा पुनः अपनी प्राप्ति करके मानव-देही शिकारी बन जाता है। वह दूसरी बार राजकुमारी को उड़ा

---

१ ग्रिम द्वारा लिखित एक कथा [द मेरी चाइल्ड] में कहा गया है कि 'तीन-में-एक' निषिद्ध कमरे में है।

भी लेता है। लेकिन इस बार उसने राजकुमारी को मानव-लोक के शिकार-गाह में कैद किया। इस क्रिया से एक और रहस्य की गांठ खुलती है: राजकुमारी को अपने उच्च लोक से जब तक मानव लोक में नहीं लाया जायेगा, जब तक शिकारी की योजना पूरी नहीं हो सकती और इसी प्रकार यह योजना तब तक भी अधूरी रहती, जब तक कि कथा में किसी मायात्मा एवं मनुष्य की अवज्ञा का सहारा नहीं मिलता।

४२६. लेकिन मानव लोक में आ जाने के बाद भी राजकुमारी, आत्माओं के शिकारी [शैतान] के ही कब्जे में है और इसीलिये हमारे नायक को उसके कर्मों में दखल देनी पड़ती है। अतः हम देखते हैं कि नायक को भी बुढ़िया डायन से चार पांवों वाले जादुई-घोड़े को प्राप्त करना पड़ता है और उसे तीन पांवों वाली घोड़ी पर शैतान द्वारा किये गये जादू को विनष्ट करना पड़ता है। यहां इस बात को भी हमें याद रखना है कि शैतान-पक्षी को त्रिक [तीन कीलों] ने ही बंधन में लिया था और यही त्रिक पापिष्ठ आत्मा की शक्ति का भी द्योतक है। यहीं वे त्रिकोण अस्तित्व में आते हैं, जो दो भिन्न दिशाओं की ओर आमुख हैं।

४३०. अब हम ठीक इसके ही विषय की चर्चा करें; विषय है मनोवैज्ञानिक अनुभव। हम यह जानते हैं कि चेतन मन की चार क्रियाओं में से तीन को भिन्नित किया जा सकता है अथवा चैतन्य के अलावा सभी तत्व अपनी गर्भावस्था में ही निहित रहते हैं अर्थात् अचेतन मन के गुह्य गर्भ में इन तत्वों को [अव्यक्त] निम्न स्तर या हीनता के कार्य-कलापों से संबंधी माना जाता है। ये अचेतन तत्व सशक्त से सशक्त चेतना के लिए भी 'एचिलस की एडी' की भांति दुर्बलतम स्थल सिद्ध होते हैं।[१] सच है कि मजबूत से मजबूत आदमी भी कहीं न कहीं कमजोर है, चालाक मूर्ख है, अच्छा आदमी बुरा भी है, कहीं कहीं इन्हीं स्थितियों का विलोम पक्ष भी सत्य सिद्ध होता है। हमारी परी-कथा में 'त्रिक' भी चार के पूर्णत्व का विकृत अथवा निर्बलता का सूचक तथ्य दिखाई देता है। इसीलिये यदि तीन पांवों के साथ चौथा और जोड़ दिया जाय तो वही सत्य पूर्ण हो जायेगा। मारिया के

---

१ एचिलस'स हील: एचिलस नामक लोक कथा के नायक का दुर्बल स्थान उसकी एडी थी। उसी जगह आघात पहुंचाने पर उसको मारा जा सकता था।

गूढ़ कथन के अनुसार — 'तीसरे से ही एक ओर बढ़ता है जो चौथा है।' संभवतया इसका यही अर्थ है कि जब तीन ही चौथे का सृजन करे तब पूर्णता या एकता उत्पन्न होती है हमारी परी-कथा में महान वृद्धा मां के भेड़ियों के पास जो खोया हुआ अंश है, वह वस्तुतः चौथा भाग है और यदि उसे शेष तीन के साथ जोड़ दिया जाये तो तथ्य पूर्ण होकर विभाजन संघर्ष और आन्तरिक द्वंद की स्थिति को समाप्त कर सकता है।

४३१. किन्तु हम अपने प्रतीकात्मक प्रमाण के अनुसार समझ चुके हैं चार किस प्रकार ठीक तीन की अवस्थिति का जन्म हरता है। वस्तुतः हमारी परी-कथा का प्रतीकवाद यहीं से हमारा साथ छोड़ देता है और हमें अनायास ही मनोविज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। मैं पहिले कह चुका हूं कि तीन क्रियाओं को भिन्नित किया जा सकता है और शेष एक अचेतन की मायावी शक्ति में ही छिपा रह जाता है। इस गूढ़ कथन का खुलासा जरूरी है। यह एक अनुभव-सिद्ध सत्य है कि एक 'मुख्य कार्य' को अपने अंगी-कार्यों [कम या अधिक सफलता के साथ] से भिन्न किया जा सकता है। इस पार्थक्य की प्रक्रिया द्वारा उत्तम या मुख्य कार्य की स्थापना हो जाती है और साथ ही साथ बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी वृत्ति के अनुसार चेतन अपना स्वरूप भी ग्रहण करता है। मुख्य कार्य के साथ दो अन्य समान-धर्मी, सहायक या अंगी-कार्य संलग्न रहते हैं किन्तु ये अंगी-कार्य कभी भी मुख्य कार्य को तिक्तता या समानता तक नहीं पहुंचा सकते। अर्थात् ये अंगी-कार्य अपनी इच्छानुसार [स्वतंत्र या मुक्त होकर] मुख्य कार्य की समरूपता प्राप्त नहीं कर सकते। अतः इन अंगी-कार्यों में मुख्य कार्य से कहीं अधिक स्वयं-स्फूर्ति [स्पोनटेनिटि] होती है क्योंकि इन्हें मुख्य कार्य की चेतन आश्वस्तता और इच्छानुकूलता की अत्यधिक मात्रा का बोझ नहीं उठाना पड़ता। अब चतुर्थांश हीन कार्य शेष रहता है जो संपूर्ण वांछित इच्छाओं की पहुंच के बाहर रह जाता है इसीलिए यह हीन-भाव चिढ़ाने वाले और व्याकुल कर देने वाले छोटे प्रेत की भांति, षड्यंत्री अनुभाव की तरह मन में छाया हुआ रहता है। साथ ही साथ सच यह भी है कि यह हीन-कार्य [या वृत्ति] स्वेच्छा और संकल्प से आता है और चला जाता हैं इसका अर्थ यह हुआ कि वृत्तियों को भिन्नित कर देने के बाद भी हमारा सत्व अचेतन से मुक्त नहीं हो पाता। ये वृत्तियां

हर समय मूल में निहित रहती हैं और अपने ही नियमों के माध्यम से संचालित होती हैं। परिणामतः अहं के अधिकार में संचालित होने वाले भिन्नित तीनों कार्यों के साथ साथ समानान्तर तीन अचेतन तथ्य भी जुड़े हुए चलते हैं जो किसी भी प्रकार मूल से मुक्त नहीं हो सकते। जिस प्रकार तीन चेतन एवं भिन्नित कार्यों के साथ चौथा जुड़ा हुआ [अचेतन] कार्य कष्ट पूर्ण व्याकुलता पैदा कर देता है — ठीक उसी प्रकार उच्च आदर्शात्मक कार्य का निपट शत्रु अचेतन मन ही सिद्ध हुआ करता है। अन्त में, पेच के आखिरी मोड़ को भी भूलना नहीं है; जिस तरह अंधियारे का मायावी शैतान प्रकाशमान देवदूत के छद्मरूप में स्वयं को व्यक्त करना चाहता है [अर्थात् हीन भाव रहस्यमयी चतुराई से उच्च कार्य को प्रभावित किया करता है] ठीक उसी प्रकार स्वयं उच्च कार्य भी उतनी ही शक्ति से हीन-कार्य को दमित करने का प्रयत्न किया करता है।

४३२. हमारे लिए संभवतया यह अत्यंत दुख की बात है कि ऐसे अमूर्त सिद्धान्तों की स्थापना के माध्यम से हमें छली एवं संभ्रमपूर्ण धारणाओं को 'बचपन जैसी सहज' परी-कथाओं पर आरोपित करना पड़ रहा है। दो विरोधाभासी त्रिकोण, जिनमें से एक तो प्रतिबंधन या नियंत्रण और दूसरा पाप या अमंगल की शक्ति का प्रतिनिधि है — दोनों ही चेतन एवं अचेतन मानस के कार्य-कारी संगठन से एकदम मिलते-जुलते हैं, उनमें बाल भर भी फर्क नहीं है। परी-कथाएं अपने आप में स्वयं-स्फूर्त, सहज और कल्पनातीत तत्वों से सुसज्जित होने के कारण मानस की इन्हीं स्थितियों को व्यक्त करने के अतिरिक्त और कर भी क्या सकती हैं? हमारी उल्लिखित यही एक परी-कथा मानस के उद्वेलन को व्यक्त करती हो, सो बात भी नहीं है। असंख्य अन्य परी-कथाएं भी इसी मानसिक उद्वेलन की अभिव्यक्त सत्ताएं हैं।

४३३. हमारी परी-कथा जहां एक ओर असंदिग्ध स्पष्टता के साथ मूल-स्थपित [आर्च टाईप] की विरोधात्मक वृति को अभिव्यक्त करती है, वहां दूसरी ओर उच्चतम चेतना के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संघर्षमय प्रभुत्व [अधिकार] की भावना के साथ विस्मयपूर्ण खेल भी करती है। सूअर-पालक हमारा नायक धरती की पाशविक सतह पर उगे हुए विश्व-वृक्ष के ठेठ शिखर तक पहुंच जाता है और वहीं [प्रकाश के दिव्य जगत] अपनी वन्दिनी 'आत्मा' को प्राप्त करता है। यह आत्मा उच्च कुलोत्पन्न

राजकुमारी है, जिसे प्राप्त करने के लिए चेतना की चढ़ाई जरूरी है अर्थात् विस्तीर्ण दृष्टिकोण को ग्रहण करके पशुवत्-स्तर से किसी वैभवपूर्ण एवं उच्चतम स्तर तक पहुंचने का सप्रयास प्रयत्न आवश्यक है। चेतना के क्षितिज का यह विस्तार कितना महत्वपूर्ण और विवेकपूर्ण बिम्ब है। एक बार जब पौरुष-चेतन जब ऊंचाई प्राप्त कर लेता है तो उसे वहां स्त्रैण प्रतिरूप अर्थात् लक्षित आत्मा के दर्शन होते हैं। राजकुमारी वस्तुत: अचेतन मन का जीवित स्वरूप है। युवक और राजकुमारी के इस मिलन को देखने के बाद राजकुमारी को 'अवचेतन' घोषित करना एकदम गलत होगा; क्योंकि राजकुमारी चेतन मन के नीचे नहीं अपितु ऊपर है। ऊंचाई भी इतनी अधिक है कि हमारे नायक को काफी परिश्रम से ऊंचा रास्ता तय करना पड़ता है। इसी उच्च चेतन को हम 'अतिचेतन' भी नहीं कह सकते; क्योंकि जो कोई विश्व-वृक्ष के उच्च शिखर को प्राप्त कर लेगा [हमारे नायक की भांति] वह भी अवचेतन की सतह से उतना ही ऊंचा होगा जितना कि धरती से वृक्ष का शिखर ऊंचा है। इतना ही क्यों कहें हमारे नायक के शिखर पर पहुंच जाने के बाद भी यही अप्रिय जानकारी मिलती है कि उसकी उच्च और वांछित 'आत्मा' [राजकुमारी] को जादू की माया ने ग्रस रखा है और वह सोने के पिंजरे में बंद एक चिड़िया की तरह पराधीन और अशक्त है। अतः समतल धरती [पाशविक मूर्खता के स्तर] से खूब ऊंचाई तक पहुंचने के लिए नायक अपनी पीठ क्यों न ठोक ले [प्रशंसा करले] उसकी 'आत्मा' को तो एक पापिष्ट ने कब्जे में ले रखा है। अर्थात् कुटिलतम पितृ-बिंब की वृत्ति का प्रतिफलन शैतान-पक्षी के परिवेश में 'आत्मा' पर अपना प्रभुत्व कायम किये हुए है। यह शैतान पशुरूपक-कथाओं का एक प्रसिद्ध पात्र है। ऐसी पराधीन स्थिति में विश्व-वृक्ष का उच्चतम शिखर और उसके मानस-पशु का विस्तीर्ण क्षितिज उसके क्या काम का रहा? उसकी मनो-वांछित आत्मिक सत्ता तो किले की जेल में आबद्ध है। इतना ही नहीं, इससे भी बुरी बात तो यह कि जब राजकुमारी भी स्वयं युवक के साथ हीन-जगत का खेल खेलने लगती है। अपने कैद के रहस्य को रहस्य [अज्ञात] ही बना रहने देने की दृष्टि से उसे एक कमरे को खोलने के लिए वर्जित कर देती है। लेकिन छद्म रूप से इस वर्जनात्मक आदेश के द्वारा ही वह नायक के मन में जिज्ञासा को भी जागृत कर देती है। मानो अचेतन मन के दो हाथ हैं जो एक दूसरे के विरोध में ही निरंतर लगे रहते हैं। राजकुमारी की मनोदशा ऐसी प्रतीत होती है कि वह

मुक्त भी होना चाहती है और मुक्त नहीं भी होना चाहती है। उधर पापात्मा भी जटिल समस्या में उलझ गया है, वह उच्च एवं प्रकाशमय संसार से एक दिव्य आत्मा को उड़ाना भी चाहता है। [पंखों वाला होने के कारण उड़ा भी सकता है] लेकिन किसी भी हालत में कीलों से जकड़ा जाना नहीं चाहता। उसका मन काला अवश्य है, पर वह भी प्रकाश चाहता है। इसी द्वैत्व में उसका गुप्त और छद्म औचित्य निहित है, जिसके परिणाम स्वरूप एक दिन सीमा का अतिक्रमण करके वह स्वयं माया का शिकार बन कर कैद हो गया। लेकिन जब तक यह पापात्मा उच्च संसार में गिरफ्तार है, तब तक राजकुमारी भी मानव-लोक में नहीं उतर सकती। इसीलिये हमारा नायक भी स्वर्ग-लोक में [राजकुमारी के साथ] ही रह जाता है। अब उसे ये ही परिस्थितियां मजबूर करती हैं कि वह 'अवज्ञा का पाप' करे और लुटेरे-शैतान को बचने का मौका प्रदान कर दे। नायक ने अपनी तरफ से तो यह कर दिखाया लेकिन शैतान फिर दूसरी बार राजकुमारी को उड़ा ले गया। इस तरह वापस नवीन दुर्घटनाओं का शृंखला-बद्ध क्रम चालू हो गया। कुछ भी हो, इस कार्य द्वारा राजकुमारी मानव-लोक में आ गई और शैतान-पक्षी ने भी मानव देह प्राप्त कर ली। इस प्रकार परलोक की आत्मा और पाप का सिद्धान्त-दोनों ही मानवीय स्तर पर पहुंच गये। इसका अर्थ यह हुआ कि वे दोनों सत्य मनुष्यवत् अनुपात ग्रहण कर लेते हैं और हमारी पहुंच के भीतर आ जाते हैं। शैतान की तीन पावों वाली सर्व ज्ञाता घोड़ी उसी की शक्ति का प्रतिरूप है; अर्थात् भिन्नित वृत्तियों के अचेतन तत्वांश के अनुरूप ही स्थिति का उद्भव संभव बनता है। शिकारी स्वयं हीन या नीच वृत्ति का बिम्ब है जो अपने क्रम से नायक में जिज्ञासु मन और साहसी कार्य के प्रति लगाव के रूप में व्यक्त होती है। यहां से कथा ज्यों ज्यों आगे बढ़ती है हमारा नायक शैतान के अनुरूप ही बनता जाता है। शैतान के समान ही नायक भी डायन से घोड़ा प्राप्त करता है। लेकिन वह शिकारी से कुछ अधिक ही रहा। शिकारी तो डायन से बारह भेड़ें नहीं ला पाया था। और फलतः उसे घोड़ी के एक खुर की हानि उठानी पड़ी। लेकिन नायक बारह भेड़ों को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। डायन से भेड़ें प्राप्त नहीं होने का मतलब यह हुआ कि शैतान भेड़ियों [प्रेतात्मा शक्तियों] को भेंट नहीं दे पाया। यह भेंट उसकी समझ के बाहर की बात थी, क्योंकि वह स्वयं भी तो एक शैतान-लुटेरा ही तो था। इधर हमारा नायक समझ जाता

है कि अचेतन मन अपनी सत्ताओं को मुक्त करने के लिए भारी बलिदान मांगता है। तभी वह अभिव्यक्ति संभव होती है। यहां बारह की संख्या [भेड़िये व भेड़ें] समय [काल] की प्रतीक भी हो सकती है अथवा सहायक कार्य के अर्थत्व में अचेतन सत्ता से मुक्ति पाने के पहिले बारह साहसिक कार्यों को संपन्न करने का अवशेष भी हो सकती है।[1] कथा में शैतान शिकारी द्वारा किये प्रयत्न मानो हमारे नायक के ही प्रयत्नों के प्रतिरूप हैं। अर्थात् वह अपनी आत्मा के द्वारा ही लूट और हिंसा के द्वारा अपनी ही लक्षित या वांछित आत्मा को प्राप्त करना चाहता हो। नायक के प्रतिरूप शैतान के ये क्रिया-कलाप उसके असफल प्रयासों की कहानी है। लेकिन दिव्य आत्मा की परिप्राप्ति के लिए, वास्तविक अर्थ में अपार धैर्य, त्याग और निस्पृह लगन की जरूरत है। हमारा नायक, शिकारी के ही पद-चिन्हों पर चलते हुए चार पांवों वाले घोड़े को प्राप्त करता है और राजकुमारी को भगा ले जाने में सफल होता है। हमारी परी-कथा में चार की संख्या अधिक शक्तिशाली सिद्ध होती है — क्योंकि यही संख्या पूर्णत्व में शेष रहे, शेषत्व को जोड़ती है या पूर्ण बनाने के लिए एक की आवश्यकता बनी रहती है।

४३४. अब यह कहा जा सकता है कि मूल-स्थपित की आत्मा इस आदिम परी-कथा में पशुरूपक [थिरियोमोर्फिक] के माध्यम से व्यक्त हुई है और कथा-रूप से त्रैत को एक इकाई में अर्न्तनिहित कर देती है। यही कारण है कि पापात्मा के प्रतीक शैतान पक्षी को किसी अनजान शक्ति ने कीलों [त्रिक] से दीवार में जड़ दिया। दो असाधारण इकाइयों [शैतान एवं नायक] से जबरदस्त दुश्मनी है अर्थात् नायक के कार्य-व्यापार से। इसी प्रकार दूसरी इकाई के मुख्य कार्य का भी विरोध है, नायक के कार्य-व्यापार से अन्ततः नायक एवं शैतान को एक दूसरे के बराबर ही बनना पड़ता है, ताकि शिकारी के हीन कार्यों में नायक के कार्य भी निहित हो सकें। सच तो यह लगता है कि मानो शिकारी के चरित्र में ही नायक का चरित्र अपनी सुषुप्तावस्था में पड़ा हुआ है। इस सुषुप्ति में वह [नायक] नीतिहीन साधनों को सहता रहता है, उन्हें पकाता रहता है, आत्मा का बलात्कार होने देता है और अन्त में शिकारी की सभी मनो-काम-

१ हरक्यूलिस ने अपना वचन निभाने के लिए बारह सशक्त पशुओं को पृथक पृथक रूप से अपने कब्जे में लिया था।

नाओं के विरुद्ध जागृत होकर उसे ही पराजित कर देता है। सतही तौर पर दोनों के बीच भयंकर संघर्ष दिखाई देता है लेकिन गहराई से देखें तो दोनों एक दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। यह ग्रंथि तभी खुलती है जब नायक चार के पूर्णत्व को हस्तगत कर लेता है। इसी बात को मनोविज्ञान का भाषा में कहेंगे कि जब वह [नायक] हीन कार्यों को तिहरी व्यवस्था का अविच्छेद्य भाग बना लेता है — तभी उसे पूर्णत्व का आभास होता है। इस उपलब्धि मात्र से सारा तनाव एवं संघर्ष एक झटके के साथ समाप्त हो जाता है और शिकारी का अस्तित्व वायु में विलीन हो जाता है। इस विजय के बाद नायक, राजकुमारी को तीन पांवों वाली घोड़ी पर बिठाकर उसके देश के लिए कूच कर देता है। राजकुमारी भी इसी स्थिति में पहुंचकर अपनी आत्मा की नियामक बनती है, अन्यथा उसकी आत्मा कुछ समय पूर्व तक शैतान-शिकारी की परिचारिका थी। यही कारण है कि प्रत्येक लक्षित आत्मा अचेतन अंश की प्रतिनिधि बनी रहती है और उसे वही बने भी रहना पड़ता है। पूर्णत्व प्राप्त करने के मानवीय प्रयासों के साथ उसे कभी भी समावृत्त नहीं किया जा सकता।

४३५. पुनश्च। इस निबन्ध को समाप्त करने पर मुझे एक रूसी मित्र ने इसी कथा के एक अन्य रूप की सूचना भिजवाई। उस कथा का शीर्षक है — मारिआ मोरेव्ना। रूसी कथा का नायक सूअर-पालक नहीं है, अपितु रूस का सम्राट जारेविच ईवान है। इस कहानी में तीन सहायक पशुओं का बड़ा कौतुकपूर्ण वर्णन मिलता है। वे तीनों पक्षी रूप में ईवान की तीन विवाहित बहिनें हैं। उसके तीन पक्षी-रूप पति भी है। यहां तीनों बहिनें अचेतन की तीन सत्ताओं की प्रतिरूप हैं जो पशु एवं आत्मिक जगत दोनों से संबंध व्यक्त करती हैं। तीनों नर-पक्षी देवदूत हैं और अचेतन सत्ताओं के सहायक सत्व हैं। कहानी में ये पात्र एक महत्वपूर्ण मौके साधते हैं। कथा का नायक [जर्मन कथा से भिन्न घटना] पापात्मा के कब्जे में आ जाता है और नायक के अंग-प्रत्यंगों को काट पीट डालता है [दैविक संदेश लेकर अवतरित होने वाले सभी व्यक्तियों का विडम्बना पूर्ण भाग्य !]। कहानी में पापात्मा को एक बूढ़ा आदमी बताया गया है, जिसका नाम 'कोसची' अर्थात् वह 'अमर' है। डायन के रूप में रूसी लोक कथाओं की प्रसिद्ध वृद्धा 'बाबा भागा' है। जर्मन परी कथा के तीन सहायक-पशु यहां

दुगुने हो गये हैं। वे पहिले तीन नर-पक्षी होते हैं और वाद में सिंह, अनोखी चिड़िया और मधुमक्खी के रूप में आते हैं। यहां राजकुमारी के रूप में सम्राज्ञी मारिआ मोरेवना है। रूसी आख्यानों में मारिआ एक साहसी महिला है जिसे मेरी के रूप में अनेक धर्म गीतों में प्रशंसित स्थान भी मिला है। इस वहुचर्चित पत्र ने पापी आत्मा को बारह लोह शृंखलाओं से वांध कर वर्जित कमरे में बंद कर दिया था। इस कहानी में भी ईवान ज्यों ही राकस को पानी पिलाता है कि वह सम्राज्ञी मोरेवना को ले भागता है। कथा के अंत में जादुई घोड़े भी पुनः मानवीय रूप ग्रहण नहीं करते। कुल मिलाकर यह महसूस होता है कि रूसी कथा में कुछ अधिक आदिम तत्वों का समावेश।[1]

३

यामिनी भानु एवं मृगावती

समृद्धिशाली अंग देश में चंपानगरी का राजा शत्रुदमन और रानी गुणसुन्दरी सानंद राज चला रहे थे। उनका मंत्री सुबुद्धि था। राजा पुत्रहीन था। शिव की आराधना से उसके पुत्र हुआ, किन्तु उसके लिए कहा गया कि वह तरुण होने तक ही घर में रहेगा। अतः उसका विवाह शीघ्र कर देना होगा।

देव आशीर्वाद से पुत्र हुआ। उसका नाम रखा गया यामिनी भानुकुमार। राज-काज सफल शिक्षा-दीक्षा उसे दी गई। लेकिन राजा उसके बाल विवाह की वात भूल गया।

एक बार राजकुमार अपने सुन्दर उद्यान की पूर्णिमा की चांदनी में सैर कर रहा था। उस उद्यान में वैताढ्य पर्वत के प्रदेश उरपुर के राजा किरणवेग और रानी श्री की पुत्री मृगावती भी सैर के लिए आ गई। उरपुर के राजा-रानी के देहान्त के उपरान्त मृगावती ही राज-काज का संचालन कर रही थी। उद्यान

---

१. यह लेख सी. जी. जुंग द्वारा लिखित The Arehetypes and the collective unconscious; volume Nine; part one में से अनूदित किया गया है। पृष्ठ संख्या २३१।

में उसके साथ चार सखियां भी थीं।

राजकुमार ने यह जान लिया कि हिरण रूप में मृगावती निश्चय ही कोई विद्याधरी है। अतः उसने अपने साथियों से कहा कि जिस किसी के ऊपर से हिरण निकल जायगा, उसे देश निकाला भुगतना पड़ेगा। मृगावती ने यह शर्त सुनते ही सीधे राजकुमार के ऊपर से छलांग मारी और निकल गई।

राजकुमार ने स्वयं देश निकाला स्वीकार किया और एक वन में सरोवर के निकट महल बना कर रहने लगा। उसने तय कर लिया कि यदि वह विवाह करेगा तो इसी हिरण रूपिणी स्त्री से।

ठीक एक वर्ष के उपरान्त उसी पूर्णिमा की तिथि को मृगावती उसी उद्यान में अपनी चारों सखियों के साथ पहुंची।। किन्तु इस बार उसने सरोवर स्नान करना तय किया। राजकुमार ने छिपे हुए उसके वस्त्र छिपा लिये। निर्वस्त्र मृगावती ने अपने वस्त्र मांगे किन्तु राजकुमार ने अपने महल में पहुंचने पर ही वस्त्र देने का वचन दिया। मृगावती महल पहुंची। वहां राजकुमार ने विवाह की शर्त रखी। मृगावती मौन ही रही। राजकुमार विवाह की सामग्री लेने चला गया और उधर धाय से हठ पूर्वक वस्त्र मांगकर मृगावती पुनः अपने देश की ओर उड़ गई। किन्तु यह कहती गई कि यदि कुमार वैताढ्य पर्वत पर आयेंगे तो वह उनसे विवाह कर लेगी।

राजकुमार लौटा तो मृगावती जा चुकी थी। केवल सन्देश बाकी था। देश-प्रदेश लांघता हुआ समुद्रतट पर पहुँचा। वहां एक जहाज पर सवार हुआ और वैताढ्य पर्वत की खोज में निकल गया।

समुद्र में एक जगह एक दीर्घकाय सांप आ पहुंचा। वह प्रति दिन दो व्यक्तियों का भक्षण करने लगा। धीरे धीरे सिर्फ यामिनी भानु कुमार ही शेष रहा कि भाग्यवशात् एक और सांप जहाज पर चढ़ आया। दोनों सांप आपस में लड़ पड़े और लड़ते लड़ते जहाज के नीचे जा पहुंचे। जहाज उनके धक्कों से चल पड़ा और एक समुद्र तट पर जा लगा। तट पर पहुंचते ही वह पुनः चलने लगा। चलते चलते उसे एक सिद्ध पुरुष के दर्शन हुए। उसने राजकुमार को बताया कि असूर्यपश्या अटवी में एक मास चलने पर एक राक्षस नगर आयेगा और उसी के आगे वैताढ्य पर्वत है।

सिद्ध पुरुष द्वारा बताये गये मार्ग पर चलता हुआ राजकुमार राक्षस नगरी

जा पहुंचा । वहां एक राक्षस बकरियां चरा रहा था । उसके निमंत्रण पर राजकुमार उसके साथ हो लिया । बकरियों के साथ गुफा और बाद में दूसरी गुफा में राक्षस ने घुसकर बाहर बड़ी शिला को गिरा लिया । वहां कुछ और आदमी भी थे जो जहाजी यात्राओं से रास्ता भटक कर राक्षस के कैदी हो गये थे । ये सभी राक्षस के इतने वश में हो गये कि हिल भी नहीं सकते थे ।

यह राक्षस आदमियों को एक बड़े गर्म कड़ाह में त्रिशूल से तलकर खा लिया करता था । राजकुमार ने मौका देख कर सोये हुए राक्षस की आंखों को त्रिशूल से ही फोड़ दिया । वह अंधा हो गया । दूसरे दिन एक बकरी की खाल ओढ़ कर राजकुमार राक्षस की सहायता से गुफा से निकल आया । राक्षस नगरी के राजा को जब ज्ञात हुआ कि उसके ग्वाले की किसी ने आंखें फोड़ दी हैं तो उसने राजकुमार की तलाश करवाई, लेकिन वह हाथ नहीं आया । प्रातः काल जब राक्षस बिखरे तो वह छुपते हुए विद्याधरी की नगरी में प्रविष्ट हो गया । यह राक्षस-नगर दिन को बिल्कुल जन-शून्य हो गया था ।

राजकुमार वैताढ्य पर्वत के राज्य में भजन गाते हुए घूमने लगा । मृगावती ने उसे पहिचान तो लिया लेकिन अनजान बनकर गीत सुनने चाहे । राजकुमार ने अपनी सौंदर्यमयी अभिलाषा को सामने देखा तो गीत भी मौन हो गये । अंततः दोनों का विवाह हो गया ।

किन्तु, एक दिन सखी के आग्रह पर राजकुमारी को सात दिन के लिए बाहर जाना पड़ा । उसने राजकुमार से कहा कि महल के आठ कमरों में से वह सात चाहे खोल ले लेकिन आठवां किसी हालत में न खोले । परन्तु राजकुमारी के जाते ही राजकुमार जिज्ञासा को नहीं रोक सका और सातों कमरों की अपार धन-राशि को देखते हुए उसने आठवां कमरा भी खोल लिया ।

इस वर्जित कमरे में एक बहुत बड़ा दानव बंदी था । उसने अत्यंत करुणा-पूर्ण शब्दों में मुक्त करने की प्रार्थना की । राजकुमार के हृदय में दया उमड़ी और उसने दानव को मुक्त कर दिया । बन्धन मुक्त होते ही उसने कहा कि राजकुमारी मृगावती उसकी विवाहिता पत्नी है और राजकुमार को उसके जीवन में हस्तक्षेप करने के कारण समुद्र में फेंक दूंगा ।

जैसा दानव ने कहा, ठीक वैसा ही उसने कर दिखाया । लेकिन संयोग से राजकुमार पानी में ही गिरा और जीवित रह गया । इधर जब राज्य के मंत्रियों

को आठवां कमरा खुला मिला और राजकुमार नहीं मिला तो सारी कहानी समझ गये । उन्होंने मृगावती को दुर्घटना का संदेश भेज दिया ।

मृगावती इस दुर्घटना को सुनकर बेसुध हो गई लेकिन अपनी चारों सखियों के साथ राजकुमार की खोज में निकल गई । राजकुमार समुद्र तट पर मिल गया। किन्तु राजकुमारी ने कहा कि जब तक दानव को पुनः कैद नहीं करेंगे तब तक चैन नहीं मिलेगा । अन्ततः सखियों की सहायता से दानव को भी ढूंढ निकाला और उसे लोह श्रृंखलाओं में बांधकर कैद कर लिया । उसके नौ अंगों में नौ कीलें ठोक कर गुफा के द्वार पर एक बड़ी शिला रखवा दी ।

इस कथा के तत्व, घटनाएं, और विषय वस्तु जुंग द्वारा विश्लेषित कथा से कितने समान हैं, यह प्रबुद्ध पाठक सहज ही समझ लेंगे । इस कथा में प्रयुक्त संख्याओं का विवेचन भी भारतीय तंत्र-शास्त्र एवं धर्म-शास्त्र की मान्यताओं के अनुरूप न केवल संभव है—अपितु महत्वपूर्ण भी सिद्ध हो सकता है । चार सखियां, वर्ष की एक ही पूर्णिमा को मृगावती आगमन [काल चक्र] सांपों का द्वंद, राक्षसों की नगरी, सात दिनों के लिए राजकुमारी का जाना और नौ कीलों से दानव का आबद्ध होना अवश्य ही भारतीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण अतिमानवीय, मानवीय और अमानवीय सत्ताओं के विश्लेषण की आकांक्षा रखता है । निश्चय है कि ऐसी ही अन्य कथायें और भी प्रचलित होंगी और उन्हीं प्रचलित रूपों के बीच में इस कथा के मूल रूप का आभास भी प्राप्त किया जा सकेगा ।

इस कथा को श्री भंवरलाल नाहटा ने वरदा [त्रैमासिक पत्र, राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ, राजस्थान] के अंक ३, वर्ष ६ में लिपिबद्ध किया है । कथा-रचना के प्रसंग में उन्होंने लिखा है 'इस कथा-काव्य के निर्माता कवि चंद्रकीर्ति, खरतर गच्छ की कीर्तिरत्नसूरि शाखा के विद्वान थे । सोलह ढालों में यह कथा कवि ने संवत् १६८२ के आश्विन शुक्ला सप्तमी के दिन बाड़मेर में बनायी । इसकी एक प्रति का विवरण 'जैन गुर्जर कवियों' भाग १ पृष्ठ ५४७ में अब से ३७ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था ।'



बातां री फुलवाड़ी

भाग ६



नाहरसिंघ बछराजसिंघ

बात री बात
कुळापात री कुळापात
खेजड़ी रौ कांटौ साढ़ी सोळै हाथ
जिणरा घड़िया तीन पाट
दो सुळियोड़ा नै अेक चढ़ै ई नीं
ज्यां में थपिया तीन गांव
दो ऊजड़ नै अेक बसै ई नीं
ज्यां में बसिया तीन कुम्हार
दो ठोटी नै अेक घड़ जांणै ई नीं
जका घड़ी तीन हांडियां
दो जोजरी नै अेक बाजै ई नीं
ज्यां में रांधिया तीन चावळ
दो कटकटा नै अेक सीझै ई नीं
ज्यां में निंवतिया तीन बांमण
दो इग्यारसिया नै अेक जीमै ई नीं
ज्यांनै दीवी तीन गायां

दौ बांमड़ी नैं अेक ब्यावैं ई नीं
जका लाई तीन बिछिया
दो तौ पैल नै अेक हालै ई नीं
ज्यांरा वटिया तीन रिपिया
दो खोटा नै अेक चालै ई नीं
ज्यांनै परखिया तीन सोनार
रात रा रातिंदो, दिन रा सूझै ई नीं
ज्यांरै मारी तीन थाप
दो टळगी नै अेक लागी ई नीं
सोनार बेरा-बावड़ी करण न्हाटा
दो सूखा, अेक में पांणी ई नीं

तौ रांमजी भला दिन दे अेक विकट जंगळ में अेक लांठौ सरवर हौ। हिबोळा खावतौ निरमळ नीर। च्यारूं पाळां जंगी रूंख। लीला-चैर। पण तरवर साव सूनौ। खाली आळा-माळा टिरै। सरवर निपट अडोळौ। नीं हंस, नीं सारस नीं बुगला। दस दस कोसां तांई जीव-जिनावर रौ वास्तौ ई नीं। अेक विकराळ नौ हत्थी सिंघणी रै कारण जंगळ में इण भांत सून्याड़ व्हैगी ही। उणरी हौकारां, हत्थळ अर डील री बोय रा डर सूं सै जीव-जिनावर आप आपरौ जीव लेयनैं न्हाय छूटा। रह्या जकां नै सिंघणी ठांणै लगाय दिया। सिंघणी रौ ई पेट भरणौ दूभर व्हैगौ। जीव-जिनावर धीज्यां जंगळ रौ वासौ करै, पण सांप्रत मौत रौ धीजौ किणनै व्है।
पण अेक दिन समाजोग री बात अैड़ी बणी के किणी अेक

मूंजी रै खूंटै घणा दिनां तांईं फगत राहड़ी रा जोर माथै गाय बंध्योड़ी नीं री । पेट री भूख रौ खूंटा री राहड़ी सूं करार वत्तौ हौ । खाली ठांण सूं कित्ताक दिन तांईं माथौ फोड़ती । हूचटौ देय खूंटै बंधी राहड़ी तोड़ न्हाकी । पूंछड़ौ पाधरौ करनै दीठ री सोय सोकड़ मनाई जकौ पाछौ खाली ठांण सांम्ही मुड़नै ई नीं जोयौ । जोग री बात के न्हाटी न्हाटी इण इज विकट जंगळ में आय बाजी । अनाप चरणोई । अनाप चारौ । गाय रै भाग रौ तौ भगवांन तूठौ । घणा दिनां सूं पेट रा सळ निकळिया । तरळा मारती आंतां आसीस दीवी ।

धायां पछै गाय पांणी री सोय में वहीर व्ही । निसंक तांबाड़ती तांबाड़ती वा उण इज अडोळा सरवर री पाळ चढ़नै थावा मारता निरमळ नीर सांम्ही जोयौ तौ उणरी आधी तिस बुझगी । भगवांन री अैड़ी मया तौ नीं जांणी ही ।

पांणी सूं धुड़ु होयनै वा अेक बड़ला री छींयां में बैठ मस्ताई सूं वागोलण लागी । के अणछक पाळ रै हेटै सिंघणी री हौकारां सुणनै धै छिलग्या । औ चारौ पांणी कांईं कांम आयौ । उणरी आंतां डर रै कारण कुळबुळावण लागी । गाबड़ घुमाय च्यारूं कांनी भाळियौ । सिंघणी रौ रूप धार काळ तौ आयौ पण आयौ । सिंघणी माथै निजर पड़तां ईं गाय तौ जांणै ढोळै इज बैठगी । उण सूं तौ ऊभौ होवणौ ई नीं आयौ । नीची धूण करनै बैठगी । मूंजी रौ खूंटौ छोडयौ तौ सांप्रत मौत री डाढ़ां झिलगी । भाग री बात । तौ ई मरयां पैली अेकर भरया पेट रौ आणंद तौ आयौ ।

सिंघणी धायोड़ी ही । बारह कोस आंतरा सं पाळै आयोड़ी

भैंस कुदड़का मारती न्हाटी आई सौ सिंघणी री हत्थळ पड़्यां ई उणरौ भूत न्हाटौ । आखी भैंस मठोठ सिंघणी पाधरी सरवर री पाळ चढ़ी ।

गाय माथै निजर पड़तां ई उणनै मारण रै अलावा श्रेक दूजी बात ई जंची । धायै पेट वा मतै ई सोचण लागी कै जीव-जिनावरां री इण जंगळ सूं धीजौ ई ऊठग्यौ । कीकर ई भूल्यौ-भटक्यौ कोई जिनावर धीजै तौ जंगळ री पत बंधै । इण श्रेक गाय नै छोड्यां केई जीव हाथै लागैला । आ सोच सिंघणी धापनै पांणी पीयौ तौ उणरौ बच्योड़ौ रोस ई ठाडौ पड़ग्यौ । पूंछ हिलावती हिलावती गाय रै पाखती पूगी । बुचकारती बोली — म्हारी बाई, यूं नीची धूण करयां क्यूं बैठी । म्हारा सूं अंगै ई डरण री जरूरत कोनीं । आज सूं ई थूं म्हारी धरम री बैन । थनै कीं हांण नीं पुगावूंला । निरभै होय वंतळ कर ।

सिंघणी रै बुचकारयां ई गाय रौ पूरौ डर नीं मिट्यौ । तद सिंघणी बोली — बावळी, सिंघां री जात मीठा बोलनै बात नीं करै, मारै जिणनै हीकारां भरनै ई मारै ।

सेवट गाय नै धीजौ व्हियौ । तठा उपरांत दोनूं धरम बैनां जंगळ में मछरां करण लागी । गाय रै पछै दूजा जिनावर ई धीज्या । सिंघणी री मन जांणी व्ही । यूं मजा में दिन रळकण लागा ।

दोनूं धरम-बैनां ग्यावण ही । वगत आयां दोनूं ब्याई । वगत लाग्यां बिचिया बधण लागा । सिंघणी रौ जायौ गाय नै मासी रा नांव सूं बतळावै अर गाय रौ बिछियौ सिंघणी

नै मासी कैय बतळावै । दोनूं मास्याई भाइयां में हेत अणूंतौ। साथै रमै, कूदै, मछरां करै । अेक दूजा विना छिण ई आवड़ै नीं । सगा भाइयां बिचै ई गाढ़ौ हेत । गाय रौ बिछियौ दूध चूंघै नै लीलौ लीलौ घास चरै । सिंघणी रौ जायौ दूध चूंघै नै छोटा - मोटा जिनावरां रौ खज करै । कदै ई कदै ई सिंघणी गाय रा बिछिया नै चुंघावती अर गाय सिंघणी रा बिचिया नै ।

अेक दिन सिंघणी रौ बिचियौ कह्यौ — भाईड़ा, मासी रौ दूध अणूंतौ मीठौ, जांणै इमरत । पीयां जीव तिरपत व्है जावै ।

बिछियौ बोल्यौ — जे मां रौ दूध अैड़ौ मीठौ लागतौ व्है तौ म्हैं पीवूं ई कोनीं। म्हारै वास्तै तौ जंगळ में चारौ घणौ । थूं जिनावरां रौ अखज खावणौ छोडै तौ म्हैं आज सूं ई मां रौ दूध छोडद्यौ ।

सिंघणी रौ बिचियौ कैवण लागौ — भाईड़ा, थारी सीख तौ साव साची, पण सिंघां रा जाया भूखां मरनै मर जावै तौ ई घास में मूंडौ नीं घालै । औ कुदरत रौ नेम । मांस ई तौ वांरौ भख । साचांणी, थारै साथै रह्यां मांस री ओक्या घणी ई आवै, पण ढबीजै कोनीं। भगवांन म्हांरा भाग में फगत मांस रौ ई भखसण लिख्यौ । ज्यूं थें गवू रा जाया मांस रौ भखसण नीं कर सकौ, इणी भांत म्हैं चारा रै त्रण सांम्ही मूंडौ ई नीं करां। पण तौ ई मासी रौ दूध पीयां अर थारै साथै रह्यां केई वळा आ जचै के किणी जीव री हित्या करनै पेट भरणा बिचै भूखौ रैय मरणौ घणौ सिरै । सेवट हजारूं जीवां नै मार अेक दिन मरणौ तौ है इज ।

इणी भांत री बातां - विगतां, मछरां अर रमणा - कूदणा

साथै दिन बीतण लागा । सिंघणी अर गाय री सांठ-गांठ सूं दूजा जिनावरां री जीत्र ई जागण लागौ । वांरा मन सूं वळै जंगळ री पत ऊठगी । सिंघणी रै भक्सण रा जांदा पड़ण लागा । केई वळा लांघण रै जाती । अेकर तौ वा लगती तीन दिनां तांई भूखी रैगो । भूख आगै उणनै कीं चैतौ रह्यौ नीं । नीं धरम-बैन रै गना री अर नीं दिनां री संगत री । भूख री लाय सूं उणरा रूं रूं में काळ रमण लागौ । पछै वा तौ भली सोची नीं कोई भूंडी गाय रै माथै हौकारां रै सागै मलापनै ताचको जकौ अेक ई हत्थळ में ठाय राख दी । गाय रै तौ मरतां मरतां ई समझ में नीं आई के आ कांई बात व्ही । डोळा भंवाय, तड़ाचां वावती वावती वा तौ प्रांण मुगत व्हैगी । सिंघणी रा पेट में जाय वासौ लियौ । भूखी सिंघणी नै धरम-बैन रौ मांस अणूंतौ ई सखरौ लागौ ।

गाय रा बिछिया नै जद इण बात रौ पतौ पड़्यौ तौ वौ ठळाक ठळाक रोवण लागौ । सिंघणी रै बिचिया सांम्ही देखनै रोवतौ रोवतौ ई कैवण लागौ — म्हे गवू रा जाया थां जंगळ रा राजा सांम्ही रोवणा रै सिवाय कांई दूजी जोरावरी करां । पण मासी नै धरम-बैन बणाय औ घात नीं करणौ हौ । थारै म्हारै साथै इत्तौ ई सीर-संस्कार हौ । म्हैं अबै जावूं । थारै हाथां मरण रा डर सूं नीं । पण अेकर मूंडै भाई कह्यां म्हारौ मांस खाय पेट भर्‌यौ तौ थारी पत ऊठ जावैला ।

सिंघणी रा बिचिया रै ई अै बोल तीर ज्यूं लागा । वौ ई छबरां छबरां रोवण लागौ । बोल्यौ — म्हारी मां रा इण अकरम पछै म्हारै कह्या रौ विस्वास नीं आवैला, आ बात म्हैं

जांणूं । पण म्हारै करचा रौ थनै विस्वास करणौ ई पड़ैला । थूं म्हारौ कोई कैणौ नीं टाळ्यौ । आ अेक बात म्हारी वळै मांनजा, कालै कालै तांई ढबजा । पछै पिरसूं थारी दाय पड़ै ज्यूं करजै । म्हैं थनै बरजूंला नीं

सिंघ रा बिचिया री वांणी में साच हौ । बिछिया नै बात मांनणी पड़ी ।

पिरथी थपियां पछै ई सिंघ रौ जायौ किणी जिनावर सूं प्रीत नीं करी । पण अेकर काळजै प्रीत रौ रस बैठ्यां पछै सिंघ रौ वौ बिचियौ ई प्रीत रा पळेटां में झिलग्यौ । वौ साचा मन सूं आपरै मासी रा बेटा भाई रौ लाड करतौ हौ । मां रौ घात उणरै काळजै घणौ ई साल्हियौ । भिड़ंत करण रौ आपौ नीं हौ । अर अेक दिन में लांठौ होय कित्तौक लांठौ व्हैला । घात करयां ईं साच रौ निभाव व्हैला । वौ मन ई मन मां नै डंड देवण री जुगत विचारण लागौ ।

सिङ्या रा सिंघणी चूंघावण आई तौ वौ हांचळां मूंडौ नीं घाल्यौ । मां घणा ई थोरा करचा, पण बेटौ मांन्यौ नीं । सेवट वौ मन रौ भेद दरसायौ । कह्यौ के पाखती रा बेरा माथै ऊभ चूंघावै तौ चूंघै । सिंघणी बेरा री पाज माथै आय ऊभगी तौ ई वौ नीं मांन्यौ । बोल्यौ — आं हां, यूं नीं । दोय पग धकै अर दोय पग लारै करनै बेरा रै बिचाळै ऊभै तौ चूंघूं ।

सिंघणी रौ वा'ड़ौ तिड़तौ हौ । वा लप बेटा री बात मांनगी । बेटै कह्यौ ज्यूं बेरा माथै आगै लारै पग धरनै ऊभगी । बेटा रै हीयै तौ काळ टंवळियां खावतौ हौ । वौ जोर सूं थावा रै मिस थड्डौ दियौ जकौ मां तौ पाधरी बेरा में थरकाइजगी ।

वारै फगत हविदौ सुणीजियौ । गाय रौ बिछियौ पाखती ऊभौ आ रचना देखी तौ देखतौ रैग्यौ । पाखती आय डुस्किया भरतौ बोल्यौ — भाईड़ा, म्हारै खातर थूं आ कांई कालाई करी ।

तद नाहर रौ बिचियौ बोल्यौ — म्हारै हीयै उकली जकौ म्हैं कालाई करी, थूं इण री चिंता मत कर । अबै थूं कैवै तौ ई म्हैं इण जंगळ में नीं ढबूं । मासी रै घात पछै इण जंगळ में सांस लेवणौ अधरम । म्हारै साथै चालै तौ थारी मरजी, नींतर थारी इंछ्या व्है जठै जाय सकै, म्हारी ना कोनीं । अर नीं ना देवण री म्हारी हीमत ई है ।

गाय रौ बिछियौ कह्यौ के अबै साथ छोड जावण रौ म्हारै पगां ई गाढ़ कोनीं । साथै ई जीवांला, साथै ई मरांला ।

पछै दोनूं ई किणी दूजा वन: में जाय वासौ लियौ । दोनूं भाइयां रौ दिन दूणौ रात चौगणौ हेत बधतौ गियौ । गवू रै जाया टोगड़िया री सीख अर संगत सूं नाहर रै जाया रौ काळजौ परजळतौ गियौ । वौ मांस खावणौ अंगै ई छोड दियौ । घास के चारौ गळै नीं उतरयौ सौ नीं उतरयौ । गायां रौ दूध उणरै होठां लाग्योड़ौ हौ, सौ दूध री तोजी बैठ्यां उणनै मांस री हर आवणी ई बंद व्हैगी । गायां खुद आय चुंघाय जाती ।

आखती - पाखती रै सै वनां रा जीव - जिनावर इण जंगळ में आय बसग्या । वौ नाहर वांरौ साचैलौ राजा बण्यौ । जंगळ रा सै जूंना कायदा - क़ानून वदळ दिया । सगळा जिनावर हिळ - मिळनै रैवण लागा । नारकियौ नाहर री दीवांण बण्यौ । देखतां देखतां जंगळ में मंगळ व्हैगौ । कोई मिनख रौ जायौ सिकारी उण जंगळ सांम्ही आंख ई करतौ तौ राजा लियां दियां ऊभौ

ही । जिनावरां रा टोळा रा टोळा साथै रैवता, साथै चरता, साथै मछरां करता । कदैई खड़वड़ के राड़ नीं व्ही । सगळा अेक दूजा रै सुख में त्यार अर अेक दूजा रै दुख में त्यार । नित रात रा दरबार जुड़तौ । सुख अर न्याव रा नवा कायदा बणता । राजा व्है तौ अैड़ौ व्है । दीवांण व्है तौ अैड़ौ व्है ।

पाखती मिनखां री बस्ती में जंगळ रा इण सुख सूं लाय-पाय लागगी । मिनखां रै हीयै जिनावरां रौ औ सुख भरियौ कोनीं । मांस बिना भटका आवण लागा । कायदौ तोड़्यां तौ जंगळ रौ राजा आखी बस्ती नै फाड़ न्हाकै । जिनावरां रै सुख सूं मिनखां रै दुख उपजग्यौ । जोर करै तौ कांई करै । पण मिनखां नै आपरा करार बिचै आपरी अक्कल अर छळ-बळ री घणौ पतियारौ हौ । सोच्यौ के जिनावरां रै सुख अर मिनखां रै दुख री जड़ औ दीवांण । औ गवू रौ जायौ नारकियौ नाहर री मत फिराय दी । दीवांण रौ पापौ काट्यां बिना मिनखां री बस्ती में सपनै ई पाछौ सुख नीं बावड़ैला । मांस खावणियां नै मांस नीं मिळै तौ वै जीवता ई मर्‌यां बिरोबर । हिरण, खिर-गोस, सूअर, तीतर, बट्टा, तिलोर रै मांस री तौ फगत बातां ई बातां रैगी । मिनखां री बस्ती रै राजा री खीझ रौ पार नीं रह्यौ । राजावां ऊपरलौ औ नवौ राजा कठा सूं आयौ ! कित्ताक दिन सबूरी राखै ।

जंगळ में सुख रौ अनोखौ ई राज हौ । नित नवी हरि-याळी बधण लागी । नित नवा फळ-फूल बधण लागा । सूरज रौ उजास अनाप । चंदरमा री चांनणी अनाप । वगत परवांण रितुवां रा गेड़ा व्हैता । दीवांण रौ नामूंन राजा बिचै ई घणी

व्हियौ । राजा नै ई आपरै दीवांण रौ मोद अणूंतौ हौ ।

पण मिनखां रै राजा रा मन में आ बात खटी कोनीं । उठा रा बाग देखतां देखतां सूखग्या । बाड़ियां सूखगी । काळ माथै काळ पड़ण लागा । कुदरत ई मिनखां री बस्ती रौ वासौ छोड उण जंगळ में नेगम डेरा जमाय लिया ।

मिनखां रै राजा नै मोटौ डर के इण राज रौ कोई मिनख जंगळ में कुबद करै तौ सगळा जिनावर आखा राज रौ खूंटौ ई उखेल दै । पछै कुण हिरणां रा सूळा खावै, गूडळिया भांगै ।

पण अेकर मतै ई तोजी बैठगी । अेक अळगा राज सूं फिरतौ-धिरतौ सांसियां रौ डेरौ आयौ । सांसी अेक अेक सूं डंयाळ । वां सांसियां नै पाखती रै जंगळ री कीं सोय नीं ही । राजा री सिखायौ कसाई वांनै पटाया । वै तौ कैतां ईं हांमळ भर दी । जणा दीठ बीस बीस मोहरां हाथै लागतां ईं वै तौ सीधा उण जंगळ रै सरवर आय डेरा कीना । साधू-संतां रौ भेख बणाय । वै साधू जंगळ रै वां जिनावरां नै धरम-सास्तर रै ग्यांन री नवी नवी बातां बतावण लागा । वौ नारकियौ दीवांण तौ पांच पांच घड़ी तांईं अेकलौ मिनखां रै ग्यांन री ऊंची बातां सुणतौ । वौ मन में सोच्यौ के जिनावरां रा इण सुख बिचै तौ मिनखां रौ दुख घणौ सिरै । बिना ग्यांन रै सुख कांईं कांम रौ । कीकर ई मिनख जमारौ मिळै तौ मन री हूंस काढ़ै । साचांणी कीं करनै बतावै । जंगळ रै जिनावरां रौ औ सुख तौ साव थोथौ । वौ दीवांण तौ मिनखां रा उण ग्यांन में मगन व्हियौ पण व्हियौ ।

सौ अेक दिन वै संत ताखौ राखनै आपरौ छेहलौ ग्यांन सुणाय दियौ । अेक जाडा रोट में विस मिळाय खवाड़ दियौ। दीवांण तौ खातां ई लीलौ-चम पड़नै हे जठै ई ढिगली व्हैगौ।

पांच घड़ी रै उपरांत वौ नाहर राजा दीवांण नै बुलावण आयौ तौ उठै नीं साधू-संतां रा डेरा अर नीं ग्यांन री चरचा। दीवांण लीलौ-चम व्हियोड़ौ मरयोड़ौ सूतौ । राजा तुरत समझग्यौ । उणरी आंख्यां सै लारली बातां रौ चांनणौ व्हैगौ । पण अबै समझ्यां कांई कारी लागै । बरसां उपरांत उणरा रूं रूं में काळ हौकारां भरण लागौ । वौ वां संतां रै लारै रौ लारै मलापियौ । अेक अेक नै फाड़ न्हाकिया तौ ई उणरा जीव में सांयत नीं व्ही । दीवांण री ल्हास रै पाखती ऊभ अरड़ां अरड़ां रोवण ढूकौ। साधवां रा भेख में वां सांसियां रै रगत रौ अेक छांटौ के वांरै मांस री अेक ई बोटी होठां नीं लगाई । अैड़ा पापियां रौ तौ परस करयां ई पाप लागै ।

लीली-चम व्हियोड़ी मुड़दा-माटी सांम्ही पड़ी । आज तौ उणरौ रोज सुणणियौ ई संसार में कठै । जंगळ रै जीव-जिनावरां री बात तौ अळगी, रूंख, बांटकां रै फूल पांनां सूं आंसू रिसण लागा । तीखी सूळां धुराधुर सूं आंसूड़ा टपकण लागा । देखतां देखतां आखा जंगळ रा पंछी-जिनावर भेळा व्हैगा । देखण वाळी आंख्यां सूं आंसुवां रा धारौळा छूटण लागा ।

नाहर राजा नै सीख देवणियौ दीवांण बेजांन सूतौ हौ । अणछक ओळूं-दोळूं बैठा जिनावरां रै सांम्ही देखनै नाहर बोल्यौ: सगळा हित्यारां नै मारया तौ ई भाई रौ जीवणौ कठै ! अबै म्हारा जीवणा में धूळ । इणरै बिना सूरज नै म्हैं अेकलौ ऊगतौ

देखूं, अेकलौ चंदरमा री चांनणी निरखूं, अेकलौ फूलां नै हंसता जोवूं, अेकलौ वादळां नै बरसता देखूं अर अेकलौ नवा पांन अर नवी कूंपळां फूटती देखूं तौ अैड़ा जीवणा में कांई सार। इत्ता छिण ई वत्तौ जीवियौ सौ भाई रै साथै घात। सागै ई जीवण मरण रौ प्रण हौ। कोई भूल सूं ई भूल व्हैगी व्है तौ माफी चावूं। थां सगळां रै हाथां म्हां दोनां नै भेळौ दाग दिरीज जावै तौ औ जमारौ सुधरै। म्हारै मन री थोड़ी घणी पीड़ समझता व्हौ तौ अबै अेक पलक री ई ढील मत करौ।

पछै तौ साचांणी वै जिनावर अेक छिण री ई जेज नीं करी। रोवता रोवता चंन्नण री लकड़ियां भेळी करनै हांकरतां रथी चुणी। भाई नै खोळा में लेय नाहर रथी में वैठग्यौ। लांपौ देवतां ई रथी में सूरज सूं ई वत्तौ चांनणौ व्हियौ। धपळ धपळ नाडी री पाळ माथै रथी सिळगण लागी, जांणै धरती रौ कोई नवौ सूरज सिळगै।

उण रथी रै साथै जंगळ रौ आखौ सुख ई बळनै भसम व्हैगौ। सगळा पंछी-जिनावर भूखा-तिरसा ई वौ वासौ छोडनै ढळग्या। आखा रूंख ठूंठ बणग्या। हरियाळी सूखगी। सै फूल झड़ग्या। झील-तळावां रौ पांणी खूटग्यौ। जंगळ में दुख री लाय बरसण लागी।

अर उठी मिनखां री बस्ती में जंगळ रै इण दुख रौ अथाह हरख मनाइजियौ। सुख रा ढोल-नगारा घुरण लागा।

दूजै दिन राजा रै सूखा बाग रौ बनमाळी हांफतौ हांफतौ दरबार में हाजर व्हियौ। हाथ जोड़नै अरज कीवी — अंदाता, बधाई, बधाई।

दीवांण पूछ्यौ — किण बात री ।

तद बनमाळी कह्यौ — आंम रा जूंना ठूंठ रै दो नवी कूंपळां फूटी ।

नीं राजा नै विस्वास व्हियौ अर नीं दरवारियां नै । जाय जोयौ तौ बात साव साची । बनमाळी नै मूंडै मांगी बधाई मिळी । पण राजा बधाई दियां पछै गताघम में पड़ग्यौ । आं अणचींती कूंपळा रौ कीं म्यांनौ समझ में नीं आयौ ।

दूजै दिन राज रा सगळा जोसी अर पिंडत - ग्यांनियां नै भेळा कर इणरौ म्यांनौ पूछ्यौ । नीं बतायां सगळां नै ई अेकण सागै देस - निकाळौ । आ तौ नवी कळा व्ही । भेळा बैठ घणौ ई माथौ लगायौ, पण म्यांनौ कीं हाथै लागौ नीं ।

इण भांत पिंडत - ग्यांनियां नै कळपतां देख अेक सोळै बरस री कंवारी किन्या वांरी खिखरां करती बोली — पीढ़ियां रै ग्यांन रौ उथलपाड़ौ कर लियौ तौ ई कीं सार लाधौ नीं । म्हनै राज - दरबार में ले चालौ, म्हैं इणरौ म्यांनौ बतावूंला ।

डूबतौ मिनख तिरता तिणका नै अपड़ण सारू झांपळियां मारै । पिंडत लोग भेळा होय उणनै दरबार में लेगा । उणरौ म्यांनौ सुणनै निपूता राजा रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । वा कह्यौ — आं दोनूं कूंपळां रै दो केरियां लागैला । निपूता राजा - रांणी दोनूं केरियां खावै तौ रांणी रै दसवै महीनै वेळौ व्है । दो राजकंवर जलमै ।

रांणी औ म्यांनौ सुण इत्ती राजी व्ही के हाथौहाथ हीरा - मोत्यां रौ थाळ भरनै बधाई में दियौ ।

सात दिनां पछै ई कूपळां री ठौड़ दो केरियां टिरती

दीसी । रुखाळा आंख्यां फाड़्यां आ इज बाट जोवता हा । आखड़ता पड़ता जाय बधाई सुणाई । राजा-रांणी न्हाटता आया । दोनूं जणा अेक अेक केरी खायली ।

छोरी री म्यांनी तौ साव साचौ । रांणी रै आसा मंडी । दसवै महीनै सूरज-चांद रै उणियार दो राजकंवर जलमिया । आखा राज में उच्छब व्हियौ । हरख बधाइजियौ ।

राजकंवरां रौ नांव दिरावण सारू रांणी उण छोरी नै ई बुलाई । वा तौ पूछतां ईं घोख्योड़ो व्है ज्यूं बोली — म्हारौ कैणौ मांनौ तौ आं राजकंवरां रा नांव दिरावौ — नाहर-सिंघ, बछराजसिंघ ।

राजा-रांणी तुरत मांनग्या । दोनूं राजकंवर जांणै चांद रा इज टुकड़ा । इदक सरूपवांन । अेक ई उणियारै । दिनां परवांण बधण लागा । तिल बधता जव बधै अर जव बधता तिल बधै ।

पगां हालतां ई राजकंवर तौ राजमैलां में घणा ढबता ई नीं । बारै कुदड़का मारता । कांकड़ में भंवता । समझायां किणी री बात यारै नीं करता । सांम्ही सवाल जबाब करता । पण दोनूं भाइयां में हेत अणूंतौ । माहौमाह कदै ई नीं खसता । नीं किणी बात सारू कजियौ करता ।

गिलोलां सूं पंछी मार मारनै ढिग कर देता । यूं नित बोछरड़ायां पछै अेक दिन वांनै नवी ई कुबद सूझी । पिण-घट सूं पाछी वळती पिणियारयां रा घड़ां माथै ताक ताकनै गिलोलां रा निसांणां साजता । घड़ौ फूटयां पिणियारयां झिझ-कती अर पांणी में तरबतर व्हैती तौ अळगा ऊभा ताळियां बजावता । कूदता । राजकंवरां नै ओड़ौ देवण री हीमत कुण

करै !

घणा दिनां तांई तौ बस्ती रा नीठ सबर राखी । पण सेवट राजाजी रै पाखती अरदास करण सारू हाजर व्हिया । राजा राजकंवरां माथै चिड़ियौ । थोड़ी घणी खीज दरसाई । पिणियारी दीठ राज री तरफ सूं पीतळ रौ ग्रेक ग्रेक भांडौ दिरवाय दियौ । बस्ती रा झट राजी व्हैगा । पण राजकंवर तौ धकै वळै कुबद विचारली । लवारां कना सूं बीजळसार रा तीर-कबांण बणवाया । अचूक निसांणा में तौ पारंगत हा इज । सूंसावता तीर छोडता जकौ भांडां रै आरपार । पिणियारचां रोवती बिलखती । बस्ती रा हैरांन । खासा दिनां तांई वळै सबर राखी । सेवट हाथ जोड़ फरियाद करणी पड़ी । सुणतां ई राजा रै झाळ झाळ ऊठगी । आडै हाथां लेय राजकंवरां नै घणा ई समझाया । राजकंवर नीची धूण करचां बोला बोला सुणता रह्या । राजा घर दीठ वळै नवौ भांडौ देवण रौ आदेस करचौ ।

राजा रै पछै दीवांण राजकंवरां नै सावळ समझाया । कह्यौ—अबै आप टाबर तौ हौ कोनीं । सोळै सोळै बरसां रा व्हिया । थोड़ौ घणौ विचार करणौ चाहीजै । लुगायां सूं इण भांत रोळचां करौ तौ राजाजी रौ कित्तौ भूंडौ लागै । राज संभाळण जोगा हौ । आपरौ मांन आपरै हाथै ।

दोनूं राजकंवर कह्यौ— रमण-खेलण रा दिन है, जकौ धूळ में रमा । म्हांरी मंसा तौ भूंडी है कोनीं । अर गादी रौ सूंप्यौ राज तौ कैड़ा गैला-गूंगा संभाळ लेवै । नवौ राज थरपां तौ मरदाई । हाल टाबर हां, टाबरपणौ करां । मोटा

व्हियां मतै ई समझ वापर जावैला ।

दीवांण तौ राजकंवरां री वातां सुण सुणनै इचरज करतौ रह्यौ। राजकंवर तौ इत्ती समझाइस पछै ई कुबांण छोडी नीं। दिन ऊगतां पांण छांनै राजमैल सूं ढळग्या । वौ ई घाट, वै ई पिणियारयां, वै तीर-कबांण अर वै ई निसांणा । राजा खुद घोड़ै चढ़यौ सांप्रत आपरी निजरां राजकंवरां रौ निसंडापणौ देख्यौ तौ जांणै सोर नै तिणग बताई । चार पांचेक कांबड़ियां सड़-काई । गाळियां काढ़ी । राजकंवर न्हास गिया ।

राजा मैल में आय थाळ ई नीं अरोग्यौ । सोचण लागौ के इण विचै तौ अऊत जावणौ घणौ सिरै। अैड़ा ओटाळ कीकर जलमिया। आज तौ औ मांमूली कैणौ ई नीं मांनै। कालै तौ वत्ती जोरावरी व्हियां म्हनै मार राज खोस लेवैला । रया री आंतड़ियां काढ़ लेवैला ।

वौ तौ रांणी सूं सला-सूत विचारयां बिना ई दीवांण नै वुलाय आदेस कर दियौ के अैड़ा नाजोगा कुमांणसां रौ वौ मूंडौ ई नीं देखणौ चावै। दोनूं चंडाळ सिझ्या पैली पैली देस-निकाळै ढळ जांणा चाहीजै ।

दीवांण तौ खुद अैड़ा ई आदेस री बाट न्हाळतौ हौ । उणरी तौ मनजांणी व्ही। काळा घोड़ा, काळौ ई संज अर काळा गाभा देय चरवादार नै सांम्ही भेज्यौ। सगळी बातां समझाय दी। चरवादार सोधतौ सोधतौ राजकंवरां रै पाखती पूगौ। पण इचरज री बात के देस निकाळा री बात सुण्यां ई राजकंवर तौ अंगै ई दुमना नीं व्हिया । वै तौ इणनै खेल सस्तै ई जांण्यौ । खांधै तीर कबांण लटकाय पागड़ै पग देय टप घोड़ां माथै बैठग्या।

चरवादार सूं जवारड़ा करनै अेड लगाई । जांणै राजा रै इणी आदेस री बाट जोवता व्है । राज रै लारै धूळ उड़ावता वै तौ मूंडौ करचौ उठीनै ई घोड़ा बगडावता गिया ।

घोड़ां रै खुरां छेती भांगतां कांई जेज लागै । दोनूं राज-कंवर तौ आपरौ राज छोडनै उजीण रा राज में वड़ग्या । मारग में अेक ठावकी बावड़ी आई तौ वै उठै बिसाई खावण सारू ढबग्या । बावड़ी सूं लगतौ ई आंम रौ अेक घेर-घुमेर तरवर हौ । घोड़ां नै वांध नीरचा । पछै खुद आंम खाय ठाडौ पांणी पीयौ । रात रात उठै ई ढबण रौ विचार करचौ ।

सावचेती आपरी । जांन सूं वत्तौ कांई जोखौ व्है । असेंधी ठौड़ सौ बातां रा डर । बारी आयां अेक भाई पोहरौ देवै अर अेक जणौ सूवै ।

नाहरसिंघ पोहरौ देवण लागौ । बछराजसिंघ पाज माथै ई लांबौ तांणनै सूयग्यौ । पोहरै ऊभौ नाहरसिंघ रात रा अंधारा में आपरै भाग रौ सूरज हेरण लागौ के धकै कांई व्हैला अर कांई नीं व्हैला । के अणछक आंम रै रूंख बैठी चकवी बोली — कै रे चकवा बात, ज्यूं कटै रात ।

चकवौ पूछयौ — घरबीती के परबीती ।

चकवी कह्यौ — घरबीती तौ भुगतां, जांणा । नित घर-विद री बातां करां । आज परबीती सुणावौ ।

नाहरसिंघ कांन देय सुणण लागौ । चकवौ परबीती सुणावतौ थकौ बोल्यौ — इण बावड़ी में अेक दैंत रैवै । वौ अबारूं भख सारू बारै निकळैला । बावड़ी रा पांणी में सात वळा खोळियोड़ी तरवार सूं कोई मांनखौ दैंत रौ चक्कर करै

तौ वौ पाछौ जीवतौ नीं व्है । दैंत रा रगत सूं तिलक करै सौ उजीण रौ राजा वणै । टीकी देवै जिणरै मूंडै सवा लाख री लालां खिरै ।

नाहरसिंघ तौ बात रै समचै ई म्यांन सूं पळपळाती तरवार काढ़ी । धमधम बावड़ी री नाळ उतरचौ । वाढ़ाळी नै सात वळा पांणी में खोळी । दैंत रै आवण री निसंक बाट जोवण लागौ ।

के अणछक पांणी में हरड़ाटौ माच्यौ । भंवरिया पड़ण लागा । चितकवरी भांत रौ जंगी दैंत बारै आयौ । वेंत वेंत लांवा दांत अर लांबा नख । खावूं खावूं करतौ फरड़ाटा भरण लागौ । सात सात पगोतिया फांदतौ बारै जावण लागौ के राजकंवर नाहरसिंघ लारै रौ लारै मलापियौ । भंवायनै तरवार री भाटकी सौ भोडक दस हाथ अळगौ जाय पड़्यौ । काळा लोई री तूंताड़ियां खळकती पगोतियां हेटै ढळण लागी ।

नाहरसिंघ खुद रै तौ काळा रगत री टीकी दी अर नींद में सूता भाई रै तिलक करचौ ।

आधी ढळचां बछराजसिंघ मतै ई जाग्यौ । पोहरा री बारी साजण सारू । दैंत री मौत अर उणरा रगत सूं बिरथा ओक्या नीं बैठ जावै, इण वास्तै नाहरसिंघ तड़कै सगळी बात बतावण री सोची ।

नाहरसिंघ सूयग्यौ अर बछराजसिंघ पोहरौ देवण लागौ । खांधै तीर-कबांण टेरचां चारूं कांनी भाळतौ अड़ीजंत ऊभग्यौ । आंम रै पाखती अेक खेजड़ी ही । उण माथै पंखेरुवां री हड़बड़ सुणीजी । बछराजसिंघ सचळियौ नीं रह्यौ । यूं ई उण

दिस सांम्ही खांचनै तीर वायौ । अेक जंगी गिरज लडीड़ करतौ हेटै पड़्यौ । बछराजसिंघ उणनै लेवण सारू ताचकियौ। तीर पांख रै लागनै रपटग्यौ । पण पांख खिरगी । खासी भली रगड़क ई लागी ।

न्हाटता मिनख रै पगां रा फटीड़ सुण्या तौ गिरज उडण सारू खपियौ । उडीजियौ कोनीं । सेवट टंवळियां खाय ढचूं ढचूं पंजां रै आपै दौड़ण लागौ । राजकंवर बछराजसिंघ ई लारै लारै न्हाटौ । खासी भांय तांई ।

गिरज तौ न्हाटतौ न्हाटतौ सूरजपोळ रै मांय होय उजीण नगरी में वड़्यौ । राजकंवर ई लारौ नीं छोड्यौ । पोळ रै पाखती आतां ई अणगिण मांनखा री भीड़ देख राजकंवर ठम-ग्यौ । उणनै देखतां ई लोग-बाग ओळा-दोळा ऊभ खम्मा-घणी, खम्मा-घणी करण लागा । दीवांण री सांनी रै समचै चार हाजरिया उणनै चंवर ढुळावण लागा ।

देवलोक व्हिया राजा री बैकूंठी रै पैला नवा राजा रौ राज-तिलक व्हैणौ हौ । राजा निपूतौ हौ । सूरजपोळ सूं बारै जकौ ई पैलो मांनखौ मिळै, वौ ई उजीण रै सिंघासण रौ धणी ।

राजकंवर बछराजसिंघ रौ तीर सेवट इण भांत ठांणै लागौ । वौ भाई सूं मिळण सारू घणा ई लालरयि लिया, पण लोग मांन्या कोनीं । हाका-धाकां सोना रा रथ में बैठाय राज-तिलक करण सारू लेयग्या । भाई नाहरसिंघ बिना उणरौ राज-सिंघासण माथै ई मन नीं लाग्यौ । राज-तिलक रै पछै सोळै घोड़ां रौ रथ जुताय भाई नै लावण सारू गियौ तौ वौ

उठै नीं लावौ ।

तड़कै नाहरसिंघ ऊठ्यौ । पोहरै ऊभ्या बछराजसिंघ नै सगळै हेर्‌यौ, पण उणरौ कीं पतौ लागौ नीं । निस्चै कीं न कीं घात व्हियौ दीसै । दैंत रै कड़ूंबा वाळा हाथौहाथ बदळौ ले लियौ । अबै सोच करियां कांईं व्है । तौ कांईं चकवा वाळी वात झूठी व्है जावैला । व्हैणी तौ नीं चाहीजै ।

भाई रै खोजां खोजां वौ नगरी कांनी वहीर व्हियौ । चार घड़ी में ईं माया बदळ जावैला, वौ आ बात नीं जांणी ही । मन में विस्वास होवण लागौ के भाई है तौ साजौ-सूरौ । दैंत रौ रगत धुळियां पछै वौ बावड़ी रौ पांणी नीं पीयौ । उणनै तिरस जोरदार लागी । सूरजपोळ रै पाखती भाई रा खोज रमग्या । दूजा अणगिण खोज हा, पण बछराज-सिंघ रा खोज नीं मिळ्या । नाहरसिंघ सोच्यौ के नगर में जाय, पांणी पीय पछै भाई री सोय करैला । सूरजपोळ में वड़तां ईं अेक बांणिया री हवेली ही । पाखती ई वाड़ौ हौ । बांणियौ भैंस्यां नै चारौ चार फिळौ देवतौ हौ के नाहरसिंघ पांणी पीवण रौ कह्यौ । बांणियौ उणनै आपरै सागै हवेली में लेग्यौ । नाहरसिंघ नै चांतरी माथै बिठांण खुद मांय पांणी लावण सारू गियौ ।

नाहरसिंघ मूंडौ धोय कुरळा करनै खंखार थूक्यौ । बांणिया री निजर यूं ईं अजांण में खंखार सांम्ही पड़ी । उणनै इचरज व्हियौ के खंखार यूं लाल रै उनमांन कांईं पळकै । लुळनै जोयौ तौ साचांणी लाल ज्यूं लखायौ । हथाळी में लियौ । आ लाल तौ सवा लाख सूं किणी भाव कम नीं । आज तौ नांमी

बरगत व्हौ । औ बटावू कीकर ई हवेली ढबै तौ बात वणै । बांणियौ इणी आळोच में पड़ग्यौ ।

नाहरसिंघ नै ई चकवां री बात रौ हाथौहाथ परचौ मिळग्यौ । जद खेंखार रै मिस लाल वाळी बात साची निकळी तौ राजा वाळी बात ई साची निकळैला इणमें कीं मीनमेख नीं । थोड़ा दिन न्यारा होय दुनियां रौ ढंग-ढाळौ जोवां तौ सावळ ।

बांणियौ तौ बटावू री जात-खांप ई नीं पूछी । रोटी री मनवार करनै ढाबियौ । वेटी नै खेंखार री भुळावण देय खुद बारै जाय अेक बूढ़ा पिंडत नै सागै लायौ ।

उणरै मोट्यार वेटी ही । गोरी अर रूपाळी जांणै सोना री इज पूतळी । बांणियौ पैला बात करी तौ नाहरसिंघ सात्र नटग्यौ । पण बेटी रौ रूप देख्यां वौ ना नीं करी । पिंडत नै तौ पाटी पढ़ाय लायौ ई हौ । लपौलप फेरा खवाड़ आपरै घरै गियौ परौ ।

बांणियौ तौ थूक्योड़ा खेंखारां रौ ताखौ राखतौ । सवा लाख री लालां भेळी करतौ । उणरै हरख रौ पार नीं हौ । राजकंवर ई रूपाळी वींदणी में मगन हौ । बांणिया री वेटी ई अणचींत्यौ सरूपवान भरतार पाय राजी ही । पण घर में अेक जणौ राजी नीं हौ । वौ हौ बांणिया रौ अेकाअेक वेटौ । अणूंतौ विडरूप । काळौ दटीड़ । कांणौ । डोळौ गींडोळा री गळाई उफसियोड़ौ । दांत पीळा । अेक दूजा रै माथै चढ़ियोड़ा । नाक फींडौ अर चिपियोड़ौ । रावण-खंडौ । आंगळ डोढ़ेक लिलाड़ । धापड़-पग्गौ । जैड़ौ काळौ डील वैड़ौ ई काळौ मन । मळीच

अर बोदा सुभाव रौ ।

ग्रैडा उणियारा नै कुण बेटी दे । आंधी लुगाई रै सांम्ही ई उणरी विडरूपता नीं लुकै । छोटी बैन रै इण अणचींत्या व्याव सूं वौ अंगै ई राजी नीं व्हियौ । सांम्ही मांय रौ मांय गोटीजियौ । वडो भाई कंवारौ अर छोटी बैन परणीजगी । आ बात उणनै खारी आक ज्यूं लागी । वौ निसंडौ होय बाप कनै गियौ । फूटोड़ा चंग री दाई भरर भरर कैवण लागौ — म्हनै परणावण री तौ तिथ ई छोड दी दीसै । पछै म्हारै वास्तै तौ इण कमाई अर जीवणा में धूळ । बाई सारू तौ तेवड़ियां पछै पलक ई नीं लागी । थांरौ मन पाधरौ व्है तौ अेक री ठौड़ दो ब्याव व्है सकै ।

बाप कह्यौ — आखै चौखळै निवग्यौ, कोई बेटी वाळौ हांमळ ई भरै जद । म्हारी तौ लुळ लुळनै कड़ियां ईं दूखण लागी अर थूं औ जस देवै । म्हैं खुद घणौ ई कळपूं, पण जोर कांई करूं । थनै कोई जुगत के उपाव सूझ्यौ व्है तौ वता ।

बेटौ तौ जुगत विचारनै आयौ ई हौ । निसंक बताय दी । कह्यौ — डावड़ा री ठौड़ कंवरसा नै बताय फेरा धुराधुर वांरै साथै खवाड़ दौ । म्हनै कीं उजर कोनीं । सीख रै पछै घरै आयां साचेलौ धणी तौ म्हैं हूं इज । पर घर में कंवरसा नै सावळ समझाय दीजौ के फेरा खायां म्हारी वींदणी नै उण रात बैन सस्तै ई जांणै । कोरा-मोरा फेरां सूं कांई व्है । मांयली बात तौ अपां जांणा ।

बाप ऊंडौ विचार करचौ तौ आ बात उणरै हीयै ई

ढूकगी । दोरा-सोरा कंवरसा नै मनाया । नीठ राजी करचा । उणरौ रूप देख्यां कुण हांमळ नीं भरै । नैड़ा नैड़ा चौखळा में तौ सै ओळखता हा । अळगै दिसावर तोजी बैठगी । समाजोग री बात के अेक लखपति सेठ कमाई करनै उजीण ढूकौ । आं सेठां रै घरै ब्याळू करची । रातवासौ लियौ । राजकंवर नै बतायां सगपण व्हैगो । सावौ भेजण रा कोल-वाचा व्हियां बेटा रा मन में सांयत वापरी ।

सेठ घरै पूगतां ई आपरौ कौल पूरौ निभायौ । अठी वाप बेटा दोनूं सावा री बाट जोवता ई हा । अनूठी जांन चढ़ी । साचैलौ वींद घरै रह्यौ । थाट-बाट सूं गाजां-बाजां ब्याव व्हियौ । वींदणी घरै आई । राजकंवर नाहरसिंघ तौ उठा लग री ई वींद हौ । नणद मांडनै बात समझाई तौ वींदणी री माथौ भंवग्यौ । वा तौ साचै मन राजकंवर नै ई आपरौ धणी करनै मांन्यौ हौ । औ कांई घात व्हियौ । इण असैंधी ठौड़ कांई जोर करै ।

वींदणी गोडां बिचै माथौ देय रंग-मैल में गुम-सुम वैठी ही—घी री पीलजोतां रै बिचाळै । अणछक किणी रै पगां रौ भणकारौ सुण घांटी ऊंची करनै जोयौ । इण विडरूप जिनावर माथै निजर पड़तां ई पैला तौ वा डरपी, पण पछै आपौ संभाळ लियौ । इणनै तौ मरचां ई धणी करनै नीं अंगेजै । चंडी रौ विकराळ रूप धरनै भचकै ऊभी व्ही । धड्डा देय रंग-मैल सूं बारै काढ़्यौ । नाळ आवतां ई खांचनै लात री जरकाई सौ वौ वींदणी री कोडायौ गड़िद गड़िद गुड़तौ काठै आंगणै आय पड़्यौ ।

आधी ढळियां बाप नाळाछोड करण सारू बारै आयौ। नाळ रै पाखती किणी रौ टसकणौ सुण हळफळायौ होय उठी गियौ। जाय संभाळियौ तौ आपरौ इज बेटौ। हाथ झाल उठाणियौ। बिना पूछ्यां ई साची बात समझग्यौ। कह्यौ— बेटा, म्हैं तौ पैला ई औ परवांणा जांणतौ हौ। पण थारौ मन राखण सारू ओड़ौ नीं दियौ। बापड़ी वींदणी रौ चूक व्है तौ उणनै समझावूं ई।

बेटौ टसकतौ टसकतौ ई बोल्यौ—चूक तौ सगळौ म्हारौ इज है। हाथां विस देय मार न्हाकौ तौ थां सगळां रौ काळजौ ठरै। थांनै गनौ है तौ माया सूं है। सवा लाख री लालां रै लोभ बेटा सूं ई जंवाई वत्तौ व्हैगौ। म्हारी कुण गिनरत करै।

बाप कह्यौ—थूं कह्यौ ज्यूं करयौ पण वींदणी नीं धारै इणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं।

बेटौ कैवण लागौ—नीं थें लालां रौ लोभ छोडौ अर नीं बैनोईसा सिधावै। वै नीं सिधावै जित्तै म्हारी विडरूपता लाडी री आंख्यां में खड़कै। बैनोईसा घर नीं छोडै जित्तै म्हारौ पसवाड़ौ ई नीं फिरै।

बाप कह्यौ—बेटा, माया जोड़ण सारू ई तौ मिनख-जमारौ मिळै। थूं थोड़ी घणी तौ अकल लड़ा, घरै आई लिछमी नै कीकर तगड़दां। थारी औड़ी बोदी अकल तौ नीं जांणी ही।

"म्हनै अेक बात रौ जबाब दो के मरयां माया साथै चालै के लारै छूटै। माया मिनख रै वास्तै सुख रै बधापा

सारू व्है के दुख भुगतण सारू ।"

सेठ जबाब दियौ — बेटा, आ माया तौ मरयां पछै ई आतमा में सुख उपजावै । थूं म्हारी इण सीख नै गांठ बांधलै के मिनख रा सगळा सुख माया जोड़णा में इज है ।

बेटौ तौ बाप री कीं कुरब-कायदौ राख्यौ नीं । उणरी तौ रग रग में कदैई नीं बुझण वाळी लाय लाग्योड़ी ही । बोल्यौ — जे माया में ई मिनख रा सरब सुख बसै तौ घर में इत्ती माया व्हैतां थकां ई म्हारा मन में सुख उपजियौ तौ कोनीं । म्हैं जांणूं जका सुख वास्तै घर री आखी माया लुटाय दूं तौ ई थोड़ी ।

सेठ धुरकारनै बोल्या — रूप रा देवाळा साथै, थारी अकल रौ ई देवाळौ निकळग्यौ दीसै । थोड़ा तौ सोच-समझनै बोल काढ़्या कर । म्हारै सांम्ही जे दूजी वळा अैड़ी बात करी तौ थूं थारी जांणै ।

बेटौ ई समझग्यौ के आं तिलां में तेल नीं । बाप तौ माया आगै कोई सुख नीं जांणै । खुद नै ई कीं जुगत विचा-रणी पड़ैला । बतायां रांझौ पड़ सकै । वौ टसकतौ टसकतौ वहीर व्हैगौ । बैनोईसा वाळौ फंद कट्यां बिना बातड़ी नीं वणैला ।

बाप सूं छांनै वौ नगर री तीन चार टाळकी दूतियां गोडै जाय सला-सूत विचारी । अेक दूती हांमळ भरी के वा ज्यूं-त्यूं औ कांम भरै पटकैला ।

राजकंवर नाहरसिंघ रा मन में उडण-खटोळै बैठ उडण री अणूंतौ कोड हौ । दूती बात-चीत में आ सोय करली ।

उडण-खटोळा सारू उणरौ मन ताखड़ा तोड़तौ । तीरथां रौ ओळावौ लेय अेक दिन सगळा सूं छांनै वा राजकंवर नै साथै बैठांण आकास में उड ई गी । राजकंवर ई इण बंधोकड़ी सूं काठौ कायौ व्हैगौ हौ । मुगत गिगन में उडण-खटोळै उडणा सूं उणरै हरख रौ पार नीं रह्यौ । उणरै मन रौ आणंद हवा रै रेसा में रमग्यौ ।

दूती सात समंदरां पार अेक टापू माथै उडण-खटोळौ उतारचौ । उठै अेक सोना रौ मिंदर हौ । ऊगता सूरज री किरणां सूं उणरी छिब खुलगी, जांणै संमदर रै तळा सूं कोई दूजौ सूरज परगट व्हियौ । आ अनूठी छिब निरख राजकंवर री दीठ सुफळ व्ही । चारूंमेर सांवळा पांणी रौ अथाह अर अनंत दरियाव । वेकळू मलमल रौ टापू । मलमल रै मांय सोना रा कण दमकै । निगोट खरा सोना रौ रूपाळौ मिंदर । मिंदर रै सांम्हौ-सांम खासी भांय माथै अेक वैड़ौ ई टापू । उण माथै सोना रौ सतखंडियौ महल । सूरज री किरणां री परस पाय पळक पळक करै ।

राजकंवर सोच्यौ के इत्ता बरस बिरथा जूंण गमाई । दुनियां में कैड़ी अनूठी चीजां । देखण री हूंस चाहीजै । के अणछक दूती बोली — आप जी भरनै आ छिब निरखौ, म्हैं मिंदर में जाय भगवांन रा दरसण करनै आवूं ।

राजकंवर तौ कीं जवाब नीं दियौ । वौ तौ आपरा नसा में ईं डूबोड़ौ हौ ।

दूती दरसण करण सारू मांय गी । पण मांय अंधारौ ई अंधारौ, निपट अंधारौ । हाथ नै हाथ नीं सूझै । जांणै अंधारा

रौ ई मिंदर व्है ।

वा पाछी आय राजकंवर नै कह्यौ के ठेट आय भगवांन रा दरसण करणा में कांई बेजा बात । बणावण वाळौ कोई मिंदर ई बणायौ, तद देखण में कांई जोर पड़ै ।

राजकंवर ऊपरला मन सूं मिंदर रै मांय गियौ । मांय तौ वौ इज अंधारौ । पण राजकंवर नै औ अंधारौ ई अणूंतौ सुहावणौ लागौ । सूरज रा उजास सूं इण अंधारा री छिब कम नीं ही । नीं आकार, नीं रंग अर नीं रूप । देखतां थकां ई कीं नीं दीसै । राजकंवर खासी ताळ तांई अंधारा री छिब निरखतौ रह्यौ ।

पाछौ आय देख्यौ तौ टापू माथै नीं उडण-खटोळौ अर नीं दूती । राजकंवर सोच्यौ के थोड़ी ताळ में पाछी आय जावैला, पण पाछी आवै तौ वा दूती ई कांई । राजकंवर टापू माथै घूमतौ रह्यौ अर रात पड़गी । भांय भांय करतौ समंदर । चारूंमेर झांखरियौ तिगू-मिगू उजास । अंधारा रै सागै सोसनी आभा सूं तारा झांकण लागा । राजकंवर मगन होय कुदरत रौ रूप निरखतौ रह्यौ । के अणछक राजकंवर नै अंधारा रौ अेक खुणौ सिळगतौ ज्यूं लखायौ । तर गुलाबी झाळां रौ गोट ज्यूं भळकियौ । अंधारा री कूख उघाड़ तेरस रौ चंदरमा परगट व्हियौ । झीणी चांदणी पाथरगी । चांद तर तर ऊंचौ चढ़ण लागौ । त्यूं त्यूं चांदणी वत्ती उजळती गी । सोना रौ पीळौ-पट्ट मिंदर नींद रा सपना ज्यूं ऊभौ हौ । कुदरत रा इण रूप नै निरख मरणौ ई घणौ सिरै ।

सांम्ही सतखंडियौ महल पळकत हौ । राजकंवर तौ

आपरी सुध-बुध पांतरग्यौ । वौ तौ भली सोची नीं कोई भूंडी, अथाग पांणी में धेंग देय उण महल कांनी तिरतौ तिरतौ जावण लागौ । उणरै मन हूंस ई समंदर रा पांणी जित्ती अथाग ही । अैड़ी हूंस वाळौ धणी तौ समंदर रा समंदर फाड़ पार व्हे जावै, पछै आ भांय ई कित्ती ही । राजकंवर छपाक छपाक तिरतौ दूजोड़ा टापू माथै आय धमकियौ । सतखंडिया महल रै झिरोखां री कोरणी इदक ही । मांय जड़्या हीरा-मोती तारां रै उनमांन पळक पळक करता हा ।

अेक झिरोखा में बैठी देंत री बेटी कणाकली राजकंवर री लीला देखती ही । राजकंवर तिरनै टापू माथै आयौ तौ वा किंवाड़ खोल हेलौ मार्‌यौ । राजकंवर चकन-बकन होय महल रै मांय गियौ ।

आडौ जड़्यां महल रै मांय ई मिंदर रै उनमांन ई निपट अंधारौ व्हैगौ । पण राजकंवरी रौ रूप सुभट दीसतौ हौ । सोनल केस । चांद रै उनमांन पळकतौ उणियारौ । आपरै आपै इण रूप नै पळकाय दुनियां रौ सगळौ अंधारौ सारथक व्हियौ ।

वा देंत री बेटी तौ सिरैपोत औ इज सवाल कर्‌यौ— सांप्रत मौत रै मूंडै थें कांई सोचनै आया ?

नाहरसिंघ कह्यौ— इण संसार में मौत कठै नीं है ! अर औ रूप निरख्यां मौत अेकर छोड सौ वळा आवै तौ ई कबूल ।

पछै देंत री बेटी निरांत सूं आखी बात बताई के इण टापू माथै उणरौ बाप देंतराज वास करै । बारह नै बारह चौबीस कोस तांई चिड़ी रौ जायौ ई जीवतौ नीं छोड्यौ । अबारूं अलंघां री भांय भख सारू गियौ । हवा रै वेग जावै

नैं हवा रै वेग आवै । सूरज री किरण रै समचै अठै आयौ रैवैला । राजकंवर नैं आतां ईं अेक गपळका में गिट जावैला । मिनख रा तौ रूंगता माथै ई विस्वास नीं करै । बेटी री कोई बात नीं टाळै, पण मिनख रौ भख नीं करण री बात तौ उणरी ई नीं मांनै । ब्याव री बात करतां ईं देंतराज रै झाळ झाळ ऊठै ।

आखी रात दोनूं जणा सतखंडिया मैल री छात माथै बैठ तेरस री चांदणी रौ इमरत पीवता रह्या । वंतळ करता रह्या । देंतराज रैं आवण री वेळा राजकंवर नैं मेण-माखी बणाय झिरोखा रै चेप दी ।

सूरज री किरण रै समचै देंतराज हौकारां भरतौ टापू माथै आयौ । बांस जैड़ौ ई पतळौ अर दोय बांस लांबौ । चांम मंढ़ियोड़ी हाडकियां टिरै । माथौ ई आल ज्यूं पतळौ अर डीगौ । आंख्यां अर मूंफाड़ ऊभी चिरीजियोड़ी । पण इण तख-तूळी जैड़ा डील में करार इत्तौ के हाथी नैं आंगळी माथै घुमाय दे । हथाळियां में भींच हाथी रौ पिदड़कौ काढ़ दे ।

महल में आवतां ईं देंतराज धड़ूकियौ — मांणसियौ गिंधावै, मांणसियौ गिंधावै ।

बेटी आंमनौ जतळावती रीस खाय बोली — भख हाथै नीं आयौ तौ दूजा ओळावा क्यूं लेवौ । म्हनैं खाय पूरी करौ तौ जिद छूटै । नित री देण तौ मिटै । समंदर में मच्छियां ईं नीं छोडी, जकौ अठै मिनख रौ तौ सांढ़ौ ई कांई । चला-यनैं कोई मौत रै मूंडै क्यूं आवैला । इत्ती तौ अकल लड़ाया करौ ।

दैंतराज कह्यौ — अकल व्हैती तौ औ राकस जमारौ क्यूं मिळतौ ! थूं नीं मांनै तौ थारी मरजी, पण आज इण महल में मिनख री असेंधी वास अवस आवै ।

दैंतराज धुड्ड होयनै आयौ हौ । आवतां ई सोना री लांबी गडाळ में सोना रा पिलंग माथै सूयग्यौ । आंख झपण लागी ई ही के डुस्कियां री भणकारौ सुणनै झिझकियौ । बेटी रोवै अर डुस्किया भरै । दंतराज पूछ्यौ के बात कांई व्ही ।

तद वा रोवती रोवती ई बोली — थें अलंघां री भांय अळगा ई अळगा भख सारू जावौ । लारै अेकली कीकर रात काटूं, म्हैं जांणूं के आकास रा नखत जांणै । थांरै कोई घात व्हैगौ के कोई मार न्हाकिया तौ म्हारा कांई हवाल व्हैला ।

दैंतराज चील री गळाई चिराळी करनै हंसियौ — खोद्यौ डूंगर नै काढ्यौ ऊंदर । म्हैं जांण्यौ के बात कीं अैड़ी व्हैला, जिण सूं थनै रोज आयौ । म्हारी मौत रै वास्तै तौ थूं सपना में ई चिंता मत कर । म्हनै खुद जमराज तेवड़ै तौ ई मार नीं सकै ।

बेटी कह्यौ — म्हनै तौ विस्वास नीं व्है । जलम रै साथै मौत रा आंक तौ व्है इज । मौत रै टाळ मौत सूं कोई नीं बच सकै ।

बेटी किणी भाव नीं मांनी तौ सेवट दैंतराज आपरी मौत रौ भेद बतायौ । सोनल मिंदर रै मांय समंदर रै तळै अेक भंवारौ । उण भंवारा रै मांय सात ताळा जड़्यौ अेक रींछ । रींछ रा पेट में अेक मिन्नी । अर मिन्नी रा पेट में अेक कमेड़ी । उण कमेड़ी में दैंतराज रौ जीव बसै । नीं तौ कोई उठै पूगै

अर नीं देंतराज मरै ।

बेटी नै विस्वास व्हैगौ तौ ई दरसायौ कोनीं । दूजै दिन सिंझ्या व्हैतां ई देंतराज भख सारू बारै निकळियौ तौ बेटी मंतर फूंक राजकंवर नै पाछौ मिनख बणाय देंतराज री मौत रौ भेद बताय दियौ । राजकंवर तौ पछै कों ढील नीं करी । नागी तरवार अर देंतराज री बेटी नै साथै लेय मिंदर रै मांय वड़्यौ । देंतराज री बेटी खुद नांमी तेरू ही । मिंदर वाळा अंधारा में देंत री बेटी सिवाय किणी दूजा चांनणा सूं उजास नीं व्हैतौ । उणरा डील रै चांनणै वौ ठेट तळा रा भंवारा में गियौ । सातूं ताळा तोड़ देख्यौ तौ साचांणी रींछ ऊभौ चरै ।

राजकंवर सिरैपोत रींछ री झटकौ करचौ । पछै पेट चीर मिन्नी काढ़ी । मिन्नी रौ पेट चीर कमेड़ी आपरै कावू करी ।

कमेड़ी रा पंजिया झाल राजकंवर नाहरसिंघ बारै टापू माथै आयौ तौ समंदर हिबोळै चढ़चोड़ौ हौ । बांसां-छेक तूफांन ऊठ्यौ । सात सात बळ खावतौ, हौकारां भरतौ देंतराज खावूं खावूं करतौ आयौ । टापू माथै आवतां ई रीस में दांत पीसतौ बोल्यौ — बेटी ई बाप साथै घात करै तौ पछै किण माथै विस्वास व्है ।

बेटी राजकंवर रै सांम्ही देख बोली — अबै जेज कांई वात री । कमेड़ी नै नीं मारी तौ अबारूं थांनै मसळ न्हाकैला ।

राजकंवर तौ खुद तल्लै-मल्लै सावचेत हौ । कमेड़ी री अेक टांग तोड़नै अळगी वगाई तौ देंतराज री टांग साथळ मांय सूं तूटनै खिरगी । वौ तौ ई सारै नीं रह्यौ । अेक टांग माथै

ई कूदतौ कूदतौ राजकंवर नै मारण सारू ताचकियौ ।

राजकंवर दूजोड़ी टांग तोड़ी तौ देंतराज री दूजोड़ी टांग ई तूटगी । वौ मरता सिंघ री गळाई अरड़ायौ । च्यारूंमेर उण अरड़ाटा रौ पड़साद सुणीजियौ । हवा रा रेसा चीरीजण लागा ।

देंतराज डाढ़ियौ — बेटी, म्हैं थारै माथै भरोसौ करनै भेद बतायौ हौ । बाप साथै औ कांई छळ करयौ ।

राजकंवर कमेड़ी री घांटी मरोड़ी तौ देंतराज है जठै ई लांबौ व्हैगौ । थोड़ी ताळ तांईं लटपट लटपट करनै मरग्यौ । उणरै मरतां ई समंदर रौ तूफांन मिटग्यौ । सरणाटौ छायग्यौ । पांणी अर हवा जांणै अेकण ठौड़ ठमग्या व्है ज्यूं ।

देंतराज रै मरचां अेक अनूठी बात वळै व्ही के मिंदर अर सतखंडिया महल रौ अंधारौ लोप व्हैगौ; रात रै सागै पाछौ परगटै अर सूरज रै सागै विणसै ।

राजकंवर देंतराज री माटी नै समंदर में थरकाय जळ-दाग दे दियौ ।

अगन-देवता रै ओळूं-दोळूं फेरा खायनै देंतराज री बेटी राजकंवर रा गळा में वरमाळा घाल दी ।

राजकंवर आपरै जीवण री लारली बातां कंवरांणी नै ठेट सूं विगतवार बताय कह्यौ के दूती रौ छळछंद इण भांत भरै पड़ैला, आ सपना में ई नीं सोची ही ।

आणंद अर सुख सूं चांनणी अर सूरज रा उजास में दोनां रा दिन घुळण लागा, जांणै वांरा सुख वास्तै ई चंदरमा अर सूरज ऊगै । पण सुख-दुख, हरख-विसाद अर संजोग-विजोग

रौ अतूट सांढ़ौ । अेक दूजा बिना कोई संपूरण नीं ।

अेक दिन सोनल-वरणी कंवरांणी झिरोखा में बैठी सोना री कांघसी सूं केस सुळझावती ही । तूट्योड़ा केसां रौ कोयौ हेटै फेंक्यौ तौ अेक उडती चील उणनै झांप लियौ । जोग री वात अैड़ी ठयी के वा चील उडती उडती पाधरी उजीण नगरी पूगी । अर राजा रा महल में जाय वौ कोयौ राळ्यौ । इण उपरांत ई जोग माथै जोग अैड़ौ बण्यौ के वौ सोनल कोयौ राजा रै हाथ लागौ । वौ खासी ताळ तांई इचरज सूं उण कोया नै भाळतौ रह्यौ । सांप्रत सोना रा केस । दुनियां में सोना रै केसां वाळी कोई लुगाई व्है सकै कांई !

राजकंवर बछराजसिंघ राज रै केई दीवांण अर केई पारखियां नै केसां रौ कोयौ बतायौ । कोई कह्यौ के किणी खांमची सोनार री कारीगरी दीसै के वौ हूबौहूब केसां री नकल करी। कोई कह्यौ के साचैली लुगाई रै केसां रौ कोयौ है ।

राज री टाळकी दूतियां नै भेळी करी । वांनै म्यांनौ पूछ्यौ तौ वै ई बधबधनै नै कह्यौ के जे अै किणी लुगाई रा साचैला केस नीं व्है तौ माथा कलम कराय दे ।

राजकंवर सोच्यौ के जिण लुगाई रा केस अैड़ा है तौ वा खुद कैड़ी रूपाळी व्हैला । ब्याव ई व्है तौ, इण सागै व्है । नींतर इण राज, इण सुख, इण माया अर इण राजमद में धोबां धोबां धूळ ।

आखा राज में ढूंढियां पिटाय नांमी सूं नांमी अर चात्रंग सूं चात्रंग दूतियां नै भेळी करी । राजा खुद आपरै मूंडा सूं आदेस करयौ के जकौ ई दूती इण केसां वाळी अपछरा नै लेय

आवैला उणनै मूंडै मांगी बगसीस मिळैला ।

दूतियां नै वांरा गुण अर लखण पूछ्या तौ केई जणियां कह्यौ के वै पांणी माथै रा खोज पिछांण ले । केई कह्यौ के आकास रा तारा तोड़ लावै । केई कह्यौ के सिंघणी नै धीजाय दूध काढ़ लेवै । अेक जणी कह्यौ के वा जच्चा री कूख सूं टाबर काढ़ लेवै तौ ई पतौ नीं पड़ण दे ।

सगळा जणा सला-सूत विचारनै इण दूती नै औ कांम सूंप्यौ । वा दूती बूढ़ी खंखर । रूपा रै उनमांन धवळ केस । दोवड़ी कमर । घांटी डिगमिगै । काळा दांत अर काळा ई मसूड़ा । आंख्यां लरड़ी जिसी भोळी । नाक रै माथै लांठौ काळौ मस्सौ । गळा रै तूंहड़ा जित्ती मेद । मन करै जणा ई ठळाक ठळाक रोय ले । अर मन करै जणा ई हंस ले । मौका परवांण रोवणौ अर हंसणौ साथै ई कर ले । भांत भांत री बोलियां काढ़ लेती । साच सूं ई वत्तौ धीजावै वैड़ौ कूड़ बोलणौ जांणती ।

वा दूती केसां नै सूंघ तुरत आ सोय करली के मिच-मिचा खार री बोय रै कारण आं केसां री धणियांणी समंदर रै बिचाळै वास करै ।

वा अेकली ई उडण-खटोळौ लेय उडी । सात दिन अर सात रात तांई चकारा देवती फिरी । सेवट सोय करती करती उण इज टापू रै माथै आधी ढळियां उतरी । वेकळू मलमल में उडण-खटोळौ दूर सतखंडिया मैल रै पाखती आय अरड़ां अरड़ां रोवणौ मांडियौ । रोज अैड़ौ तीखौ अर खारौ के अेकर सुण्यां सांप री आंख्यां में आंसू उमड़ आवै ।

राजकंवर नाहरसिंघ अर कंवरांणी हीरा-मोत्यां रै चांनणै चौपड़-पासा रमता हा । रोज सुणतां ईं वांरौ काळजौ चीरीजण लागौ । हळफळाया होय झिरोखा लग न्हाटता आया । पूछ्यौ के आ रोवण वाळी कुण है अर किण खातर रोवै । पण रोवण वाळी तौ कीं सुण्यौ नीं कोई सांभळियौ । उणी भांत डाढ़ती री ।

पछै दोनूं जणा हेटै आय पूछताछ करी । निरी ताळ तांई हाथा-जोड़ी रै उपरांत वा रोवती रोवती ई बतायौ के देंतराज उणरौ सगौ भाई हौ । मरती वेळा रौ अरड़ावणौ सुण उंणरौ काळजौ बळग्यौ । तद सूं निरणी-तिरसी अठै आई । समझ नीं बैठी के उत्तौ जाब्तौ करचोड़ी कमेड़ी किणी रै हाथ आई तौ कीकर आई ।

वा दूती तौ भाई रौ नांव लेय लेय झुरावौ मांडियौ सौ वौ मांडियौ के उणनैं देख दोनूं जणा ई छबरां छबरां रोवण लागा । कीकर ई मनाय नोरा-थोरा कर भतीजी भूवा नै मैल रै मांय चालण सारू राजी करी । भुवाजी तौ अस्टपोर रोवै ई रोवै । । बोलै नीं कोई चालै । तीन दिन अर तीन रात तांई लगौलग ई रोवती री । नीं पांणी पीयौ अर नीं रोटी खाई । भतीजी मनवारां कर करनै हार थाकी ।

दोनूं जणा नै इक्कीस आंना विस्वास अर पतियारौ व्हियौ वा रोवती ढबी । भतीजी अेक पग रै पांण भुवाजी री हाजरी में ऊभी रैती । सेवा चाकरी करती । गूंथती । दबावती ।

अेक दिन भूवा कह्यौ — थूं तौ तरजन तरजन कर म्हारौ मन ई जीत लियौ । जावण सारू मन ई नीं करै । पण सेवट

जावणौ तौ पड़ैला ई । म्हारै ई लांठौ कडूंबौ अर भारीगरौ है । पोता पोतियां नित याद कर करनै रोवता व्हैला ।

जावण रौ सुण्यौ तौ भतीजी रौ मन अणूंतौ दुमनौ अर कुंद व्हैगौ । पण तौ ई आपरा मन री खातर कित्ताक दिनां तांई रोड़नै राखती । भूवा कह्यौ के चार-पांच महीनां पछै ग्रेक भळाकौ देय भतीजी नै संभाळ लेवैला ।

जावती वगत भूवा बूरचोड़ौ उडण-खटोळौ काढ़चौ । उडण-खटोळौ देखतां ई राजकंवर रौ मन डुळग्यौ । वौ घणौ वाद करचौ तौ भूवा मांनगी । चार-पांच दिन वळै ढबण री नीठ हांमळ भरी ।

राजकंवर अर कंवरांणी उडण-खटोळा में बैठ घणी ई सैल करी । दिन रा घूमता, रात रा घूमता । आखी रात चांनणी में तिरता । समंदर रै माथै चकारा देवता । भतीजी रौ मन तौ धापतौ ई नीं । ग्रेक दिन राजकंवर तीन रात अर तीन दिन रा ओजगा रै कारण खूंटी तांणनै सूतौ जकौ जगायां ई जाग्यौ नीं । तद उडण-खटोळा री कोडाई भोळी-ढाळी भतीजी भूवा रै साथै मांय बैठगी । भूवा कह्यौ के दो ग्रेक दिनां में उडण-खटोळौ चलावणा में पारंगत कर देवैला । सौ राजकंवर नै पूछचां-ताछचां बिना ई वा उडण-खटोळौ सीखण सारू भूवा रै अड़ौअड़ पाखती बैठगी । भूवा तौ बिना पांखां अर बिना उडण-खटोळै उडण वाळी दूती ही, सौ उडण-खडोळा में बैठ्यां पछै कांई ढील । वा तौ सणण सणण करती ऊंची चढ़गी । राज-कंवर ग्रैड़ौ पारंगत नीं हौ । भतीजो कह्यौ — इत्ता दिन बिरथा ई संकौ खायौ । उडण-खटोळा में बैठण रौ आणंद तौ आज

ई आयौ। हाल तौ वांनै ई सावळ चलांवणौ नीं आवै। वांनै ई थांरै जैड़ा पारंगत करदौ तौ नांमी कांम वणै। अबकी आवौ जद म्हांरै वास्तै अेक नवौ उडण-खटोळौ घड़ायनै लाजौ।

भूवा कह्यौ—अेक री भलां कही, थूं कैवै तौ सात खटोळा भेज दूं, इण सूं इदका इदका।

बातां बातां में दो तीन समंदर पार व्हैगा। तद भतीजी कह्यौ के अबै पाछौ वळणौ सावळ। पण भूवा तौ जांणै कीं सुण्यौ ई नीं। वा वळै कह्यौ। तौ ई भूवा कीं गिनरत नीं करी। वळै जोर सूं कह्यौ। अबै जावतां भूवा आपरा साचैला रंग में आई। मूंडौ मस्कोर बोली—पाछा जावण रा तौ सपना ई कठै। थारा बडभाग के उण सून्याड़ नै छोड थूं उजीण रै राजा री मांनेतण रांणी बणैला। म्हैं तौ छळबळ सूं थनै लेवण सारू आई।

भोळी भतीजी नै तौ ई चेतौ नीं व्हियौ। जांण्यौ के भूवा मिस्खरियां करै। बोली—वै बाट जोवता व्हैला। जाग्यां पछै म्हारै विना अेक पलक ई आवड़ैला कोनीं। कठै ई चित्त उपड़ग्यौ तौ सवाई व्हैला।

पण भूवा रै तौ कांनां में जांणै तेल घाल्योड़ौ व्है ज्यूं। वा तौ उडण-खटोळौ मोड़चौ ई नीं।

अबकी भतीजी रौ माथौ ठणकियौ। धूजता सुर में बोली: भूवाजी, थांरा सूं इण छळ री आस नीं ही। थांरै पगां पड़ूं म्हनै म्हारै ठायै पुगाय दो। म्हैं राजकंवर विना इंदरलोक रा राज नै धूळ सस्तै जांणूं।

भूवा मोसा री हंसी हंसती कह्यौ—बाप री हित्यारण,

थारै मूंडै आ बात ओपै कोनीं । थारा स्वारथ री खातर थूं गोठिया रै विळू बंध बाप साथै घात करचौ । अबै वत्तौ स्वारथ सरतौ व्है तौ इणनै छिंटकाय उजीण रै राजा रौ हाथ झाल ले । थनै कोई मेहणी नीं लागैला । म्हैं थारै जैड़ा तिरिया-चरित घणा ई देख्या, म्हनै कांई मंतरै ।

कंवरांणी घणी ई रोई, घणी ई कूकी पण दूती रौ हीयौ नीं पसीजियौ । वा तौ उजीण-नगरी री सोय उडण-खटोळौ मचकावती गी । वळै रीस में काळा दांत पीसती थकी कह्यौ — खबरदार, घणा ढपला करचा तौ थूं थारी जांणै । बाप नै मरावती वेळा जैड़ी काठी छाती करी, वैड़ी छाती इण हीणपुण्या राजकंवर नै छिटकावतां नीं कर सकै । नीं थूं इत्ती अबूझ है अर नीं म्हैं इत्ती भोळी । मन में तौ उजीण री महारांणी वणण सारू ताखड़ा तोड़ै अर ऊपरला मन सूं रोवण रा धूतर करै ।

कंवरांणी समझगी के आ डाकण तौ मरचां ई मांनैला नीं । हीमत अर आपा रै पांण विखा नैं झेल्यां ई इणरी फंद कटैला । रोयां कळपियां तौ निबळापणौ वापरैला । वा आंसू पूंछ माठ झेली । कह्यौ — म्हैं आपनै कांई सीख देवूं । आप म्हारौ भूंडौ थोड़ौ ई चींतौला ।

भूवा मुळकी । बोली — अबै जावतां अकल फिरी । लुगाई वास्तै तौ सोरौ अर सुखी राखै वौ ई धणी । थारा राजकंवर सूं ई उजीण रौ राजा घणौ सरूपवांन है । थूं किणी बात री चिंता मत कर । लारली बातां नै बिसार धकला छिण री सोय कर । लुगाई री आंख्यां अै कूड़ा आंसू ओपै कोनीं ।

भूवा री सीख सुण भतीजी मुळकण री चेस्टा करी । कै इत्ता में उडण-खटोळौ उजीण-नगरी रै राजमैल आय उतर्यौ। राजा परधै रै साथै इणी मंगळ-घड़ी री वाट जोवतौ हौ । दूती रै लारै लारै सोनल अपछरा छात री नाळ उतरण लागी तौ राजा उणरौ रूप निरख हाक्यौ-बाक्यौ रैग्यौ। बादळां नै छोड आ कोई बीजळी नाळ उतरै है के गिगन छोड कोई चांद नाळ उतरै ! सोना रा केस अर सोनल वरणी !

राजा आखतौ होय आगै बध्यौ । कंवरांणी री निजर राजा माथै पड़ी —— अरे, लारै छूट्यौ राजकंवर धकै कीकर आयग्यौ !

वा हरख में बावळी होय तीन तीन पगोतिया डाकती हेटै उतरी । पण पाखती आतां ई उणरौ भरम मिटग्यौ । राजकंवर सूं हूबौहूब मिळतौ उणियारौ हौ । पण उणरौ राजकंवर व्हैतौ तौ इण भांत असैंधी अर इचरज भरी मीट सूं नीं भाळतौ ।

कंवरांणी रै माथा में अणगिण सरप फुफकारा भरण लागा । राजकंवर सूं तौ सपना में ई मिळण रा फोड़ा पड़ैला ।

उजीण रौ राजा सोना रौ कोयौ बताय उण सोनल अपछरा नै सगळी बात बताई । रांम जांणै कंवरांणी नै कांई अकल सूझी सो मतै ई उणरै मूंडै अै बोल रळक पड़्या के छ महीनां तांई धणी रौ सोग पाळैला । जठा लग उणनै कोई नीं बतळावै । किणी न्यारा अेकांत महल में वा अेकली ई रैवैला । छ महीनां उपरांत ज्यूं राजाजी री मरजी व्हैला व्है जावैला ।

राजाजी तुरत उणरौ कैणौ मांन लियौ । बाग वाळा नौखंडिया महल में अपछरा रा डेरा दिराय दिया । दूती हजार मोहरां अर पांच गांव बगसीस में मांग्या सौ मिळग्या ।

राजा उण दिन सूं ई आंगळियां माथै अेक अेक दिन गिणण लागौ । हर आथमतै दिन राजा नै खुसी व्हैती के इण भांत अेक अेक दिन ढळियां छ महीना पूरा व्हैला । अर उठी हर ऊगतै परभात सोनल अपछरा रै हीयै अणमाप दुख उपजतौ के इणी भांत औ परजळतौ सूरज उणनै काळाबोळा अंधारा में थरकाय देवैला ।

राजकंवर नाहरसिंघ रा जागतां ई कांई भूंडा हवाल व्हिया व्हैला ।

छ महीना तौ आपरै वगत परवांण ई संपूरण व्हिया । पण राजा नै छ जुग जित्ता लखाया । अर सोनल अपछरा नै छ महीना छ पलक जित्ता ई लागा । वा तौ जांणती के छ महीना कदै ई नीं बीतै तौ सावळ । अर राजा जांणतौ के छ महीना चुटकियां रै साथै ढळ जावै तौ सावळ । पण काळ तौ आपरी चाल-ढाळ सूं ई ढळै । किणी रौ आंकस नीं मांनै । मन री हालत रै परवांण घटत-बधत ज्यूं लखावै ।

राजा तौ आंगळियां रा पेरवां माथै दिन पूरा करचा सौ वौ चूकणियौ कद । वौ तौ छ महीना पूरा व्हैतां ई नौखंडिया मैल में गियौ । सोनल अपछरा नै उणरौ कौल याद दिरायौ तद वा अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै बोली — इण में याद दिरावण जैड़ी कांई बात । अै बातां भूलै जैड़ी है ई कोनीं । पण म्हारा अैड़ा माड़ा करम तौ नीं जांण्या हा । जे राजकंवर सूं इण भांत

अणचींत्यौ विजोग व्हैणौ हौ तौ वौ संजोग क्यूं सजियौ। फगत आ इज बात म्हारी समझ नीं बैठै ।

सोनल अपछरा उजीण रा राजा नै परणीजण सूं लगाय दूती रै छळ तांईं सगळी बात मांडनै बताई । आखी बात सुणनै राजा अेक अनोखौ ई सवाल पूछ्यौ के उण दिन नाळ उतरतां वा पैला क्यूं तौ अणूंती राजी व्ही अर क्यूं पाछी दुमनी व्ही ।

सोनल अपछरा बतायौ के राजा रौ उणियारौ राजकंवर सूं इत्तौ मिळतौ हौ के उणनै भरम व्हगौ । भरम उपजियां हरख व्हियौ अर पाछौ भरम मिट्यां वित्तौ ई दुख व्हियौ ।

अणछक राजा पूछ्यौ के उण राजकंवर रौ नांव कांईं हौ ।

सोनल अपछरा रै मूंडै भाई रौ नांव सुणतां ईं उजीण रौ राजा जोर सूं चिराळी करी । बोल्यौ — कांईं नांव बतायौ, नाहरसिंघ ! नाहरसिंघ तौ म्हारै भाई रौ नांव ।

तद सोनल अपछरा पूछ्यौ — तौ आपरौ नांव कांईं बछराजसिंघ है !

उजीण रौ राजा हांमळ भरी के हां उणरौ नांव बछराजसिंघ ।

सोनल अपछरा री आंख्यां सैं अंधारौ चांनणा में बदळग्यौ। वा बोली — जद थें तौ म्हारा देवर व्हिया ।

तठा उपरांत वा राजकंवर रै मूंडै सुणी सौ सगळी बात मांडनै बताई । तद उजीण रै राजा बछराजसिंघ नै ई पूरौ विस्वास व्हैगौ के बात तौ साव साची । अबै बिछड़्या भाई सूं कित्तौ

वैंगौ मिळनै माफी मांगै ।

पछै वौ अेक पलक री ई ढील नीं करी । उण इज खंखर दूती नै साथै लेय उडण-खटोळा में बैठ, भाई नै लावण सारू उडियौ । दूजौ मारग पिछांणियोड़ी ही । हवा रै समचै पाधरी सागै ठायै पूगी ।

टापू माथै सिग्याहीण खत बध्योड़ौ अेक कालौ मिनख तांगियां खावतौ अठी-अठी भंवतौ हौ । चंडाळ डोकरी रै धकै आवता मोट्यार नै वौ उणी वगत ओळख लियौ—अरे, औ तौ उणरौ भाई वछराज ।

वौ दौड़नै भाई सूं गळै मिळ्यौ । भूं भूं रोवण लागौ । वै हरख अर विसाद दोनां रा भेळा आंसू हा ।

पछै वौ सितंगियौ राजकंवर भाई री बाथ छुडाय डोकरी नै मारण सारू ताचकियौ । बोल्यौ—हित्यारण, म्हारी राजकंवरी नै कठै लुकायनै आई ।

के राजा वछराज लारै दौड़नै उणरौ हाथ पकड़ लियौ । कह्यौ—राजकंवरी सूं विजोग व्हियां बिना भाई सूं मिळण नीं व्हैतौ । नेहचौ राखौ, भौजाई देवर रै घरै बैठी आपरी बाट जोवै । म्हैं आपनै लेवण सारू आयौ ।

तीनूं जणा उडण-खटोळा में बैठ हांकरतां उजीण नगरी रै नव-खंडियै महल आया । अनूठौ मिळण व्हियौ । बिछड़्या भाई मिळ्या । बिछड़्यौ जोड़ौ मिळ्यौ, जांणै रांम अर सीता रौ मिळण ।

दूजै दिन ई राज रा हाजरिया सूरजपोळ रै पाखती वाळा सेठ रै घरै गिया । बाप रै सागै उणरा विडरूप बेटा नै राह-

ड़ियां सूं वांधनै लाया । उण दूती रौ पतौ लगाय उणनै ई बुलाई ।

सेठ नै तौ सात लिग्तरा लगाय छोड दियौ । दूती अर बेटा नै घांणी में पीऴ मारण रौ आदेस व्हियौ । छळ-वळ सूं परणी बेटा री बहू रो वारता सुण वछराजसिंघ पैला तो गताघम में पड़्यौ । पण पछै रांम जांणै कांईं सोच विचारनै उण साथै व्याव करण सारू त्यार व्हैगौ । वा अधपरणी बहू ई तुरत मांनगी । धूंमधांम सूं ब्याव व्हियौ ।

छोटा भाई नै उजीण रै राज री पूरी भुळावण देय वडौ भाई नाहरसिंघ सेठ री बेटी अर सोनल अपछरा नै साथै लेय पाछौ आपरै राज गियौ । बूढ़ा राजा री हाथां सेवा करी । रया नै पेट रै जाया रै उनमांन जांणी । बरसां लग थाट सूं राज करयौ । खुद सुख सूं रह्यौ अर रया नै सुख सूं राखी ।

इत्ती बात इत्ती चीत,
पाछला घर री पछीत ।
पछीत बंध्या घोड़ा,
घोड़ां कीनी लीद,
लीद लेग्या कुम्हार,
कुम्हार घड़िया हांडा,
हांडा मेल्या नाडी री तीर ।
आती जाती गायां फोड़ै ।
क्यूं रै गवाळिया आडी गेडी क्यूं नीं दे ?
कांईं करूं मां रोटी नीं दे ।

क्यूं अे मां रोटी क्यूं नीं दे ?
बेटा री बहुवां पीसै कोनीं ज्यूं ।
क्यूं अे बहुवां थें पीसौ क्यूं नीं अे ?
के घरटी कनै पांवणा बैठा ज्यूं ।
पांवणा थें ऊठौ क्यूं नीं रे ?
के मेह घणौ बरसै ज्यूं ।
क्यूं रे मेह घणौ क्यूं बरसै रे ?
के मोरिया घणा बोलै ज्यूं ।
क्यूं रे मोरियां थें घणा क्यूं बोलौ रे ?
के बादळा घणा गाजै ज्यूं ।
क्यूं रे बादळा थें घणा क्यूं गाजौ रे ?
के बीजळियां घणी चिमकै ज्यूं ।
क्यूं अे बीजळियां थें घणी क्यूं चिमकौ अे ?
के बातां रा टमरका घणा सुणा ज्यूं ।



दुमात री दारू

गधौ जांणै लात, ग्यांनी जांणै बात
हीयौ जांणै पाप, मायड़ जांणै बाप
सांसी जांणै राड़, वेद जांणै नाड़
जीभ जांणै मीठौ, दीठ जांणै दीठौ
संत जांणै रांम, बणिक जांणै दांम
कूड़ जांणै नार, पिंडत जांणै सार
चोर जांणै चोरी, कीड़ौ जांणै मोरी
हंस जांणै खीर, मच्छ जांणै नीर
पुरख जांणै मांन, ईली जांणै धांन
वेस्या जांणै प्रीत, बूढ़ा जांणै रीत
गरू जांणै ग्यांन, खाग जांणै म्यांन
खोज जांणै पागी, राग जांणै रागी
जाचक जांणै लेणौ, दाता जांणै देणौ
खाती जांणै काठ, कुम्हार जांणै माट
ढोर जांणै चरणौ, सूर जांणै मरणौ
गधौ जांणै लात अर ग्यांनी जांणै बात

तौ रांमजी भला दिन दे अेक हौ बांमण नै अेक ही बांमणी । बाळपणै ई उण बांमण रौ ब्याव करनै डोकरा डोकरी

सिधायगा । वौ पच्चीस बरस रौ मोट्यार व्हियौ जित्तै दो टाबर खासा लांठा व्हैगा । बेटौ दस बरसां रौ अर बेटी आठ बरस री । दो टाबर चालता रह्या । पण पांचवा टाबर नै जलम देवती वगत बांमणी तीन दिन अर तीन रात कस्ट पाय हाय-त्राय करती खुद ठांणै लागगी । अंवळौ आयोड़ा टाबर नै वाढ़ती वगत पेट री आंतां वढ़गी । बांमणी तड़ाचां वाय वाय मर पूरा दिया ।

घर वाळी नै दाग देय बांमण घरै आयौ तौ चितबंगियौ व्है ज्यूं व्हैगौ । तीन दिनां तांई तौ आड़ौसी-पाड़ौसी रोटचां जीमावता रह्या । सेवट तौ घरै वासदी सिळगावणी ई हौ । बांमण तौ चेता-चूक व्हैगौ । पीस-पोय रोटचां बणावणी, दोनूं टाबरां री साळ-संभाळ करणी, गाय री अंवेर, दुवारी अर थेपड़ियां थापणा में ग्यांन री सै बातां भूलग्यौ । दांणा मांगण नै जावतौ तौ दूजी बातां री ध्यांन नीं रैतौ अर दूजी बातां रौ ध्यांन राखतौ तौ धांन मांगणौ भूल जातौ । बिना धांन कांई तौ पीसै अर कांई पोवै । भूखा-तिरसा टाबर आंमण-दूमणा टपारा में बैठा रोवता ।

बांमण तौ अैड़ौ डाफाचूक व्हियौ के बात बात में झ्यां देवण लागौ । सिग्या परवारगी । खुद रा फोड़ा बिचै उणरै हीयै टाबरां री कळपणौ घणौ घणौ साल्हतौ । वांनै रोवता देखतौ तौ खुद रोवण लाग जातौ ।

अेक दिन मांमौ आय भांणजा री आ सिग्या अर औ विखौ देख्यौ तौ उणनै दूजा ब्याव सारू पूछचौ । आंती आयोड़ौ भांणजौ संका नै अळगी वगाय नीची धूण करनै बोल्यौ — आं

टाबरां नै कीकर ई आरांम अर दोनूं टंक लूखा-सूखा टुकड़ा मिळै तौ म्हैं मरण सारू त्यार ।

मांमा रौ केई गांवां में फेटौ हौ । फिर-घिरनै वीस बरसां री अेक वेंगळा सूं भांणजा नै फेरा खवाड़ ई दिया । थोड़ा दिनां तांई मांमौ मांमी भांणजा रै घरै रह्या । वींदणी नै सीदौ, दुवारी सावळ सिखाई । घर-गिरस्ती संभाळण री सीख दीवी । वींदणी आधी-दूधी हुस्यार व्ही तौ वै आपरै घरै गिया परा । बांमणी दोरी-सोरी घर संभाळ लेती । टाबरां रौ लाड राखती । बांमण नै पाछौ सोरौ सांस आयौ । गिरस्ती रै कांम-काजां सूं छुट्टौ व्हियां वौ निसैवार कमाई करण लागौ ।

बांमणी रै आसा मंडी । ब्याव रै डोढ़ बरस उपरांत बेटी व्ही । बेटी व्हैतां ई वेंगळा बांमणी री अकल उजागर होवण लागी । हांचळां रा दूध रै साथै मन में विस घुळण लागौ । पैला तौ वा सावका बेटा-बेटी री लाड राखती ही । पण खुद री कूख उघड़ियां वै दोनूं भाई-बैन उणनै देख्योड़ा ई नीं सुहा-वता । वांरा सूं खोड़ीलायां करण लागी । चिड़ती, धुरकारती, झयां देवती ।

छोरी अेक बरस री व्ही जित्तै तौ मां री रग रग में विस सांचरग्यौ । सावका टाबरां नै नित धरेळती, नीं नीं व्है जैड़ी गाळियां सुणावती । लूखा वासी व्है जैड़ा ई टुकड़ा भिळाय देती । लगावण व्हैतौ तौ ई नीं घालती । दोनूं भाई-बैन दूध-दही रौ तौ स्वाद ई बिसरग्या । घी रा तौ दरसण ई कठै पड़्या ।

तीजोड़ी छोरी दो बरस री व्ही जणा उणनै माता निक-ळगी । अेक आंख में फूलौ पड़ग्यौ । भण अणूंता जाडा । जांणै

टांटियां रौ छातौ । छोरी विडरूप व्हैगी । मां रै अंतस रौ हळाहळ वत्तौ आवटियौ । वा तौ जांणै संपणी रौ इज रूप धारण कर लियौ । अस्टपौर फुफकारा भरती । दोनूं भाई-बैनां वास्तै सांस लेणौ हरांम व्हैगौ । बारी बारी कांणी छोरी नै रमावता काया व्है जाता । हर छिण हर पल बें बें करती रैवती ।

मोटोड़ौ बेटौ तौ सावकी मां नै आंख्यां में मिरचां ज्यूं लखावतौ । कांणकी छोरी नै रमावण सारू अर घर रौ हल्लौ करण सारू सावकी बेटी ई घणी । बेटा री तौ देण ई देण लागती ।

अेक दिन मूंडैमूंड दोसा-मोसा करती सुभट सुणाय दियौ के ओळियाकड़ा बेटा नै घर सूं नीं तगड़ियौ तौ वा घर छोडनै जावैला परी । बांमण घरवाळी रै पूरौ बस में व्हियोड़ौ हौ । टाबरां री खातर तौ दूजी लुगाई लायौ पण आज लुगाई री खातर बेटा नै घर सूं तगड़णौ जरूरी व्हैगौ । मां री देखादेख बाप नै ई पैलका टाबर अळखावणा लागण लागा ।

घरवाळी आड़ौ लियौ तौ बांमण मोबी बेटा नै घर सूं बारै काढ़ दियौ । बेटौ तौ बाप रै कैवण री ई बाट जोवतौ हौ । घर में लाड, सुख व्है तौ ढबण रौ ई मन करै । इण नरकवाड़ा बिचै तौ कांकड़ रौ वास ई घणौ आछौ ।

भाई जावण लागौ तौ मां-जाई बैन अवस छबरां छबरां रोई । उणरौ हीयौ भरीजग्यौ । गळौ रुंधग्यौ । वा गळियारा में कांणची छोरी नै रमावती ही । बिछड़ता भाई नै कांई सेलांणी देवै । उणरै पाखती आंसुवां रै सिवाय हौ ई कांई । थोड़ी ताळ पैला माटी उकराळती वेळा उणनै अेक कोडी लाधी ।

मूंडा सूं कीं बोलणी तौ नीं आयौ पण हाथ में कोडी लेय धक्के करी तौ भाई उणरै मन री वात समझग्यौ । उणरी आंख्यां में आंसू उमड़ पड़्या। कोडी हाथ में लेय बोली बोलौ वहीर व्हैगौ ।

फळ-फूल खावतौ, नाडी अर बेरा-बावड़ी री पांणी पीवतौ वौ तीन दिन अर तीन रात तांई हालतौ रह्यौ। हालणौ उणनैं आछौ इज घणौ लागतौ। हालियां, पेंडौ कटै। नवा रूंख, नवा बांटका, नवी डांडियां, नवा मारग, नवी धरती, नवा कण-कांकरा अर नवा नवा भाटा देखणा में आवै। नवा पंछी अर नवा जिनावर। हर धकला सांस रै सागै धकै वधणौ कित्ती सिरै बात !

हालतां हालतां अेक नगर आयौ। नवा घर, नवी हवे-लियां, नवा हाट बजार, नवा चोवटा अर नवौ ई मांनखौ। नवी बातां जांणणा सूं ऊंचौ कोई आणंद नीं ।

अेक हाट सूं कोडी साटै भूंगड़ा लिया। वौ तौ पछै भूंगड़ा चावतौ चाबतौ वळै धकै वहीर व्हैगौ। हालतां हालतां नवा राज री सींव में वड़ग्यौ ।

चिणा फाकतौ जावतौ अर पेंडौ पार करतौ जावतौ। हालतां हालतां अेक जंगी वन आयौ। भांत भांत रा घेर-घुमेर रूंख—आंम, खिरणी, आंमली, कदंब, नींव, चन्नण, असोक, खिजूर, नाळेर, पींपळी, बड़ला, बांवळ, सरेस, गूंदी, गूलर, अखरोट, अंजीर, बदांम, जांमू, सीताफळ, देवदार अर सीसम। अनाप छींया, अनाप फळ-फूल, अनाप हवा। किणी बात री कीं घाटौ नीं। औ वन तौ मां री गोद रै उनमांन

सुखदाई । कोड कर करनै फळ-फूल धांमै ।

बांमण रौ अभ्यागत डीकरौ तौ थोड़ा दिनां में ई लाल-बम्ब व्हैगौ । कीं दिलगिरी के चिंता नीं । वन में भांत भांत रै पंछियां री टिव टिव अर वांरौ चहकणौ सुणतौ अर कोड करतौ । अणगिण भांत री चिड़कलियां, हंस, कळहंस, राजहंस, बुगला, सारस, सूवटा, चातक, चकोर, तीतर, कुरजां, बटेर, सिकरा, बाज, खंजन, कोयल, काग, समळी, गरुड़, कमेड़ी, अर गिरज । सुहावणा स्यांणा जिनावर — हिरण, खिरगोस, सांभर, काळेर, लंगूर अर बांदरा। बांमण रै डीकरा रौ हरख आभौ लांघग्यौ । वौ पंछी जिनावरां नै निरखतौ निरखतौ हालतौ हौ के समाजोग री बात अेड़ी बणी के उणनै किणी घोड़ा रौ हींसणौ सुणीजियौ । वौ उठीनै ई न्हाटौ । अेक काळौ घोड़ौ, काळौ ई संज मंडियोड़ौ सांम्ही आयौ । वौ तौ भली सोची नीं कोई भूंडी, पागड़ै पग देय टप काठी माथै जमग्यौ । हाथ में लगांम झाल नांमी असवार रै उनमांन अेड लगाई । घोड़ौ तौ अंगै ई असेंधाई नीं करी । घोड़ौ आपरै मन-मतै ई दौड़तौ गियौ ।

दौड़तां दौड़तां नगरी रै बारै अणछक अनाप मांनखौ भेळौ व्हियोड़ौ मिळियौ । घोड़ा माथै आवता असवार नै देखतां ई जोर सूं जै जैकार करी । राज री परघै सांम्ही दौड़नै आई । औ रासौ देख बांमण रौ बेटौ तौ बगनौ व्हैगौ ।

बात आ ही के इण नगरी रौ निपूतौ राजा देवलोक व्हियौ तौ लारै राज-तिलक सारू रांझौ पड़्यौ । केई जणा गादी रौ हक जमायौ । सेवट रांझौ किणी भांत नीं सलटियौ तौ सगळां

दीवांण मिळनै अेक सला विचारी । संज माडनै काळौ घोड़ौ छोड दियौ । नगरी रौ जांणकार आदमी कोई लारौ नीं करैला। जकौ अजांण में मतै ई माथै असवारी करनै आवै वौ देस रौ धणी । इणी वास्तै सगळौ मांनखौ घोड़ा री उडीक में ऊभौ हौ ।

आवतां ई राजा नै बधायौ । चंवरां ढुळाय सोना रा रथ में बिठांण दरबार में लेग्या । राज-तिलक करयौ । बांमण रौ डीकरौ इचरज सूं टुग टुग भाळतौ रह्यौ अर देखतां देखतां राजा बणग्यौ । सपनां नै ई सौ वळा मात करै जैड़ी बात वरतीजी ।

पैला तौ इण अणचींत्या संजोग रौ इचरज करतां करतां केई दिन बीतग्या । तठा उपरांत राजा बणण रौ चेतौ वापरियौ तौ बांमण रौ बेटौ लारली सै बातां पांतरग्यौ । दुमात री खोड़ीलायां, धुरकारां, ठोला, बासी टुकड़ा अर बाई रौ रोवणौ उणनै कीं याद नीं रह्यौ । जे याद रह्यौ तौ याद करण री वेळा नीं मिळी । पछै राजमद में वौ आपरौ आपौ ई विसरग्यौ । अर लारै उणरी मां-जाई बैन रा रोवतां रोवतां आंसू ई खूटग्या । बिना आंसुवां रै अस्टपौर मांय री मांय रोवती । दिन धुकता-सिळगता ज्यूं त्यूं बीतण लागा ।

बांमणी री वा कांणची विडरूप बेटी परणावण-जोग व्ही तद वा आपरा धणी नै कह्यौ के मोटोड़ी बेटी रौ सांप रै साथै अर उणरी बेटी रौ किणी लखपति रा बेटा साथै ब्याव करै तौ घरवास राखै, नींतर वा आपरै पीहर जावै । मरयां ई पाछी नीं आवैला ।

आपरै मन-मतै कीं करणी - धरणौ तौ बांमण रै हाथ

री बात ई नीं ही । बांमणी रौ उण माथै इत्तौ आंकस बैठयोड़ौ हौ के वौ सपना में ई उणरी बात टाळ नीं सकतौ । पण अजोगती अर बस परबारी बात करणी ई उणरै हाथ री बात कठै । वौ करणी तेवड़ै तौ ई व्हैणी किसी सारै री बात । आ सोच वौ डरतौ थकौ कैवण लागौ — लखपति रौ बेटौ कोई हांमळ भरै तौ ब्याव मंडै । म्हैं आखै मुलक भंवतौ फिरूं तौ ई कांई गरज सरै । भलौ आदमण आज पैली किणी धीवड़ी रौ सांप साथै ब्याव व्हियौ कांई, जकौ थूं औ वाद करै । वस्ती रा कित्ती वातां बणावैला । थूं कैवै तौ इण रौ ब्याव ई नीं करूं ।

तद बांमणी बड़का-तड़का करती बोली — म्हैं तौ इण अळबदा रांड रौ मूंडौ ई नीं देखणौ चावूं । ब्याव नीं करचां तौ आ नित गवेड़ी ज्यूं म्हारी छाती खूंदैला । जोगियां रै डेरै जाय पाळियोड़ा सांप साथै सगपण कर दो । खुद री अकल नीं फिरै तौ म्हनै पूछलौ । म्हनै केई वळा सपना आया, इणरा भाग में सांप ई लिख्यौ है । सती-जती लुगाई रा सपना कदै ई कूड़ा नीं व्है ।

सौ आपरी सतवंती लुगाई रौ आदेस मांन बांमण बेटियां रै सगपण सारू आपरी टपरी अर गांव छोड वहीर व्हियौ । अेक ठौड़ पड़्या अजगर नै खावण सारू खज मिळै, पेट भरीजै, पछै फिरयां भटक्यां अैड़ौ किसौ कांम जकौ नीं सरै । सेवट सोय करतां करतां बांमणी री दोनूं मंसावां पूरण व्ही । कांणची बेटी रौ लखपति बांमण रा बेटा साथै सगपण व्हैगौ । सात आगला चार बीसी बरसां रौ बाप हाल तांई जीवतौ हौ ।

बेटौ कंवारौ व्हैतां थकां ई तीन घाट साठ बरसां रौ हौ। उणियारा रौ चोर। रांती व्है जैड़ी मिड़कल देह। ऊभौ व्हियां अंधारी आवै। बकायलौ। बाळपणै ई बुढ़ापौ आयग्यौ हौ। अर बुढ़ापा में तौ साव ई ढोळै बैठग्यौ। अस्टपीर खलूं खलूं करै। चार पांवडा हालियां सांस चढ़ै। लुगाई री छींयां भेंट्यां धग धग धूजै। आंख्यां चूंधी, पण गीड रा धापा। राफां झरै। खाज हालै पण खिणण री सरधा नीं, चाकर खिणै। बेटौ कंवारौ मरै तौ मेहणौ लागै। बाप नीं नीं व्है जैड़ा लोभ बताया पण कोई हांमळ नीं भरी। लोग मूंडै-मूंड जबाब देवता के बेरै-बावड़ी थरकायां बेटी रौ हबिंदौ तौ सुणीजैला। इण बिचै तौ किन्या नै कसाई रै हाथां सूंपणी सावळ। थोड़ी ताळ में ई हलाल व्हियां जिद छूट जावै। औ चलायनै सगपण आयौ तौ बाप तुरत मांनग्यौ। बांमण नै दस हजार रिपिया रोकड़ झिलाय दिया।

इण भांत अेक कांम तौ भरै पड़ग्यौ। पछै वौ दूजोड़ा कांम री सोय में निकळ्यौ। फिरतां-घिरतां वौ जोगियां रै डेरै पूगौ। बांमण रै मूंडै विलळी बात सुणनै जोगीड़ा हंसिया। कह्यौ — पिंडतजी, मिस्खरियां करण सारू म्हे ई थांनै मिळिया। भांग रौ नसौ तौ करनै नीं आया।

पण बांमण तौ लारै इज पड़ग्यौ। तद काया होय जोगी ई हुंकारौ भर दियौ। बांमण टीपणौ बांच हाथौहाथ ई सावौ झिलाय खाथौ खाथौ गांव बहीर व्हियौ। बांमणी नै सुभ-समंचार सुणावण सारू। दोनूं बेटियां रौ अेक ई सावै ब्याव हौ।

लखपतियां री जांन में तौ कीं इदकी बात नीं पण जोगियां

री जांन में सांप कीकर वींद बणनै आवैला आ अणहोणी बात जोवण सारू बस्ती रै लोगां में अणूंतौ इचरज अर कोड तड़फा तोड़ण ढूकौ ।

लखपति री जांन में सै लखपतियां वाळा थाट हा। हाथी-घोड़ा धुराधुर सै थाट-बाट । वींद ई अनूठौ बणाव करनै आयौ । सगपण सूं दूजै दिन ई केसर-किस्तूरी री पीठी होवण लागी सौ सावै चढ़चा जठा लग व्हैती री। अंतर-फुलेल री भभरोळां सूं गांव महकण लागौ । वींदराजा रै रेसमी वागौ, रेसमी पाग । खरा तुररा-मोड़ । गळा में हीरा-मोती जड़चा तीन-तीन अमोलक डोरा । सतलड़ी सांकळ । कांनां में तुगलां। दोनूं पुणचां दो दो माठियां । दसूं आंगळियां में अमोलक नग जड़ी बींटियां । पगां में खरी वींदोलियां । बणाव अर गैणां सूं वींदराजा पूरौ ढक्योड़ौ । नोळिया जैड़ौ मूंडौ मूंडौ दीसतौ । ब्याव रा कोडाया रै हीयै खासौ-भलौ गाढ़ सांचरग्यौ हौ । बस्ती रा कांणची बेटी रौ भाग सरायौ ।

दूजोड़ी जांन ई निपट अनूठी ही । ताळ ताळ डीगा फवता रूपाळा जोगी, खांधै झोळचां टेर पूंगी बजावता आया । साथै नोळिया, गोहीड़ा, गोवां, स्याळ, लूंकियां, अजगर, सांप-सपळोटिया, परड़ां, बोगियां, वीजू, रींछ, बांदरा, गिडक, गधेड़ां री जांन। सगळां रै बिचाळै अेक जंगी काळिंदर वींद । कूंकूं केसर रा छाबका दियोड़ा । फण रौ छतर तांणतौ आयौ । चौखळा रै लोगां रौ मेळौ अड़थड़ियौ ।

न्यारी न्यारी दो चंवरियां मंडी । दोनूं बेटियां रा ब्याव व्हैगा । दादा रै साईना लखपति वींद रै साथै कांणची बेटी

नै गाजां-बाजां सीख दिरीजगी । सरधा-परवांण दत्त-दायजौ दियौ ।

काळिंदर री पूंछ रौ हथळेवौ जोड़ सावकी बेटी ई जोगियां साथै सिधायगी । धापनै माड़ौ दायजौ दियौ । पण दोनूं बेटियां रा मजूस अेक सरीखा । आंचाआंच में मजूस बदळीजग्या । कांणची रै दायजा-वाळौ मजूस जोगियां री गाडी माथै धरीजग्यौ अर दूजोड़ौ लखपतियां रा रथ में ।

आपरै डेरै आय जोगी दायजौ संभाळियौ तौ अणूंता राजी व्हिया । कांणची री सासू मजूस उघाड़ दायजौ जोयौ तौ वींदणी रै माईतां नै अनाप गाळियां काढ़ी । फाटोड़ा राली-गूदड़ा, भीर भीर व्हिया चींथड़ा । फूटोड़ा हांडी-बासण । भेळा डग्गर अर आरणिया छांणा ।

बूढ़ा वींद में दूजौ तौ कीं कस हौ कोनीं, पण वींदणी नै गैणा-गांठा सूं पाथर दी । सेवट भेद री जाच व्हियां कांणची सै गैणौ-गांठौ तोड़ वगायौ । बणाव उतार दियौ । मैला गाभा पहरण लागी । बापड़ी मैं बीती पण बीती ।

अर उठी इंदरलोक री अपछरा नै ई ईसकौ व्है जैड़ा उण सावकी बेटी रा भाग खुलिया । माईतां सीख दीवी उण सागै बेटी नै तौ सिधावणौ हौ इज । जोगियां रै डेरै आय वा सवा हाथ घूंघटौ काढ़्यां दुमनी दुमनी बैठगी । उणरै समभ नीं बैठी के इण ब्याव सूं राजी व्है के दुखी व्है । परणीजियां बिना पीहर रै नरकवाड़ा सूं पिंड कीकर छूटतौ । टंकौटंक भर पेट रोट्यां तौ मिळैला । कोई लड़ण वाळौ तौ अठै कोनीं । पण पिरथी थपियां पछै किणी लुगाई रौ नाग रै साथै ब्याव

नीं व्हियां व्हैला, आ सोच वा आळोच में पड़गी । बणी सौं भाग री ।

इण भांत तम्बू में अेकली बैठी सोच करती ही के उणनैं अणछक मिनख री बोली सुणीजी — काली वींदणी ! सोच क्यूं करै ! थारै जैड़ा भाग लेय तौ कोई लुगाई नीं जलमी । धूंप खेय, म्हारा फण माथै कूंकूं रो सात टीकियां दे । देख, अबारूं हाथौहाथ परचौ मिळ जावैला ।

वींदणी तौ जांणै कोई सपनौ देखै । ज्यूं कह्यौ त्यूं करचौ । सातवीं टीकी देवतां ईं धरती धूजी, बीजळियां किड़की, आभौ हिलियौ । देखतां देखतां काळिदर तौ पच्चीस बरसां रौ सरूपवांन मोट्यार बणग्यौ । जोगियां रै डेरा री ठौड़ सोना री सतखंडियौ मैल चुणीजग्यौ । सांप्रत निजरां देखण वाळी वींदणी नै ई जद इण लीला माथै विस्वास नीं व्हियौ जद कांनां सुणण वाळा कद इण अनूठा साच रौ पतियारौ करैला ।

इण सुख अर आणंद में सपनौ बीतै ज्यूं आखौ बरस बीतग्यौ । गुलाब रै फूल जैड़ौ गोरौ-निछोर रूपाळौ बेटौ व्हियौ । जांणै चांद री किरणां री झूमकौ सांचै ढळियौ । मिसरी अर दूध में घुळचा दिन रळकण लागा ।

सांप नै परणावण वाळा माईतां रौ वौ सागै ई ढंगढाळौ हौ । वांरा तौ दिन ई काळा । चांनणी रातां ई काळी । अस्टपौर होठा-जीभी अर राड़ । बांमणी धणी रौ जीवणौ हरांम कर दियौ । अेक दिन वा धणी नै घोदाय दोनूं बेटियां री साता पूछण सारू अर तेड़ण सारू भेज्यौ ।

पैला तौ बांमण कांणची बेटी रै घरै गियौ । वा अबै

निरंध आंधी व्हैगी ही । धणी नै कोढ़ उघड़ग्यौ हौ । बाप साता पूछण नै आयौ तौ वा धणी ई रोई । कह्यौ के दुनियां में सात्यूं दुख है जका उणनै है । जीवत नरकवाड़ौ भुगतै । मरयां जिंद छूटैला ।

बाप घणा ई थोरा करया पण वा साथै चालण सारू राजी नीं व्ही । पछै वौ जोगियां रै डेरै गियौ । सोना री सतखंडियौ मैल देख उणरी तौ अकल चकरीजगी । डरनै पाछौ जावण लागौ तौ भिरोखै बैठी बेटी हेली मारयौ । दौड़नै हेटै आई । आदर भाव सूं बाप नै मांय लाई । जंवाई री आव देखी तौ आंख्यां चूंधीजगी । सगळी बात सुण्यां बांगौ व्हैगौ । लुगाई रा डर सूं बेटी री आ माया देखनै ई राजी होवणौ उणरै बस में नीं रह्यौ ।

खासा दिनां तांई बेटी रै सासरै रह्यौ । बेटी दोनूं टंक बत्तीस तेवड़ करनै जीमावती ।

जंवाई री दवायती लेय बेटी अर दोहीता रै साथै आपरै गांव वहीर व्हियौ । जद टपरी मूंडागै सोना री रथ ढब्यौ तौ बांमणी कांणची बेटी सारू उवाड़ै माथै ई सांम्ही न्हाटी आई । जद काळिंदर नै परणाई सावकी बेटी रथ सूं हेटै उतरी तौ उणरी तौ आंख्यां सूं खीरा बरसण लागा । धणी नै आडै हाथां लेवती कांणची बेटी रा समंचार पूछया । सुण्यां उणरै काळजै लाय लाय ऊठगी । हांचळ चूंघता दोहीता रै सांम्ही आकरी मीट सूं जोय कैवण लागी — रुळियार रांड, फिरती - धिरती औ किण रौ लाई । सात - पीढ़ी रै काळस लगाय दियौ । म्हैं थारा भाईजी जित्ती भोळी कोनीं जकौ थारी वातां माथै विस्वास

कर लूं । वता धणी नै छोड किणरै लारै उथळी ।

बेटी समझाय समझाय हार थाकी तौ ई मां री समझ में नीं आई ।

उण इज रात, आधी ढळियां बांमणी धणी नै जगाय कह्यौ — इण रांड री मूंडौ काळौ नीं करौ जित्तै म्हैं इण घर में सांस ई नीं लेवूं ।

धणी समझाय समझाय हार थाक्यौ तौ ई उणरी समझ में नीं आई । वा तौ आपरौ वाद छोड्यौ ई नीं । अेक ई वांण पकड़ली के सती-जती लुगायां नै अैड़ी रुळियार रांडां री मूंडौ देख्यां ई पाप लागै । अैड़ी लुगायां नै तौ मारयां पुन्न व्है जैड़ी वात ।

बांमणी कित्ता तरळा तोड़्या पण बांमण बेटी अर दोहीता नै मारण सारू त्यार नीं व्हियौ । कह्यौ — बिरथा बाळ हित्या अर बेटी नै मारण री पाप क्यूं करां । अपांरै हाथां नीं मरनै मतै मौत सूं मर जावै तौ कांई बेजा वात । हित्या रौ पाप माथै नीं बंधै अर मरण व्है जावै ।

अवकी धणी सावळ समझाइस करी तौ घरवाळी मांनगी । दोनूं जणा वाथेड़ौ करनै काठ रा अेक मोटा मजूस में बेटी अर दोहीता नै हाथ पग बांध मांय घाल ताळौ जड़ दियौ । पछै मजूस गाडी माथै धरनै नंदी रै ढावै जाय मांय थरकाय दियौ ।

मारण वाळा रै दो हाथ । बचावण वाळा रै हजार हाथ । काठ रौ सूखौ खणक मजूस डूंगी ज्यूं तिरतौ वेग रै साथै वहण लागौ । मांय पांणी री अेक छांट नीं पड़ी ।

तिरतौ तिरतौ वौ मजूस धकला राज री सींव लग आय-ग्यौ । नंदी रै अड़ौअड़ ई राजमैल हौ । राजा री अेक खास बांण के दीवांणां रै साथै झिरोखा में बैठ दो तीन घड़ी तांई नंदी रा वेग नै देखतौ । कदै ई इण कांम में नागा नीं करी । ढावां रै बिचाळै गैगाट करतौ भंवरिया खावतौ पांणी उणनै सुहावणौ घणौ इज लागतौ । ऊगता सूरज री किरणां सूं पैला नंदी रा वेग नै निरखण बैठ जातौ ।

सबसूं पैला राजा री निजर उण मजूस माथै पड़ी । बोल्यौ-- औ डूंडा ज्यूं कांई तिरतौ आवै । साव खाली दीसै ।

अेक दीवांण कह्यौ — औ तौ कीं काठ रा ढावा ज्यूं दीसै ।

अेक लोभी दीवांण कह्यौ — कीं न कीं तौ तिरतौ आवै इज है, इण में कीं मीनमेख नीं । इण रै मांय धन-माल व्है तौ म्हारौ ।

राजा कह्यौ — मांय कोई जीव-जिनावर व्है तौ म्हारौ ।

हाजरियां नै आदेस करयौ तौ वै मजूस नै लावण सारू न्हाटता गिया ।

राजमैल में लाय सावचेती सूं मजूस रौ ढकणौ खोल्यौ तौ देखण वाळां री आंख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़गी । इचरज रौ पार नीं रह्यौ । मांय जीवती लुगाई अर हांचळां चूंघतौ वेटौ । घणा ई दपूचा लिया पण मजूस मांयली लुगाई कीं वात नीं बताई ।

राजकंवर नै राखण सारू राजमैल में ई उण मजूस वाळी लुगाई नै राखली । राजकंवर उणरै वेटा जित्तौ ई लांठौ हौ ।

वैड़ौ ई रूपाळौ । नवोड़ी डावड़ी राजकंवर नै आपरै बेटा सूं ई वत्तौ जांणती अर राजकंवर नै उणरै पाखती रांणी सूं वत्तौ आवड़तौ । उणरौ खोळौ छोड वौ कठै जावतौ ई नीं । श्रेक पलक ई नीं देखतौ तौ रोवतौ ।

राजा दूजी डावड़ियां सूं घणौ वत्तौ नवोड़ी डावड़ी रौ मन राखतौ, इण वास्तै बाकी सगळी डावड़ियां मांय री मांय उण माथै भुटती । कीकर ई हांण पुगावै तौ काळजौ ठरै ।

सगळी जणियां भेळी होयनै छांनै-मांनै श्रेक कुबद विचारी । ताखौ राखनै राजकंवर री आंख्यां में चिमटी सूं लूंण भुरकाय देती । राजकंवर हाथ पग पटकतौ अरड़ां-अरड़ां रोवतौ ।

लारली बळत कम व्हैती जित्तै जित्तै दूजी डावड़ी ताखौ राखनै लूंण भुरकाय देती । उणरौ रोवणौ सुणनै राजा रांणी हैरांन । इत्तौ रोवै तौ ई राजकंवर किणी रै पाखती जावण रौ नांव नीं लेवै । रोवतौ ढबै नीं, दूजा रै गोडै जावै नीं । अबै करै तौ कांई करै ।

श्रेक दिन भोळी-ढाळी बांमणी डावड़ियां नै राजकंवर रै रोवण रौ म्यांनौ पूछ्यौ तौ वै कह्यौ के कंवर रौ काळजौ मांय सूं धुकै । वासी मूंडै जीभ सूं सात-आठ वळा चाटयां बळत मिट सकै ।

वा भोळी कमेड़ी तौ कह्यौ ज्यूं ई करयौ । नित वासी मूंडै कंवर रौ काळजौ चाटण लागी । छळी डावड़ियां ताखौ राख राजा-रांणी दोनां नै सांप्रत आ रचना बताय दी । कह्यौ के वा बांमणी निस्चै डाकण है । कंवर रौ काळजौ चाटगी । उणनै जीवती बाळयां बिना कंवर किणी भाव बचै नीं ।

राजा-रांणी दोनां नै ई पक्की विस्वास व्हैगौ। हथमारां नै हुकम दियौ के मां-बेटा नै लकड़ियां भेळा खिड़क नै जीवता तुरत सिळगाय दे। बांमणी घणी ई रोई-धोई पण कीं सुणवाई व्ही नीं।

हथमार चुट्टी झाल उणनै पाखती रै मसांण में लेयग्या। कोई दूजौ उपाव नीं देख वा हाथ जोड़ बोली के मरचां पैली अेकर राजा सूं मिळाय दे।

हथमार जाय राजा नै अरज कीवी। राजा रै हीयै सुमत वापरी के वौ खुदौखुद मिळण सारू ठेट मसांण आयग्यौ। वौ डाकण नै पूछ्यौ के उणनै किण बात सारू बुलायौ। तद डाकण कह्यौ — अेकर म्हैं आपनै अेक कोडी दी सौ मरचां पैली पाछी लेवणी चावूं।

राजा पूछ्यौ — किसी कोडी? म्हनै कद दी।

बांमणी आधी-दूधी बात बताई के राजा नै लारली सै बातां याद आयगी। वौ दौड़नै आपरी बाई रै गळै मिळ्यौ। रोयौ। पगां हाथ लगाय माफी मांगी।

रथ में बैठांण बैन नै राजमैलां लायौ। दुमात रा सगळा अकरम सुण्या।

तठा उपरांत हाजरियां नै भेज आपरा माईतां नै बुलाया। बाप नै तौ माफी बगस दी, पण मां नै उणरै अकरमां रौ डंड देणौ जरूरी हौ। मसांण में लकड़ियां उणी भांत खिड़कियोड़ी ही। उणनै बैन रै बदळै जीवती बाळी। पछै बाप रै सागै बैन नै साथै लेय सोळै घोड़ां रौ सोनल रथ जुताय गाजां-बाजां सूं सासरै पुगाई। दायजा में हीरा-मोत्यां रा सात थाळ

भरनै दिया । अर राज रै सै सावका बेटा - बेटियां रौ राजा खुद जिम्मौ संभाळियौ । डूंडी पिटाय दी के कोई दुमात सावका टाबरां नै दुख दियौ तौ जीवतां दाग दिरीजैला । तद सूं उण राज रा सावका टाबर सगा बेटा - बेटियां ज्यूं सुखी रह्या । राजा घर घर रौ जिम्मौ संभाळतौ बरसां लग राज करयौ । खुद सुखी रह्यौ अर परजा नै सुखी राखी ।



विस्वास री बात

किसी हुंकारा बिन बात
किसौ मित विहूणौ साथ,
किसी चंद विहूणी रात
किसौ कडूंबा बिन भात,
किसौ प्रेम विहूणौ मांन
किणी जाचक विहूणी जांन,
किसी बादळ बिन बीज
किसी पोहच बिन खीझ,
किसौ बळ विहूणौ बांण
किसौ तरवर बिन पांन,
किसी त्रिया बिन प्रीत
किसौ कंठ विहूणौ गीत,
किसौ पांख बिन पंछी
किसी जळ विहूणी मंछी,
किसी कपट विहूणी दासी
किसी सगा विहूणी हांसी,
किसौ मित विहूणौ साथ
किसी हुंकारा विन बात

दुनियां में मोटी वात विस्वास री । मांनै तौ देव नींतर भींत रा लेव । थांन, देवरा अर मिंदर में थरपीजै सौ भगवांन वाजै, भींत में चुणीजियोड़ा भाटा फगत भाटा ई रैवै । विस्वास रौ सिंदूर, टीकी अर माळीपन्ना लाग्यां मांनखौ माथौ निवाय धोक देवै । बोलवां बोलै । आरती पूजा करै । देवी, देवता अर भगवांन रौ वासौ मिनख री भावना अर विस्वास में ।

अेकर किणी गांव में अेक रमतौ संत चौमासौ कर्‌यौ । सिञ्झ्या रा ब्याळू करनै बस्ती रा लोग भेळा व्है जाता । संत भगती व ग्यांन री बातां सुणावतौ । गांव में अेक ई राईका रौ घर हौ । वौ घणा दिनां तांई संगत में नीं आयौ तौ बस्ती रा बूढ़ा-बडेरा उणनै ओळबौ दियौ । समझायौ — काला ! मिनख-जमारौ किसौ बारम्बार मिळै । अेवड़ चारतां चारतां ई सांस निकळ जावैला । लरड़ियां री में में सुणतां सुणतां तौ अध-बूढ़ व्हैगौ । कदै ई भगवांन रौ नांव ई सुणलै ।

वौ राईकौ तौ पगां हालणौ सीखियौ तद सूं अेवड़ रै लारै ढरर ढरर करतौ भटकतौ रह्यौ सौ भगवांन-फगवांन रा लफड़ां में कीं समझतौ-बूझतौ ई नीं हौ । बूढ़ा-बडेरा घणौ माजनौ पाड़्यौ तौ अेक दिन वौ संगत में भेळौ व्हियौ । डांगड़ी माथै थोडी टेक सगळां सूं लारै ऊभग्यौ । संत ग्यांन री ऊंची ऊंची बातां सुणावता हा । कैवण लागा — गायां में गोरी चाहीजै, अेवड़ में अेवाळियौ चाहीजै उणी भांत मिनखां सारू गरू चाहीजै । गरू विना भगवांन नीं मिळै ।

संतां री सीख घोखतौ घोखतौ अेवाळियौ आपरी आखरी में जाय लरड़ियां बिचाळै सूयग्यौ । दूजै दिन संत जंगळ गिया

तौ अेवाळियौ वांनै देख सांम्ही न्हाटौ । खांधै गेडी ही । संत डरचा के मूरख मार न्हाकैला । इण भांत न्हाटौ क्यूं आवै ।

संतां नै धूजता देख अेवाळियौ वांरै मन री बात समझग्यौ । गेडी अळगी वगाय वांरै पाखती जाय पैला तौ खासी ताळ तांई हंसतौ रह्यौ । हंसतौ हंसतौ ई कैवण लागौ — संतां, वातां तौ खरी अर पाकी सुणावौ, पण थांरौ मन तौ साव काचौ । के तौ थें कूड़ा के थांरा भगवांन में कीं लूंण-लखण नीं । म्हारा सूं इण भांत डरण री जरूरत । म्हारा सूं तौ लरड़ियां ई नीं डरै ।

संतां नै थोड़ौ घणौ धीजौ व्हियौ । थोड़ी ताळ ढबनै राईकौ कैवण लागौ — रातै म्हैं थांरा बखांण सुण्या । म्हनै ठा पड़गी के थांरै गरू बिना अेक पलक ई नीं सरै । नीं व्है तौ म्हनै थांरौ गरू बणायलौ । म्हैं जांणूंला के अेक अेवड़ वत्तौ ई चरायौ ।

संत तौ कावळ पजिया । आज पैली हजारूं चेला मूंडिया, गरू बणिया तौ वै बणिया, पण आज औ मूरख गरू नांमी मिळियौ । सीधौ ना दियां औ मांनैला नीं । संत आंटी खावता कह्यौ — गरू बणै जकौ तौ भगवांन रा दरसण करावै ।

राईकौ बोल्यौ — भगवांन रै दरसणां री तौ म्हनै ठा कोनीं, सांढ़्यां रौ दूध तौ घणौ ई पावूंला । क्यूं रोट्यां सारू गांव गांव भंवता फिरौ । अर जे गरू भगवांन रा दरसण करावै तौ म्हैं थांनै गरू बणाय लूं । दरसण-फरसण ई करावणा व्है तौ वेगा कराज्यौ, म्हनै घणी वेळा कोनीं । अेकर देखूं तौ खरी के थांरौ औ भगवांन है कैड़ौ । मोंडा जैड़ौ के

ऊंट जैड़ौ । नांव सुणतां सुणतां बरस व्हैगा, पण हाल निजरां देख्यौ कोनीं । कीं बात नीं, म्हैं थांनै गरू बणाया, अबै भगवांन रा दरसण करावौ जकी बात करौ ।

संत तौ गिंवार री बखड़ी में वेजा भिलिया । अबै कांईं मिस लेय लारौ छुडावै । के इत्ता में दरड़ा सूं निकळती लूंकी वांरौ कांम काढ़ दियौ । गिंवार नै तौ उणरी बोली में ईं समझाइजै । हाथ री सांनी करनै बोल्यौ — वै रह्या भगवांन; झपड़नै दरसण करणा व्है तौ करलै ।

राईकौ इचरज करतौ बोल्यौ — अरे, इत्ता दिन तौ म्हैं थांरा इण भगवांन नै लूंकी करनै मांनतौ । आज सूं भगवांन ईं सही ।

वौ तौ पछै खोजा टांकनै भगवांन रै लारै सोकड़ मनाई । लूंकी पूंछड़ौ पाधरौ करनै न्हाटी । राईकौ न्हाटतौ न्हाटतौ ईं मन में बोल्यौ — भगत अर भगवांन दोनूं अेक लखणा । डरै इज घणा ।

पण सोरै सास लारौ छोडणियौ वौ ईं कोनीं हौ । दूणै वेग न्हाटौ । धकै भगवांन अर लारै राईकौ । न्हाटतां न्हाटतां तिलां रौ अेक वढ़ियोड़ौ खेत आयौ । राईकौ तौ ऊंची गाबड़ करयां आंधौ होय लारौ करतौ हौ । के दौड़तां दौड़तां अण-छक तिल रौ करचौ तच करती रौ पग में बैठग्यौ । सावळ दौड़णौ नीं आयौ तौ वौ पगरखियां खोल नै न्हाटौ हौ ।

लोई चवतौ गियौ तौ ईं वौ परवा नीं करी । खेत में अेक दरड़ौ आयौ तौ लूंकी उणमें वड़गी । राईकौ तौ भगवांन रा दरसणां सारू लियां-दियां ऊभौ हौ । भगवांन दरड़ा में

वड़ग्या तौ वौ दरड़ौ खोदणौ चालू करचौ। पग सूं लोई झरतौ गियौ अर वौ दरड़ौ खोदतौ गियौ। धवूस व्है ज्यूं ढूकौ जकौ कड़ियां सूदौ खाड खोद न्हाकियौ। हाथै आय जावै तौ भगवांन में जांणै जैड़ी बितावै। भगत नै इत्ता फोड़ा घालै वौ भगवांन कांई कांम रौ। इण वास्तै कदास डरतौ दरसण नीं दे।

अठी भगत रा तौ अै हाल हा अर उठी वैकूंठ में किसन भगवांन राधका जी रै खोळा में माथौ देय सूता हा। अणछक झिझकनै बैठा व्हिया। कह्यौ — म्हैं इणी पलक म्रितलोक में जावूंला। अेक भगत म्हनै कणाकलौ सिंवरै।

राधका जी नै भगवांन रौ बिछोव अंगै ई नीं सुहावतौ। बोल्या — आज कालै कुण किणरी भगती करै। थांनै सूतां-बैठां नै आवड़ै कोनीं। म्रितलोक रा मिनख तौ खुदौखुद नै भगवांन सूं ई घणा वत्ता मांनै।

किसन भगवांन माथै मोर-पांख रौ मुगट धरता बोल्या: म्हारै भगतां री जाच म्हनै है। उणरा पग सूं तड़-तड़ लोई रिसै। वगत माथै म्हैं नीं पूगौ तौ वौ दरड़ौ खोदतौ खोदतौ मर जावैला।

राधका जी नै तौ ई भरोसौ नीं व्हियौ। वै सोच्यौ के आपरा स्वारथ री खातर कमसल भगत सूता-बैठा भगवांन नै कित्ता फोड़ा घालै। वै कह्यौ — आपनै अठा सूं हिलण री ई जरूरत कोनीं। पैला म्हैं जायनै भगत री तूमार लेवूं। थें तौ म्हारा सूं चोज राखौ। कोई भगत नीं सिंवरै तौ थांरै देवपणा रै मेख लागै।

किसन भगवांन मांनग्या । राधका जी खेत में आय राईका रै गोडै ऊभग्या । राईकौ तौ कीं ध्यांन ई नीं दियौ । तद राधका जी खुद चलायनै पूछ्यौ — बावळा री गळाई थूं किणनै सोधै, बता तौ खरी ।

राईकौ सुण्यौ अणसुण्यौ कर दियौ । वै वळै दो तीन वळा पूछ्यौ तौ दरड़ौ खिणता राईका नै जूंझळ आयगी । बोल्यौ : किणनै कांई, थारा मांटी नै !

अबै राधका जी नै पूरौ विस्वास व्हैगौ के भगत है तौ खरौ । भगवांन नै साचा मन सूं सिंवरै ।

जबाब सुणतां ईं वै तुरत अलोप व्हैगा । बैकूंठ में जाय सुणी जकी साची बात बताय दी । किसन भगवांन तौ पछै उठै ढबिया ई नीं । पीतांबर, मोर-मुगट, कुंडळ, चक्र अर गदा लेय भगत नै दरसण देवण सारू सांम्हौ-सांम ऊभग्या । पण भगत तौ उणी भांत दरड़ौ खोदतौ रह्यौ । तद भगवांन चलायनै खुद स्त्री-मुख सूं फरमायौ — थारी भगती सूं प्रसन्न होय म्हैं थनै दरसण देवण सारू आयौ, धापनै दरसण कर ले ।

राईकौ ऊंचौ मूंडौ करनै जोयौ । देखतां ईं तुरत पिछांणग्यौ के औ निस्चै कोई भांड है । पैला तौ लुगाई रौ वेस धरनै आयौ । दाळ नीं गळी तौ अबै दूजौ स्वांग लायौ । हंसनै बोल्यौ — गैला थूं म्हनै कांईं मंतरै । जांणै जित्तौ भोळौ नीं हूं । म्हारै गांव रौ किसनियौ अर चंदरियौ भांड नित ग्रैड़ा स्वांग लावै । दोळौ बोळौ जातौ रै नींतर खोपी में खावैला । म्हनै रीस अणूंती आयोड़ी है, छेड़ मत ।

भगवांन तौ भगत रा बस में व्हिया करै । उणरै कह्या रौ कीं भूंडौ नीं मांन्यौ । पूछ्यौ — पण थूं औ दरड़ौ क्यूं खोदै !

राईकौ बोल्यौ — खोदूं भगवांन रा दरसण करण सारू, थनै जिण री कांई पंचायती ।

सांप्रत भगवांन दरसण देवण सारू आया, पण अबूझ भगत तौ ओळखै ई नीं । भांड रौ स्वांग बतावै । मुळकनै पूछ्यौ — थारा भगवांन है कैड़ा ।

भगत जबाब दियौ — कैड़ा कांई, साख्यात् लूंकी जैड़ा । चार पग अर लांबी पूंछ ।

तद भगवांन कांई जोर करता । भगत री खातर तुरत लूंकी रौ रूप धारयौ ।

भगत दरड़ौ खोदणौ फिटौ करयौ । अर लप लूंकी री पूंछ सेंठौ झाल बोल्यौ — जद इज तौ भगवांन बाजै । कणा दरड़ा सूं बारै निकळिया कीं ठा नीं पड़ी । पण वळै कोई दूजौ भगत म्हारै दाई फोड़ा नीं भुगतै औ जाब्तौ तौ करणौ ई पड़ैला । भगत लारै दौड़ै अर भगवांन धकै धकै न्हाट दरड़ा में वड़ जावै, औ कठा रौ न्याव । दरड़ौ खोदतां खोदतां म्हारी तौ कड़ियां तूटण आयगी ।

आ बात कैय वौ नांढ़ भगत तौ भगवांन री पूंछ झाल भंवायनै जोर सूं पांच सात वार धरती माथै पिछांट्या के वांरौ चिगदियौ व्हैगौ । सास निकळग्यौ ।

पछै जमीं माथै पटकनै भगत चार-पांचेक लातां री ठरकाई । कह्यौ — हीमत व्है तौ अबै न्हाटनै दरड़ा में वड़ौ ।

भगवांन तौ पछै पूंछड़ी ई नीं हिलायौ । रात रा राईकौ वळै संगत में गियौ । भीड़ रै बिचाळै ऊभ च्यारूं कांनीं भाळनै बोल्यौ — भगवांन रा दरसण करणा चावौ तौ वै दरड़ा रै पाखती मरचोड़ा पोढ़्या । गिरजड़ा खावै जित्तै सावळ दरसण करलौ ।

पछै संतां रै सांम्ही देखनै कह्यौ — म्हनै ठा कोनीं के भगवांन नै बाळया करै के गाड्या करै । ज्यूं दाग देणौ व्है त्यूं देदो । बापड़ा री बिरथा माटी बिगड़ैला ।

आ भुळावण देय वौ तौ आपरो आखरी में आय लर-ड़ियां रै बिचाळै नेगम खूंटी तांणनै सूयग्यौ । भगवांन रै मरणा री कीं गिनरत नीं करी ।



सातां नै गटकाय जावूं

बात में हुंकारौ
फौज में नगारौ

रांमजी भला दिन दे के आ बात तौ खासी जूंनी, पण बात रा सुणणियां सदा नवा अर हुंकारिया नित नवा। दिनमांन अंवळा व्है जद कीं सांधौ लागै नीं। अर दिनमांन संवळा व्है जद कीं रांझौ पड़ै नीं। किणी गांव में अेक जाट री भरी-तरी गवाड़ी ही। आडी आई तौ बरसां लग आवती ई री। उणरै खेतां में कांकड़ परबारौ जमांनौ व्हैतौ। धांन सूं खोडा अर भखारचां भरी। चारा रा भाखर ज्यूं पचावा खिड़कियोड़ा। बाड़ा रा वित्त-मवेसी अर वळदां री जोड़चां चौखळा में सिरै। भाई-गनायतां में बोरगत बिखरियोड़ी। घर में धीणा रा हपला। चौधरी डेंचै बैठौ होकौ गुड़गुड़ावै नै आणंद करै। कमावू हाळी। अेकाअेक बेटौ रमै कूदै नै मछरां करै। ऊगण आथण री ई चेतौ नीं। चौधरी सोच्यौ के ऊमर परवांण मतै ई सै कांम संभाळ लेवैला।

पण देखतां देखतां सै बातड़ी परवारगी। भरी-तरी गवाड़ी रौ पोखाळौ व्हैगौ। कुजोग री अैड़ी फटकार लागी के चौधरी होकौ पीवतौ पीवतौ डेंचा सूं हेटै गुड़चौ सो पाछौ

खांधियां रै खांधै ई बैठौ व्हियौ । चौधरण तड़ाच खाय हेटै पड़गी । दोय दिनां सूं चेतौ बावड़ियौ । हाथी दांत रौ चूड़ौ वधार खुणै बैठगी ।

चौधरी री चौखळा में नामून हौ । नामून रै परवांण ई दोरा में खरचौ व्हियौ । बोरगत रै भरोसै चौधरण अेक बांणिया नै वोहरौ ठायौ । बांणिया तौ अैड़ा आसांमियां नै लिछमी रा ई अवतार मांनै । मांग्यौ उणसूं दूणौ-चौगणौ माल जोख दियौ । पांच पेड़ा चढ़ाय मौसर करचौ । अलेखूं मांनखौ जीमण सारू अड़वड़ियौ ।

बेटौ भोळौ हौ, मां कीं समझती बूझती नीं ही । मौसर पछै बांणियौ खातौ मांडचौ तौ ऊपरलौ सास ऊंचौ अर हेटलौ सास हेटै । सगळी संपत आईवाळै मांड नीठ लार छुडाई । चौधरी रै खाता पांनड़ा तौ लिख्योड़ा हा कोनीं, तद मरचां उपरांत कुण चलायनै हांमळ भरै । सगळी बोरगत डूबगी । अर बांणियौ वसूली सारू हिंगरड़ी घाल दी । सगळी जायदाद वरड़ै घाल्यां ई लेणौ नीं चूकौ । देखतां देखतां भरी-तरी गवाड़ी री वांनी उडगी । मां बेटा रै पेट भरण रा ई जांदा पड़ण लागा ।

अेक दिन मां बेटा नै समझाय कह्यौ — बेटा, अबै तौ थारी आंख्यां ई चांनणौ । बाप थकां थारौ अैदीपणौ ई आछौ लागतौ । पण अबै आपौ नीं संभाळियौ तौ भीख मांगणी पड़ैला । घणौ कांई समझावूं । थारी आंख्यां सांम्ही घर रौ घरकूलियौ व्हियौ ।

बेटै कह्यौ — म्हनै कीं समझावण री जरूरत कोनीं ।

पण म्हैं कमाई सारू दिसावर जावूंला । अठै म्हारौ मन नीं लागै । थूं चार घड़ी रात थकां सात सोगरा पोय देजै । कठा सूं मांग-तांगनै दही री अेक जावणी लायनै देदै तौ पछै म्हारै कीं नीं चाहीजै । बात्रा री गवाड़ी रौ चौगणौ नामूंन नीं बधावूं तौ म्हारा नांव माथै जूती ।

चौधरण री आंख्यां में आंसू आयग्या । बोली — बेटा, वगत वगत री बात, आखा गांव नै छाछ पूरती, सौ आज टीकी देवण नै ई घरै धीणौ कोनीं । अेक छोड दस पारियां मांगूं तौ ई म्हनै कोई नटैला नीं । दिसावर में सावचेती राखजै ।

सौ चौधरी रौ बेटौ तौ दोय घड़ी अंधारै अंधारै घर सूं वहीर व्हियौ, सात सोगरा अर दही री जावणी लेय ।

बस्ती री परली बाजू उणरै बोहरा री तिमंजली हवेली ही । चौधरी रौ बेटौ पाधरौ उठै जाय बांणिया नै जगायौ । खूंटी टंग्योड़ी लाव मांगी । घणौ वाद करचौ तौ वौ लाव झिलाय दी । तठा उपरांत खांधै लाव रौ गेडौ टेर खड़ां-खड़ां मारग हालियौ । मारग में उणनै अेक काछबौ मिळियौ तौ खेसला रै पल्लै जाब्ता सूं बांध लियौ ।

गांव सूं तीन कोस आंतरै भूतां री अेक बावड़ी ही । पाज माथै सगळौ अड़खंजौ धरनै भातौ खोल सिरावण करण लागौ । घड़ी आध घड़ी रात बाकी ही । वौ अेक अेक सोगरा री गिणती करतौ जोर सूं कैवण लागौ — अेक खावूं, दोय खावूं के सातूं रा सातूं गटकाय जावूं ।

वौ तीन वळा इण भांत जोर जोर सूं रागां करी । उण

बावड़ी में सात भूत रैवता हा । सातां नै गटकावण री बात सुणी तौ वै थर थर धूजण लागा । सोच्यौ के कोई भूतां ऊपरली भूत आयग्यौ दीसै । मरणा में तौ खांमी नीं । दुस्टी सातां नै ई गटकावण री बात करै। तौ ई भूतां रौ मुखियौ थोड़ौ घणौ गाढ़ राख्यौ । धाकल करनै पूछ्यौ — कुण व्है ई ?

चौधरी रौ बेटौ उठै बैठौ ई सवाई धाकल करनै पाछौ पूछ्यौ — म्हैं तौ हूं जकौ अवारूं पतौ पड़ जावैला पण थें कुण हौ ।

मुखियौ बोल्यौ — म्हे तौ हां भूत ।

तद चौधरी रौ बेटौ कह्यौ — म्हैं हूं महाभूत । घणा दिन व्हिया थांनै खेलौ करतां नै, आज थांरी भारणी उतारूंला ।

मुखिया रौ काळजौ फड़कां चढ़ग्यौ । डरतौ डरतौ कैवण लागौ — महाभूत हौ तौ थांरी सेलांणी बतावौ, नींतर म्हे म्हांरी सेलांणी बतावां ।

आ कैय मुखियौ आपरै डील सूं अेक जूं तोड़ी । ऊंची वगाय बोल्यौ — म्हांरै तौ इत्ती लांठी जूवां ।

चौधरी रौ बेटौ सावळ ध्यांन सूं देखी के जूं साचांणी मींडका जित्ती लांठी । तद वौ खेसला रै पल्लै बंध्या काछवा नै खोल हर्विद करतौ हेटै थरकाय बोल्यौ — अर म्हारी जूं इत्ती लांठी ।

उण जूं नै देख मुखिया री तौ छाती बैठगी । हां, है तौ कोई महा भूत । उण सूं तौ धकै कीं बोलणौ नीं आयौ । तद अेक दूजौ भूत हीमत करनै पाज माथै जोर सूं खंखार थूकनै बोल्यौ — म्हांरै खंखार रौ इत्तौ लांठौ डचकौ ।

चौधरी रौ बेटौ सावळ ध्यांन सूं देख्यौ के अेक गळांठी कुलड़ी भरीजै जित्तौ डचकौ । वौ वांरा सूं कांई कम उतरै । बावड़ी रै मांय दही री जावणी पटकतौ बोल्यौ — म्हारै खेंखार रौ डचकौ इत्तौ लांठौ । सातां रै ई गळा में ठसग्यौ तौ बारै निकळैला कोनीं ।

दूजोड़ा भूत री ई छातो बैठगी । तद अेक तीजौ भूत वळै हीमत करनै आपरै डील रौ अेक रूंगतौ तोड़्यौ । बारै वगावतौ बोल्यौ — म्हांरा रूंगता इत्ता जाडा अर इत्ता लांठा ।

काळी जट रै पुरस लांबा तोड़ा जित्तौ लांबौ अर चिट्टूड़ी आंगळी रै धकला पैरवा जित्तौ जाडौ रूंगतौ हौ । अर चौधरी रा बेटा रै पाखती तौ अस्सी पुरस लांबी लाव ही । उणनै मांय थरकावतौ बोल्यौ — म्हारा रूंगता तौ फगत इत्ता ई जाडा अर लांबा है ।

बावड़ी रै मांय लाव पड़तां ई अेड़ौ हबिदौ सुणीजियौ के भूतां रा तौ धै छिलग्या । अणचींती मौत आई जिण में घाटौ नीं ।

हबिदौ ठमतां ई चौधरी रौ बेटौ सोगरा गिणतौ वळै वा इज राग काढ़ी — अेक खावूं, दोय खावूं के सातूं ई गटकाय जावूं ।

भूत तौ धकै कीं वाद नीं कर्‌यौ । डाकी किणनै खावैला अर किणनै छोडैला । सातां नै गटकायां बिना किसौ धापै । देखां किणी लोभ मांनै तौ । अेक भूत साद चेंटोड़ौ व्है ज्यूं बोल्यौ — म्हां सूगलां नै खाय क्यूं मूंडौ विस्वादौ करौ । आपनै चांदी रौ अेक अेड़ौ कड़ावलियौ दां जिणमें मतै ई मन चाया

वत्तीस तेवड़ वणै । लाख आदमी जीमै तौ ई खूटै नीं ।

भूत घणी घणी लटापोरियां करी जद नीठ चौधरी रौ बेटौ मांन्यौ । चांदी रौ कड़ावलियौ लेय राजी राजी घर कांनी वहीर व्हैगौ । बावड़ी सूं थोड़ी अळगी भांय अेक बड़लौ हौ । दिन आथमियौ जित्तै उणरी छींयां में बैठग्यौ । वौ रात रा छांनै ओलै गांव में वड़णी चावतौ ।

दो घड़ी रात ढळी जणा वौ कड़ावलियौ लेय खाथौ खाथौ हालियौ । बोहरा रा घर में चांनणौ देख्यौ तौ अेकर कड़ावलिया रौ तूमार देखण सारू वौ उणरी हवेली में गियौ । बोहरा नै बावड़ी रै भूतां वाळी दूजी बात तौ अेक ई नीं बताई, पण मंसा करतां ई कड़ावलिया में पांचूं पक्वांन मतै ई त्यार व्हैगा । बोहरौ आ माया देख इचरज में पड़ग्यौ । इचरज पछै लोभ जाग्यौ । इण कड़ावलिया रै पांण तौ वौ लाखां री माया कमा सकै । काळ पड़ जावै तौ ई आखा देस नै टंकौटंक जीमाय देवै । जमांनौ व्हियां नांणौ वसूल करलै । ब्याव, मोसर अर जीमण-जूठण में ठेकौ लेय सगळां नै हांकरतां जीमाय देवै । खरचौ-खातौ कीं नीं । कीकर औ कड़ावलियौ ढावै तौ बात वणै ।

चौधरी रा बेटा नै भरमाय-भरमूय रात रा ढाब लियौ । वौ तौ तक्योड़ौ बैठौ इज हौ । घड़ी डोढ़ रै उपरांत ताखौ राखनै कड़ावलियौ ढावण सारू आयौ जद चौधरी रौ बेटौ नेगम घोर खांचतौ हौ । वैड़ौ रौ वैड़ौ दूजौ कड़ावलियौ धरनै वौ मांय जाय सूयग्यौ ।

अंधारै अंधारै वौ झिझकनै बैठौ व्हियौ । बोहरा नै बिना

कह्यां ईं चौधरी रौ बेटौ तौ कड़ावलियौ खाक में घाल मां सूं मिळण रौ उमायौ आंचै आंचै वहीर व्हियौ ।

बेटा री सेंधी बोली सुणनै मां तुरत आडौ खोल्यौ । पाछौ रौ पाछौ आवण रौ कारण पूछ्यौ । तद बेटौ मुळकनै कह्यौ के वौ तौ अेक ई दिन में आखी दुनियां रौ पेट भरै उत्ती कमाई करली ।

पछै मां सूं वौ किणी बात रौ चोज नीं राख्यौ । सगळी बात साच साच बताय दी । पण मां नै विस्वास नीं व्हियौ । दोनूं मां बेटा पक्वांनां सारू घणी ई मंसावां दरसाई, पण कड़ावलियौ तौ साव खाली रौ खाली । बेटा रौ मूंडौ उतरग्यौ । भूतां रा छळ माथै जांणै जित्ती रीस आई । वौ वां इज पगां सात सोगरा लेय पाछौ वहीर व्हियौ ।

बावड़ी री पाज माथै बैठ ऊंची गळ में हाक लगाई—

अेक खावूं, दोय खावूं के सातूं ईं गटकाय जावूं ।

भूतां रै तौ पांणी रै मांय ईं परसेवौ आयग्यौ । डरताधूजता बोल्या—बगसौ अंदाता बगसौ, कीं चूक व्ही व्है तौ फरमावौ ।

चौधरी रा बेटा रै तौ फाचरै आयोड़ी ही, वौ क्यूं संकौ खावै । डोखरावतौ बोल्यौ—म्हारै साथै छळ करतां नै थांनै थोड़ौ-घणौ ई ख्याल नीं आयौ । थें कांईं थांरा भाई-गनायतां नै ई मारयां बिना नीं छोड़ूं ।

उणनै तौ भोपाडफरी करयां सेवट मांनणौ हौ इज । सोना री मींगणियां करण वाळी बकरी रौ ठौ ई तूमार जोय पछै आपरै साथै ली ।

वोहरौ गळियारा में ई सांम्ही मिळग्यौ । वौ मनवारां करनै हवेली लेयग्यौ । कह्यौ — भला आदमी, यूं परबारौ परवारौ कांई आवै जावै । थारै म्हारै पीढ़ियां रौ सीर । धीणा री अड़गी ही तौ म्हनै कैवतौ । अेक री ठौड़ सात खूंडाळियां वाड़ै बंधाय देतौ । आ बकरी थारी गवाड़ी ओपै कोनीं ।

तद चौधरी रै बेटै कह्यौ — आ बकरी कोई मांमूली बकरो नीं है । सोना री मींगणियां करै ।

बोहरौ मूंडौ मस्कोरनै बोल्यौ — करचा रै करचा बावळा । थारी अकल तौ नीं भंवगी ।

तद वौ वधवधनै कह्यौ के तूमार लियोड़ी बात भलां झूठी कीकर व्है सकै ।

बोहरै कह्यौ — कोई भूत-पलीत थारी निजर बांधली व्हैला । बकरियां सोना री मींगणियां करती व्है तौ उणनै राईका क्यूं चरावै ।

वोहरा रै सांम्ही बकरी रौ परचौ बतायौ । बिना बतायां ई उणनै तौ विस्वास व्हियोड़ौ हौ । पण मन री बात होठां दरसाय दे तौ वौ बांणियौ ई कांई ।

रात रा वळै वौ जुगतो सूं मांचा रै पागै दूजी बकरी बांध दी ।

घरै मां नै परचौ बतावती वेळा वौ वळै झूठौ पड़चौ । बकरी तौ सदावंत सूं करै जैड़ी ई मींगणियां करी ।

तद मां कह्यौ — बेटा, मिनखां री दुनियां में जद मिनखां री ई पत ऊठगी तौ भूत पलीतां री बात रौ कांई साच । बाकी सगळा प्रपंच छोड अर पाधरी पाधरी कमाई कर ।

डोकरौ जीवतौ व्हैतौ तौ म्हनै अै दिन देखणा नीं पड़ता। बाबै थकां देख्योड़ा दिन ई अबै तौ सपना ज्यूं लागै।

पण बेटा रै माथै तौ भूत असवारी गांठ्योड़ी ही। वौ किणरी सीख मांनै। बिना कीं कह्यां सुण्यां ई पाछौ री पाछौ ढळग्यौ। बावड़ी री पाज माथै बैठ धूंस जमावतौ बोल्यौ— अेक खावूं, दोय खावूं के सातूं ई गटकाय जावूं।

भूतां नै तौ डर रै मारै ताव चढ़ग्यौ। अेकण सागै बोल्या: अंदाता वळै कांई कसूर व्हियौ। जे खावण री जचगी व्है तौ रावळी मरजी।

चौधरी री बेटौ गाळियां काढ़तौ कैवण लागौ— चंडाळां, थांरी बात री कीं सिधन व्है तौ थें भूत क्यूं बाजौ। छळ करता जावौ नै डरता जावौ। औ कांई खिलकौ। रीस तौ अैड़ी आवै के......

भूत बिचाळै ई आंगळियां ऊंची करनै बोल्या— नाकुछ भूतां माथै रीस कर्‌यां आपरौ कुरब घटै। म्हांनै अेक बात बतावौ के अठा सूं पाधरा आप घरै पधारौ के मारग में कठै ई ढबौ।

इण बात रौ जबाब देवती वगत चौधरी रै बेटा रौ ई माथौ थोड़ौ ठणकियौ। कह्यौ— म्हारा बोहरा री हवेली पांच-सात घड़ी तांई ढबूं। पण इण सूं कांई व्है।

भूत गिरणावता कैवण लागा— इण रौ पतियारौ तौ आपनै आज रात रा ई व्है जावैला। जे कालै म्हांरौ छळ निगै आय जावै तौ आपरी ज्यूं इंछा व्है त्यूं म्हांनै मारजौ अर खाजौ।

अबकी भूत उणनै अेक टांकी, अेक हथोड़ौ अर अेक कांटां री झाटी दी। टांकी माथै तीन वळा हथोड़ौ ठपकारचां मकरांणा रौ सतखंडियौ मैल चुणीजै। पांच वळा ठपकारचां रूपा रौ अर सात वळा ठपकारचां सोना रौ नवखंडियौ मैल चुणीजै। कांटां री झाटी बोहरा रै छळ रौ पतौ लगावैला।

रात रा चौधरी रौ बेटौ बोहरा री हवेली रै गळाकर निकळियौ तौ वौ धकै ऊभौ। मनवार करनै माडां हवेली लेयग्यौ। टांकी हथोड़ा रै सांम्ही देखनै कैवण लागौ—बेटी रा बाप, उण गांव चौधरी रौ बेटौ होय औ सिलावटा रौ कांम कांई झेल्यौ।

तद चौधरी रौ बेटौ टांकी हाथोड़ा रा गुण बखांणिया। बोहरौ उणरी खमडोळां करी।

आधी ढळियां बोहरौ छांनै सीक तिबारी में आय टांकी हथोड़ौ ले जावण सारू हाथ घालियौ के कांटां वाळी झाटी हाथौहाथ आपरौ परचौ बतायौ। मतै ई बोहरा रा मोर सड़िद सड़िद सुरड़ीजण लागा के वौ जोर सूं डाढ़ियौ। चौधरी रौ बेटौ जाग्यौ जित्तै जित्तै बोहरा रौ आखौ डील वींधीजग्यौ। झाटी तौ उणी भांत सड़िद सड़िद बाजती री।

बोहरौ अरड़ायौ—चौधरी थारी मींडकी गाय हूं, म्हारा प्रांण बचा। आखा डील में लाय लाय ऊठगी।

चौधरी मुळकनै बोल्यौ—हाथां कीना कांमड़ा किणनै दीजै दोस। बोल म्हारौ कड़ावलियौ अर बकरी कुण चोरी।

बोहरौ तुरत हांमळ भरी के औ अकरम उणरै हाथां ई व्हियौ। पछै विना कह्यां ई वौ दोनूं चीजां लायनै संभळाय दी।

उण उपरांत ई झाटी तौ सूंसाड़ा बजावती री । बोहरा रौ अरड़ावणौ सुण आखा घरवाळा भेळा व्हैगा ।

चौधरी बोल्यौ—म्हारी मुलकां चावी गवाड़ी नै थूं ईं बूडांणै मैली । बाबै रै मौसर री सगळी पूंजी पाछी सूंपै तौ थारौ लारौ छूटै । वा पूंजी म्हैं चोखळा रै गरीब-गुरबां नै बांटूंला ।

बोहरौ डाढ़तां डाढ़तां ईं सगळी पूंजी संभळाय दी । चौधरी तीन वळा ढब्रण रौ कह्यौ जद झाटी मतै ई ढबी ।

तड़कै बेटौ घरै जाय मां नै परतख परचा बताया तौ वा चकन-बकन व्हैगी । देखतां देखतां सोना रौ नवखंडियौ मैल चुणीजग्यौ । मंसा करतां ईं कड़ावलिया में बत्तीस ई पक्वांन त्यार । बकरी सोना री मींगणियां करै । चौधरी रौ बेटौ आखा चौखळा रौ दुख-दाळिदर मेटयौ । मुलक में उणरै जस रौ उजास फैल्यौ । मां-बेटौ बरसां लग सुख अर आणंद सूं रह्या ।



केळू री कांब

मरती वेळा माईत आपरै सात बेटां नै घणी घणी भुळावण दी के वै आपरी अेकाअेक बैन रौ मन राखै । फोड़ा नीं पड़ण दे । जोड़ी री रूपाळी वर देख उणरौ ब्याव करै । सखरौ दत्त-दायजौ दे । जे बैन में फोड़ा पड़्या तौ वै मरयां ई मुगातर नीं पावैला । भोजायां सगळी लखणां बायरी आई । वांरै मन लारै चालिया तौ बैन विखौ ई भुगतैला । भाई पगां रै अंगूठां सूं आंगणौ खुरचता हांमळ तौ भरी पण माईतां नै घणौ कीं विस्वास व्हियौ नीं । घणा दोरा प्रांण छूटा ।

माईतां रै मरतां ई बहुवां रै बची-खुची लिहाज ई मिटगी । वै नणद सूं अस्टपौर कांम करावती । झिड़कती । दोसा-मोसा करती । नणद पचावा री गळी में जाय छांनै-ओलै रोय जीव हळकौ करती । भोजायां नित कड़-मड़ करती के वा जिणरै ई लारै जावैला उणरौ तीखा भाटा सूं करम फूटैला । कीं लोतर नीं ।

पण नणद अणूंती स्यांणी अर समझणी ही । रूपाळी ही । भोजायां नीं मांनती जिणरौ तौ वा ई कांई करती ।

सुरंगै सावण तीज री त्यूंहार आयौ । रूंख रूंख हींडा बंध्या । गळियारै गळियारै बणाव-सिणगार सूं लड़ाझूंम बैनां रा

झूलरा दीखण लागा । पण सात भाइयां री अेकाअेक बैन मैलै गाभां पचावा री गळी में ऊभ रोवण लागी । मन री दाझ किणनै कैय दरसावै ।

छोटकियौ भाई पूळा लावण गियौ तौ कांई देखै के बैन छबरां छबरां रोवै । उणरौ ई हीयौ भरीजग्यौ । थाकल घरां में ईं आज तौ सगळी बैनां बणाव करचौ । वौ बैन रै पाखती जाय रोवण रौ म्यांनौ पूछ्यौ तौ ई वा कीं नीं बोली ।

छोटकियौ भाई बहू सूं डरतां थकां ईं बैन री थोड़ौ घणौ मन राखतौ हौ । वौ ई थोड़ा दिनां पैली अठी-उठी फिरनै बैन रौ सगपण करचौ हो । तीज रै दो दिनां पछै पांचम रौ ई सावौ हौ । बैन नींतर ई सासरै सिधाय जावैला । रांम जांणै पाछी कद आवै ।

घणी पूछ-ताछ करी जणा बैन नीठ होठ खोल्या के वा ई नवी चूंदड़ी अर नवा घाघरा रौ बणाव करनै हींडणी चावै । भाई सगळी भौजायां कनै गियौ पण कोई हांमळ नीं भरी । तद आपरी बहू नै कह्यौ । वा हुंकारौ तौ भरचौ पण अेक सरत माथै । जे रेसमी चूंदड़ी अर घाघरौ खराब कर दियौ तौ वा बैन रा रगत में चूंदड़ी रंगैला । भाई सोच्यौ के अेक दिन में कांई खराब व्है । तौ ई बैन नै पूरी भुळावण देय बहू रा नवा गाभा सूंप दिया । बहू कह्यौ वा कौल-वाचा में बंधग्यी ।

पण बैन रौ भाग इज अंवळौ के हींडती वेळा कड़कड़ायनै अैड़ी बिरखा बूठी के जाब्तौ राखतां राखतां उणरा गाभा भीजग्या । आला गार व्हैगा । चूंदड़ी रौ रंग उतरग्यौ । साव लूगी पड़गी । वा डरती डरती घरै गी । भौजाई तौ आपरै

नवा गाभां री रंगत देखतां ई काळी नागण ज्यूं भिमरी। आटी-पाटी लेय रिसांणौ करनै सूयगी। मनाई तौ मांनी कोनीं। धणी नै धुरकारती बोली के मरद री जात होय कौल सूं डिगै। के तौ सात वळा थूकनै चाटै के कौल करचौ सौ पूरौ करै।

बैन बिना तौ सर जावै पण बहू बिना नीं सरै। जठा लग नणद नै मार उणरै रगत सूं चूंदड़ी नीं रंगै तठा लग वा अंजळ ई नीं लेवैला। मरणौ कबूल।

भाई कह्यौ के पिरसूं जांन आवैला। किण किणनै कांई जबाव देवैला। जिणरौ वहू तुरत जबाब दियौ के कोई रांड चंवरी रै पैला उधळ जावै तौ भाई कठै कठै ध्यांन राखै। किणी रै कांनौकांन ई पत्तौ नीं पड़ण दां।

दरजै लाचार होय भाई नै मांनणौ पड़यौ। आधी ढळियां दोनूं मिळ परा नै सूतोड़ी रौ दातळा सूं गळौ वाढ़ न्हाकियौ। रगत में चूंदड़ी रंग्यां पछै भौजाई धापनै चूरमौ खायौ।

भाई बैन री लास नै दोय कोस आंतरै जाय ऊंडौ खाडौ खोद बूर न्हाकी। घड़ी रात थकां बोली बोलौ छांन में आय सूयग्यौ।

बूरियोड़ी बैन रा धड़ा माथै केळू री अेक पतळी अर लांबी कांब ऊगी। झोलां रै समचै कांब लचका खावै। समा-जोग री बात के उण इज मारग उणरी जांन आई। अण-छक वींद रै बाप री निजर लचका खावती कांब माथै पड़ी। वौ मन में सोच्यौ के तोरण बांधण री आ छड़ी तौ नांमी। खवास नै कह्यौ के वा कांब वाढ़नै लावै।

पण बड़ा इचरज री बात के नाई ज़द केळू री कांब वाढ़ण सारू नीचौ लुळियौ तौ धड़ा मांय सूं अेक आवाज सुणीजी—

खवासजी औ खवासजी मत वाढ़ौ आ केळू री कांब । पापलौ भाई, पापली भौजाई, बैनड़ मार चूंदड़ रंगाई ।

नाई तौ डरनै न्हाटौ । हांफतौ हांफतौ जाय सुणी सौ रचना सुणाई। वींद रौ बाप थावस बंधायौ के उणनै कोई भरम व्हैगौ दीसै। पछै वौ ढोली नै आदेस करचौ के कांब वाढ़नै लावै।

ढोली दौड़चौ दौड़चौ जाय कांब वाढ़ण ढूकौ तौ उणनै ई उणी भांत वा री वा आवाज सुणीजी — ढोलीजी औ ढोलीजी, मत वाढ़ौ आ केळू री कांब। पापलौ भाई अर पापली भौजाई, बैनड़ मार चूंदड़ रंगाई ।

ढोली ई डर परौ नै न्हाटौ । तद वींद रौ छोटौ भाई हीमत करनै आयौ । वौ कांब हाथ में झाल वाढ़ण वाळौ इज हौ के धड़ा रै मांय सूं सुभट आवाज सुणीजी — देवरजी ओ देवरजी, मत वाढ़ौ आ केळू री कांब। पापलौ भाई अर पापली भौजाई, बैनड़ मार चूंदड़ रंगाई ।

तद वींद रौ मोटोड़ौ भाई सगळां रा माजना पाड़तौ थकौ बोल्यौ -- आछा व्हिया रे, चुळा भर पांणी में डूब मरौ। यूं तौ पांच बरस रौ कोई टाबर ई नीं डरै । वौ बड़बड़ाटा करतौ उण धड़ा कांनी गियौ । कांब नै वाढ़ण वाळौ इज हौ के जोर सूं आवाज सुणीजी — जेठजी ओ जेठजी, मत वाढ़ौ आ केळू री कांब । पापलौ भाई अर पापली भौजाई, बैनड़ मार चूंदड़ रंगाई ।

वींद रौ मोटौ भाई लचकांणौ पड़नै पाछौ आयौ । बाप नै सगळी बात सुणाई । बाप नै अणूंती रीस आई । कह्यौ — बाई बंगा, हकनाक इत्तौ वगत खराब करचौ । अेक नाकुछ

कांव ई नीं वढ़ी तौ वै कांई नव री तेहरै करैला ।

वौ खड़ां खड़ां उण धड़ा कांनी वहीर व्हियौ । डावा हाथ सूं कांब झाल वौ दातळौ वावण वाळौ ई हौ के कांब री जड़ियां सूं आवाज सुणीजी — सुसराजी ओ सुसराजी, मत वाढ़ौ आ केळू री कांब । पापलौ भाई अर पापली भौजाई, बेनड़ मार चूंदड़ रंगाई ।

वींद रौ बाप डरचौ । पण तौ ई भरम जांण सेंठौ काळजौ करनै दूजी वार वळै दातळौ वावण री सोची । वळै वा आवाज सुणीजी । पछै तौ वौ ई डरनै न्हाटौ । कह्यौ— भाईड़ां, बात तौ साव साची । अैड़ी रचना तौ सुणी नीं कोई सांभळी ।

अबकी वींद खुदोखुद गियौ । कांब हाथ में झालतां ई आवाज सुणीजी — सायबा जी ओ सायबा जी, थें भल वाढ़ौ कांव । पापलौ भाई अर पापली भौजाई, बैनड़ मार चूंदड़ रंगाई ।

वा काची कांब तौ अेक ई झटका में वढ़गी । पण अेक अनोखी बात वळै व्ही । कांब वढ़तां ई धरती फाटी । धड़ा मांय सूं अेक रूपाळी लुगाई निकळी । घूंघटौ काढ़चोड़ी ।

पछै वा धणी सूं कीं चोज नीं राख्यौ । सगळी बात बताय दी । बात सुण्यां जांन तौ गांव धकै पावंडौ ई नीं भरचौ । धड़ा नै चंवरी मांन फेरा खवाड़ दिया । वींदणी नै साथै लेय जांन तौ उठा सूं ई पाछी सिधायगी ।

सात भाइयां री बैन परणीज्यां पछै सासरै अणूंती सोरी व्ही । दूधां न्हाई, पूतां फळी । अर सातूं भाई भौजाई कोढ़ निकळ निकळनै मरचा । अगत गिया ।

गुटियौ राजा

प्रथम पिंड पांणी रौ
देवळ तौ आबू रा
हवेलियां तौ जैसांणै री
गढ़ तौ चित्तौड़ रौ
ताल तौ भोपाल रौ
मिंदर तौ मदुरा रौ
नीर तौ गंगाजळ रौ
धीणौ तौ भेंस रौ
भेंस तौ नाळी री
बळद तौ नागौरी
गाय तौ सांचौरी
ऊंट नाचणा रै टोळा रा
उजास तौ सूरज रौ
आदर तौ माया रौ
कांकण तौ केदार रौ
गदा तौ भींव री
बांण तौ अरजण रा
तिलक तौ केसर रौ
चूड़ौ तौ हस्ती दांत रौ

रूपौ तौ जावर रौ
मतौ तौ पंचा रौ
ममता तौ मां री

तौ रांमजी भला दिन दे अेक हौ राजा नै उणरै सात ही रांणिया। पण कूख अेक ई रांणी री नीं उघड़ी। देस रौ धणी व्हैतां थकां ईं राजा रै आ अेक इज मोटी चिंता। राजा घणा ई जप-तप करया, सिकार छोड्यौ तौ ई संतान री मंसा नीं पूरीजी।

अेक दिन राजा बडोड़ी रांणी नै सागै लेय तड़कै तड़कै संकर भगवांन रै दरसणां सारू पाळा ई वहीर व्हिया के वांनै मारग में हळौतिये जावता जाट-जाटणी सांम्ही धकिया। जाट राजा-रांणी नै ओळखतां ईं थूकियौ। सुगन तौ धापनै माड़ा व्हैगा। निपूतया सांम्ही धकिया। खेत में राळचौ बीज ई पाछौ हाथ नीं लागैला। वौ मुड़ परी नै पाछौ जावण लागौ तद जाटणी बिना कह्यां ईं धणी रै मन री बात समझगी। बोली: भला आदमियां, देस रा अंदाता सांम्ही धकिया अर थें सुगन माड़ा मांनौ।

चौधरी कह्यौ— थूं बिरथा भिकाळ मत कर, म्हारै तौ पतवांणियोड़ी बात है। दोय वळा खेत में दांणौ ई हाथै नीं लागौ— औ आं सुगनां रौ इज परताप हौ। काले दोय घड़ी रात थकां वहीर व्हांला।

औ खिलकौ देखतां ईं राजा रौ तौ काळजौ बैठग्यौ, उणरा पग है जठै ई चिपग्या। माथौ झालनै झरड़ देती रौ हेटै बैठ-

ग्यौ । बोल गळा में फंसग्या व्है ज्यूं कैवण लागौ — रांणी, म्हारी तौ मिंदर तांई पूगै जित्ती सरधा कोनीं । अर पूग्यां सार ई कांई । आं देवी-देवतावां रै भरोसै राज रौ खजांनौ ई खाली कर दियौ, सिंवरतां सिंवरतां म्हारी तौ जीभ ई घिसगी । निपूता राजा रौ मूंडौ देख्यां जद खेतां में धांन ई नीं निपजै तौ म्हारै राज करणा में धूळ । म्हैं तौ पाछौ राज-मैल सांम्ही मूंडौ ई नीं करूं । थें जांणौ अर थांरौ राज जांणै । म्हैं तौ अठा सूं मूंडौ लेय ढळ जावूंला ।

रांणी राजा रा पग झाल घणा ई तरळा तोड़्या पण राजा तौ नीं मांन्यौ जकौ नीं इज मांन्यौ । रांणी डुस्किया भरती राजमैल कांनी वहीर व्ही अर राजा नाक री सीध मन माडै धकै हालतौ ई गियौ ।

हालतां हालतां रेत रा अेक धोरा माथै नंग-धड़ंग साधू तापतौ निगै आयौ । जेठ री बळती लाय । तावड़ा रै सांम्ही देखणी नीं आवै जकौ औ साधू वेकळू रेत माथै बैठौ ।

राजा पाखती जाय देख्यौ तौ समाध लाग्योड़ी । राजा आली-गीली लकड़ियां भांग-भूंगनै चार थोगा रोप अेक छत्तरी वणाय दियौ । पंखी बणाय साधू नै हवा घालण लागौ । सात दिनां रै उपरांत साधू री आंख्यां खुली । राजा रै सेवा-भाव सूं वौ अणूंतौ राजी व्हियौ । वरदांन मांगण रौ कह्यौ ।

तद राजा हाथ जोड़ अरदास कीवी के उणरी मंसा तौ भगवांन सूं ई नीं पूरीजै, जद इज तौ राज-पाट छोड वैराग लेणौ पड़्यौ । उणरै तौ फगत चेला बणणा सिवाय कीं दूजी लाळसा कोनीं ।

साधू मुळकनै कह्यौ— बेटा, आं छोटा-मोटा कांमां सारू भगवांन नै क्यूं फोड़ा घालै। म्हारा सूं नीं सलटाईजै जद भगवांन रै दुवार हाजर व्हैजै।

अबै राजा मन री मंसा दरसाई। कह्यौ— भगवन, गूदड़ां री रुखाळी चाहीजै। सात ब्याव करचा तौ ई टाबर री मूंडौ नीं देख्यौ।

पछै साधू नै हळौतिया वाळी सगळी बात बताई। बात सुणनै साधू री मन ई कळपियौ। वौ राजा नै अेक लांबौ चीमटौ देय कह्यौ के वौ आपरै बाग जावै। आंब रा रूंख रै चीमटौ वगावै। सात पाक्योड़ा आंब खिरैला। सातूं रांणियां नै अेक अेक आंब खवाड़ दे। दसवै महीनै सात कंवर जलमैला। वत्तौ-लोभ नीं करै।

राजा रै हरख री कांई पार। अेक री ठौड़ सात कंवर। वौ तौ पाछौ हवा रै वेग न्हाटतौ आयौ। टाळकौ सिरै आंब री रूंख देख वौ चीमटौ वगायौ। साचांणी सात आंब खिरिया। राजा मन में सोच्यौ के साधू नै कांई ठा पड़ै। अेकर चीमटौ वळै वगाय सात आंबा खिर जावै तौ कांई बेजा बात। केसर री जात पीळा जरद आंबा खावण री उणरी ई मन व्हियौ।

वौ अेकर वळै चीमटौ वगायौ। पण सांम्ही कळा व्हैगी। चीमटौ डाळा रै चिपग्यौ। जमीं पड़्या सातूं आंब पाछा चिपग्या।

राजा मूंडौ ढेर साधू रै पाखतीं गियौ। साधू देखतां ई कह्यौ— बेटा, वत्ता लोभ सारू म्हैं थनै पैला ई बरजियौ, पण मांन्यौ कोनीं। जा अेक मौकौ वळै देवूं। अबकी लोभ

करचौ तौ पछै म्हारै ई हाथ री बात नीं रैवैला ।

राजा आंब हेटै जाय देख्यौ तौ सात आंबां रै भेळी चीमटी पड़्यौ ।

वागा री चाळ में आंब लेय वौ राज-मैल कांनी वहीर व्हियौ । आंबां री सौरम सूं राजा रौ मन डुळियौ । सातवी रांणी अणमांनेतण ही । उणनै नीं देवै तौ ई सरै । वौ खुद अेक आंबौ खायग्यौ । छ रांणियां नै तौ आपरा हाथ सूं आंब खवाड़िया । सातवी रांणी सारू डावड़ी रै साथै चूस्योड़ी गुठली भेज दी । रांणी सेकनै गुठली ई खायगो ।

साधू री वरदांन फळयौ । सातूं रांणियां रै आसा मंडी । दसवै महीनै सातां रै कंवर जलमिया । अणमांनेतण रांणी रै गुठली जित्तौ ई कंवर व्हियौ । बाकी छवूं राजकंवर चांद सूं ई चौगणा रूपाळा ।

दिनां परवांण राजकंवर वधण लागा पण सातवी रांणी रौ कंवर गोडा जित्तौ ई रह्यौ । सगळा जणा उणनै चिड़ावण री खातर उणरौ नांव दिरायौ—गुटियौ राजा ।

गुटिया राजा में अक्कल अर सावचेती भाखर सूं ई वत्ती ही । तौ ई राजा बाकी सगळा राजकंवरां रौ तौ अणूंतौ लाड करतौ पण गुटियौ राजा उणनै देख्योड़ौ ई नीं सुहावतौ ।

गुटिया राजा रा हाथ-पग अर बाकी सगळौ डील तौ छोटौ पण उणियारौ अर माथौ भरपूर मोट्यार जित्तौ लांठौ । सै राजकंवरां सूं वत्तौ फूठरौ । बोली मीठी ।

अेक दिन गुटियौ राजा मां नै कह्यौ के राजाजी उण माथै इत्ता रीसां क्यूं बळै । छवूं राजकंवर तौ टाळका घोड़ा

माथै असवारी करै । उणनै घोड़ौ क्यूं नीं देवै । वौ कांई राजा रौ कंवर कोनीं । राजा नीं देवै तौ मां ई चरवादार नै कैय अेक घोड़ौ दिराय दे ।

रांणी कह्यौ—बेटा, अणमांनेतण रांणी रै कह्या री कोई गिनरत नीं करै । पायली गुज्जी रौ पेटियौ मिळै, जिणसूं सगळौ खरच चलावणौ पड़ै । घोड़ा रौ खरच अपां नै पोसावै कोनीं ।

मां री आ बात सुण गुटियौ राजा धकै कीं आड़ौ नीं लियौ । ऊंदरा खावण सारू ढूंढ़ा में अेक मिन्नी ही । हाथ में भाला री ठौड़ अेक ताकळौ लेय वौ तौ मिन्नी रै माथै बैठ कुदड़का मारण लागौ । लोग-बाग हंसता तौ ई कीं परवा नीं करतौ ।

राजा खासौ बूढ़ौ व्हैगौ हौ । अेक दिन आरसी में मूंडौ देख्यौ तौ खत अर माथौ रूपा रै उनमांन धवळ । आ तौ मौत री काळी निसांणी ही । राज रौ सुख तौ अबै इज आयौ । इत्ता वरस तौ संतांन री चिंता आगै कीं सुख आयौ नीं । राजकंवर लांठा व्हिया, अमरफळ लायनै देवै तौ पाछौ जवांनी बावड़ै ।

वौ सिझ्या रा छवूं कंवरां नै बुलाय मन री मंसा दरसाई । मांनणा रै सिवाय दूजौ कीं चारौ नीं हौ । खजांना सूं हीरा मोत्यां रा पावौरा भराय टाळका घोड़ां माथै बैठ दूजै दिन ई अमरफळ लावण सारू वहीर व्हैगा ।

इण बात री गुटिया राजा नै ठा पड़ी तौ वौ ई मिनकी माथै बैठ राजा कनै गियौ । अमरफळ लावण री वध वधनै हूंस बताई । राजा उणनै धुरकार माजनौ पाड़ दियौ । तौ ई

मांन्यौ कोनीं । भां री आसीस लेय मिनकी माथै बैठ लारै रौ लारै रपटियौ अर हांकरतां भाइयां नै न्हावड़ लिया । सगळा भाई जांण्यौ के साथै मन लगावण सारू रमेकड़ौ ठीक आयौ । अेक कंवर कह्यौ —'थोड़ौ आंतरै रैजै । घोड़ा रै पोड़ां हेटै आयग्यौ तौ चिगदीज जावैला ।

हालतां हालतां मारग में तीखली बोरां री बोरड़ियां आई । बोरां रै भार सूं बोरड़ियां दोलड़ी व्हैगी ही । बाकी छवूं भाई तौ घोड़ां माथै बैठा ई भालां सूं बोर खेरनै चाळां भरली । गुटिया राजा नै साव झाटक दियौ के वौ हेटै खिरयौ अेक ई बोर नीं लेवै ।

गुटियौ राजा जबाब दियौ के दूजां रै खेरियोड़ा बोर खावै उण रात उणरौ ई जलम नीं व्हियौ ।

मिन्नी री आंख में ताकळौ खुबायौ के वा मलापनै बोरड़ी माथै चढ़गी । पछै वौ टाळ टाळनै घणा ई बोर खाया ।

तठा उपरांत मारग में गैगाट करती अेक नंदी आई । छवूं भाई कह्यौ — गुटिया जीवण सूं धापग्यौ व्है तौ नंदी रै मांय उतरजै । बोरड़ी रै भरोसै कीं दूजौ जोखौ लियौ तौ बिना मौत मरैला ।

आ सीख देय छवूं भाई तौ आप आपरा घोड़ा नंदी रै मांय झोक दिया । घोड़ा आधेटै पूगा जित्तै गुटियौ मिन्नी री दूजोड़ी आंख में ताकळौ खुबायौ । वा तौ कबांण सूं छूट्या तीर रै उनमांन सरणाटै घोड़ां रै माथाकर होय परली तीर जाय मलापी ।

गुटियौ भाइयां सूं जवारड़ा करण सारू धकै ऊभौ मिळियौ ।

भाई सोच्यौ के है तौ म्हाटौ करामाती ।

धकली वस्ती में वड़तां ई अेक डोकरी मनवार करनै आपरै घरै लेयगी । सगळा जणा ई उठै रात वासौ-लियौ । डोकरी रै सात वेटा हा अर अेक बेटी । ब्याळू करचां डोकरी आपरै टाबरां रै सागै अेक साळ में सूयगी । अर गुटिया समेत वै सातूं भाई पाखती री साळ में सूयग्या ।

बाकी छवूं भाई तौ सूवतां पांण घोर खांचण लागा, पण गुटिया राजा नै नींद नीं आई । आधी ढळी के गुटियौ बारै आयौ । कांई देखै के डोकरी कूंडौ छुरी लेय किणी ताक में बैठी । गुटियौ कीं तौ पैला ई सोच-समझनै जागतौ रह्यौ, पण अबै तौ उणनै पक्कौ विस्वास व्हैगौ के डोकरी निस्चै डाकण है ।

साळ रै मांय आय वौ सगळा भाइयां नै ताकळा रा घोदा देय देय जगाया । होळै सीक बोल्यौ — गुटियौ राजा जागै । डाकण छुरी पलारै । भाईड़ां सात्रचेत रे सावचेत ।

अेक अेक करनै सगळा भाई घोड़ां चढ़नै खिसकग्या । गुटियौ हुंस्यारी करनै भाइयां री ठौड़ डाकण रै सातूं बेटां नै सुवाण, ताखौ राख, डाकण रै घर सूं सोकड़ मनाई ।

थोड़ी ताळ पछै डाकण कीं खुड़कौ-वुड़कौ नीं सुण्यौ तौ कूंडौ छुरी लेय मांय आई । सातां रा ई गळा सूंत धापनै रगत पीयौ । मूंडकियां छींकां में टेर दी ।

तड़कै डाकण री बेटी ऊठतां पांण कलेवौ मांग्यौ तौ वा कह्यौ के छींका मांय सूं अेक मूंडकी लेय सिरावण कर ले ।

छींकां में तौ सगळो मूंडकियां भाइयां री । बैन धूजती

धूजती मां रै गोडै आई । रोवती रोवती सगळी बात बताई । पैला तौ मां विस्वास नीं करच्यौ । पण खुद री निजरां देख्यां लारै कीं वेम नीं बच्यौ । कमसल गुटिया री आ कारस्तांनी । आज पैली इण घर आयौ बटावू कोई जीवतौ नीं बच्यौ । वा सिंघणी वणनै घोड़ां रै खोजां खोजां लारै री लारै ताचकी ।

छवूं भाई तौ सिंघणी री हौकारां सुणतां ईं हेटै गुड़ग्या । गुटियौ मिन्नी माथै बैठौ ई सांम्ही ताचकियौ । पैला तौ ताकळा सूं उणरी आंख्यां फोड़ न्हाकी । पछै लोडां सूं चिगद चिगद उणरौ चिपलियौ कर न्हाकियौ ।

सिंघणी री पूंछ ठिरड़तौ ठिरड़तौ वौ सगळा भाइयां रै पाखती लेग्यौ तद वांनै उणरै मरणा रौ विस्वास व्हियौ ।

घोड़ां रै माथै बैठ्या जद वै गुटिया राजा नै कह्यौ— बिरथा मन में मोदीजतौ व्हैला के थूं सिंघणी नै मारी । वा तौ म्हांरै भालां सूं मरी ।

तद गुटियौ बोल्यौ — म्हैं मारी व्हूं तौ मोद ई करूं । भलां म्हारै ताकळा सूं सिंघणी कद मरै ।

धक्कै गियां छवूं भाई सोच्यौ के अबै इण पांय नै साथै क्यूं राखणी । अमरफळ लावण में भेळमभेळ जस लेवणी चावै । मारग फंटतां ईं उणनै न्यारौ कर दियौ । गुटियौ अैड़ा नुगरा भाइयां रै साथै खुद ई नीं रैवणी चावतौ हौ । वौ तौ पछै मिन्नी माथै कुदड़का देवतौ अेकलौ ई टळग्यौ ।

हालतां हालतां गुटिया रै कांनां अणछक सूंसाड़ बजावती अेक आवाज आई । देख्यौ तौ सांम्ही अेक सिकरौ उडता सूवटा नै झांपण सारू छूटौ । गुटियौ तौ भली सोची नीं कोई भूंडी ।

मिन्नी रैं आंख में ताकळौ खुवाय ऊंचौ मलापियौ । सिकरा नै ताकळा सूं वींद मार न्हाकियौ । हरियल सूवटौ उणरैं खोळा में आय चापळग्यौ ।

घणी ई पंपोळियौ तौ ई सूवटौ आंख्यां नीं खोली । तद गुटियौ पाखती रैं सरवर जाय माथै पांणी छिड़क्यौ । चुळा में लेय पांणी पायौ । इत्ता कळाप करयां पांखां फड़फड़ाय सूवटौ आंख्यां खोली ।

सूवटा री सूजणी मिटी तौ वौ कह्यौ — म्हैं सूवटां री राजा हूं । थूं म्हारा प्रांण बचाया । म्हारैं जोग कीं कांम व्है तौ बता । फरजन उतारयां नेहचौ व्हैला ।

गुटियौ राजा अमरफळ री बात बताई तौ सूवटौ कह्यौ के उण सारू औ तौ सात्र सैल कांम । सात समंदां पार अेक अमरफळ री रूंख उणरैं देख्योड़ौ ।

गुटियौ राजा उणी ठौड़ तीन दिनां तांई ढब्यौ । चौथे दिन सूरज री उगाळी तीन सूवटा तीन अमरफळ लायनै दिया । गुटियौ राजा तौ पछै सूवटां रै राजा सूं जवारड़ा करनै आपरैं देस ढळियौ ।

राजा आपरैं सातवैं कंवर नै इत्तौ करामाती नीं जांण्यौ हौ । मोर थापलनै अमरफळ खायौ । राजा तौ खावतां ई जवांन व्हैगौ । गुटियौ अेक अमरफळ आपरी मां नै दियौ । रांणी ई राजा रैं साईनी व्हैगी । राजा उणनै सिरै मांनेतण बणाई ।

अेक अमरफळ गुटियौ राजा खुद खायौ । वौ तौ खावतां ई चार हाथ रौ भरपूर मोट्यार बणग्यौ । उण सूं डीगौ खिनख आखा राज में ई नीं हौ ।

पछै राजा घणौ कह्यौ तौ वौ भाइयां नै सोधण सारू पाछौ वहीर व्हियौ । पवनपंखी घोड़ा माथै बैठ पवन रै वेग उडियौ । पाधरौ सातूं बेटां नै मारण वाळी उण डाकण रै घरै गियौ । मां रै मरयां बेटी उणरौ कांम संभाळियौ । उणरा बाड़ा में चढ़्या असवारां, घोड़ां री छ पूतळियां देखी तौ वौ तुरत समझ्यौ के अै उणरै भाइयां री इज पूतळियां ।

गुटियौ राजा तौ घोड़ा सूं हेटै उतर खड़ां खड़ां साळ रै मांय गियौ । डाकण री बेटी सिणगार करती ही । वौ तौ उणरी चुट्टौ झाल बारै ठिरड़नै लायौ । पिछांटण वाळौ ई हौ के वा अरड़ाई — कीं करयां म्हनै छोडै ।

तद वौ कह्यौ के म्हारै छवूं भाइयां नै जीवता करै तौ छोडण री बात सोचूं ।

डाकण री बेटी हुंकारौ भरयौ तौ वौ उणनै छोडी । इमी रौ कूंपलौ लाय वा पूतळियां माथै छांटा न्हाकिया के सगळा जीवता व्हैगा ।

छवूं भाइयां नै साथै लेय वौ आपरै राज आयौ । राजा सगळां नै ई पूछयौ तौ वै गुटिया री सराह करी । वौ साथै नीं व्हैतौ तौ वै कदै ई मर जाता ।

राजा राजी होय आपरै जीवतां थकां गुटिया नै राज सूंप दियौ । अेक चकवा राजा री बेटी रै साथै धूंमधांम सूं उणरौ ब्याव व्हियौ । जुगां तांई जीवियौ अर थाट सूं राज करयौ । गुटिया राजा रै जस रौ उजास सूरज सूं ई सवायौ झळकियौ ।

कमाई रौ जोग

जैड़ी दीख, वैड़ी सीख
जैड़ौ खांण, वैड़ी वांण
जैड़ौ वास, वैड़ौ अभ्यास
जैड़ौ दीजै, वैड़ौ लीजै
जैड़ी रात, वैड़ौ परभात
जैड़ी करणी, वैड़ी भरणी

तौ रांमजी भला दिन के अेक हौ सुथार नै दो हा उणरै वेटा। मोटौ बेटौ कमगर, भोजी अर काठौ हौ। छोटकियौ अणूंतौ खरचू, दयाल, मस्त अर बेपरवा हौ। मूठी में नांणौ आयां पैली खरचणियौ। अेकर बाप राजाजी नै उडण-खटोळौ बणायनै दियौ सौ राजाजी अेक लाख रिपिया इनांम रा दिया। घर में किणी बात री घाटौ तौ हौ नीं, इण खातर बाप छोटकिया नै किणी बात सारू पाल्यौ कोनीं। दिन दिन उणरौ ऊल-फेल वधतौ गियौ। जिनावरां नै चारौ, कवूड़ां नै धांन, मंछियां नै आटौ, मगतां नै रोटी-बाटी, पंछियां नै चुग्गो-पांणी — वौ तौ हरदम आं कांमां में रुंधीज्योड़ौ रैतौ। बस्ती अर कांकड़ में वौ आपरै हाथां हजारूं रूंखड़ा लगाय दिया। थांणा बणाय वगत माथै सगळा रूंखां नै पांणी पावणौ मांमूली बात नीं ही।

रूंख रूंख रौ जाब्तौ अर रुखाळी सवाय में ।

सुथार रा उण छोटकिया बेटा नै पंछी-जिनावर ओळखण लागगा हा । उणनै देखतां ईं दोळा व्है जाता । पंछियां रै पांणी वास्तै वौ बस्ती अर कांकड़ में अणगिण तिगरा टिराय दिया हा ।

दोनूं बेटा परण्या-पांत्या हा । माईतां रौ सुरगवास व्हियौ जणा थाट सूं लारै औसर-मौसर करचौ । दोनूं भाई अेक बरस तांईं तौ भेळा रह्या । छोटकिया भाई रा धूपटा उणी भांत चालू हा । अेक दिन भौजाई आपरा धणी नै सेवट काई होय कह्यौ— देवरजी तौ तूंबी लेवण री तेवड़ी दीसै । कमाई छदांम री करै नीं अर खरचा में राजाजी सूं ईं धकै पड़ै । अै घर रैवण रा है के जावण रा । अपां भेळा क्यूं मरां । पंचां नै बुलाय न्यारा कर दो । आपरी खांचैला नै ओढ़ैला ।

बडोड़ौ भाई खुद केई दिनां सूं आ बात सोचतौ हौ । घरवाळी रै कैतां ईं पूरी जचगी । सिञ्झ्या रा छोटकियौ भाई तिगरां में पांणी भराय घरै आयौ तद बडोड़ौ भाई न्यारा होवण री बात चलाई ।

छोटकियौ भाई कह्यौ—म्हैं तौ जांणूं के भेळप रा भाग मोटा । न्यारा होवण में कीं वत्ताई नीं । म्हारा सूं न्यारा व्हियां भौजाई रै तौ भेळा ई रैवौला । पछै म्हैं तौ मां-जायौ भाई हूं ।

मोटोड़ौ भाई बोल्यौ—भायां रा भाई न्यारा व्हैता आया, इण में मेहणी री किसी बात । थूं कमाई धेला री करै नीं, फगत अनाप खरचणौ जांणै । आ भेळप कित्ताक दिन खटैला । म्हारा सूं तौ इण भांत दीखती आंख्यां आंधौ नीं वणीजै ।

सेवट छोटकिया भाई नै कैवणौ पड़्यौ के वौ बडा भाई नै कांई ओड़ौ देवै । ज्यूं वांरै जचै त्यूं करै ।

वडोड़ा भाई रै तौ जच्योड़ी ही इज । दूजै दिन ई पंचां नै भेळा कर वेंचवाड़ौ करवाय दियौ । छोटकियौ भाई तौ पाखती ई नीं वैठ्यौ । पंच करै सौ कबूल । जिण वगत छुरी-छेक वंट होवण लागौ वौ रूंखां रा थांणा में खुरपी लगाय जमीं पराळू करतौ हौ । राच-पीच, जमीं-जायदाद, बरतन-बासण गैणा-गांठा, वित्त-मवेसी, चारा-पूळा अर धन-माल सगळा री वंटवाड़ौ व्हैगी । छोटकियौ भाई तौ भुळाया सौ ई अंगेजिया । चात्रंग भौजाई पंचां नै माल-मलीदा खवाड़ अर कीं मूठी निंवाई कर खासौ हत्थौ मार लियौ । पण देवर रौ सुभाव तौ अैड़ौ के वौ कीं नीं देवता तौ ई मूंडौ नीं खोलतौ । इत्तौ ई दिवरांणी रै पांण व्हैगौ । वा पांती छोडण सारू त्यार नीं ही ।

भोटा अर काटीजियोड़ा राच-पीच धणी रै मूंडागै न्हाक दिवरांणी कड़मड़ करती कैवण लागी—जद लोह रा खीलां वास्तै ई मन विटळाय लियौ तौ लारली चीजां में कांई खांमी राखी व्हैला । भगवांन नाक री डांडी माथै बैठौ, कीं बात नीं । करचा जैड़ा ई भरैला । छोटा भाई री पांती खाया सपना में ई सोरा नीं व्हैला । म्हारौ काळजौ बाळ्यौ वांरौ भगवांन बाळैला ।

धणी समझाइस करी के वा क्यूं बिरथा कळपै, सेवट तौ हाथां री कमाई कांम आवैला । बाप रौ लेणौ ई तौ बेटा उतारचा करै ।

तद घरवाळी कह्यौ—थें कमाई करता व्हौ तौ कळपूं ई

किण वास्तै । न्यारा व्हियां अबै तौ चेतौ राखज्यौ । थांरौ तौ कीं कोनीं, बुढ़ापै टींगरा रुळ जावैला ।

धणी जबाब दियौ—म्हनै पैला जैड़ौ चेतौ हौ वैड़ौ ई चेतौ धकै राखीजैला । न्यारौ व्हियां म्हारौ सुभाव तौ बदळै कोनीं ।

छोटकियौ भाई तौ उण इज भांत डंडिया बजाया अर पांती आई पूंजी नै नित ठांणै लगावतौ गियौ । सेवट अेक दिन अैड़ौ आयौ के उणरै पाखती राती छदांम ई नीं बची । पेट भरण रा ई फोड़ा पड़ण लागा । कमाई करनै कित्तीक करै । करचां सांधौ ई कांई लागै । अणगिण जीव-जिनावर, पंछी, कीड़ियां अर रूंखां रौ पोसण दो हाथां सूं कीकर व्है ।

लुगाई नित मौसा देवती के जद इण पौच रा धणी हा तौ मुलकां रा डाळा गळा में क्यूं लिया । बाप रौ संच्योड़ौ धन उडावतां कांई जोर पड़्यौ ! हाथां कमाय अेक कीड़ी-नगरी ई सींचै तौ जांणै ।

घरवाळी घणौ हलवलायौ तौ अेक दिन वौ काटीजियोड़ा राचां नै उजाळिया । संवारनै टंच करचा । क्वाड़ी, वसूलौ, रंदौ अर करोती लेय वौ घर सूं वहीर व्हियौ । कांमू लकड़ी वाढ़ण सारू ।

वौ मारग वेवतौ मन में सोचण लागौ के जकौ आपरै हाथां अणगिण रूंख लगाया वौ आज लकड़ी वाढ़ैला । लीलौ रूंख कीकर वढ़ीजै । हरियल पांनां छाया घेर-घुमेर तरवर कित्ता रूपाळा अर सुहावणा लागै । सुथार रौ औ धंधौ ई निकांमौ ।

घणौ ई भटकियौ पण कठै ई सूखौ गोड निजर नीं आयौ। लीला रूंख सांम्ही तौ करड़ी मीट सूं ई नीं जोईजै, पछै वाढ़णी तौ आवै ई कीकर ! खाली हाथ पाछौ वळियौ तौ घरवाळी घर में पग नीं धरण देवैला।

सोचतां सोचतां वौ मन में अेक जुगत विचारी के आज पैली वौ अलेखूं रूंख लगाया, जे पूछयां कोई रूंख हांमळ भरदे तौ उणनै वाढ़ लेवणौ, हांमळ नीं भरै तौ टींचियौ ई नीं देवणौ। हरियल रूंखां रा हरचा जीव कदै ई नुगरा नीं व्हैला।

आ बात विचार वौ चिपतां ई अेक चन्नण रा रूंख नै पूछयौ के वौ मया देवै तौ उणनै वाढ़ै। वौ चन्नण रौ रूंख तौ पूछतां ई हांमळ भर दी। कह्यौ — आखा बन में लाय लगाय दो तौ ई आपरा गुण नीं भूलां, पछै अैड़ौ कुण नुगरौ के आपनै नटै ! जिणरा भाग व्हैला वौ आपरै हाथां मुगति पावैला।

आ वात कैय वौ चन्नण रौ रूंख मुद्दा री बात बताई के उणरी लड़की वाढ़तां ई सूख जावैला। अठै कांकड़ में बैठौ ई सुथार रौ वेटौ उणरौ अेक ढोलियौ घड़ै। राजाजी नै जाय वेचै पण मोल नीं बतावै। ढोलियौ आपै ई आपरौ मोल बताय देवैला।

ज्यूं चन्नण रौ रूंख कह्यौ त्यूं वौ करचौ। वाढ़तां ई लकड़ी सूखी खणक व्हैगी। उणी ठौड़ बैठ वौ सुथराई सूं ढोल्यौ घड़चौ। सौरम सूं आखौ वन महक उठचौ।

ढोल्यौ उंचाय सुथार रौ बेटौ पाधरौ राज-दरबार पूगौ।

राजाजी अर आखी परघै नै ढोलियौ अणूंतौ इज दाय आयौ। राजाजी खुद आपरै स्त्री-मुख सूं फरमायौ के ढोलिया री कारीगरी तौ मूंडै बोलै। राजी होय पूछ्यौ के कारीगर इण वेजोड़ ढोलिया रौ मोल बतावै। मूंडै मांगी बगसीस मिळैला। तद कारीगर कह्यौ—अंनदाता, म्हारौ हुनर अमोलक है, म्हैं उणरौ मोल नीं कूंतणी चावूं। आप फरमायौ के म्हारी कारीगरी तौ मूंडै बोलै, सौ औ ढोलियौ मतै ई मूंडै बोल आपरौ मोल बताय देवैला।

राजाजी घणौ ई कह्यौ तौ ई वौ सुथार ढोलिया रौ अेक टकौ ई नीं लियौ।

राजाजी आपरा रंग-मैल में ढोलियौ ढळवाय दियौ। रात रा पोढ़ण रौ मतौ कर्‌यौ तौ वांरै अणछक जची के कारीगरी रौ मोल सुणियां बिना सूवणौ आछौ कोनीं। जद सुथार रै बेटै बद बदनै कह्यौ तौ ढोलियौ अवस आपरौ मोल दरसावैला। राजाजी रै आ धत भिळगी तौ वै जागता बैठा रह्या। नवा ढोलिया रै सांम्ही कांन अर मीट लगाय अेकटक जोवण लागा। रात तीनेक घड़ी ढळी जणा राजाजी सांप्रत आपरी निजरां कांई खिलकौ देख्यौ के अेक पागौ मतै ई ढोलिया सूं बारै निकळियौ। हवा में अधर हालतौ बारै जाय अदीठ व्हैगौ। राजा सोच में पड़ग्यौ के औ पागौ क्यूं तौ बारै निकळियौ, रांम जांणै पाछौ आवैला के नीं। यूं करतां करतां आखी रौ आखौ ढोलियौ खिसकनै अलोप व्हैगौ तौ अपांरौ कांई जोर चालैला।

राजा घणौ ई माथौ खपायौ। पण कीं बात समझ बैठी

नीं । सवा घड़ी रै उपरांत वौ पागौ मतै ई पाछौ आय ढोलिया रै जुड़ग्यौ । जुड़तां ईं जोड़ रौ पागौ बोल्यौ — हां रे, सवा लाख रा पागा थूं सिध गियौ नै कांईं खेलौ करनै आयौ ।

तद वौ पागौ पड़ूत्तर दियौ — इण नगरी अेक खईस रैंवतौ । सैंकड़ूं लोगां रौ जोखौ करचौ । राजाजी खप खपनै हार थाक्या पण खईस नै कोई नीं मार सक्यौ । आज री रात वौ अपांरा राजाजी नै मारणौ तेवड़ियौ हौ । म्हैं उणरौ कांम तमांम करनै आयौ । सागै इज खेजड़ी रा डाळा रै ऊंधौ बांध लटकाय दियौ ।

राजा आ बात सुणनै घणौ राजी व्हियौ । जे आ बात साची है तौ पछै इण ढोलिया रौ कांईं मोल । आखौ खजांनौ लुटाय दे तौ ई थोड़ौ ।

राजा खुसी मनावतौ बैठौ हौ के देखतां देखतां उणी भांत दूजोड़ौ पागौ वळै बारै निकळनै अदीठ व्हैगौ । राजा मन में सोचण लागौ के देखां औ कांईं नवौ खिलकौ करनै आवै ।

सवा घड़ी रै उपरांत उणी भांत दूजोड़ौ पागौ पाछौ आयनै जुड़ग्यौ । तद जोड़ आळौ पागौ बोल्यौ — हां रे , सवा लाख रा पागा थूं सिध गियौ नै कांईं नवादी बात करनै आयौ ।

दूजोड़ौ पागौ पड़ूत्तर दियौ के राज रौ खजांनौ चोरण सारू तीन डकरेल चोर आया । हीरा - मोत्यां री पोटां बांध माथै उखण वहीर होवण वाळा इज हा के वौ मौका माथै पूगग्यौ । तीनां रा भोगनां बिखेर मार राळचा । बंधियोड़ी पोटां खजांना तालके कर दी । वौ नीं जावतौ तौ राज रौ देवाळौ निकळणा में कीं खांमी नीं ही ।

राजा रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । आज औ ढोलियौ तौ जबरी लाज राखी । के देखतां देखतां तीजोड़ौ पागौ ई उणी भांत बारै निकळनै अदीठ व्हैगौ । राजा कोडायौ होय उणरी बात सुणण सारू बैठौ रह्यौ । पलक ई नीं झपाई । सवा घड़ी रै उपरांत तीजोड़ौ पागौ उणी भांत मतै ई आयनै जुड़ग्यौ । तद जोड़ आळौ पागौ बोल्यौ — हां रे, सवा लाख रा पागा थूं इत्ती ताळ सिध गियौ नै कांई तोतक करनै आयौ ।

तीजोड़ौ पागौ पडूत्तर दियौ के पाखती री अेक देंत सूतोड़ी राजकंवरी नै ढोलिया समेत उंचाय ले जावतौ हौ के वौ देंत रौ चिगदियौ कर न्हाकियौ । राजकंवरी नै पाछी मैलां लाय सुवाणी । जे वौ वगत माथै नीं जावतौ तौ राजकंवरी रा पाछा सपना में ई दरसण नीं व्हैता । साकळै ठा पड़्यां रांणीजी रौ चित्त उपड़ जातौ ।

बात सुण्यां राजा री खुसी रौ पार नीं रह्यौ । ढोलिया री अैड़ी करामात तौ नीं जांणी ही । कारीगर रै कह्या मुजब साचांणी औ ढोलियौ तौ अमोलक । उणरौ इत्तौ ठरकौ ई नीं के वौ इणरौ मोल चुकावै । के देखतां देखतां चोथोड़ौ पागौ ई उणी भांत ढोलिया सूं बारै खिसकियौ । पण वौ बारै जाय अदीठ नीं व्हियौ । बारणा रै मांय राजा री पगरखियां खुली ही । वौ तौ धमाधम डावी पगरखी नै कूटण मंडियौ सौ निरी ताळ तांई उछळ उछळनै कूटतौ गियौ । पछै कूटतौ ढबनै मतै ई पाछौ आय ढोलिया सूं जुड़ग्यौ । जोड़ आळै पागै पूछ्यौ — हां रे, सवा लाख रा पागा, थूं राजाजी रा रंगमैल में आ कांई धमाधम मचाई ।

तद चोथोड़ौ पागौ पडूत्तर दियौ के इण डावी पगरखी में डूंमी सरप चापळनै गूंचळी मार बैठौ हौ । जे म्हैं धमाधम मचाय उणनै नीं चिगदूं तौ वौ राजाजी नै डसण वाळौ ई हौ। डस्यां राजाजी तौ पांणी ई नीं मांगता । आज राजाजी सारू काळ-रात रौ जोग हौ , खईस रै हाथां बचग्या तौ काळ डूंमी सरप रौ रूप धरनै आयौ । उणरौ चिगदियौ नीं करतौ तौ तड़कै नगरी में हाय-त्राय मच जाती ।

राजाजी ज्यूं-त्यूं हीमत करनै नीठ पगरखी रै पाखती गिया । साचांणी सांप चिगदियोड़ौ पड़्यौ । लारली तीनूं बातां ई साव साची व्हैला । नीं राजाजी रै इचरज रौ कोई पार हौ अर नीं वांरै हरख रौ ।

दिनूंगा दीवांणा रै साथै जाय खुद राजाजी आपरी निजरां तीनूं बातां रौ पतियारौ लियौ । खेजड़ी रै डाळै मरयोड़ौ खईस ऊंधौ लटकियोड़ौ मिळियौ । तीनूं चोर मरया लाधा अर खजांना में पोटां बंधियोड़ी मिळी । राजकंवरी नै पूछ्यौ तौ वा हांमळ भरी के पागा वाळी बात सगळी साच । वौ दंत रौ भोगनौ नीं बिखेरतौ तौ रांम-जांणै उण में कांई कांई बातां बीतती ।

पछै राजा सुथार रा बेटा नै बुलायौ । दरबार मांडियौ । रात वाळी चारूं बातां सुणाय कह्यौ के भलां अैड़ा करामाती ढोलिया रौ कांई मोल व्है सकै । वांरा प्रांण ढोलिया रै पांण दो वार बचिया । कंवरी रौ विखौ टळियौ । गियोड़ौ खजांनौ हाथै लागौ । पागां री बात-चीत रै हिसाब सूं पांच लाख रिपिया व्है । पण वांरी जांण में औ तौ कीं मोल ई कोनीं ।

सुथार रा बेटा नै पूछ्यौ तौ वौ कह्यौ के पागा मोल

कूंतियौ उण सूं कम तौ लेवण सारू वौ राजी-वाजी पण वत्ती तौ अेक छदांम ई नीं ले । पछै राजाजी कांई जोर करता । घणौ ई वत्तौ देवण री मंसा ही । पण सुथार रौ बेटौ नीं मांन्यौ तौ वांनै पांच लाख रिपिया में ई सबूरी झेलणी पड़ी । राजाजी रौ आदेस मांन दीवांण तुरत रिपियां रा गाडा जुताय कारीगर री गवाड़ी भिजवाय दिया ।

बात सुणियां भाई भौजाई रै कांनां री ठेठी झड़गी । रिपियां री गाडियां देखी तौ वांरी आंख्यां आडी अंधारी आयगी । मन में घणा ई पिछताया के उण दिन न्यारौ नीं करता तौ इण अणचींती माया में वांरौ ई सीर रैवतौ । भौजाई हुंस्यार ही । धणी नै कह्यौ के वौ गाडियां रै पाखती जाय ऊभ जावै तौ भाई नै ई थोड़ौ घणौ संकौ आवैला ।

भौजाई री बात साची निकळी । छोटकियौ भाई अेक गाडी उणी घड़ी बडा भाई रै घरै पुगाय दी । दिवरांणी बड़का-तड़का करचा पण तौ ई वौ कीं गिनरत करी नीं ।

नांणा री मोकळ व्हैतां ई छोटकिया भाई रौ आरमखांनौ तौ पाछौ वैड़ौ री वैड़ौ चालू व्हैगौ । दांन-पुन्न अर भलाई रौ कीं सेड़ौ ई नीं रह्यौ । आस करनै गवाड़ी आयौ जका नै हाथ सूं ई उत्तर दियौ, मूंडा सूं नीं । बंध्यौ नांणौ अर छुट्टौ खरचौ, बेहिसाब अर बिना मापै । खूटतां कांई जेज लागै । बरस बीत्यां पैली पैली सै माया ठांणै लागगी । दिवरांणी जेठांणी रै पाखती जाय धणी रै दियोड़ौ गाडौ पाछौ मांग्यौ तौ वा अगूंठौ बताय दियौ ।

वा बरका करती आई । धणी सूं कजियौ करचौ । मेहणियां

देवती कैंवण लागी—ठाला-भूला सूं तीन टाबरां रौ पेट ई नीं पाळीजै, जकौ समंदर री मंछियां रौ पेट भरण रौ गुमेज करै। सात पीढ़ी तांई पूंजी नीं खूटती सौ खारा पांणी में वगाय दी। अैड़ा मोलिया मांटी सूं तौ रंडापौ सखरौ। आं रोवतां टींगरां नै कांई म्हारौ माथौ खवाड़ूं। रूंखां रा पंछी, जंगळ रा जीव जिनावर अर कीड़ा-मकोड़ा थारै भरोसै कोनीं। खुद भगवांन सूं ई जद वांरौ पेट नीं भरीजै, तौ थारी कांई जिनात। वापड़ौ भगवांन नै ई लोपणी चावै।

राजाजी ढोल्या रा पांच लाख रिपिया दियां पछै घणौ ई कह्यौ के जरूरत पड़्यां राज रौ खजांनौ उण सारू किणी वगत खुलौ है। किणी बात रौ कीं संकौ नीं राखै। घरवाळी घणौ ई घोदायौ तौ ई वौ राजाजी रै पाखती नीं गियौ। बोल्यौ: बिना हक किणी रै आगै हाथ नीं पसारूं। कमाई री दूजी भाळ करूंला, पण राज-दरबार सांम्ही तौ मूंडौ नीं करूं।

पंछी, जीव-जिनावर अर मंछियां सूं दिसावर जावण री मया मांग वौ कमाई करण सारू वहीर व्हैगौ। हालतां हालतां अेक लांठौ नगर आयौ। उठै रात-वासौ लियौ। अेक लखपति सेठ सालस अर समझणौ मोट्यार जांण उणनै पड़चूनी दुकांन माथै चाकर राख लियौ। थोड़ा दिनां में ई सेठ नै सुथार रा बेटा माथै पूरौ पूरौ विस्वास व्हैगौ। कोई जोखौ नीं जांण सेठ उणरौ सगळौ धंधौ सुथार रा डीकरा नै संभळाय खुद अळगै दिसावर माया जोड़ण रौ मतौ करयौ। सेवट अेक दिन सुभ मौरत वंचाय वौ तौ परदेस सिधायगौ। सुथार रौ बेटौ तौ जांणै इण वात नै उडीकतौ इज व्है। सेठ रै जातां ई माल

इत्तौ सूंगौ कर दियौ के आखा चौखळा री उठै ढूक व्हैगी। दूजी सैंग दुकांनां री कमाई ठाय रैगी। आखै दिन बैठा माखियां मारता। ग्राहक पेडी चढ़णौ तौ अळगी बात उठोनै मूंडौ ई नीं करता। चौखळा रै दुकांनदारां रै लाय-पाय लागगी। रांम-नांव तौ भूलग्या नै अस्टपौर सुथार रा बेटा नै दुरासीस देवता। गरीब-गुरबा अर माल लेजावणिया तौ घणी ई आसीसां देवता।

सुथार रौ बेटौ सूंगी दुकांनदारी रै अलावा अेक कांम वळै करतौ के सवार सिझ्या दुकांन रौ सगळौ फूस वाईदौ भेळौ करनै मूंणां में घाल माथै खांम देय देतौ। किणी भांत रौ कचरौ वारै नीं फेंकतौ।

अेक दिन चौखळा रा बांणिया भेळा होय सला-सूत विचारी। कैणा में तौ सेठजी री भलाई अर असल में आपरी कमाई री खातर दिसावर कागद भेज्यौ के काठ वाढ़णिया कद बिणज करचौ। आपरी आखी पूंजी रै धूंई लगाय दी। कागद बांचत पांण पधारौ।

सौ वै लखपति सेठ तौ कागद आधौ बांचतां ई उठा सूं वहीर व्हैगा। घरै आय बातां सुणी तौ सुणता रैगा। कैड़ा अवूझ नांढ़ नै बिणज रौ कांम सूंप्यौ। पण अबै पिछतायां कांई व्है। इत्ती बातां सुण्यां ई वै रीस माथै काबू राख्यौ। दुकांन माथै गिया तौ कांई देखै के ग्राहकां रौ छोटौ-मोटौ मेळौ मच्योड़ौ। ज्यूं त्यूं करनै दुकांन रै मांय पूगा। सुथार रौ बेटौ अंधा-धुंध माल जोखतौ हौ। सेठां नै देख्या तौ ई वौ मोळौ नीं पड़चौ। आपरौ कांम चालू राख्यौ। सेठ डोढ़ में पूछचौ — ग्राहकी रौ औ रंग-ढंग देख्यां तौ लारै निसैंवार कमाई

व्ही दीसै । इण बात री ठा व्हैती तौ म्हैं दिसावर ई नीं जावतौ ।

सुथार रौ बेटौ माल जोखतौ जोखतौ ई बोल्यौ — हां, कमाई री कांई पार । घणी ई करी ।

सेठ कह्यौ — कठै गाडनै राखी । म्हनै निजरां बता तौ खरी ।

सुथार रौ बेटौ जबाब दियौ — पूंजी नै गाडण री कांई जरूरत । वा तौ हथाळियां हथाळियां रळकती आछी लागै । म्हैं सोदौ - सूत जोखूं, लोग - बाग खोटी व्है, आप मांय पधारौ । खांम दियोड़ी मूंणा में पूंजी जाब्ता सूं अंवेरनै राखी हूं ।

सेठ मांय गिया । खांम उघाड़ सगळी मूंणा जोई । कोरा हीरा - मोती ई हीरा - मोती भरया । पळपळाट करै । सेठां री अकल अर आंख्यां दोनूं चूंधीजगी । वै आखी ऊमर में ई इत्ती कमाई नीं करी । बिरथा अळगै दिसावर भटकिया ।

पाखती आय सुथार रै बेटा रा मोर थापलिया । कह्यौ: लोगां नै थारी कमाई ईवै कोनीं । इण वास्तै चुगलियां करै । थूं कांन मत दीजै ।

सेठां रै कोई संतान नीं ही । वै सुथार रा डीकरा नै खोळै ले लियौ । उणरी बहू नै ई उठै बुलाय ली । दोय ओडी सोना - गैणौ देख वा तौ बगनी व्हैगी । अणगिण हीरा - मोती कमावणिया धणी रौ वा अणूंतौ कुरब - कायदौ राखण लागी । उण सूं मीठौ बोलण लागी ।

सुथार रै बेटा रा थाट - बाट तौ पाछा वैड़ा रा वैड़ा चालू व्हैगा । कीड़ी - नगरां सारू नित बोरियां रै मूंडै दळियौ

ऊठतौ, पंछी जिनावरां सारू धांन-चून अर मंछियां सारू आटा री गोळियां रौ तौ कोई मापौ ई नीं हौ ।

सेठ ई थोड़ा दिनां में माया परवांण विणज वधायौ । दुनियां में कोई अैड़ी चीज नीं सौ वांरै कोठै नीं मिळै । आखा राज में इण बात रौ नामूंन फैलग्यौ के कोई चीज मांग्यां नीं मिळै तौ सेठ डंड झेलण नै त्यार । घणी करौ तौ तीन दिनां रै मांय दुनियां रै किणी खुणा सूं मंगाय देवै, पण नटै नीं ।

राजाजी रै कांनां ई अै समंचार पूगा । वै पतियारौ लेवण सारू निरी वार घणी घणी चीजां मंगाई । सै चीजां सेठां रै कोठै मिळी । राजाजी ई इण बात रौ इचरज करचौ के म्हाटा सेठ री हाट तौ जबरी । अैड़ी दुकांन तौ आज पैली कदै ई नीं सुणी ।

सेठां रै आयां सुथार रौ बेटौ तौ पेडी माथै ढबतौ ई नीं । भूखी गायां नै चरावतौ । रूंख रूंख तिगरा टेरतौ । कीड़ी नगरा सींचतौ । मंछियां नै गोळियां चुगावतौ । गरीब-गुरबां नै रोट्यां जीमावतौ । आपरा हाल में मस्त । पंछियां भेळौ मगन ।

सेठ हिसाब सूं कमाई करण लागा तौ दिन-दिन पूंजी खूटती गी ।

दूजा बिणज करणियां री आंख तौ सेठां माथै ही इज । कोई मौकौ नीं मिळै जिणरौ रौ तौ वै ई कांई करै । पण अेक दिन जोग री बात अैड़ी बणी के दोखियां री मन चींती व्ही ।

देस रौ निपूतौ राजा दीवांण री सला मांन सातवौ ब्याव

करण नै तौ कर लियौ पण नवी रांणी उण सूं दोय घाट सित्तर वरस छोटी। रांणी सोळै वरसां री अर राजा सोळै घाट सौ वरसां रौ। रांणी रौ रूप अर जोबन जांणै बळती लाय में सिळगण लागौ। चांदणी रातां झाळां ज्यूं लखावती। कोयलां रौ टहूकणौ हाडां री क्रांव क्रांव सूं ई खारौ लागतौ। रांणी सारू अंजळ लेवणौ ई हरांम व्हैगौ। रांणी री छींयां भेंट्यां ई राजा रौ डील मतै ई धगधग धूजण लाग जातौ। उणरै रूप री झनकौ पड़तां ई जाप ज्यूं आवण लाग जाती। फगत अेक रात सारू ई ढळयोड़ी जवांनी पाछी बावड़ जावै तौ राजा राज छोडण नै त्यार। राज में घणा ई मोट्यार-काटी हुस्तंड व्है ज्यूं माच्योड़ा, पण देस रौ धणी अंगै ई ढोळै बैठग्यौ! जे खजांना रै धन ज्यूं जवांनी री लूट-खसोट व्हैती व्है तौ राजा रै बूढ़ौ होवण रौ सवाल ई नीं। किणरा जोबन साटै सौदौ करै। कदैई कदैई राजा रै जचती के राज रा आखा मोट्यारां रा माथा कलम कराय दे। औ कुदरत रौ कैड़ौ अन्याय के राज में रूप अर जोबन तारा लांघता फिरै अर राजा बूढ़ौ व्है जावै।

राजा नीं नीं व्है जैड़ी अजोगती बातां विचारतौ, पण वां बातां सूं नवी रांणी री कांई गरज सरती। राजाजी रै मन री भावना रौ मरम आखी परधै जद भली भांत समझगी तौ अेक दिन पांच-सातेक मूंडै लाग्योड़ा अगवांणी हाथ जोड़ अरदास करी के अमर-फळ हाथै लागै तौ अंदाता में अखूट जवांनी पाछी बावड़ै। जद फलांणै गांव रौ फलांणौ लखपति सेठ इण बात रौ गुमेज करै के उणरी हाट धरती री सगळी

चीजां मिळै तौ वौ अमर-फळ लायनै दे। नींतर सगळा घर वाळां नै घांणी में पीलावण रौ आदेस। राजाजी रै तौ कैतां ई बात समझ में आयगी अर वै कैतां ईं मांनग्या। पछै किण बात री ढील। राजा रा हरकारा पवनगत घोड़ां माथै बैठ वां लखपति सेठां री हाट पूगा। सात दिनां रै मांय मांय अमरफळ पूगतौ करण रौ आदेस सुणायौ। नीं पूग्यां कांई गत बिगड़ैला सौ सुभट भुळावण दे दी।

आदेस सुणतां ईं सेठां री हवेली तौ जांणै त्रिखा रा भाखर माथै भाखर उलळग्या। दिन रौ सैचन्नण ई अमावस री रात सूं वत्तौ काळौ-धाक व्हैगौ। दोखियां री बरसां सूं मन जांणी व्ही। घणा दिन व्हिया सगळा चौखळा रौ बिणज रुळावतां नै। अबै इज मौत रा पळेटा में नांमी झिलिया। नीं तौ अमरफळ जैड़ी चीज हाथै लागै अर नीं आंरा प्रांण बचै। जका अगवांणी राजाजी नै आ जुगत बताई वां सगळां री कौल परवांण मंसा पूरण व्हैगी। पण लखपति सेठां री तौ सगळी मंसावां माथै पोतौ फिरग्यौ। दिन में सात सात वळा असूंझणी आवण लागगी। उण समचा रै सागै ई नींद तौ पांखां लगाय रांम जांणै किण दिस सांम्ही उडी सौ पाछी उठीनै हर ई नीं करी।

सुथार रा बेटा रै हीयै सेठां रै घरवाळां री आ अणचींती पटकी झरी कोनीं। सेवट तीजै दिन वौ सेठां रै पाखती जाय मुळकतौ थकौ बोल्यौ—इण नाकुछ बात सारू आप इत्ता क्यूं कळपौ। सातवैं दिन अमर-फळ पुगावण रौ जिम्मौ म्हारौ। आप किणी बात री चिंता मत करौ।

सेठां नै उणरै कह्या रौ पतियारौ तौ अवस व्हियौ पण

मूंडा री दुमनापणी मिट्यौ कोनीं । भूखौ तौ सेवट धायां पतीजै । अमर-फळ पूग्यां ईं वांरी मौत टळै । लावणौ किसी सारै री बात ।

सुथार रौ वेटौ तौ वांनै धीजौ बंधाय खुद पंछियां री साळ-संभाळ लेवण सारू वन में गियौ परौ । रूंखां बैठा हरियल सूवटा देखतां ईं उण कांनी उडिया । पांखां फड़फड़ावता ओळा-दोळा टंवळियां खावण लागा । कोई खांधा माथै बैठै कोई माथा माथै बैठै । वौ वणी ई मुळकण री चेस्टा करी पण होठां माथै साची अर खरी आब भळकी कोनीं । पंछी-जिनावरां नै मिनख री भावना री तुरत पतौ पड़ै । सूवटां रौ राजा आपरै रिछपाळ रौ मूंडौ उतरचोड़ौ देख्यौ तौ उणरौ मन फड़फड़ायौ । खांधै बैठ पूछ्यौ—आज आपरौ मूंडौ उतरचोड़ौ क्यूं, म्हनै इणरौ म्यांनौ बतावौ ।

सुथार रौ वेटौ दो तीन वळा टाळम-टोळ करी तौ ई वौ मांन्यौ कोनीं । सेवट उणनै मन री बात बतावणी पड़ी । तद सूवटां रौ राजा कसूंबल हंसी हंसतौ बोल्यौ—आछौ सोच करचौ आप इण नाकुछ बात रौ । कालै सूरज भगवांन री किरणां रै समचै अमरफळ लायनै देवूं । आप अबै ई सोच करता नीं ढव्या तौ म्हैं सगळा सूवटा सिळगनै मर जावांला ।

तठा उपरांत सुथार रौ वेटौ तौ मस्ताई सूं आपरा नित-नेम में लागग्यौ । इण मरम नै भली-भांत जांणतौ हौ के नीं व्हैती बात सारू के तौ पंछी-जिनावर हांमळ ई नीं भरै पण अेकर हांमळ भरयां वांरौ कौल अखरै । सूरज ऊगण सूं टळै तौ वांरा वाचा टळै । वौ तौ अेकर हांमळ भरयां सांप री बात

माथै ई भरोसौ कर लेतौ ।

साचांणी दूजै दिन सूवटां रौ राजा तौ सूरज री उगाळी अमरफळ लेयनै आयग्यौ, जांणै किरणां माथै बैठनै ई आयौ व्है । अमरफळ हाथ में आयां ईं सुथार रौ बेटौ कीं गताघम में पजग्यौ । तद गिरजां रौ राजा पूछ्यौ—आप अबै किण सोच में पड़ग्या ।

सुथार रौ बेटौ जबाब दियौ के राज-दरबार अठा सूं डेढ़ सौ कोस आंतरै । सिंझ्या पैली पैली वौ पाछौ आवणौ चावै । नित-नेम में अेक टंक री ई नागा नीं करणी चावै ।

तद गिरजड़ां रौ राजा कह्यौ—म्हैं जांणू के आप म्हां पंछी जिनावरां सारू ई कळपौ । म्हारी उडांण पछै किण दिन कांम आवैला ।

सेठां सूं मिळ-भेंटनै सुथार रौ बेटौ गिरज माथै बैठ आभौ नैड़ौ लियौ । आभा री ऊंचाई सूं आ धरती अर कुदरत कित्ती रळियावणी लागै—जांणै वेमाता रै हाथां कोरचोड़ी कोई सिरै चित्रांम । कठै ई डूंगर, कठै ई रूंख, कठै ई नंदियां, कठै ई बाड़ा-बेलड़ियां, कठै ई छानां अर हवेलियां, कठै ई धोरा अर कठै ई समंदर । जांणै किणी विराट चित्रांम री न्यारी न्यारी कोरणियां के न्यारा न्यारा मांडणा ।

धरती माथै ऊभनै देख्यां तौ निजर अेक ई दायरा में बंध जावै । आं दोनूं नैन्ही नैन्ही आंख्यां सूं इत्ती भांय लग दीख्या करै, आ बात तौ सपना में ई नीं जांणी ही । माथै गिगन री अनंत सून्याड़, असीव सोसनी रंगत, सूरज रौ सैलंग उजास अर हेटै कुदरत रौ बेजोड़ बणाव । कुदरत रौ औ

रूप देख्यां ई आंख्यां री दीठ सारथक व्है । सुथार रै डीकरा रा सात जलम सुफळ व्हिया ।

पांखां रा भपीड़ उडावतौ गिरज सेवट राज-दरबार पूगौ ई । अमरफळ री बात सुण्यां राजा रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । खातां ई तौ जांणै वांरौ नवौ जलम व्हियौ । नवी रांणी रै जोड़ री मतवाळी जवांनी पाछी वावड़ी । रांणी अबै साचैली रांणी वणी । इत्ता दिन तौ अेक अभ्यागत मंगती ज्यूं मंगती ही ।

दूजोड़ी सगळी रांणियां ई कळझळ करचा के राजाजी रै उनमांन वै ई जवांन व्हैणी चावै । नवी रांणी बुढ़ापा रा डर सूं पैला ई जाव्तौ करणौ वाजिब समझ्यौ । सुथार रा बेटा नै राजाजी सात अमरफळ वळै लावण रौ कह्यौ तौ उणनै लाय देवणा ई हा सौ वौ लायनै दे दिया ।

राजाजी राजी होय आधौ राज देवणौ चायौ तौ वौ लियौ कोनीं । सेठां नै नगर-सेठ री पदवी मिळी । अणगिण माया हाथै लागी ।

सुथार रौ बेटौ तौ फगत माया खरचणी जांणतौ सौ खुलै खाळ खरचण लागौ । अबै तौ वौ अलेखूं सरपां नै ई पाळ लिया । मणा-बंध वांनै दूध पावतौ । विसैला जंगी सरप उणरै पगां में लुटता, उणरै माथै छतर तांणता, हार ज्यूं गळा में लटकियोड़ा रैवता । अजगर, नाग, काळिंदर, डूंमी, पेणा धुरा-धुर उण सूं अणूंतौ हेज करता । सुथार रौ डीकरौ सिंघ अर हाथियां रा टोळां रै विचाळै निसंक रमतौ कूदतौ । चीता, बब्बर अर केसरी सिंघ तौ उणनै देखतां ई लरड़ियां ज्यूं बण जाता ।

सिकार छोड देता । हाथी सूंडां में लियां लियां घूमता विचरता । वौ जंगळ रौ राजा ज्यूं बणग्यौ ।

पण बस्ती रा मिनख उण सूं अणूंतौ ईसकौ करता । उणनै कीकर ई मारण री अटकळां विचारता । अमरफळ वाळी बात भरै नीं पड़ी तौ बिणज में देवाळै भिळिया साहूकार दूजी घात करण री विचारी । सांसियां नै वूक सूं दारू पायौ अर रिपियां रौ लाळच दियौ तौ वै सुथार रा बेटा नै मारण री तुरत हांमळ भर दी ।

जंगळ में पांच-पच्चीस भेळा होय टणकाई करता तौ जिनावार वांनै मतै ई सलट लेता, इण वास्तै रात रा घरै सूता साथै घात करी । ढोलिया समेत उंचाय समंदर में थरकाय दियौ । पण उण सारू जैड़ौ पिलंग वैड़ौ ई समंदर । कांनी कांनी सूं मंछियां उणनै लवूरण सारू दौड़ी तौ कांई देखै के वौ तौ वांरौ ई रिछपाळ, वांरौ ई भरतार । नित आटा रा लोया चुगावणियौ । वै अधर उंचाय उणनै ठेट तळै लेयगी । मोत्यां जड़्यौ सोना रौ मैल । मंछियां री महारांणी आपरी बेटी रै सागै सोना रै ढोलियै सूती ही । च्यारूं पागां चार डावड़ियां चंवर ढुळावती ही ।

मंछियां महारांणी नै जगाय सुथार रा बेटा सूं सैंध-पिछांण कर सगळी बात बताई । महारांणी बरसां सूं उणरौ नामून तौ अणूंतौ सुण्यौ हौ । आज उणनै निजरां देख घणी राजी व्ही ।

महारांणी री बेटी रौ रूप देख सुथार रौ डीकरौ चकन-बकन व्हैगौ । जांणै निरमळ पांणी री आब ई संचै ढळी । सरवर रै उनमांन हिबोळा खावती आंख्यां । बोली जांणै गिळ-

गिचियां रै मांय झरणा रौ पांणी खणक्रियौ । हिवड़ौ अर मन जांणै पांणी रौ ई परतख रूप । रूं रूं सूं जांणै गंगा रौ पवित्तर नीर उमगतौ लखावै ।

समंदर री महारांणी राजी होय आपरी बेटी साथै गाजां-वाजां उणरौ व्याव कर दियौ । अणगिण मोत्यां रौ दत्त-दायजौ दियौ । समंदर रै कांठै बेटी सारू वैड़ौ ई मोत्यां जड़्यौ सोना री सतखंडियौ मैल बणायौ ।

बाकी लारला सगळा पंपाळ तौ उणी भांत उण इज थाट सूं चालू हा, पण हंसां नै मोत्यां रौ चूंन चुगावण रौ अड़द्द नवौ ई चालू कर्यो । अलंघां री मांय सूं हंसां री डारां उडनै आवण लागी । खाती रै डीकरा रौ कूंट कूंट जस फेलण लागी ।

दोखी माठ झेलले तौ वै दोखी ई कांई । अेक दिन नवी रांणी बणाव करनै अमरफळ खायोड़ा राजा रै रंग-मैल जावण सारू वहीर व्ही के उणनै सांम्ही अेक मूंडै लागी डावड़ी मिळी । पूछ्यौ के उणनै औ बणाव कैड़ौक ओप्यौ ।

डावड़ी दोखियां री पाटी पढ़ायोड़ी तौ ही । पूछतां पांण जवाब दियौ के फेफ रा फूलां रै हार बिना गळौ खासौ अडोळौ लागै ।

रांणी रौ मन बुझग्यौ । वा पूछ्यौ के फेफ रै फूलां रौ हार कठै मिळैला । तद वा कह्यौ के उणी लखपति सेठ री हाट जकौ धरती री सगळी चीजां मांगता पांण देवण रौ गुमेज करै । अमरफळ लायनै दे दियौ तौ पछै हार री कांई जिनात ।

रिसायोड़ी रांणी आटी-पाटी लेय सूयगी । अखूट जवांनी

पायोड़ौ राजा बतळावै अर छिण छिण वतळावै तौ ई वा नीं बोलै। रांणी री छीयां सूं धग धग धूजण वाळा राजा सारू अवै अेक रात ई अैळी गमावणी दूभर व्हैगी। घणा नेवरा करचा तौ रांणी फेफ रा फूलां रै हार री बात बताई। राजा वचनां बंध्यौ तौ रूठी रांणी रूसणौ छोडचौ। चांद सूं चांद रौ मेळौ व्हियौ। गिगन में अेक लाख तारा वळै जुड़ग्या।

राज रा हरकारा उणी भांत पवनगत घोड़ां माथै वैठ सेठां री हवेली आया। राजा रौ आदेस सुणायौ के तीन दिनां रै मांय मांय फेफ रै फूलां रौ हार पूगतौ नीं करचौ तौ घांणी में पीलाय कादौ निकळवाय देवैला।

सेठां सारू तौ मरियां पैली मौत आयगी। पण सुथार रौ बेटौ वळै वांनै उणी भांत थावस वंधायौ।

थावस बंधाय खुद हंसां नै मोत्यां रौ चूंण चुगावण वहीर व्हियौ। थोड़ौ घणौ मूंडौ उतरचोड़ौ देख्यौ तौ हंसां रौ राजा स्यांनौ पूछचौ। तद वौ सगळी बात बताई। बात सुणनै हंसां रौ राजा गुलाबी हंसी हंसतां बोल्यौ — इण नाकुछ फेफ रा फूलां रा हार सारू आप आछौ सोच करचौ। म्हैं अेक ई उडांण में लाय हाजर करूं। आप किणी बात रौ सोच मत करौ।

आ बात कैय हंसां रौ राजा तौ पांखां फटकारतौ उडियौ। सुथार रौ बेटौ घणौ ई कह्यौ पण वौ अेक ई मोती नीं चुग्यौ।

सरवर रै सगळा हंसां नै मोती चुगाय निवड़ियौ ई हौ के हंसां रौ राजा आपरा गळा में फेफ रै फूलां रौ हार लटकायां हेटै उतरचौ।

पछै हवेली जाय सेठां सूं मिळ-भेंटनै पाछौ उण इज हंस

माथै बैठ राज-दरबार कांनी उडियौ । कुदरत रौ नजारौ वळै दूजी वार आभा सूं झांकियौ तौ उणरै मन री कळी कळी खिलगी। वौ रौ वौ सागै वणाव उणनै अेक दम नवौ ई लखायौ।

फेफ रै फूलां रौ हार गळा में घालतां ई रांणी रा रूप में जांणै सोळै चांद जुड़ग्या । उणरा जोबन में जांणै सूरज रौ उजास घुळियौ ।

सुथार रौ बेटौ तौ हार संभळाय पाछौ आपरै ठायै-ठिकांणै आयौ । आपरी धुन में मगन । आपरा कांम में मस्त । जंगळ रा आखा पंछी अर जीव-जिनावर उण सूं अेड़ा धीजिया के देखतां ई दोळा व्है जाता । सुथार रा डीकरा रै सुख अर आणंद रौ पार नीं हौ । मिनखां री बस्ती में कित्ता छळ-प्रपंच अर कित्ता कपट जाळ ! पावंडै पावंडै घात । भाई भाई रौ दोखी । सगळा अेक दूजा नै मूंडणी चावै । आपरी जीवारी सारू दूजां नै मारै । खरा मिनख सारू तौ वांरी छींयां भेंटयां पाप लागै ।

अेक दिन जंगळ रा पंछी-जिनावर सुथार रा बेटा नै पूछ्यौ के आ कैड़ी अणहोणी वात के राजाजी आपरै स्वा-रथ री खातर चीज मांगै, कौल परवांण पूगती नीं करै तौ घांणी में पीलावण रौ आदेस । वांरी धूंस कोई अपां माथै नीं चालै ! वै क्यूं विरथा अपांनै संतावै ।

सुथार रौ बेटौ इणरौ कीं पुख्ता जबाब नीं दियौ। कह्यौ: हां, थांरी वात तौ साव साची, पण झूठ री आंधी आगै साच रौ भुत्तियौ टिकनै कित्तौक टिकै ।

अठी जंगळ में आ बात व्हैती इज ही के उठी राजाजी

रा रंगमैल में सागै वौ इज खेलौ व्हैगौ । नवी रांणी झबा-झब बणाव करनै मैलां चढ़ती ही के वा इज मूंडै लागी डावड़ी वळै सांम्ही धको । लुगायां नै बणाव री बळौ व्है इज घणौ । डावड़ी नै पूछ्यौ—बता, नवलखा हार रै साथै फेफ रै फूलां रौ औ हार कैड़ोक ओप्यौ ।

डावड़ी थोड़ौ सीक मूंडौ मस्कोर टिचकारी देवती बोली : ओपण नै तौ ठीक ई ओप्यौ अैड़ौ कीं खास माड़ौ कोनीं, पण दुनियां में बडाबडी री माया है । सेसनाग री मिणियां रौ हार वळै व्है तौ कांई पूछणौ । म्हनै तौ दीसै जैड़ी कैवूंला ।

सिणगार के बणाव कुरायां लुगाई रै अेडी सूं चोटी लग झाळ झाळ ऊठै । पछै वै तौ लुगाई रै सागै रांणीजी ई हा ।

डावड़ी री बात सुणतां ई सगळो आंट रौ मठ मरग्यौ । उणी भांत आटी-पाटी लेय रूसणौ करनै रांणी आंगणै सूयगी । राजाजी घणी लटापोरियां करी जद वा होठ खोल्या । राजाजी नै तौ रात अैळी नीं गमावण सारू हांमळ भरणी इज ही । अर रांणी नै हांमळ भरयां मांनणी इज ही । दोनूं अखूट जवांनियां सेजां रमी । जांणै सूरज सूं सूरज भिड़ियौ ।

तड़कै राजाजी रौ आदेस मिळतां ई हरकारा वळै लखपति सेठां रै गांव कांनी उडिया । हवेली जाय सेसनाग री मिणियां रौ हार मांग्यौ । तीन दिनां में पूगतौ नीं करै तौ आखा कडूंबा रा माथा कलम करण रौ आदेस । सेठां सारू तौ सूरज री उगाळी ई पाछी रात पड़गी । हुंकारौ भरणा रै सिवाय दूजौ कीं उपाव नीं हौ ।

सागै उणी भांत मूंडौ ढेर खोळायत रै पाखती गिया ।

सुथार रौ वेटौ तौ बाप सूं ईं वत्तौ वांरौ कुरब-कायदौ राखतौ हौ । वळै उणी भांत थावस बंधायौ ।

सरपां नै दूध पावती वेळा सेसनाग रै बेटै पूछ्यौ के आज वौ मोळौ मोळौ क्यूं दीसै ।

सुथार रौ बेटौ कैवण लागौ के जद आखा कड़ूंबा रा माथा कलम होवण री बात सुणियां हंसणौ चावूं तौ ई हंसीजै कोनीं ।

सेसनाग रौ बेटौ वळै सवाल करचौ—क्यूं, अैड़ी कांई बात व्ही ।

तद वौ मांडनै सगळी बात बताई । बात सुणतां ईं सेसनाग रौ बेटौ खिल-खिल हंसियौ । कह्यौ—म्हारै थकां आप इण बात सारू मौळा पड़ौ तौ आ कित्ती अणहोणी बात । आपरी सांनी रै समचै सात भखारियां भरै जि़त्ती मिणियां लाय दूं । फगत पंयाळ-लोक में जायनै पाछौ आवूं जित्ती जेज ।

पंयाळ-लोक रौ नांव सुणतां ईं सुथार रै बेटा रौ मन डुळियौ । वौ ई साथै चालण री मंसा दरसाई । सेसनाग रौ बेटौ ई आ सांढा री बात सुण अणूंतौ राजी व्हियौ ।

सेसनाग रौ बेटौ उण नै अेक मिण भिलाय सगळी बात समभाय दी । पछै दोनूं जणा पाखती री बावड़ी में गिया । सेसनाग रौ वेटौ तौ सळवळतौ मांय वड़ग्यौ । हाथ मांयली मिण रौ परस व्हैतां ईं पांणी दो फाड़ां फाटग्यौ । अर सुथार रौ वेटौ बावड़ी रै मांय ऊंडौ पंयाळ में हालतौ ई गियौ, हालतौ ई गियौ ।

पंयाळ लोक री तौ माया ई अनूठी । सोना-रूपा रा

रूंख । हीरा-मोत्यां रा झूमका । धरती माथै कांकरां री ठौड़ मिणियां ई मिणियां । आं नाकुछ मिणियां सारू म्रितलोक रै राजा री रांणी रूसणौ करयौ । इण नाकुछ माया सारू मिनख कित्ता अफाळा करै ।

सुथार रौ बेटौ पंयाळ-लोक री छिब निरखण लागौ ।

बगीचा में केसर रै रूंख किरणां रै हींडै सेस नाग री किन्या हींडती ही । उणरी छिब अर आब देखतां ई सुथार रै डीकरा री जोत सवाई बधगी । दुनियां में फगत दो ई चीजां रूपाळी—अेक कुदरत नै दूजी नार । बाकी सै पंपाळ ।

दोनां री चार आंख्यां व्ही । जांणै चांद नै चांदणी जोवै । जांणै सूरज नै उजास निरखै । दोनां रै हीयै प्रीत रौ इमरत घुळग्यौ ।

पछै सेसनाग री बेटी बाप सूं उणरी सैंध-पिछांण कराई । तद सेसनाग आपरै सेस मूंडा सूं बोल्यौ—नांव तौ आपरौ केई बरसां सूं सुणूं हूं, पण दरसण आज व्हिया । बेटी री भाग फळियौ ।

घणा कोड सूं सेसनाग आपरी किन्या रौ ब्याव उणरै साथै कर दियौ । दत्त दायजा री कांई खांमी । वरजतां वरजतां हीरा-मोती अर मिणियां री गूंणतियां भर दी ।

इण कोड अर उच्छब रै बिचाळै ई सुथार री वेटौ मिणियां रै कौल री बात भूल्यौ नीं हौ । पाछौ बारै आवतां ईं अेक कुरज रा गळा में मिणियां रौ हार लटकाय राजाजी रै पाखती भेज दियौ । राजा-रांणी रै हरख रौ पार नीं । हिवड़ा रै हरख हरख रौ संचौ न्यारौ व्हिया करै । कोई हार देय राजी व्है

तौ कोई हार पाय राजी व्है । जित्ता हिवड़ा उत्ता ई हरख ।

सुथार रै वेटा रौ जलम ई जांणै पंछी-जिनावरां नै पाळण सारू व्हियौ । सिंघ, सरप, हाथी अर चीता जैड़ा हिंसक जिनावर ई उणरा बस में । जंगळ रा पंछी-जिनावरां नै आ वात अणूंती अखरी के मिनखां रौ राजा क्यूं वांरा रिछपाळ नै घड़ो घड़ी फोड़ा घालै । अबकी फोड़ा घालै तौ आपै ई सलट लेणौ ।

पण फोड़ा घालणिया तौ नित फोड़ा ई घालै । वांरा सूं दूजौ कांई बण आवै । कागलौ तौ वींट ई करैला । डूबता बिच्छू नै बारै काढ़ौ तौ वौ काढ़णिया रै ई डंक मारै ।

इत्ती वार भलौ करयां ई राजाजी रौ तौ वौ रौ वौ सागै आदेस । तीन दिन में कौल पूरौ नीं व्हियौ तौ घांणी त्यार ।

रांणी आपरी अखूट जवांनी नै लड़ाभूंम सिणगार, रंग-मैलां चढ़ती ही के वा इज डावड़ी जांणनै सांम्ही धकी । रांणी तौ वळै वौ इज सवाल पूछयौ के उणनै सिणगार कैड़ी ओपै ।

डावड़ी नै तौ जबाब सिखायोड़ौ इज हौ । वा तौ तुरत बोली — सेसनाग रै फण री खास मिण हार रै बिचाळै लागै तौ सिणगार ओपै ।

सुण्यां अैड़ी वात खट जावै तौ वा रांणी ई कांई । लट्टूरा बिखेर आटी-पाटी लेय आंगणै सूयगी । राजा तौ वगत सूं ई पैला रंगमैल में आयौ । पण रूठी रांणी रौ ढंग-ढाळौ देख उणरी अखूट जवांनी रौ माथौ ठणकियौ । घणा लाल-रिया लिया जद वा मन री बात बताई । राजा वद वदनै कौल करयौ तद वा रूसणौ छोडयौ । आंगणा सूं सेजां आय

सूती । हेमाळा सूं हेमाळौ भिड़ियौ ।

तड़कै हरकारा तौ राजाजी रै आदेस री जांणै वाट ई जोवता व्है । उणी भांत पवनगत घोड़ां माथै उडिया सौ पाधरा सेठां री हवेली पूगा । राजाजी रौ आदेस सुणाय कह्यौ के तीन दिनां रै मांय सेसनाग रै फण री ख़ास मिण नीं पूगी तौ वा इज घांणी अर वा इज लाट !

सेठ तौ पैला री भांत वळै आपरै खोळायत रै गोडै गिया। सगळी बात सुणाई ।

अबकी सुथार रा बेटा नै ई थोड़ी भळकी आयगी । वौ राजाजी माथै खीझ करतौ थकौ बोल्यौ — यूं घड़ी घड़ी कांई घांणी रौ डर बतावै । तीन वळा गादी री लाज राख दी । अैड़ा जीवणा बिचै तौ मरणौ आछौ ।

सेठ थूक उछाळता बोल्या — पण बेटा.................!

बेटौ उण वगत सिंघ चीता रा नख लेवतौ हौ । अेक बब्बर सिंघ पंजौ आगौ लेवतौ बोल्यौ — हाल थां मिनखां री दुनियां वास्तै म्हांरा नख जरूरी है । नखां सूं मांनण वाळा फूलां सूं नीं मांनै । अबै पण-वण जैड़ी कीं बात कोनीं । म्हां जिनावरां रा राजा थां मिनखां रै राजा सूं किणी भांत कम कोनीं । म्हांरै जीवतां म्हांरा राजा नै घांणी में पीलावणियौ अत्रै जलमैला । म्हांरै राजा री सांनी व्है तौ कैड़ा ई टणकेल राजाजी नै पाधरा कर दां । डरावां तौ म्हैं किणी नै डरावां, म्हांनै कुण डरावै । म्हांरै राजा नै अैड़ा आदेस भेजावणिआं रौ काळजौ नीं चीर न्हाकां ।

उण दिन ई जंगळ रा सगळा पंछी-जिनावर भेळा होय

सुथार रा वेटा नैं आपरौ राजा थरपियौ । वौ घणी ई पाला-पूळी करी पण वै मांन्या कोनीं । जंगळ में सात दिनां तांई घणौ ई उच्छब्र मनाईजियौ ।

जद घांणी में पीलावण री आदेस देवणिया राजा नै इण बात री ठा पड़ी के जंगळ रा अणगिण जिनावर सिंघ, रींछ, चीता, गेंडा अर हाथी आपरै राजा नै साथै लेय आखा राज रै मोटा-मोटा मिनखां नै फाड़ण सारू लियां-दियां बैठा है तौ वौ मूंडा में तिणकौ लेय सात वळा माफी मांगी । जद कठै ई जायनै जंगळ रा वासी मांन्या । रांणी ई जठा पछै कदै ई रूसणौ नीं करचौ ।

वौ सुथार रौ बेटौ जंगळ रै पंछी-जिनावरां रौ पैली राजा हौ । वांरौ ताजिंदगी घणौ ई जाब्तौ राख्यौ । वांनै आपरै जीव सूं ई वत्ता जांण्या । ताजिंदगी वांरी सेवा-बंदगी करी, वांनै चूंण चुगायौ । जंगळ री रया आपरै राजा सारू सांनी रै समचै प्रांण देवण नै त्यार ही । उण जंगळ में सिकार करण री बात तौ अळगी, मन में ई सिकार करण री बात तेवड़ियां आंतड़ियां री खैर नीं ही ।

तीनूं रांणियां साथै वौ सुथार रौ बेटौ बरसां लग जंगळ रौ राज करचौ अर पंछी जिनावरां री हाजरी साजी । किणी कीड़ी-मकोड़ा नै ई ग्रैल नीं आवण दी

जंगळ रै पंछी-जिनावर अर कीड़ी मकोड़ा सारू वौ पैलौ अर आखरी मिनख हौ जकौ वांरौ राजा बण्यौ ।

मसांण री मया

बाप जैड़ा बेटा , रूंख जैड़ा टैटा
घड़ा जैड़ी ठीकरी , मां जैड़ी डीकरी
झाड़ जैड़ा मूळ , धरती जैड़ी धूळ
रूई जैड़ौ सूत , माईत जैड़ा पूत
भाखर जैड़ा भाटा , बिरखा जैड़ा लाटा
रूंखां जैड़ा छोडा , मढ़ी जैड़ा मोडा

तौ रांमजी भूंडां नै भूंडा अर भलां नै भला दिन देवै के किणी अेक गांव रौ ठाकर हौ । यूं दीखण-पातण में तौ ठाकर मिनखां रै इज उणियारै हा , पण गुणां में सांप , गिडक , स्याळ अर कागला रै दुरगुणां रौ इज भेळ । डील अर बोली फगत मिनख री ।

वां ठाकरां रै अळगौ-नैड़ौ अेक छुटभाई हौ । जिणरै हा पांच रूपाळा अर सालस कंवर । छुटभाई गंगा रौ इज नीर । साच रौ अवतार । हीयौ जांणै दूध सूं धोयोड़ौ । किणी री आंख में घाल्योड़ौ ई नीं खटकतौ । पण ठाकर तौ आपरा सुभाव परवांण नित उण सूं खोड़ीलायां करतौ । दुख देवतौ । मौकौ मिळतां ई कीं न कीं हांण पुगावतौ । गांव री रया उणरै पांचूं बेटां नै पांडुवां रौ अर ठाकर नै दुरजोधन री अव-

तार मांनती । पण पेटा री वात होटां कदै ई नीं आवती, क्यूं के ठिकांणा में जरबां रौ सराजांम माकूल हौ । सिध री थै त्रिचै ई रया नै कोट रै बुलावा रौ डर वत्तौ लागतौ ।

कुजोग री वात अैड़ी बणी के उण छुट-भाई सूं ठाकर तौ अणूंता रूस्यौड़ा हा जकौ हा इज, ठाकुरजी ई रूसग्या । पेट में हील रौ उठाव व्हियौ सौ दो घड़ी में कबूड़ौ लुटै ज्यूं लोटनै प्रांण छोड दिया । घरवाळी रौ सुहाग लुटग्यौ, पांचूं बेटा अनाथ व्हैगा । ता उपरांत ठाकर रौ आंकस अर उणरी आड़ा-गोड़ी । रात माथै रात उलळगी ।

छुटभाई रा सातरवाड़ा में ई ठाकर खोड़ीलायां करयां विना नीं मांन्यौ । बारवौ बीत्यां तौ वांनै सूळी में पोय न्हाकिया । कणवारियौ, कांमदार अर गांव-भांबी लबूर लबूरनै खायग्या । बापड़ा कांई जोर करता । भूठ-मूठ ठिकांणा रौ लेणौ बताय दियौ । अेक छदांम रौ ई वास्तौ नीं हौ । जिण उपरांत हाका-धाकां बेटां कना सूं दस हजार रौ खातौ मंडाय पांचूं भाइयां रा अंगूठा करवाय लिया । बिना लेणौ चुकायां खेत री धूळ ई गवाड़ी में नीं लावण दे, हळ जोतणा तौ अळगी वात । गांव में कोई पखै नीं वंध्यौ । खाली हाथ मूंडा धकी कद जावै । गोडा ई पेट नै निवै ।

निरभागियां री गवाड़ी कदैई कदैई चूल्हा में वासदी ई चेतन नीं व्हैतौ । कांई रांधै, कांई छमकै अर कांई सेकै । अणूंत भाटा सूं ई काठी व्है । पांचूं बेटा जवांन व्हैतां थकां ई जोर कांई करता । कोई देनगी माथै ढुकावै तौ ठाकर रौ कोप । ठाकर रै पाल्यां पछै किणी री हीमत नीं व्ही के किणी

भांत रौ देण-लेण करै । खेती , दैनगी अर उधार आं तीनां री आस तूटयां अेक दिन बेटा मां नै कह्यौ के पांणी अर हवा रै पांण कित्ताक दिन धाकौ धकैला । बडेरां रै ठाया री औ कूड़ौ हेज अपांरा प्रांण लियां छोडैला । कठै ई अळगै दिसावर चालनै हल्लौ करयां किण बात री खांमी ।

बेटा घणा ई तरळा तोड़या , पण मां नीं मांनी । कह्यौ—थें कठै ई जावौ , थांनै म्हारी आसीस । म्हैं जीवणा री आस छोड़ दी । गांव रा मसांण छोडनै कठै ई नीं जावूं । फगत मसांणां रै मोह सूं ढबूं । थांनै हाल घणा सूरज देखणा है । आसीस सूं वत्तौ म्हारै कनै कीं कोनीं ।

बेटा कह्यौ—मां , थारी आसीस सूं वत्तौ म्हांनै कीं नीं चाहीजै ।

सौ तीन दिनां रा निरणा बेटा आधी ढळियां मां रै पगां माथा निवाय वहीर व्हैगा । अर मां मसांण री आसा माथै बारणै ऊभी , जावता बेटां नै अंधारा रै मांय ई निरखती री । कदास उणरै बेटां सारू सूरज ऊग्यां तौ औ अंधारौ मिटैला , अवस मिटैला । उण सारू तौ दिन अर रात अेक सरीसा ई बीत्या । वा मन ई मन कांमना करी—हे सूरज भगवांन , थारा उजास में पांती परवांणै म्हारा बेटां नै ई सीर दीजै ।

बेटा तौ घर , गांव अर मां नै छोड वहीर व्हिया सौ अेक छिण वास्तै ई नीं ढबिया । हालतां हालतां तीन दिन अर तीन रातां बीतगी । मां री आसीस तौ धकै धकै चालती ही , पछै वै लारै मुड़नै ई क्यूं जोवै ! चौथै दिन दो घड़ी दिन चढ़्यां अेक बड़ला रै तळाकर निकळता हा के वांनै माळा में

किणी विचियां री कुरळावणौ सुणीज्यौ । पग है जठै ई चिपग्या । ऊंचौ जोयौ । अेक जंगी गोरियावर सरप सळवळतौ ऊंचौ चढ़तौ हो । माळा सूं विचियां री निजर पड़ी तौ वै कुरळावण लागा । छोटकियौ भाई तौ कीं सोच्यौ नीं कोई बूझ्यौ । साख झालनै देखतां देखतां सरप रै पाखती जाय पूगौ । सरप फुफकारा करचा तौ ई वौ डरचौ कोनीं । पूंछड़ी झाल हेटै थरकाय दियौ । झटका सूं सरप री सांकळ तूटगी । हेटै च्यारूं भाई तक्योड़ा ऊभा हा । तरवार सूं वाढ़ न्हाकियौ ।

छोटकियौ भाई माळै जाय बिचियां नै पंपोळिया । बुचकारचा । बिचियां रा माईत आवै जितै उठै ई बैठौ रैणौ वाजब समझ्यौ । अर च्यारूं भाई चौकस होय हेटै ऊभग्या । बिचियां नै छोड धकै जावै तौ ई कीकर ।

सांझ पड़तां ईं बिचियां सूं मिळण रा उमाया वांरा माईत ठाया माथै आया इज । माळा रै पाखती अेक मिनख बैठौ देख वै उणनै मारण सारू झपटिया । कुरळावता कैवण लागा — हित्यारां थें पांच वळा म्हांरै बिचियां नै मार खायगा, थांरै हीयै थोड़ी - घणी दया - माया कोनीं । आज तौ थांनै ई मारचां बिना नीं छोडां ।

के इत्ता में माळा सूं टूंचां बारै काढ़ बिचिया फड़फड़ावता बोल्या — अै ई तौ म्हांरा प्रांण बचाया अर थें आंनै ई मारण री बात करौ । ढबौ, ढबौ ।

गिरजड़ा बेटां री बात सुणतां पांण ढबग्या । तठा उपरांत विचिया नेठाव सूं सगळी बात मांडनै बताई । माईतां रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । मरचोड़ा सरप नै वै वळै टूंचां सूं वींद वींद

उणरा भुत्तिया बिखेर दिया ।

पछै हरख रा आंसू ढुळकावता घड़ी घड़ी कैवण लागा के वांरौ औ ओसांण कीकर चुकावै ।

तद पांचूं भाई कह्यौ—औसांण करचौ व्हां तौ चुकावौ ।

पछै माहौमाह वंतळ व्ही । वांरै विखा अर फोड़ां री बात सुणनै पंछी कह्यौ—बड़ा इचरज री बात है के थां मिनखां में ई सांप सूं वत्ता हित्यारा व्है ।

पछै वै वद वदनै कह्यौ—थें नीं मांनौ तौ ई म्हे तौ म्हांरौ औसांण चुकावांला ।

थोड़ी ताळ सोच विचारनै कैवण लागा—थें पांचूं भाई पाधरा इण राजा रै नगर जावौ । मिनखां री बस्ती सूं तगड़ियोड़ा थें बस्ती रै मिनखां सूं कीं आस मत करज्यौ । मुड़दां रा मसांण थांरौ जमारौ सुधारैला ।

आछी तरै समझाय कह्यौ के उण नगरी रै मसांण री बरसां सूं अेक निरालौ ई धारौ है । तीन दिनां तांई मुड़दा नै बाळै कोनीं । जे बाळ देवै तौ उणी दिन सात मिनखां रौ भख लेवै । तीन दिनां तांई मरण वाळा रौ जीव माटी रै ओळा-दोळा भंवै । कीं मन में रैगी व्है तौ वा बात पूरीजै । तीन दिनां पछै वौ जीव काया रौ मोह छोड आपरै ठायै सिधावै । इण वास्तै तीन दिनां तांई मुड़दा रै पोहरौ लागै । लोग पोहरौ देवता डरै घणा । राजाजी रै आंकस सूं नीठ डरता-धूजता कीकर ई पोहरौ पार पटकै । रांम रांम करता छिण गुड़कावै ।

पछै पांचूं भाइयां रै उणियारा सांम्ही वारी वारी देखता पंछी कैवण लागा—मिनखां री किणीं बस्ती में अंजळ लियां

त्रिना पाधरा मसांण ढूकज्यौ । रात रा नगर सेठ री लास आवैला । थें पोहरौ कवूल कर लेजौ । देखजौ के थांरै माथै मसांण कैड़ौ तूठै । म्हांरी तौ फगत आ श्रेक इज भुळावण है के मिनखां रै जमारै आया सौ मिनख, जीव-जिनावर माथै दया पाळजौ । मोटा मिनख बण्यां किणी नै आप सूं छोटा मत समझज्यौ, म्हांनै याद करज्यौ। थें म्हारौ काळजौ ठारचौ, थांरौ मसांण ठारैला । म्हांरी थांनै आ इज आसीस के किणी जीव नै कळपाज्यौ मती ।

पांचूं भाई बिचियां रौ लाड करनै उठा सूं वहीर व्हिया। गिरजड़ा कह्यौ ज्यूं करचौ । निरणा तिरसा पाधरा मसांण पूगा। दिन ढळतां ई कूकारोळौ सुणीज्यौ । नगर-सेठ अणगिण अनंत माया नै लारै छोड खांधियां रै खांधा माथै सीढ़ी री सेजां पोढ़चा आया ।

सेठां रौ मोबी बेटौ तीन दिनां रै पोहरा वास्तै पांच मोहरां देवण री बात करी तौ पांचूं भाई लप मांनग्या । बेटा ई राजी व्हिया के नगर रा लोगां नै मनांवण रौ छातीकूटौ मिटचौ । दस मोहरां दियां ई दोरा मांनता । नगर-सेठ तौ मरचां पछै ई बेटां सारू पांच मोहरां रौ फायदौ कर दियौ ।

सबसूं पैला छोटकियौ भाई पोहरै चढ़चौ । बाकी च्यारूं भाई मसांण सूं थोड़ी अळगी भांय जाय श्रेक चांतरा माथै सूयग्या । छोटकियौ भाई नागी तरवार हाथ में लेय अड़ीजंत पोहरा माथै ऊभौ रह्यौ ।

अमावस री काळी-बोळी रात । मसांण रौ ठायौ । सांम्ही सीढ़ी माथै मड़ौ वेजांण सूतौ । पाखती वन में स्याळिया कूकै ।

हाथ में नागी वाढ़ाळी पळकै । ऊपर आभा में अणगिण तारा पळापळ खिवै । लांबा पना रौ खें खें बायरौ वाजै । भसमी रा घिरोळा ऊठै । आंख्यां भरीजै । सेवट मिनख रै मंसोबां री आ गत बणै ।

छोटकियौ भाई पोहरै ऊभौ इण भांत रौ आळोच करतौ हौ के अणछक उणनै खांपण हिलतौ निगै आयौ । मूंजेवड़ी सूं बंध्यौ मड़ौ अठी-उठी खसण लागौ । जोर सूं उबासी खाई । खमखरी खाय बैठौ होवण री चेस्टा करी । तड़ातड़ सड़ियां तूटती गी । नगर सेठ सीढ़ी माथै बैठौ होय चारूं कांनी भाळियौ । पोहरै ऊभा मोटयार रै सांम्ही देखनै पूछयौ — थूं म्हारै पोहरै ऊभौ दीसै !

पोहरायतौ नै आपरै गाढ़ रौ पूरौ पूरौ पतियारौ हौ । डरियौ तौ कोनीं, पण इचरज अणूंतौ व्हियौ । आ कांई बात व्ही । के तौ घरवाळा भूल सूं जीवता नै मसांण ले आया के मड़ा में पाछौ जीव बावड़ियौ ! जबाब दियौ — हां, ऊभौ तौ पोहरै इज हूं । पण आ कांई रचना व्ही, कीं म्यांनै बतावौ तौ जाच पड़ै ।

तद मड़ौ ऊभौ होय कैवण लागौ — म्यांनै तौ सुभट इज है । चौपड़-पासा रमतां रमतां अणछक म्हैं गुड़ग्यौ । घरवाळा रोवता रह्या अर म्हारौ थोड़ी-ताळ में सांस निकळग्यौ । भूल सूं नीं लाया म्हनै । हाल म्हारौ जीव चौपड़-पासां में ई रमै । तीन चार दांव रमूं तौ मरणा रौ नेहचौ व्है । थनै चौपड़ रमणी आवै ।

छोटकियौ भाई कह्यौ — रमणी तौ घणी ई आवै, पण बिना

चौपड़, रमां तौ रमां ई कीकर, थें ई बतावौ !

तद नगर-सेठ हंसनै कह्यौ — घरवाळा दूजी कमाई तौ नीं, पण चौपड़-पासा साथै बांध्या। पण म्हामें आ मोटी खोड़ के बाजी लगायां विना दांव नीं रमूं।

छोटकियौ भाई कैवण लागौ — बाजी लगावण जोग ठरकौ व्हैतौ तौ मां नै अेकली छोड मसांण में पोहरौ देवण सारू क्यूं आवता।

सेठ कह्यौ — थूं जीतै तौ म्हैं अेक सौ पांच मोहरां देवूं। अर जे म्हैं जीतूं तौ थांरै पोहरा री पांच मोहरां मत लेजौ। थांरौ करम-धरम थांरै साथै। म्हैं तौ ठीकरी माथै लिखनै सही कर दूंला। बेटा तौ ई नीं मांनै तौ म्हारा ढोलिया रै च्यारूं पागां हेटै चार चरू गडिया है। किणी नै इण बात री ठा कोनीं। थूं इण नवी माया रौ पतौ देवैला तौ मतै ई मांन जावैला।

छोटकियौ भाई तौ पछै कीं होल-हुज्जत करी नीं। दोनूं जणा चौपड़-पासा रमण बैठा। सेठ लगता ई तीन दांव हारग्या। रमण री मंसा पूरण व्ही। कोयला सूं ठीकरी माथै लिखनै सही कर दी। सही करतां ई सेठ रौ सास निकळग्यौ।

छोटकियौ भाई उणनै सीढ़ी माथै सुवाण पाछौ पोहरै ऊभग्यौ। ठीकरी खूंजिया में घाल दी।

थोड़ी ताळ पछै मतै ई चौथोड़ौ भाई ऊठनै पोहरा माथै आयग्यौ।

सावचेती सूं ऊभौ हौ के उणनै किणी रै रोवण री तीखी आवाज सुणीजी। पोरायती रा कांन गळगळा व्हैगा। अेक

बूढ़ी खंखर लुगाई छाती - माथा कूटती मड़ा सांम्ही आवण लागी। भूंडै ढाळै रोवै, अरड़ावै ।

डोकरी रौ रोज सुणनै उणरी आंख्यां ई जळजळी व्हैगी। पाखती आवतां ई पूछ्यौ — माई थूं किण खातर रोवै ।

तद माई रोवती रोवती ई बोली — म्हारौ भाई मरग्यौ, अर म्हैं उणरौ मूंडौ ई नीं देख सकी । सुणतां पांण आई, पण भाई तौ दगौ दे दियौ । थारौ रांम भलौ करै, अेकर खांपण उघाड़ मूंडौ जोवण दे । है तौ माटी सस्तै माटी, पण जीव नीं धापै

पोरायती कह्यौ — म्हैं पालण वाळौ कुण व्हूं, थारौ भाई, सौ वळा मूंडौ देख ।

आ कैय वौ लप सेठ रा मूंडा सूं खांपण आगौ लियौ। बैन अरड़ां - अरड़ां रोवती जावै नै मूंडौ निरखती जावै ।

पोरायती अेकटक उठीनै ई देखतौ हौ । अणछक कांई रचना देखी के बैन तौ तीखा नखां वाळौ हाथ भाई रा काळजा में घालै ।

पोरायती अजेज सै बात समझग्यौ । सिकोतरी भाई रौ ओळावौ लेय मड़ा रौ काळजौ खावणी चावै । नागी तरवार लेय ताचकियौ । सिकोतरी री अेक आंख उठीनै ई ही । वा काळजा री हर पाल भचकै ऊठी । आकास में ऊंची उडण लागी । पोरायती उडती उडती माथै ई वार करयौ । अेक पग वढ़ग्यौ । सिकोतरी अरड़ाटा करती नीठ प्रांण बचाया । पग में हीरा - मोती झड़्यौ अेक कड़ौ हौ । वौ टणण करती रौ हेटै पड़्यौ । चौथोड़ौ भाई कड़ा नै खूंजिया तालकै करयौ ।

सोचण लागौ के दुनियां में आसुवां रौ ई पतियारौ नीं रह्यौ । आंसू ई झूठा व्हैगा तौ साच कठै रह्यौ ।

के इत्ता में तीजोड़ौ भाई मतै ऊठनै पोहरा माथै आयग्यौ । रात आधी रै लगैटगै ढळगी ही । आभा में तारां रै मिस अंधारौ झवाझब करतौ हौ । रूंख बांटका सूता हा, माळा में पंछी सूता हा अर वौ तरवार री मूठ सेंठी झाल जागतौ ऊभौ हौ । के अणछक उणनै तिरस लखाई । मसांण सूं थोड़ी अळगी भांय ग्रेक नाडी ही । मड़ा नै ग्रेक पलक ई सूनौ छोडणौ वाजिब नीं हौ । तिरस लागी तौ ई भूंडी । वगत माथै सै उपजै । मड़ा नै खेसला में बांध खांधै टेर लियौ ।

नाडी री पाळ चढ़यौ के सांम्ही ग्रेक राकस धकियौ । अणचींत्या भख री तोजी देख डग डग हंसियौ ।

हंसण वाळा री विडरूपता देख तीजोड़ौ भाई तुरत समझग्यौ के चलायनै राकस रा फंदा में फिलग्यौ । मरणा में तौ कीं घाटौ नीं । डरयां कांई सांधौ लागै । हीमत रै पगां करार । राकस नै हंसतौ देख वौ खुद जोर सूं हंसियौ, सौ हंसतौ ढबै ई नीं । यूं परतख मौत रै सांम्ही हंसता मिनख नै देख राकस रौ माथौ ठणकियौ । गताघम में पजग्यौ के मरती वेळा इण भांत हंसणा रौ म्यांनौ ! कठै ई ऊंधी नीं पज जावै । मोट्यार नै इण भांत हंसतां देख राकस मोळौ पड़ग्यौ । पूछ्यौ — भाया, थूं हंसै क्यूं । काळ नै देख लोग-बाग तौ रोया करै ।

तीजोड़ौ भाई खड़ां खड़ां धकै वधतौ बोल्यौ — म्हारै हंसणा रौ तौ थनै अबारूं हाथौ-हाथ म्यांनौ मिळ जावैला ।

पण थूं मरती वेळा क्यूं हंसियौ ।

राकस रौ काळजौ सुरक सुरक करण लागौ । पाछ-पगल्यां सिरकतौ होळै सीक बोल्यौ — म्हनै मारण वाळौ तौ हाल जलमियौ ई कोनीं । म्हैं तौ अणचींत्या भख री तोजी वैठो, इण वास्तै हंसियौ ।

तद तीजोड़ौ भाई आंचै हालतौ कैवण लागौ — थनै मारण वाळौ मोटचार - काटी तौ औ म्हैं ऊभौ । किला री नींव में दो राकस देवणा हा । श्रेक तौ म्हारै मोरां बंधियौ । दूजोड़ा री भाळ में कणाकलौ फिरूं । थूं इण भांत अणचींत्यौ मिळ जावैला, श्रैड़ी आस नीं ही । म्हनै तौ इणी वास्तै थनै देखतां ई हंसी आयगी । बात बणै जद यूं बणै ।

बात सुणतां ई राकस रा तौ धै छिळग्या । अबै करै तौ कांई करै । आज तौ औ जम किणी भाव नीं छोडैला । उणरौ हाथी व्है जैड़ौ प्रचंड डील धग-धग धूजण लागौ । डरतै डरतै पूछ्यौ — म्हनै कीं करयां छोडै ! थारी मींडकी गाय हूं । म्हनै मार मत । मरणा रौ डर लागै इज घणौ ।

वौ वळै हंसनै पूछ्यौ — मरणा रौ कोड किणनै है, आ तौ बता । थनै इत्तौ डरकण नीं जांण्यौ हौ । किला री नींव में तौ निडर राकस चाहीजै । श्रेक कांम करै तौ छोडूं ।

राकस हाथ जोड़नै कह्यौ — म्हैं तौ सौ कांम करण नै त्यार, आप श्रेक री भलां कहौ । कांम भुळायनै तौ वताऔ, नीं करूं तौ थारै जचै ज्यूं मारज्यौ ।

तिरसां मरता मिनख नै फगत पांणी री ई पांणी री सूझै । वौ कह्यौ — इण नगर री च्यारूं कूंटां चार बावड़ियां दिन ऊगां

पैली पैली वणायनै संपूरण करदै तौ छोडूं ।

राकस तौ तुरत मांनग्यौ । कोल-वाचा देय उण सूं धरमैलौ करचौ । तीजोड़ौ भाई धापनै पांणी पीयौ । पछै कोल री भुळावण देय आपरै सागै ठायै आयौ । नगर-सेठ नै पाछौ सीढ़ी माथै सुवाण दियौ ।

वगत माथै दूजोड़ौ भाई मतै ई ऊठनै पोहरा माथै आयग्यौ, तद वौ चांतरा माथै जाय नेगम सूयग्यौ । उणनै पैली वार जाच पड़ी के राकस इत्ता मूरख व्हिया करै ।

दूजोड़ौ भाई पोहरा माथै ऊभौ हौ के उणनै सांम्ही भाखर माथै झाळां रौ चांनणौ निगै आयौ । पाखती अेक लुगाई ऊभी दीसी । सोचण लागौ के आ बात कांई व्है सकै । इण कुबेळा अै झाळां कीकर चेतन व्ही । आ लुगाई उठै कांई करै ।

आ रचना देख्यां दूजोड़ा भाई सूं ऊभणी नीं आयौ । मड़ा नै मोरां माथै उखण वौ झाळां कांनी वहीर व्हियौ ।

पाखती जाय देख्यौ तौ वा डावड़ी रूप री इज झाळ । डील में रूप अर जोबन झाळां ज्यूं धपळका मारै । पण इण वगत मूंडौ मगसौ पड़्योड़ौ । आंख्यां सूं आंसू झरै ।

वा इण राज री राजकंवरी ही । रात रा सूती नै दैंत उंचाय लायौ । कड़ाव में तेल भरचौ । हेटै धपळ-धपळ वासदी सिळगै । दैंत वळै सूखौ बळीतौ लावण सारू गियौ । राजकंवरी नै आखी तळनै खावैला । औ उणरौ संधीणौ । बरस में अेक वार कोई मोट्यार लुगाई तळनै नीं खावै तौ उणरा हाड़का घणा दूखै । चभीका मेलै ।

बात सुण्यां दूजोड़ा भाई रै रूं रूं में वासदी रा खीरा

चेतन व्हैगा । पण रीस में उणरी अकल अणूंतौ कांम दियौ। वौ मड़ा नैं अेक खाड में लुकाय, राजकंवरी नैं पाखती विठांण दी । खुद राजकंवरी रा गाभा पहर उणनैं आपरौ मरदांनौ वेस पहराय दियौ ।

देंत खेजड़ी री खेजड़ी खांधै उठाय लायौ । हाथां सूं ई भांग भूंगनै कड़ाव रै हेटै गोड खसोल दियौ । राजकंवरी घूंघटौ काढ़्यां ऊभी ही । सळवळती झाळां रै मांय रूप सळावा भरतौ । रूप री आ अनूठी छिब निरख देंत री राफां झरण लागी । गळळ गळळ कैवण लागौ—माखण री चिटकां ज्यूं खावण रौ आंणद आय जावैला । अैड़ौ कंवळौ अर पळकतौ डील तौ म्हैं आज पैली किणी रौ नीं देखियौ ।

राजकंवरी घूंघटा रै मांय ई बोली—म्हनैं कीकर ई करनै छोड दो । म्हैं म्हारै बदळै इक्कीस डावड़ियां सूंप दूंला ।

देंत कह्यौ—तेवड़ूं तौ म्हनैं कोई लुगायां री कमी थोड़ी है । पण अैड़ौ रूप तौ सूरज हथाळी में लेय सोधै तौ ई नीं लाधै । इण रूप नैं खावण रौ आंणद किसौ अर वौ ओगाळौ चिगळणौ किसौ !

तद राजकंवरी रौ भेख धारयां दूजोड़ौ भाई झीणै सुर रोवतौ रोवतौ बोल्यौ—अबै थांरै जचगी है तौ खावौ भलां ई, म्हारै बरज्या किसा ढबौ । पण म्हैं हाल कंवारी किन्या हूं । फेरा खायां बिना मरूं तौ अगत जावूंला । म्हारै साथै सात फेरा खाय पछै थांरी दाय पड़ै ज्यूं तळजौ अर खाजौ ।

देंत राजी होय बोल्यौ—हां, आ बात तौ म्हनैं ई कबूल । मांनण जैड़ी बात व्है तौ क्यूं नीं मांनूं । पण म्हैं तौ कीं फेरा-

वेरा रा लफड़ां में नीं समझूं । मिनखां नै खावण री फगत आ अेक वात ई जांणूं । थूं कैवै ज्यूं करण नै त्यार ।

राजकंवरी आंसुवां नै पूंछती बोली— इण कड़ाव अर अगन देवता रै च्यारुमेर सात वळाका देवणा । थें कड़ियां तणा लुळनै धकै धकै चालौ अर म्हैं लारै लारै ।

दैंत तौ कैतां पांण मांनग्यौ । दोवड़ौ होय धकै धकै चालण लागौ । तीजौ फेरौ संपूरण व्हैतां ईं तरवार रा अेक ई झटका में दैंत रै माथा रौ डोचरौ कर न्हाकियौ । भोडक कड़ाव रै मांय पड़ग्यौ । लारली धड़ नै ई उंचाय उकळता कड़ाव में पटक दी । दैंत सोना रौ पूतळौ बणग्यौ ।

राजकंवरी रै इचरज अर हरख रौ पार नीं रंह्यौ के ओ सपनौ है के साच ।

पाछा गाभा बदळिया । राजकंवरी नै राज-मैलां पुगाय वौ पाछौ मसांण रै ठायै आयग्यौ । उण वगत बडोड़ौ भाई पोहरौ देवण सारू जाग्यौ ई हौ । वौ पोहरा माथै आयौ तौ दैंत नै मारण वाळौ भाई बोलौ बोलौ आयनै सूयग्यौ । पण आंख्यां में नींद कठै । उणरी नींद तौ तारां रै लारै चापळ नै अदीठ व्हैगी । उण रूप री झबकौ पड़चां नींद आ सकै भलां !

बडोड़ा भाई नै लारली कीं बातां रौ पतौ नीं । वौ तौ तरवार री मूठ सेंठी झाल कड़ीधज होय नगर-सेठ री लास रै पोहरै ऊभग्यौ । थोड़ी ताळ में उणनै खेजड़ी वाळा थांन रै मांय बातां री कीं सुरपुर सुणीजी । वौ आळोच में पड़ग्यौ के इण वेळा अठै कुण व्है सकै । अणछक आ सुरपुर कीकर व्ही ।

मसांण में तौ कोई चिड़ी रौ बिचियौ ई नीं हौ ।

वौ पछै अेक पल ई उठै नीं ढब्यौ । थांन रै पाखती ऊभ कांन देय सुणण लागौ । किणी मोट्यार री भारी आवाज सुणीजी — भैरूं बाबा, आछा सुगन विचार आज राज रै खजांनै चोरी करण सारू जावां, जे मनचींती आस पूरीजगी तौ किणी छोटा-मोटा मिनख रौ नीं खुदोखुद देस रै धणी रौ माथौ चढ़ा-वांला ! आप ई कांई जांणौला के कोई डकरेल चोर बोलवां बोली तौ ही ।

आ बोलवां बोल च्यारूं वेली राज-दरबार कांनी वहीर व्हैगा । रात तीनेक घड़ी बाकी ही ।

बडोड़ा भाई नै आपरी कळायां अर आपरी समझ माथै पूरौ विस्वास हौ । उणरै जीवतां देस रा धणी नै नीं मरण दे । भैरूं बाबौ तौ खुद अैड़ी बोलवां रौ भूखौ हौ । सौ जातां ई चोरां री तौ मन जांणी व्ही । खजांना रौ पोरायती सांप डसणा सूं मरयोड़ौ पड़्यौ हौ । चोर मतै मतै ढूका जकौ हीरा-मोत्यां री पोटां बांधली । पोटां नै थांन रै लारै लुकाय वै पाछा रा पाछा राजा नै लावण सारू गिया ।

राजा रांणी रै पसवाड़ै सूतौ हौ । रांणी रै मूंडा में डूंजौ घाल पिलंग रै सेंठी बांध दी । राजा रै मूंडै डूंजौ देय उंचायौ सौ पाधरा थांन आय ढबिया । थांन रै मांय डूंजौ अळगौ लेतां ई राजा भूंडै ढाळै डाढ़ियौ । डाढ़णा रै समचै ई बडोड़ौ भाई किड़कायनै पड़्यौ जकौ चारूं चोरां नै छांग न्हाकिया । राजा प्रांण बचणा री खुसी में वळै वत्तौ रोयौ । प्रांण बचा-वण वाळा रा मांडै पग झाल झाल रोयौ । बडोड़ौ भाई धणी

पाला-पूली करी तद जाय राजाजी नीठ मांन्या। रोवता ढबिया। साथै जाय राजमैलां पुगायनै आयौ।

वंध्योड़ी रांणी नै खोली। डूंजौ काढ़तां ईं वा जोर सूं कूकी। तद राजाजी बोल्या— म्हैं जीवतौ आयग्यौ पछै किणनै रोवै।

दिन ऊगतां पांण राजाजी सूरज-भगवांन रा दरसण करण सारू छात माथै चढ़्या। हाथ जोड़ कैवण लागा— म्हारौ माथौ वढ़ जातौ तौ सूरज भगवांन थांरा दरसण कुण करतौ अर म्हारी रांणी किणरौ मूंडौ निरखती।

पछै राजाजी पाधरा दरबार में गिया। परधै नै तुरत बुलावण रौ आदेस करचौ। थटाथट दरबार जम्यौ। राजाजी रात वाळी खगडौ बतायौ तौ सगळां रा मूंडा उतरग्या। केई जणा तौ आंसू पूंछण लागा। देस रै भाग रा राजाजी बचिया पण वचिया। सगळी बात बताय राजाजी मुळकण री चेस्टा करता थका कैवण लागा— म्हैं मर जातौ तौ थें आज दरसण किणरा करता।

पछै राजाजी पांचूं भाइयां नै आदर सूं राज-दरबार में बुलाया। आपरै जोड़ै सिंघासण माथै बिठांणिया। बाकी च्यारूं भाइयां नै आप आपरै पोहरा री बातां पूछी।

छोटकियौ भाई नगर-सेठ रै पाछा जीवता होवण री बात बताई तौ लोगां रै इचरज री पार नीं रह्यौ। अेकर राजाजी रै पतवाणियां पछै वांरी बात माथै कुण अभरोसौ करतौ। नगर-सेठ रौ मोबी बेटौ ई दरबार में हाजर हौ। मन माडै अेक सौ पांच मोहरां देवण री हांमळ भरी। चार चरुवां

री नवी सोय सुण अणूंतौ राजी व्हियौ ।

चौथोड़ौ भाई सिकोतरी रौ कड़ौ बतायौ तौ मोटा मोटा जंवरियां री अकल चकरीजगी । अैड़ौ जड़ाव तौ वै आज पैली निजरां ई नीं देख्यौ हौ । सगळा भाई अेक दूजा सूं सला-सूत विचारनैं वौ कड़ौ राजाजी नैं भेंट कर दियौ । राजाजी अणूंता राजी व्हिया ।

तीजोड़ौ भाई नाडी वाळा देंत री बात बताई । दूध जैड़ा मीठा पांणी री चार बावड़ियां रौ जांणै जित्तौ गुण अर औसांण आखी परधै मांन्यौ । राजाजी उणरा मोर थापलिया । पांणी रौ फोड़ौ अेक रात में मिटग्यौ ।

दूजोड़ौ भाई राजकंवरी नैं तळण री बात बताई तौ राजाजी रा होस गुम व्हैगा । राजकंवरी नैं पूछ्यौ तौ बात साव साची । भाखर माथै तेल रा कड़ाव में राकस री पूतळी पड़्यौ हो । गाडौ जोतनैं हाजरिया दरबार में ले आया । अबकी सगळा भाई घणा ई नेवरा कर्‌या पण राजाजी सोना रौ पूतळौ भेंट नीं लियौ । कह्यौ — लारलौ औसांण ई नीं चूकैला, पछै औ वत्तौ भार क्यूं झेलूं । म्हैं तौ कीं नवी ई बातां सोचूं ।

पछै राजाजी आपरै सोच्योड़ी नवी बातां परधै नै बताई तौ सगळा ई सुणनै घणा ई राजी व्हिया । राजाजी रै कोई राजकंवर नीं हौ । पांच राजकंवरियां ही । पांचूं भाइयां नै राजकंवरियां परणाय राज सूंपण री बात रौ पैला लोगां नै पतियारौ नीं व्हियौ । पण राजाजी तौ ज्यूं कह्यौ त्यूं कर्‌यौ ।

सेवट मिनखां री वस्ती सूं तगड़ियोड़ां नै मसांण इण भांत

तूठौ । वांरौ तौ जमारौ ई बदळग्यौ ।

राजाजी जंवाइयां नै राज सूंप्यां पैली उण हित्यारा ठाकर रौ ठिकांणौ जब्त कीनौ अर उणनै सूळी री सजा दी । ठाकर रा कांन भरणियां रै मूंडै सीसा रौ राळौ खळकाय वांनै मारचा ।

पांचूं भाई बरसां तांई मिळ-जुळनै नांमी राज करचौ । रया नै पेट रै जाया, ज्यूं जांणी । जीव-जिनावरां माथै ई घणी दया पाळी । सपना में ई किणी नै किणो भांत नीं संतायौ ।



राजी - खुसी

घणा बरसां पैली री बात के किणी ग्रेक गांव में ग्रेक मायापत सेठ रैवतौ हौ। आखा मुलक में बिणज बध्योड़ौ। घड़ी-पलकां में लाखां रा वारा न्यारा। उणरी सांनी रै समचै भाव-ताव घटै-बधै। सूरज, चांद, तारा, बिरखा अर हवा नै बेचणियौ कोई नीं हौ, नींतर वौ वांनै ई मोल लेय आपरै कोठारां तालकै कर लेतौ। ज्यूं माया बधती गी, त्यूं उणरौ लोभ बधतौ गियौ। हीया री दया-माया खूटगी। मिनखां रा गळा करचां ई माया फळै तौ छौ फळती। चौखळा में भूख अर गरीबी बधती गी। पेट रौ खाडौ भरणौ दूभर व्हैगौ, पण मायापत सेठ रै कोठारां धन रा भाखर खिड़कीजण लागा।

सेठां री उण माया अर कुदरत रौ ग्रैड़ौ संजोग सजियौ के लगता ई जोड़ै तीन काळ पड़्या। मिनख मिनख नै खावण मंडिया तौ ई भूख रौ सेड़ौ नीं आयौ। गिरज, कागला अर कंवळियां मिनखां रा टंटेर टूंच टूंचनै धापग्या। ओक्या बैठगी।

मायापत सेठ रै धांन रा अलेखूं खोडा भरिया हा। उण चौखळा सूं ग्रेक अळगै दिसावर धांन रै भावां री घणी तेजी आई तौ वौ सेठ आपरै मित ग्रेक लक्खी विणजारा नै समचौ

भेज बुलायौ । लक्खी विणजारौ समचा रै पांण लाख बळदां री पोटां लेय हांकरतां आयौ । दिसावर में धांन भरचां खरचा टाळ दूणौ नफौ । सेठ अर विणजारा रै आधौआध । दोनां नै अेक दूजा माथै पूरौ भरोसौ । लाख पोटां री बाळद रा तीनेक भळाका व्हिया जित्तै चौथाई धांन ऊठगौ ।

चौखळा रा लोग भूखां मरै अर उठारौ धांन दिसावरां नफौ कमावण सारू पगां हालियौ । मरता लोगां रै कांनां इण बात रौ भणकारौ व्हियौ तौ वै भेळा होय सेठां री हवेली आया । तांगियां खावता किड़कोड़ां रौ मेळौ मचियौ । हाड माथै चांम मंढ़ियोड़ा अड़वा भेळा होय ऊंची आंगळियां करनै कूकिया । मरचोड़ा भीणा सुर में कैवण लागा — सेठां, भगवांन रूस्यौ सौ छौ रूस्यौ, थें नीं रूसौ तौ उणरै रूसणा नै नीं धारां । म्हैं तौ भूखां मरां अर थें नफा री खातर चौखळा रौ धांन दिसावर भरौ । थांरी आ माया तौ म्हांरी मौत बणगी । सेठां सूरज रौ उजास ई वगत आयां सिझ्या रा विणसै, तौ पछै थांरी माया किसी अखूट रैवैला ! भूखी आंतां री आसीस लौ, विणज घणौ ई फळैला ।

पण सेठ नीं मांन्यां सौ नीं मांन्या । वांरी कमाई में किणी रौ सीर तौ हौ कोनीं । इंछ्या व्है तौ पुन्न करै । वै लोग ई कमाई करै तौ वांनै कुण पालै । लोग कुरळावता रह्या अर सेठ हवेली रौ आडौ जड़ मांय हिसाब करण सारू गिया परा ।

कुजोग अर दुरासीस री बात अैड़ी बणी के उण दिन सूं ई सेठां री हवेली लिछमी सारू ई आडा जड़ग्या । धरती

कोप करनै इण भांत धूजी सौ सेठां री सै हवेलियां धुडगी। खोडा भेळा व्हैगा। धन रा भंवारा भेळा व्हैगा। चौखळा रौ मांनखौ किड़कायनै पड़ियौ सौ जमीं खोद खोद दांणौ रौ दांणौ काढ़ लियौ। सेठ बरजता रह्या अर लोग वांरौ धन लूटनै लेयग्या। दिसावरां साख पैठ उडगी। जिण कनै जित्ती ई अमांनत ही दाबली। लक्की विणजारौ मदत करी तौ वौ ई कळनौ गियौ। सेवट हार खाय हाथ खांच लियौ। वौ तौ अवस विणज में अण-गिण माया कमाई ही।

दिनमांनां री बात के सेठ पैला धूळ रौ ई विणज करता तौ सोनौ व्है जातौ, अबै सोना रौ बिणज करै तौ धूळ हाथै लागण लागी। तीब रौ तीब गैणौ-गांठौ ठांणै लगाय दियौ तौ ई अड़खंजौ जमियौ कोनीं। देखतां देखतां सेठां रै भूखां मरण रा दिन आयग्या। सेवट लारली मरजादा अर आंट रै लारै धूळ वगाय उणी बिणजारा रै अठै मुनीमपणौ अख्तियार कर लियौ। सेठ ई लारला थाट भूलग्या तौ विणजारौ क्यूं याद राखै। तौ ई अेक दिन आपरै तांडै आय जोसी नै वौ सेठां री गिरै दसा पूछी। जोसी टीपणौ वांच बतायौ के बारमै स्थांन राहू अर आठमै स्थांन सनि है। जीवता बचग्या सौ जमाबन्दी समझौ।

पछै टीपणौ बांचतां बांचतां जोसी रै लिलाड़ में सळ पड़ग्या। वौ कीं ऊंडी सोचण लागौ। तद विणजारौ पूछयौ के वळै कोई बात व्है तौ निसंक बतावै। पण जोसी सेठ रै उणियारा सांम्ही देख बतावण सारू झिझकियौ। विणजारौ उणरै मन री बात लखग्यौ। वौ मुनीम नै जावण री सांनी

करी । तद जोसी वतायौ के सेठांणी रै आसा है । औ वेटौ अणूंतौ भागधारी व्हैला । विणजारा री संपत रौ धणी बणैला। औ जोग किणी भांत नीं टळै ।

वात सुण्यां विणजारा रौ माथौ ठणकियौ । रूं रूं सूं परसेवौ चवण लागौ । आंख्यां राती लाल व्हैगी । इण जोग रौ तौ पापौ काटणौ ई पड़ैला । आपरै मन री बात वौ जोसी नै ई नीं बताई ।

सेठ सेठांणी दोनूं पीढ़ियां रौ वासौ छोड बिणजारा री चाकरी कबूल करली ही । सेठांणी बिणजारी नै बणाव-सिणगार करावण सारू ही । उणनै सातमौ महीनौ हौ ।

दसमै महीनै चांद रै उणियार रूपाळौ बेटौ जलमियौ । सेठ-सेठांणी घणा राजी नीं व्हिया । करम-हीण बाळ इण विखा में जलम लेय कांई सुख पावैला । साहूकार रौ डीकरौ चाकरी में कीकर आपरा दिन तोड़ैला । चाकरी तौ मरण सूं ई भूंडी व्है ।

मुनीम रै वेटा री बधाई सुण बिणजारौ सोचण लागौ के औ जोग कीकर सजैला । उणरै दो बेटा, अेक बेटी, भाई अर भतीजा थकां औ कीकर संपत रौ धणी बणैला । तौ ई जोग अपरवळी व्है । क्यूं जोखौ ओढ़णौ । वौ सोच-विचारनै मुनीम रै पाखती गियौ । लारली बातां याद दिराय कैवण लागौ — थांनै मुनीमपणौ करतां देखूं तौ म्हारै हीयै सळीका ऊठै । थांनै इग्यारै हजार रिपिया देवूं अेकर वळै विणज चालू करौ । वेटा नै म्हनै सूंप दौ । म्हैं पोसण करूंला । विणज सिखावूंला । इणनै क्यूं विखा में दाझौ ।

सेठ अर बिणजारौ घणी माथा-फोड़ी करी तौ सेठांणी मांनगी । छ महीना पछै बेटौ सूंप देवैला । जित्तै बिणजारौ किणी धाय री भाळ करलै ।

बातां बातां में छ महीना बीतग्या । मुनीम इग्यारै हजार रिपिया में बेटौ सूंप दियौ । बिणजारा सूं सला-सूत विचारनै सेठ-सेठांणी आपरै गांव वहीर व्हिया । गांव कोस डोढ़ेक ई आंतरै हौ ।

तांडा सूं माईतां रै वहीर व्हैतां ईं बिणजारौ अेक हथमार नै बुलायौ । मुनीम रा बेटा नै मारण साटै वीस मोहरां बगसीस में देवैला । आंख्यां रा डोळा सूंपतां ईं मोळियौ बंधावैला ।

हथमार नैन्हा बाळ नै गोद में लेय वहीर व्हियौ । पण अबूझ बाळक तौ मारण वाळा रै सांम्ही देखनै मुळकियौ । उणरी खत पकड़ रमण लागौ । पैल पोत तौ हथमार रा रूं रूं में जांणै बिच्छू रा डंक सळीका मैल्या । पण पछै दूजै ई छिण उणरी नस नस में जांणै हेम सांचरग्यौ । काळजा में जांणै माखण पिघळण लागौ । मारण रौ विचार बदळग्यौ । पण बिणजारा कना सूं मोहरां तौ लेणी इज । मारग रै पाखती रा खंधेड़ा में वेल-पांनड़ा सूं दपट बाळ-गोपाळ नै सुवांण दियौ । तठा उपरांत वन में जाय हिरण रै बिचिया रा डोळा काढ़नै बिणजारा रै पाखती गियौ । बिणजारौ निसंक भाव सूं डोळा अेडियां हेटै मसळ थोड़ौ मुळकियौ । मन ई मन बोल्यौ — आयौ बापड़ौ म्हारी संपत भोगण नै !

पण मारण वाळा सं तारण वाळा री मंसा न्यारी ही ।

संजोग रौ नाकौ अेड़ौ पीयौ के संवै ई हथमार बाळ-गोपाळ नै खंधेड़ा में सुवाण कोई चारेक खेतवा अळगौ गियौ व्हैला के व्रिणजारा सूं मिळण आवता मुनीम रै कांनां किणी बाळक रै रोवण रौ साद सुणीजियौ। घांटी भंवाय चारूं कांनी भाळियौ। कठै ई कीं नीं दीसै। पण रोवण री आवाज उणी भांत सुणीजती ही। वौ आवाज कांनी वहीर व्हियौ। तर तर बाळक रौ रोवणौ सुभट व्हैतौ गियौ।

खंधेड़ा रै माथै ऊभ देख्यौ तौ मांय बेल-पांनड़ां माथै अेक बाळक रोवै। मूंडा सूं पांन हटायां ठा पड़ी वौ तौ उणरौ इज बेटौ। बिणजारौ इण भांत किण भौ रौ आंटौ साजियौ। रिपिया देवण रौ औळावौ लेय इण विध क्यूं घात करचौ! अबै उणसूं चरचा करणी ई बिरथा। पछै वौ तौ बाळ-गोपाळ नै खोळा में लेय गांव कांनी वहीर व्हियौ सौ बिणजारा रै तांडा सांम्ही मुड़नै ई नीं जोयौ।

बेटा नै सांप्रत निजरां देख सेठांणी ई अणूंती राजी व्ही। बदळनै नवौ नांव राख्यौ — राजी! दूजी वळा खंधेड़ा में लाध्यां वै बेटा रै जलम सूं ई वत्ता राजी व्हिया। इण वास्तै दोनूं जणा जोसी रौ राख्यौ नांव बदळ दियौ। 'राजी' रौ नांव लेणा सूं वांरौ हीयौ अर गळौ दोनूं भरीजता।

अर उठी बिणजारा रै तांडै अेडियां सूं डोळा मसळीजिया ई हा के गांव सूं कासिद समंचार लेयनै आयौ के उणरै बेटी व्ही। उणरी संपत नै भोगण वाळा रै मरण उपरांत बेटी होवण रा अै समंचार सुणियां तौ उणनै अणूंती खुसी व्ही। उण इज कासिद रै साथै बिणजारी नै समंचार भेज्या के बेटी

रौ नांव 'खुसी' राखै । जोसी कोई दूजौ नांव दिरावै तौ ई उणनै 'खुसी' कैय बतळावै ।

सूंपियोड़ौ बाळक पाछौ घरै अैड़ा नांमी सुगन विचार आयौ के घरवाळां रा दिनमांन ई पळटण लागा । जिण धंधा में हाथ घालै उणमें कमाई होवण लागी । माईतां नै सोरौ सांस आयौ । 'राजी' रौ जैड़ौ नांव वैड़ा ई गुण दरसाया ।

ज्यूं राजी री ऊमर वधती गी मांईतां रौ विणज वधतौ गियौ । पैला वाळी बातां तौ नीं बावड़ी पण धन संपत रौ कीं तोटौ नीं रह्यौ ।

मिनखा-जूंण रै ढीमड़ै अेक घड़ली भरीजै नै दूजी खाली व्है । माईतां नै सोरौ सांस आयौ के खुद राजी माथै पटकी पड़गी । बीस दिनां रौ आगौ-लारौ साज राजी रा माईत परलोक सिधाया । थोड़ा दिन तांई छांनै छांनै रोय सेवट माठ झेली ।

साहूकार रौ बेटौ हौ, माथै आय बाजी तौ सौदा-सरड़ा किया, उथलपाड़ा करचा, पण थाळ नीं फिरी । घाटा माथै घाटौ पड़तौ ई गियौ । हाट मांड बैठौ तौ ई तोजी नीं सजी । सेवट कायौ होय राज रौ दांण वसूल करण री चाकरी करली । आपरै गांव रौ दांणी बणग्यौ । हिसाब-किताब सांतरौ राखतौ । किणी नै कीं छूट नीं देवतौ । उणरौ जिम्मौ लियां पछै दूणौ दांण वसूल होवण ढूकौ ।

मजा में दिन गुड़कता हा । राजी सोळै बरसां रौ मोट्यार व्हैगौ । फबतौ । रूपाळो । बस्ती रै लोगां सूं हेळमेळ अर घरापौ राखतौ । सगळा ई उण माथै राजी हा । उणरी मीठी

वोली आगै दांण देवणिया ई राजी होय दांण देता ।

अेक दिन समाजोग री वात अैड़ी बणी के वौ इज सागै लक्खी विणजारौ केसर किस्तूरी री वाळद लेय राजी रै गांव ढूकौ । दांण भरण सारू पैला तौ वौ कीं करड़ावण करी, पण पछै राजाजी री परवांनौ बांच्यां तुरत हिसाब करनै दांण चुकाय दियौ। पछै वातां-विगतां रै बिचाळै बिणजारौ राजी सूं पूछ-ताछ करी के उणरी जात कांई, गांव किसौ, किणरौ बेटौ अर कित्ता वरसां रौ । जवाब सुणियां बिणजारा रौ माथौ चकरीजण लागौ । उणरै वंस रौ कंस जीवतौ कीकर बचियौ । सै ठाया-पतांण मिळै । तौ कांई उण दिन हथमार उणरै साथै छळ करयौ । किणी जिनावर रा डोळा लायनै सूंप दिया । आ तौ ठीक मौका माथै सावळ सोय व्हैगी । नींतर बातड़ी रांम जांणै किसै नाकै पूगती । हाल ई कीं अबेळौ नीं व्हियौ । वौ आपरा मन में नवी अटकळ विचार ली ।

खासी ताळ तांई वौ राजी सूं मीठी मीठी बातां करी । चौगणी पगार रौ लोभ दियां पछै ई राजी नीठ मांन्यौ । गांव रा ठाकर नै दांण रौ जिम्मौ संभळाय वौ बिणजारा साथै वहीर व्हैगौ ।

राजी कमगर अर वोजी तौ अणूंतौ हौ । किणी कांम में कदै ई कीं खांमी के ढील नीं राखतौ । बोली रौ मीठौ । सुभाव रौ सालस । पण बिणजारा रै हीयै तौ विस उगटियोड़ौ हौ । जुगत सूं राजी रौ पापौ काटण सारू अेक दिन वौ उणनै आपरै पाखती बुलायौ । आपरै गांव जरूरी कागद पुगावण रौ जिम्मौ दियौ । टाळकौ घोड़ौ सूंप्यौ । पाछौ रौ पाछौ

तुरत आवण री भुळावण दी ।

विणजारा रौ गांव सौ कोस आंतरै हौ । पण राजो दूजै दिन चार घड़ी रात थकां ई ठिकांणै पूगग्यौ । बारलै पासै ई बिणजारा री हवेली ही । लांठौ बगेचौ हौ । वगेचा में आय चंपा री डाळ घोड़ौ बांध्यौ । सोच्यौ रात रा जगाय क्यूं फोड़ा घालणा । थाकैलौ तौ हौ इज । ठाडी धोत्र माथै सूवतां ई नींद आयगी ।

बिणजारा रै दो बेटियां ही । बडोड़ी परणायोड़ी । छोटकी कंवारी । बिणजारौ अेडियां सूं सेठ रै बेटा रा डोळा मसळिया उण दिन ई कासिद बेटी होवण रा समंचार लायौ हौ । वा बेटी बरस लाग्यां सोळै बरसां री जोध-जवांन व्हैगी ही । रूप री खांन । जांणै चांदणी अर फूल संचै ढळिया । हीयौ उणरौ सेडावू दूध री भांत निरमळ अर पवित्तर । बाप री गळाई मळीच अर हीन सुभाव री नीं ही । बाप बतायौ सौ ई मां उणरौ नांव राख्यौ — खुसी !

तड़कै तड़कै बगेचा सूं फूल तोड़णा रौ नित-नेम । 'खुसी' कदैई इण में नागा नीं करी । हमेसां री भांत संपाड़ौ करनै वा बगेचा में आई । फूलां री जात हळकी । कांई देख्यौ के चंपा री डाळ सुरंगौ घोड़ौ बंध्यौ । पाखती धोत्र माथै अेक असवार सूतौ । तेजवांन । रूपाळौ ।

'खुसी' खासी ताळ तांई अगाड़ ऊंघ में सूना असैंधा मोट्यार रौ मूंडौ निरखती री । उणरा अंतस में जांणै अणगिण फूल खिलग्या । वा बगेचा रा फूल तोड़णा पांतरगी ।

सूरज रै उजास रौ परस अर चिड़ियां रौ कलरव सुण

राजी , वैंठौ व्हियौ । पण पलकां उघड़तां ईं जकौ नजारौ सांप्रत निगै आयौ तौ उणनै अेकाअेक आपरी दीठ माथै भरोसौ नीं व्हियौ । गिगन रौ चांद तूटनै धरती माथै आयौ तौ आयौ इज कीकर ।

वां चार आंख्यां रै मिळण सूं बगेचा में अेक अनूठी ई छिब आयगी । फूल फूल में दूणी आब अर दूणी सोरम । हरियाळी जांणै मूंडै बोलण लागी । वै दोनूं तौ अेक आखर ई मूंडा सूं नीं काढ्यौ पण फूल फूल में वंतळ व्हैगी । वै दोनूं तौ जांणै बोलणौ बिसर ई गिया व्है ।

इण मूंन रै बिचाळै 'खुसी' रै हीयै अेक नवौ ई बगेचौ खिलग्यौ , अेक नवी चांदणी सांचरी । आज उणरौ नितनेम सुफळ व्हियौ । उणरी पूजा सारथक व्ही । पण बाप रै हाथां लिखियौ कागद बांच्यां उणरै हिवड़ा रौ सै बगेचौ कुम्हळाय गियौ , उणरै अंतस री चांदणी हूप्प करती बुझगी । पण आ चांदणी बुझियां तौ सूरज रौ उजास ई कालौ धाक पड़ जावैला ।

खुसी रा मन में आपै ई अेक अटकळ सूझगी । बाप रै नांव सूं अेक दूजौ कागदियौ लिखनै संभळाय दियौ । जिण में अजेज 'खुसी' रै सागै उण रूपाळा मोट्यार रै ब्याव री बात लिखी । बिणजारा रै आवण री कोई बाट नीं न्हाळै । औ संजोग क्रिणी भाव नीं टाळै ।

राजी बिणजारा रै घरवाळां नै कागद झिलायौ तौ वै अणूंतौ हरख मनायौ । दूजै दिन ई सावौ पूछ 'खुसी' रै सागै परणाय दियौ ।

सुहाग री लाखीणी रात चांद-सूरज रौ मेळ व्हियौ ।

गिगन रै तारा तारा में फूल जड़्‌या । राजी रौ उणियारौ निरखती खुसी बोली—जे म्हारै फूलां अर म्हारा मन में सत व्हियौ तौ अपांरौ दुनियां में प्रळै तांई बिछोव नीं व्हैला । दुनियां री जीभ सूं आपरौ नांव कदै ई नीं मिटैला ।

पण खुसी रौ बाप लक्खी बिणजारौ तौ बेटी रै जीवतां थकां ई जंवाई नै मारण री जुगत विचारण लागौ, जद विणजारी रै हाथां लिख्या औ समंचार मिळिया के उणरै कह्या मुजब खुसी रौ हथळेवौ राजी रै साथै जोड़ दियौ । आखी खुसी रै मांय किरकिर फगत इत्ती इज के खुद बेटी रौ बाप बेटी रा व्याव में हाजर नीं व्हियौ । समंचार बांचतां ई बिणजारा रै माथा में जांणै धनाधन सुरंगां छूटण लागी ।

वौ बाळद ही जठै ई संभळाय पाधरौ आपरै गांव वहीर व्हियौ । बेटी रौ दुहाग कबूल, पण आपरी संपत मुनीम रा बेटा नै नीं भोगण देवैला । कांई इण दिन सारू वौ गांव गांव भटक्यौ अर मारग मारग री धूळ माथै ओढ़ी । आधौ धन बेटी रै नांव कर देवैला ।

गांव आयां पछै ई लक्खी बिणजारौ आप वाळै कागद री किणी सूं कीं बात नीं करी । बेटी जंवाई पगां माथा निवाया तौ वांनै ऊपरला मन सूं आसीस दीवी । पण वौ किणी दूजा रै भरोसै नीं हौ । आपै ई परबारौ कांम वण जावै तौ क्यूं भूंड रौ ठीकरौ माथै उखणै । अकल अर संपत व्है तौ मौत किसी मूंघी । अकल नीं व्हैती तौ आ माया किण भांत भेळी व्हैती ।

राज-कसाई सूं सै ठसियौ बिठाय वौ सिझ्या रा घड़ीक

दिन चढ़्यां घरै आयग्यौ । घरै आवता ई बिणजारौ राजी री भाळ करी । जंवाई उण वगत बेटी रै सागै चौपड़-पासा रमता हौ । हाजरिया बुलायौ तौ वौ तुरत सुसरौजी सूं मिळण रौ उमायौ हेटै आयौ । बिणजारौ आपरै सागै उणनै बगेचा में लेग्यौ । खूंजिया सूं काढ़नै कागद झिलायौ । घणी घणी भुळावण देय कह्यौ के राज-कसाई सूं अेक अैड़ौ ई खांनगी अर जरूरी कांम है । औ कागद उठै देयनै आवै ।

जंवाई तौ कागद लेय तुरत उठा सूं वहीर व्हियौ । मारग में बिणजारा रौ बडोड़ौ बेटौ मिळग्यौ । पूछ्यौ के बैनोईसा सिध जावै । वौ ही जकी बात बताय दी । छतै घरवाळां वांरी बारी कद आवै । बैनोईसा इण विध छोटा-मोटा कांम करै तौ भूंडौ लागै । साळौ घणौ हठ झेल्यौ तौ कागद झिलावणौ ई पड़्यौ ।

वौ कांम कोई छोटौ-मोटौ नीं हौ । अजांण में साळौ बैनोई री मौत टाळी अर खुदनै उणरै बदळै मरणौ पड़्यौ । राज-कसाई सूं बिणजारौ अैड़ौ ई ठसियौ बिठायौ है के उणरौ लिख्यौ कागद लेय आवै उणनै मार न्हाकणौ । कसाई कौल माथै खरौ रह्यौ । ऊंडी कोटड़ी में घाल कागद लावणिवा रौ गळौ वाढ़ न्हाकियौ ।

दूजै दिन बिणजारौ बगेचा में बेटी रै साथै जंवाई नै फूल तोड़तां देख्यौ तौ उणरा काळजा में जांणै भालौ खुबियौ । हाजरिया नै भेज राज-कसाई रै उठै कागद पुगावण री बात पुछवाई । हाजरिया रै मूंडै रा संमचार सुणतां ई बिणजारा माथै जांणै वांण वैगौ । नसां रौ लोई ठसग्यौ । मांय रौ मांय धमीड़ा लेय रोयौ । बेटा रै मरणा री किणी नै चरचा

नीं करी । उणरै हिवड़ा री विस वळै वत्तौ उगटियौ । राजी रै मरचां बिना उणनै अेक पल ई चैन नीं पड़ै ।

वौ सिङ्या रा राज-खवास रै घरै गियौ । मोहरां री कोथळी झिलाय उणनै सै बातां समझाय दी । जकौ ई उणरौ कागद लेय आवै, उणरौ खिजमत करतां गळौ सूंत न्हाकै । घर में किणी रै कांनां भणकारौ ई नीं पड़ण दे तौ इदक चतराई । अंटी में नांणौ अर अकल व्है तौ कांई कांम नीं पटै ।

हमेसां री भांत राजी अर खुसी सुवरण मैल में बैठा चौपड़-पासा रमता हा । हाजरियौ जंवाई नै बुलावण आयौ तौ राजी अधूरी बाजी छोड सुसराजी सूं मिळण नै आयौ । विणजारौ बगेचा में लै जाय राजी नैं सगळी बात समझाई के आज रै दिन खवास रैं घरैं पाळौ जाय खिजमत वणायां कदै ई मांदगी नीं आवै । बिणज रै सौदा सारू उणनै अेक कागद देवणौ है जकौ जातां ई सूंप दे ।

राजी तौ पाधरौ उठा सूं ई वहीर व्हैगौ । सुसरौजी कद कद कांम भुळावैला । वौ खाथौ खाथौ जावतौ हो के छोट-किया साळा रौ हेलौ सुण ढबियौ । साळौ पूछ्यौ के वैनोईसा सिध जावौ । तद वौ, ही जकी बात बताय दी । पण सुण्यां साळौ हठ झेल्यौ के लक्खी विणजारा री जंवाई चलायनै पाळौ खवास रै घरै जावै तौ कित्तौ भूंडौ लागै । सांनो रैं समचै सौ खवास लटका करता घरै आवै । इत्ता हाजरिया पाव्-री रोटियां तोड़ै अर बैंहनोईसा पाळा कागद देवण नै वहीर व्हिया । साळौ घणौ वाद करयौ तौ सेवट राजी नै कागद सूंपणौ ई पड़्यौ ।

खवास तौ कागद लावणिया री उडोक में बैठौ ई हौ, पाचणां रैं धार लगाय । सगळा घरवाळा बारै गियोड़ा हा । वौ तौ कौल करचौ सौ पूरौ निभायौ । कागद लावणिया रौ गळौ सूंत न्हाकियौ अर किणी रैं कांनां भणकारौ ई नीं पड़ण दियौ ।

पण दूजे दिन तड़कैं बिणजारौ बेटी रै सागै जंवाई नै फूल तोड़तां देख्यौ तौ उणरी आंख्यां आडौ अंधारौ पाथरग्यौ । हाजरिया नै भेज बात पुछवाई । जबाब सुणतां ई काळजियै करौत वैगी । मांय रौ मांय रोयौ । पण तौ ई जंवाई नैं मारण री धत नीं छोडी । विणास री वेळा सै ऊंधी ई ऊंधी सूझैं । उणनै आपरी संपत रौ बेटां बिचै ई मोह वत्तौ हौ । काठी छाती करनै वौ पाधरौ राज-भांबी रै घरै गियौ । मोहरां री पळपळाट देखतां ईं भांबी सै बातां समझग्यौ । वौ तौ कोथळी री ठौड़ मूठी मोहरां में ईं कांम सार देतौ ।

भांबी कांम सारचौ तौ अवस पण पैला री भांत ऊंधौ । बिणजारा रौ छोटकियौ भाई कागद लेयनै आयौ, उणनै मार न्हाकियौ । अबकी राजी सूं कागद लेयनै वौ आयौ हौ । घणौ वाद करचां राजी नै कागद देवणौ पड़चौ ।

इण भांत दोय बेटा, अेक भाई, बडोड़ौ जंवाई अर अेक भतीजौ कागद पुगावण री अटकळ रै लारै ठाय रैगा । तद जाय बिणजारौ आ धत छोडी । विणास री वेळा इणी भांत मत फिरचा करै । विणास रौ आंकौ आवै जद संवी बातां ईं ऊंधी बण जावै ।

विणजारौ सोच्यौ के जंवाई बेटी रै भाग रौ बचै । उणनै

काळ सूझ्योड़ौ हौ । काळ री आंख्यां कोई गनौ नीं दीसै । बेटी भेळी मरै तौ छौ मरती । बिणजारौ राजी नै मारण री अेक नवी जुगत विचारी ।

साटियां नै अनाप दारू पाय वांनै सगळी वात समझाय दी । साटियां नै दारू मिळ जावै तौ पछै कांई चाहीजै । जणा दीठ चौबारा री सौ बोतलां अर सौ मोहरां । दो री ठौड़ बिणजारौ कैवै तौ वै सौ मिनख मारण नै त्यार ।

आधी ढळियां चार जणा रंग-मैल में आया । राजी अर खुसी अगाढ़ ऊंघ में सूता हा । राजी रा बूकिया माथै खुसी रौ माथौ हौ । चारूं जणा सुथराई सूं पिलंग उंचायौ । अैल ई नीं आवण दी । उंचाय नै नंदी रै ढावै लाय पिलंग धरचौ तौ ई वांरी नींद नीं खुली । अबै मौत सूं वचनै कठै जावैला ।

चांनणी घट रात । नंदी गैगाट करती बैवती ही । हथमारां रै हाथ वसू दारू री बोतलां ही । सोच्यौ के अबै वै पिलंग छोड सिध जावैला । मन करैला उण वगत ई मार नंदी में राळ देवैला । मारचां पैली दारू रा चार चार हाथ व्है जावै तौ सखरी बात ।

सौ आ बात विचार वै दारू पीवण ढूका जकौ ढविया ई नीं । बेचेतै होय आडा गुड़िया जणा पीवणौ बंद व्हियौ ।

घड़ी रात थकां राजी अर खुसी री नींद खुली । रंग-मैल सूं अठै कीकर आया कीं समझ बैठी नीं । पिलंग रै च्यारूं पागै चार मोट्यार बेचेतै पड़चा हा । बिना बतायां ई सगळी बात समझग्या । दोनूं जणा पिलंग सूं ऊठनै वोला वोला वहीर व्हैगा । बगेचा में आय फूल तोड़ण लागा ।

अर उठी त्रिणजारा रै हीयै घल नीं माई तौ वौ घूमण रै ओळावै त्रिणजारी नै सागै लेय नंदी रै ढावै आयौ । देख्यौ तौ पिलंग साव खाली । चारूं जणा सूता । अबै जावतां बात भरै पड़ी । त्रिणजारौ अणूंतौ राजो व्हियौ । मन ई मन सोच्यौ के आयौ बापड़ौ संपत रौ धणी बणण सारू । भावै घणी ।

हाल थोड़ौ अंधारौ हौ । केई रातां नीं सूवण सूं उणरी आंख्यां घुळण लागी । आज केई दिनां सूं मन चींती व्ही ।

विणजारौ घणौ कह्यौ तौ दोनूं लोग-लुगाई पिलंग माथै आडा व्हैगा । ठाडा लैरकां सूं थोड़ी ताळ में ई नींद आयगी । अर वै दिन ऊगां तांईं सूता रह्या ।

त्रिणजारा अर विणजारी सारू मौत रौ काळौ सूरज ऊगियौ, पण वांनै उणरौ कीं वेरौ नीं पड़्यौ । आधौ-दूधौ चेतौ व्हियौ जणा चारूं हथमार भिभकनै वैठा व्हिया ! भचाभच तरवारां चलाई जकौ पिलंग समेत वांनै वाढ़ न्हाकिया । नंदी में वगाय वै वळै दारू पीवण वैठग्या ।

इण भांत राजी त्रिणजारा री संपत रौ धणी बण्यौ । घणौ ई त्रिणज फळ्यौ । वै वरसां तांईं सुख सूं रह्या । राजी-खुसी रौ वौ अमर जोड़ौ मरयां पछै ई जणा जणा री जीभ माथै वासौ करयौ । लोग मिळै-भेंटै जणा माहौमाह पूछै के रह्या तौ राजी-खुसी । प्रळै तांईं वां दोनां रौ नांव लोगां रै होठां मोत्यां रै उनमांन जड़्यौ रैवैला ।



नाग - राजकंवर

अेक हौ बांमण । अणूंतौ तोटायलौ । थाकल । पण टाबरां सूं छांन भरी । इग्यारै बेटा-बेटियां । धन, संपत अर पूंजी रा नांव माथै फगत अेक खड़ियौ । बांमण मांग-मूंगनै दांणा लावै । नीठ कोकळ पाळै । बांमणी सवार-सिञ्या कळफळ करै । धणी नै दिसावर कमाई करण रा सपना बतावै । पण पीढ़ियां रौ वासौ छोडण सारू बांमण री कदै ई मन नीं व्हियो । वौ कैवतौ — दिसावरां रा लोग इत्ता भोला कोनीं जकौ कणूकां री ठौड़ हीरा-पना अर मोहरां राळै । अपांरा भाग में तौ खुणचियै खुणचियै दांणा लिख्या, सौ मिळै ई है ।

पण बांमणी देण नीं छोडी । नित रौ घोदावणौ भूंडौ व्है । अेक दिन बांमण कायौ होय खांधै पंछियौ अर गमछौ राळ कमाई करण सारू गांव छोड्यौ । कुण किण रा भाग बांचनै देख्या । बांमण आखै दिन अर आखी रात चाल्तौ रह्यौ । दूजै दिन सूरज री उगाळी मारग में अेक लांठौ सरवर आयौ । हिबोळा खावतौ निरमळ नीर । ठौड़ ठौड़ कंवळ रै अणगिण पांनां, जांणै ढकणा ढांक्योड़ा व्है ज्यूं । पाळ रै च्यारूं-मेर हरियळ रूंख ऊभा । बांमण नित-नेमी हौ । कड़ियां तगा पांणी में ऊभ संपाड़ौ करचौ । सूरज-भगवांन नै जळ चढ़ायौ ।

झीलियां पछै पंछियी पहर पूजा-पाठ में बैठग्यौ । आली धोती सांवटनै अेक बांटका माथै धर दी । मारग वैवती वगत सुखाय लेवैला । पूजा-पाठ सूं निवृत होय, खांधै धोती राळ घकै वहीर व्हैगौ ।

जोग री बात अैड़ी वणी के अेक काळिंदर सरवर सूं वारै निकळ, बांटका माथायली आली धोती में सळवळतौ वड़ग्यौ । काळिंदर रै डील अैड़ी ठाडांळाई वापरी के वौ अणूंतौ राजी व्हियौ । धोती रा धणी नै आसीस दीवी के वौ अखी-अमर व्है । काळिंदर रौ हीयौ दूध री गळाई धोळौ व्है । वौ मन में सोच्यौ के धोती सुखावती वेळा खळिंद करतौ रौ जद वौ हेटै थरकीजैला, तद बांमण अणूंतौ डरपैला । कदास धैलीजनै ई मर जावै । बिरथा किणी नै क्यूं संतावणौ ।

धोती रै मांय दपटियोड़ौ काळिंदर इण भांत आळोच में पड़्यौ हौ के बांमण फटकार नै धोती झाटकी । मांय सूं अेक पळकतौ हार पड़्यौ । हीरा-मोत्यां जड़्यौ । बांमण री अकल अर आंख्यां दोनूं चूंधीजगी ।

वौ तौ पछै घकै अेक पावंडौ ई नीं भरचौ । मुड़नै पाछौ रौ पाछौ गांव कांनी वहीर व्हियौ । कोडायौ । खाथौ खाथौ ।

आधी ढळियां वौ घरै पूगौ । बांमणी नै अणचींत्या हार री बात वताई । पण उणरी आंख्यां घुळती ही । अेक टूटा-फूटा मजूस में धोती री पोटळी है ज्यूं धर दी ।

पण तड़कै आंख खुल्यां बांमणी नै अेक छिण रौ ई खटाव नीं व्हियौ । मजूस उघाड़ जोयो तौ मांय अेक सरुपवांन बाळ-गोपाळ रमै । बांमणी रै छठौ महीनौ हौ । इग्यारै टाबर-

टींगर आंगणै अड़थड़ै, अेक पेट में अर औ अेक मजूस में। पेट रै जायां रौ ई पेट नीठ भरीजै, तद औ जम किण भौ री मांगत मांगै। बांमणी री अकल चकरीजगी।

अर उठी बांमण इण गताघम में पजग्यौ के हार रौ इण भांत बाळक कीकर वणग्यौ। निजरां दीठी परसरांम कदै न कूड़ी होय। पण आज तौ हाकां धाकां निजरां पतवांणियोड़ी बात निपट भूठी व्हैगी।

दोनूं धणी-लुगाई विचार करण लागा के अबै इण लेणा-यत रौ करणौ कांई। के इत्ता में बांमणी नै अकल सूझी। कह्यौ—अबारूं रा अबारूं राजा कनै उखलौ।

निपूतौ राजा अैड़ौ रूपाळौ राजकंवर पाय जांणै-जित्तौ राजी व्हियौ। रांणी तौ खुद इत्ती राजी व्ही, जांणै खुद री कूख फळी।

बांमण नै मूंडै मांग्यौ धन देय वहीर करयौ। दोनूं लोग-लुगाई धन नै निरख निरख, राजा-रांणी सूं ई वत्ता राजी व्हिया।

राज री परधै अर नगर रै लोग-बागां रै फगत इण बात री आफरौ चढ़योड़ौ के राजकंवर री जात कांई। रांम जांणै किणी अैंड़ी-बैंड़ी जात रौ व्हियौ तौ राजा वण्यां आखा राज नै बूडांणै मेल देवैला। पण किणी रै सांम्ही आफरौ झाड़ै तौ राजाजी रौ डर। कुण जांणै सूळी देय मारैला के घांणी में पीलाय। मांय रौ मांय वासदी ओटीजतौ गियौ।

अर उठी नाग-राजकंवर जव वधतौ तिल वधग लागौ अर तिल वधतौ जव वधण लागौ। दिन वधतां किसा वरस

लागै । अर वरस वीततां किसा जुग लागै । राजकंवर बीस वरसां रौ व्हैगौ । धरती ऊभौ गिगन रा तारा वीणै जैड़ौ । डील रौ भरपूर । फवतौ । रूपाळौ ।

रांणी बेटा नैं परणावण री हठ झेल्यौ तौ राजा दीवांण नैं पाखती रैं रजवाड़ां भेज्यौ । दीवांण तीन महीनां उपरांत देख-भाळ नैं पाछौ आयौ । साथै पिंडत अर सावौ लेयनै । राजकंवरी अणूंती रूपाळी ही । जोड़ री । उण राजकंवरी रै साथै धूमधांम सूं नाग-राजकंवर रौ ब्याव व्हियौ ।

ब्याव री रात नाग-राजकंवर, राजकंवरी सूं फगत अेक इज बात करी । घड़ी घड़ी उण अेक बात री ई भुळावण दी के वा आपरै हाथां वासदी चेतन करैला । औ कांम किणी दासी के डावड़ी नैं नीं भुळावै । अस्टपौर बत्तीस घड़ी चूल्हा सूं वासदी बुझण नीं दे । झाळां सिळगती रैवै । अगन देवता रौ चांनणौ मगसौ नीं पड्यौ तौ सै वातां भली व्हैला । दुख अर विखा री अंधारी नैड़ौ ई नीं फरूकैला ।

इण भुळावण रौ अेक खास म्यांनौ हौ । नाग-राजकंवर नैं लोग-बागां रैं आफरा री सोय ही । नगर रा वासी उणरी जात जांणण रा कोडाया हा । जे राजकंवरी जात पूछण री वाद कर लियौ तौ नाग-राजकंवर नैं मिनख री खोळियौ छोडणौ पड़ैला । जात बतावतां ई वौ पाछौ काळिंदर बण जावैला । वासदी री भुळावण सूं राजकंवरी अस्टपौर रूंध्योड़ी रैवैला । नीं किणी सूं वात-चीत करण री वेळा मिळै अर नीं राजकंवरी जात रौ म्यांनौ बूझै । राजकंवरी रौ ध्यांन अर मन वासदी जगावणा में ई रैवैला । विरथा वेळा मिळै

तौ बिरथा वातां सूझै ।

सांवण री सुरंगी तीज आई । साथणियां घणौ हठ झेल्यौ तौ राजकंवरी बाग में हींडण सारू सागै वहीर व्हैगी । बाग में आय सुरंगा फूल अर सोवणी हरियाळी देखी तौ उणरी अकल चकरीजगी । वासदी रा कळाप आगै तौ वा कुदरत अर दुनियां नै अंगै पांतरगी ही । बरस रै उपरांत बाग री छिब में उणरौ मन अैड़ौ अळूझियौ के उणनै वासदी वाळी वात रौ साव चेतौ ई उतरग्यौ । आखै दिन हींडती री । सिञ्या रा अंधारी रिसियां तारा झांकण लागा, जद उणनै वासदी रौ ध्यांन आयौ । अर आतां ई रूं रूं में जांणै खीरा चेतन व्हैगा । बाग सूं अेकली ई न्हाटी । राजमैलां आय रसोई में देखै तौ वासदी साव बुझि-योड़ौ । भोबर ई ठाडी पड़गी । राजकंवरी रा डील में धूजणी वड़गी । अबै करै तौ कांई करै । वाळणजोगड़ी तीज तौ चेतौ ई भुलाय दियौ । उण रात राजकंवर कित्ती भुळावण दी ही । काळो नाग डसै आं वादीली साथणियां नै ।

राजकंवरी तौ पछै घणी कीं ढील करी नीं । सोना री कुड़छी लेय पाखती रा अेक घर में वासदो लावण सारू गी परी । वासदी जगामग चेतन व्हियोड़ौ हौ । पाड़ौसण घालण नै तौ घाल दियौ पण राजकंवरी सूं अेक कौल भूडौ करयौ । राजकंवरी बचनां बंधगी के वा राजकंवर री जात पूछ उणनै बतावैला । कौल वाचा लियां पाड़ौसण वासदी घाल दियौ ।

पाछौ चूल्हौ चेतन व्हियां राजकंवरी नै नेहचौ व्हियौ । मन में सांयत वापरी ।

रात रा राजकंवर नै जात बूझी तौ वौ झिझकनै विगत

सूं वैठी व्हियी । हळफळाया होय पाछौ सवाल करयौ के चूल्हा में वासदी तौ नीं बुझियौ ।

राजकंवरी डरती डरती सगळी वात बताय दी । हाथ जोड़ भूल कवूल करी । पण राजकंवर नै आप री जात तौ बता-वणी ई पड़ैला ।

राजकंवरी नै इण विध वाद करतां देख नाग-राजकंवर रौ मूंडौ काळौ धाक पड़ग्यौ । वौ कह्यौ — राजकंवरी, वासदी वाळी चूक व्ही सौ व्ही, अबै जात पूछणा रौ हठ मत कर । आखी ऊमर पिछतावणौ पड़ैला ।

राजकंवरी हठ छोडै तौ पाड़ोसण मूंडागै भूठी पड़ै । जात पूछण अर बतावण में अैड़ी कांई चोज री बात । जद राजकंवरी किणी भाव नीं मांनी तौ राजकंवर टाळम-टोळ करतां कह्यौ के तड़कै जात बतावैला । वौ सोच्यौ के बात रेजलै पड़ै तौ सावळ । कदास राजकंवरी वाद छोड दे ।

पण राजकंवरी तौ हठ छोडयौ ई नीं । तद राजकंवर कायौ होय कह्यौ के वा अेक सरवर तांई साथै चालै तौ जात बतावै ।

राजकंवरी तौ इण बात सारू नरक में ई जावण नै त्यार ही । वा कैतां ई साथै वहीर व्हैगी ।

नाग-राजकंवर उण इज सरवर आयौ जठै वौ बांमण री आली धोती में चापळनै वैठौ हौ । पाळ चढ़तां वौ वळै कह्यौ: राजकंवरी, मांन जा । वाद मत कर । घणौ पिछतावैला ।

राजकंवरी कह्यौ के पिछतांणौ कवूल पण वा आपरा कौल सूं किणी भाव नीं डिगै ।

तद नाग-राजकंवर सरवर रै मांय वड़चौ । गोडा तणौ पांणी आयौ जणा वळै कह्यौ — मांन जा, राजकंवरी मांन जा। म्हारी जात मत बूझ, नींतर पिछतावैला ।

पण राजकंवरी तौ वाद आगै मोची ई नीं खायौ । नीं मांनी सौ नीं मांनी ।

नाग-राजकंवर कड़ियां सूधौ पांणी आयौ जणा वळै कह्यौ। छाती तणौ पांणी आयौ तद वळै अणूंतौ खराय कह्यौ । पण राजकंवरी तौ आपरौ हठ छोड्यौ ई नीं ।

घांटी तणौ पांणी आयौ तद नाग-राजकंवर वळै खगाय कह्यौ — राजकंवरी, अबै ई मांन जा । हाल कीं नीं व्हियौ। थनै छेहली वार वकारूं, मांन जा ।

पण राजकंवरी रै माथै तौ वाद रौ भूत चढ़योड़ौ हौ। बोली — आप ई मांन जावौ । अबकी वाद पार घाल दौ तौ वळै कदै ई वाद नीं करूंला ।

तद राजकंवर टूंपीजता गळा सूं कह्यौ — इण पछै वाद करण रौ मौकौ ई नीं आवैला ।

आ बात कैय नै वळै पांणी रै मांय वड़ग्यौ । केसां माथा कर पांणी फिरतां ई वौ पाछौ काळिंदर वणग्यौ। जोर सूं दो तीन फुणकारा करनै राजकंवरी सांम्ही जोयौ ।

राजकंवरी उण जंगी नाग नै देखतां ई धंलीजनै मरगी। नाग-राजकंवर रै कह्या मुजब साचांणी वळै वाद करण रौ मौकौ नीं मिळचौ। राजमैल री रसोई वासदी अंगै ई वुझग्यौ। राजकंवरी सरवर री तीर उठै ई प्रांण मुगत व्हैगी । राजकंवर पाछौ काळिंदर रै खोळियै आय मिनखा जूंण री सै बातां विसरग्यौ।

सूळां हंदी सेज

बत्तीस गांवां री ग्रेक ठाकर चौतीस लखणां री सिरायत हौ । ठिकांणा री रया उणरी जबराई आगै कळकळै चढ़गी तौ ई ठाया रौ खूंटौ छोडनै जावै तौ ई कठै ! उण ठिकांणै जीवण री दाभ मीत सूं ई बत्ती ही । मरियां बिना दुख, संताप अर विखा री फंद कटण री कीं सरतन नीं हौ । रावळा रै सिवाय किणी गवाड़ी के घर नीं तौ धीणौ धारण री छूट ही अर नीं वार-तिवार घी-गुळ में जीमण करण री मेहर । कोई धोळा अर मटिया पोत्या रै सिवाय दूजौ सुरंगौ पोत्यौ बांध लेतौ तौ इक्कीस जूतां रौ डंड । मूंछ्यां रै वट रा इग्यारै जूता । चौवा री पगरखी रा तैतीस । छिणगा रा सतरै अर फड़का री धोती रा तेईस । घणकरौ डंड जूतां रै पांण ई सलट जातौ । बात बात में जूता अर पावंडै पावंडै जरबा । जूतौ ई उण ठिकांणै सिरै कांनून अर जूतौ ई सिरै न्याव हौ ।

गढ़-कोट रै जूंना ढमढ़ेरां अर भिरोखां रै सिवाय ठिकांणा रा किणी गांव में धोळौ घर नीं हौ । कोई भूल सूं ई घोड़ा-घोड़ी बपराय लेतौ तौ नौ दिनां तांई सिरै बजार गधा माथै उणरी सवारी निकळती ।

ठाकर कांई हौ, जम रौ ई परतख अवतार । ठाकर रा

नांव सूं सूती रया रा सपना में ई थरणा कांपता । छुटभाई गनायत अर सिरदारां माथै ई ठाकर री अंड़ो ई सुभ निजर ही । बापड़ी रया मांय री मांय धुकती । धूंआ री रेसौ ई बारै दीस जातौ तौ खैर नीं ही । अैड़ा टणकेल सिरायतां सारू ई औ औखांणौ वण्यौ के लांठां रौ डोकौ ई डांग फाड़ै ।

बांटका माथै रातौ गाभौ ई ओढ़योड़ौ दीस जावै तौ ठाकर रा पग मतै ई उण कांनी मुड़ जावै, अैड़ी लोगां री अंदरूणी भावना ही, पण आ भावना होठां माथै कदै ई नीं आई। अर यूं भगवांन री महर सूं ठाकर वास्तै रूपाळी लुगायां री तोटौ ई कांई हौ । धणी अर माईतां विचै ठिकांणै रै गांवां री लुगायां माथै ठाकर रौ हक वत्तौ हौ । अर नीं आपरा इण हक नै जतावण सारू ठाकर कीं कोताई राखतौ । पीढ़ी दर पीढ़ी सूं चालती आई अंदाता री उण अणूंती टणकाई नै कदैई कोई ओड़ौ नीं दियौ । तिण सूं टणकाई तर तर आकासां चढ़ती गी ।

उण ठिकांणै अळगा-नैड़ा छुट-भाई री अेक थाकल गवाड़ी ही । गवाड़ी रौ सिरदार तौ वत्तीसवौ वरस उतरतां ई ठिकांणा रै अेक जुद्ध में रणखेत रह्यौ । लारै विधवा रजपूतांणी अर अेक रूपाळी किन्या छोड अमरापुर सिधायग्यौ । विधवा रजपूतांणी ठाकर री लगौलग खोड़ीलायां सूं जूंझती जूंझती कीकर अेका-अेक वेटी नै जवांन करी, इणरी ख्यात सुणण वाळा रै कांनां कदास आंसू वहण लाग जावै ।

रूप हजारूं विखा अर फोड़ा आपरै साथै लेय तौ जलमै,

पण भुगतणो जवांनी में पड़ै । रूप रौ जित्तो मेळ जवांनी सूं है, उत्तो किणी ऊमर सूं कोनीं । जवांनी जांणै रूप री पांखां ! अैड़ी पांखां, जकी अेकण ठौड़ ऊभा रूप नै कांनी कांनी उडावती इज रैवै !

विधवा रजपूतांणी री उण बेटी नै सोळवौ बरस कांई लागौ, जांणै विरमाजी रौ सिरजण सुक्यारथ व्हियौ । वैड़ा रूप नै जोवण सारू, साचांणी दो आंख्यां री ठौड़ हजार व्है तौ ई थोड़ी । दो आंख्यां सूं तौ फगत उण रूप री झबकौ ई पड़तौ ।

अेक दिन डावड़ियां ठाकर रै सांम्ही हाथ जोड़ उण रूप रा घणा घणा बखांण करचा । कह्यौ के इत्ता दिन रावळै रूप री जित्ती बातां-विगतां सुणी वै सब झूठी ही । आं बाईसा रै आगै तौ दूजी सै रूपाळी लुगायां अड़वा व्है ज्यूं लागै ।

ठिकांणै री डावड़ियां इण बात नै आछी तरै जांणती के ठाकरसा गनौ-कडूंबौ नीं टाळै । मोटा मिनख आं छोटी छोटी मरजादावां माथै घणौ लांबौ-चौड़ौ विचार नीं करै । अै तौ छोटा मिनखां री छोटी बातां है ।

सोना रा प्याला में केसर री जात चौबारा री दारू चांदी रा बाजोट माथै पड़चौ हो । अेक मूंडै लाग्योड़ी रूपाळी डावड़ी मेंहदी रच्या हाथ सूं प्यालौ धकै करती बोली—अंदाता, इण दारू साथै तौ उण रूप रौ इज मेळ । इत्ता बरस तौ फगत कोरा भरम भरम में ई रह्या ।

मद भरी आंख्यां री मीट छळकता दारू में तिरण लागी ।

ठाकरसा नै अैड़ी लखायी जांणै उण रूप रा वखांण सूण कुदौ-खुद दारू नै ई नसौ चढ़ग्यौ । दारू री छाक रै सागै डावड़ी रै होठां पळकती मुळक नै पीवता ठाकरसा कैवण लागा — इण नसा रै साथै थारै रूप री मेळ ई कम नीं है, पण...!

डावड़ी विचाळै ई बोली — नीं अंदाता, इण वात में पण-वण कीं कोनीं । आपरी सुभ-निजर उण रूप माथै नीं पड़ी जित्तै आप म्हांरी थोड़ी-घणी पूछ करौ । पछै तौ म्हांनै आपरा दरसण ई दूभर व्है जावैला ।

हाथ-बसू देह बिना फगत रूप रा कोरा वखांण कांई गरज सारै । ठाकरसा नै थोड़ी झळकी आयगी । डावड़ी नै आडै हाथां लेवता बोल्या — कोरा-मोरा वखांण सूं म्हनै की तल्लौ-मल्लौ नीं । मेड़ी चाढ़ सवाद चखावै तौ जांणूं ।

डावड़ी डरतां डरतां बोली — कडूंबा रा लोग कड़मड़ कड़मड़ नीं करै औ जिम्मौ आपरौ । मालण नै आदेस फर-माय सेजां फूल मंगावण री महर करावौ, म्हैं जिण कांम में हाथ घालूं वौ तौ पार पड़ै इज ।

डावड़ी री गुमेज साव साचौ हौ, पण औ कांम उणरां पार नीं पड़्यौ । वात सुणतां ई विधवा रजपूतांणी नागी तरवार लेय ताचकी । बेटी आडी नीं फिरती तौ गळौ सूंत्योड़ौ इज हौ । लालरिया लेय नीठ प्रांण बचाया । डावड़ी रै जावतां ई बेटी बोली — मां, अबै अठै ढबणौ आछौ कोनीं । समंदर में रैय मगरमछ सूं बैर नीं खटै । इण जम सूं बचनै अगां कठै जावांला ।

मां आंसुवां रै डूंजौ लगावती व्है ज्यूं बोली — बेटी,

म्हैं खुद ई आ बात तेवड़ी हूं । आसरौ तौ कठै ई नीं है ,
पण औ ठायौ तौ छोडणौ ई पड़ैला । थारा रूप आगै विखा
अर जोखा री वार तौ चालैला , पण थारा भाग थारै साथै ।

सौ दोनूं अभ्यागत मां-बेटियां आधी ढळियां अमावस रै काळै-बोळै अंधारै पीढ़ियां रौ ठायौ छोड ऊजड़ ई वहीर व्ही सौ तीन दिन अर तीन रात ऊजड़ ई चालती री । नीं कीं खायौ अर नीं कीं पीयौ ।

हालतां हालतां ऊजड़ निंदरोही पार कर्यां ओेक लांठौ नगर आयौ । पण साव सूनौ । हाट-बजार सै खुला , पण मिनख री जात ई नीं । अणगिण हवेलियां , मैल-माळिया । पण निपट अडोळा अर खाली । घर घर चूल्हां में वासदी सिळगै , पण मिनख रौ वास्तौ ई नीं । पंरिडा भर्या पण पीवण वाळौ कोई निगै नीं आयौ । बारणै बारणै गुलाब रा फूल महकै । पण जीव रा नांव माथै ओेक ई फूंदी के मेण-माखी नीं दीसी । आ कैड़ी माया-नगरी । मां-बेटियां रै इचरज रौ पार नीं रह्यौ ।

फिरतां फिरतां वै ओेक लांठा राज-मैल में वड़गी । सोना री नवखंडियौ मैल । चारूंमेर अनाप लांठौ बगेचौ । भांत भांत रा फूल । भांत भांत रा रूंख । उण जमपुरी नै छोड कैड़ी माया नगरी में फंसग्या । वन री सून्याड़ तौ सुहावणी लागै , पण नगर री सून्याड़ तौ खाऊं खाऊं करै । मिनखां रै बिना औ अणगिण सूनी हवेलियां अर औ हाट-बजार खावण नै दौड़ै । उण ठिकांणै मिनखां रा डर सूं रात रा न्हावणौ पड़्यौ । अठै मिनखां बिना वस्ती अणूंती डरावणी लागै ।

फिरयां - घिरयां कोई न कोई तौ मांनखौ मिळैला, आ सोच दोनूं मां - बेट्यां किणी घर के हवेली रौ खुणौ बिना भाळ्यां नीं छोड्यौ । राज - मैल रौ ठांव ठांव हेर न्हाकियौ, पण उठै कोई व्है तौ लाधै । फगत ग्रेक भंवारौ बाकी बच्यौ । वै हीमत करनै मांय वड़ी । उठै ग्रेक अजब ई नजारौ निगै आयौ । सूळां री सेज माथै ग्रेक सरूपवांन मोटयार सूतौ । उणरा रूं रूं में सूळां खुबियोड़ी । आंख्यां रै डोळां में सूळां । कांनां रै मांय सूळां । जीभ रै माथै सूळां । ऊंडी गडियोड़ी । तीखो - तच्च ।

जोग री बात के मां तौ सूळां गडिया उण पूतळा नै देखतां ई तड़ाच खाय हेटै पड़गी । पड़तां ई उणरौ सांस निकळग्यौ । दुख्यारी बेटी रै दुखां री हाल सेड़ी नीं आयी दीसैं । इत्ती लांठी दुनियां में ग्रेकाग्रेक मां रौ ई आसरौ हौ सौ टळग्यौ । इण सूनी मायानगरी में वा कठै दाग देवै, कीकर दाग देवै । पाखती रा भंवारा में उंचाय लेयगी । उठै सूखा फूल ई फूल आंगणै पाथरयोड़ा हा । मां नै फूलां माथै सुवाण दी ।

पाछी सूळां वाळा भंवारा में आई । आंख्यां पूंछ मोट - चार रा डील सूं सूळां काढ़ण बैठगी । पछै नित री ओ इज नेम धार लियौ । आखा दिन में दस सूळां नीठ काढ़ीजती । दस सूळां काढ़यां बिना नीं पांणी पीवती अर नीं फळ - फूल खावती । अस्टपौर ग्रेकण ठौड़ मीट गडावणा सूं उणरी आंख्यां सूझगी । आंगळियां रा पेरवा वींधीजग्या । लोई रिसण लागौ । जीभ वींधीजगी । मोटयार रै किणी भांत री पीड़ नीं व्है,

इण वास्तै जीभ फेर फेर सूळां गाळती ।

करतां करतां मोटयार री पगथळियां सूं लेय गळा तांई री अेकी-अेक सूळां निकळगो । अेक दिन वा सूळां री नेम पाळनै बगीचा में आई तौ मालण री बेटी चंपा रै थांणै पांणी पावती दीसी । वा जलम री अभ्यागत किन्या उणनै देख अणूंती राजी व्ही । वंतळ करण सारू कोई साथण तौ मिळी ।

मालण री बेटी बतायौ के वा आये साल चौमासा रै दिनां बगेचौ पावण सारू आवै । चौमासा री झड़ लागतां ई बगेचौ सूखण मंडै । बाकी आखै बरस लीलौ-चैर रैवै ।

घणौ पूछ्यौ तौ मालण री छोरी बतायौ के अेक दैंत-राज इण नगरी री आ दुरगत कीवी । बारै नै बारै चौईस कोसां तांई जीव नांव बाकी नीं छोडयौ, बगेचा री रुखाळी सारू फगत उणनै बगसी । राजाजी धुरा-धुर नै मार डकारग्यौ । राजकंवर रौ आज दिन तांई कीं पतौ नीं पड़्यौ के वांरौ कांई व्हियौ अर कांई नीं व्हियौ ।

वा भोळी धीवड़ी मालण री बेटी सूं कीं चोज नीं राख्यौ । अेक दिन मालण री बेटी पूछ्यौ के उणरी आंख्यां इत्ती सूज्योड़ी क्यूं अर उणरी आंगळियां अर जीभ सूं लोई क्यूं रिसै । तद वा भंवारा में सूळां री सेज सूता सरूपवांन मोटयार रै डील सूं नित दस सूळां काढ़ण रौ नेम ई बताय दियौ । सुण्यां मालण री बेटी नै अणूंतौ अचूंभौ व्हियौ ।

जोग फळै जद किणी नै बूझनै नीं फळै । सौ अेक दिन समाजोग री बात अैड़ी बणी के वा अभ्यागत धीवड़ी सूळां काढ़ण रौ नेम पूरण करयां पछै बगेचा में आय धोब माथै

बैठी । केई रातां रौ ओजगौ अर थाकेलौ हौ । डील रौ सांधी-सांधौ दूखण आयौ तौ वा थोड़ी आडी व्हैगी । अर आडी व्हैतां ईं उणनैं नींद आयगी । वा उण दिन पैली वार राजमैल में आयां पछै आंगणै के ध्रोब माथै सूती ही । इत्ता दिन खुद तीखी सूळां माथै सूवती । उण सरूपवांन मोटचार री हालत देख्यां सूळां रौ बिछावणौ छोड किणी दूजी ठौड़ सूवण रौ मन ई नीं व्हियौ । इण वास्तै पैली वार कंवळी ध्रोब माथै सूवतां ईं उणनै अगाढ़ ऊंघ आयगी । मीठौ सपनौ आयौ । चांद री किरणां रै हींडै हींडण लागी । खासी ताळ तांईं हींडती री । अणछक किरणां री काची सड़ियां तूटी सौ वा अेक सूळां भरया बेरा रै मांय थरकीजगी । तौ ई उणरी आंख नीं खुली ।

मालण री बेटी उणनैं सूतोड़ी देख, पाधरी भंवारा में गी । बात तौ साची । अेक इदक रूपाळौ मोटचार सूळां माथै सूतौ हौ । डील सूं आखी सूळां तौ काढ़चोड़ी, पण दोनूं आंख्यां में फगत दोय सूळां खुबियोड़ी । वा सुथराई सूं दोनूं सूळां काढ़ली । दूजोड़ी सूळ निकळतां ईं वौ सरूपवांन मोटचार उबासी खाय बैठौ व्हियौ । बोल्यौ — नींद तौ जबरी आई ।

तद मालण री बेटी उणनैं आखी गांगरत मांडनै बताई के वा निरणी-तिरसी कीकर आपरी जीभ सूं नित-हमेस दस सूळां काढ़ती । आखौ बरस बीतग्यौ औ नेम निभावतां नै ।

वौ मोटचार उण देस रौ राजकंवर हौ । दैतराज आखा नगर रौ पापौ काट, राजा-रांणियां नै डकार राजकंवर री आ हालत करी । सूळां नीं निकळियां वौ मरियोड़ौ रैवैला । सूळां निकळतां ईं पाछौ जीव वावड़ जावैला । राजकंवर रै जीवतौ

व्हैतां ई नगर रा सै वासी जीवता व्है जावैला ।

देंतराज रौ सराप साव साचौ निकळियौ । उणरै जीवतौ व्हैतां ई नगर में पैला-जैड़ी हलचल मचगी । हाट-बजारां मौदा तुलण लागा । घर घर में मिनखां री बोली सुणीजण लागी ।

राजकंवर मालण री बेटी रौ अणूंतौ गुण मांन्यौ । उणनै आपरी घण मांनेतण रांणी बणाई । थाट सूं पाछौ राज रौ कांम-काज संभाळियौ । रांणी री सला बिना राजा अेक पावंडौ ई नीं भरतौ ।

मालण री बेटी तौ साची वात जांणती ही के सूळां काढ़ण रौ नेम कुण निभायौ अर कुण नीं निभायौ । जे किणी दिन पोल खुलगी तौ सै थाट खुस जावैला । राजा झूठ रौ डंड देवैला । इण वास्तै वा अभ्यागत धीवड़ी सूं मांय री मांय भुटियोड़ी रैंवती । उण सूं खोड़ीलायां करती । दुख देवती । कीकर ई करनै मरावण रा सराजांम सोचती ।

राजा नै कैय उणनै राज री गायां चरावण रौ कांम सूंपाय दियौ । पूजती रोटचां ई नीं देवती । पण भंवारा में मरयोड़ी सूती मां रौ जीव बेटी रै मांय हौ । वा गाय बणनै कांकड़ री गायां भेळी भिळ जाती । बेटी नै मिसरी री जात मीठौ दूध पाय देती ।

मालण री बेटी देखती के पूजती रोटचां नीं मिळै तौ ई वा थाकै कोनीं । सोय करतां करतां रांणी नै गाय रौ पतौ पड़गयौ । कीकर ई छळ-बळ सूं गाय नै मरवाय दी । पण मा रौ जीव तौ बेटी रै ओळूं-दोळूं भंवतौ हौ । वा बेटी सारू

बोरड़ी बण गी । बेटी मीठा मीठा पेमलो बोर खावै अर गायां री अंवेर करै । अस्टपोर मां नै याद करै ।

अेक दिन संजोग री बात अैड़ी वणी के संवै ई तौ वा अभ्यागत धीवड़ी धंदूणी देय बोर झाड़ती ही के सिकार जावतो राजा गळाकर नीसरियौ । उणरी निजर बोर झाड़ण वाळी रै उणियारा माथै पड़ी । माडै ई घोड़ौ ढावणौ पड़्यौ । किणी लुगाई रौ अैड़ौ ई रूप व्है सकै कांई ! राजा नै अेकाअेक आपरी आंख्यां माथै भरोसौ नीं व्हियौ । कठै ई इंदर लोक री अपछरा तौ नीं अवतरी । बोर झाड़तो कित्ती रूपाळी लागै ।

राजा घोड़ा सूं उतर्‌यौ । पूछ्यौ के वा कुण है अर अठै कांकड़ में कांई करै । तद वा ठेट सूं ही जकी वात मांडनै बताय दी । मां रै मरणा री बात, सूळां काढ़ण री वात । अबै रांणीजी रै हुकम सूं गायां चारै ।

राजा नै साची बात रौ पतौ पड़्यौ तौ वौ अणूंतौ राजी व्हियौ । गायां चारण वाळी नै साथै विठांण पाधरौ राजमैल आयौ । आकरा सुर में पूछतां ईं मालण री बेटी ई साची बात बताय दी ।

साची बात रौ पतौ पड़तां ईं मालण री बेटी नै गायां चरावण रौ कांम संभळाय दियौ । अर गायां चरावण वाळी रै साथै धूंमधांम सूं व्याव कर्‌यौ । मेंहदी लाग्या हाथ रौ हथळेवौ जुड़तां ईं रांणी री मां पाछी जीवती व्हैगी ।

पछै अजेज बत्तीस गांवां रै उण चौतोस लखणा ठाकर नै कासिद भेज तेड़ायौ ! राजाजी तौ खार खायोड़ा हा इज । ठाकर नै जीवतौ भाटां में चुणावण रौ आदेस व्हियौ । ठिकांणा

री जब्ती व्हैगी ।

रांणी मां रौ अणूंतौ आदर करती । तांनूं जणा बरसां लग सुख-चैन सूं राज करचौ । आणंद रा ढोल घुराया । वांरा राज में अन्याई अर रुळियार ठाकर-ठेटरां रौ जीवणौ हरांम व्हैगौ । सिरै-आंम खुलै चोवटै हजार जूतां रा फटीड़ उडाय सूळी रौ डंड । राजाजी रौ फरमांण सुणतां ईं ठाकरां री सै करड़ावण धुपगी अर वांरी टणकाई मिटगी । राज री लुगायां नित परभात री वेळा वां दोनूं मां-बेटियां रौ नांव सिवरण लागी ।



रंक बणयौ राजा

मांनण वाळां वास्तै आ वात काले री अर नीं
मांनण वाळां वास्तै आ वात वरसां जूंनी ।
तौ रांमजी भला दिन दे — अेक हौ मिनख ।

तिण रा नांव तीन — रंक, चंडाळ अर कमीण ! वस्ती रा दूजा मिनख उणरी छीयां भेंटयां सोना री छांटी लेय संपाड़ौ करता । जिणरै सांस लेवणा सूं हवा सूगली व्हैती । खोजां माथै पग पड़णा सूं देह भिस्ट व्है जाती । लोग अळगा सूं ई उणनै धुरकारता ।

पण वौ रंक हौ साव ऊंधा माथा री । वरसां में के जुगां में वैड़ा ऊंधा माथा रा इक्का-दुक्का जलमै । समझ वापरतां ई ऊंधी वातां सोचण लागौ के मिनख अैड़ी छूत तौ जिनावरां सूं ई नीं पाळै ! दही, दूध री जांवणियां में मिनकियां अर गिंडक मूंडा घालै तौ ई मिनख स्वाद सूं खावै । किणी रै घरै जलम लेवणौ किसी सारै री वात । फगत जलम लेवणा रै कारण आखौ जमारौ विटळग्यौ । कांई दूजा मिनखां री गळाई सूरज, चांद रा उजास में उणरौ कीं सीर नीं । फगत अमावस रौ काळौ-बोळौ अंधारौ ई पांती आयौ । मिनखां रौ मळ तौ माथै आय बंध्यौ, पण फूल अर हरियाळी में उणरौ अंगै ई बंट नीं । औ भेद क्यूं ? औ आंतरौ क्यूं ?

निनख-जमारै आय अैड़ा जीवणा त्रिचै तौ मरणौ हजार गुणौ वत्तो, आ ऊंची वात उणरा मन में आयां पछै अेक पलक ई पीढ़ियां रा गांव में उण रंक सूं ढबणी नीं आयौ। आधी ढळियां वौ वडेरां रौ ठायौ छोड पग लेग्या उठीनै ई वहीर व्हैगी ! ऊगैला, कदै ई न कदै ई तौ उण वास्तै ई सूरज ऊगैला।

दूजै दिन हालतां हालतां मारग में अेक बांटका माथै सुगन चिड़ी वैठी देखी तौ वौ रंक उणी ठौड़ ढबग्यौ। सुगन देवै तौ आगै वधै। पण रंक नै दियोड़ा सुगन कीकर भरै पड़ैला। सुगन चिड़ी सात दिनां तांई उणनै सुगन नीं दिया। वौ निरणी-तिरसौ उठै ई ऊभौ रह्यौ। आठवै दिन माळा में विचियां री कुरळावणौ सुण्यौ तौ वौ मलापनै खेजड़ी माथै चढ़-ग्यौ। ठौड़ ठौड़ कांटां सूं सुरड़ीजग्यौ तौ ई वौ यारै नीं करी। कांई देखै अेक गोरियावर सरप सुगन चिड़ी रा बिचियां नै गिटण सारू फुण फाड़्यौ। वौ रंक तौ पछै कीं आगौ-लारौ नीं सोच्यौ। सरप रौ फुण मूठी में सेंठौ झाल खेजड़ी रा डाळा माथै तीन चार वळा फटकार्‌यौ। सरप रो सांकळ खोळी व्हैगी। ठौड़ ठौड़ सूं छुलग्यौ। पछै मर्‌यौ जांण हेटै वगाय दियौ। विचियां नै पंपोळ, थावस देय हेटै उतर्‌यौ।

विचिया साव भोळा अर अवूझ हा। प्रांण बचावण वाळा नै नांमी सुगन दे दिया। सुगन मिळतां ई वौ तौ पछै भर-णाटै धकै हालियौ।

सुगन चिड़ी माळै आई तौ बिचिया उणनै सगळी बात वताई। विचियां रा प्रांण बचणा सूं वा राजी तौ अणूंती

व्हो । पण सुगनां री वात सुण आळोच में पड़गो । भोळर में दियोड़ा सुगन ई कूड़ा पड़ग्या तौ उणरी सुगनचिड़ी नांव झूठौ पड़ जावैला । अबै कीकर ई व्हो सुगन तौ भरै पटकणा है इज ।

पछै चिंचियां सूं सावळ मिळ-भेंट, भुळावण देय वा रंक रै लारै उडी । उणनै देखतां ईं वा अेक लुगाई रौ रूप धारण कर लियौ । जांणै इंदर लोक री अपछरा । सोनल केस । रूप रौ पळकौ । देह जांणै गुलाब रै फूलां संचै ढळी ।

रंक रै पाखती आय पूछ्यौ के वौ सिध जावै ।

पडूत्तर मिळियौ के सूरज रा उजास में पांती लेवण सारू । तद वा कह्यौ — म्हैं ई साथै चालूं ।

रंक मुळकनै कह्यौ — आप साथै पधारौ तौ म्हैं समूळौ सूरज हाथै लागै तौ ई उणरी आस नीं करूं ।

दोनूं ईं साथै साथै चालण लागा । मन मिळग्यौ तौ अेक पींपळी रै ओळूं-दोळूं फेरा खाय परणीजग्या ।

हालतां हालतां मारग में अेक जंगी वन आयौ । अणछक वांनै सिंघणी री जोर सूं अरड़ावणी सुणीजियौ । रंक कह्यौ — सिंघणी री देह में अवस कीं न कीं पीड़ है । इण अरड़ावणा में दरद री सुर लखावै ।

सुगनचिड़ी पूछ्यौ के उणनै इण वात री कांई पतौ पड़्यौ । तद रंक बोल्यौ — हंसणा री म्यांनौ बतावण मे तौ चूक व्है सकै, पण रोवणा री जात पिछांणणा में कदै ई चूक नीं व्है । म्हारी तौ सगळी जूंण ई विखा में पळी ।

रंक री वात साव साची निकळी । वै अरड़ावणा री

सोय उठीनै ई वहीर व्हिया । अेक सिंघणी जमीं माथै हत्यळ पटकै नै अरड़ावै । मिनखां नै देख्या तौ ई वा ऊठी कोनीं । रंक पाखती गियौ । पग संभाळियौ । थोर रौ कांटौ ऊंडौ वैठोड़ौ । सिंघणी रा आखा डील में जांणै लाय लाय ऊठगी । वौ गोडा माथै सिंघणी रौ पग धर सुथराई सूं कांटौ काढ़ लियौ । अैल ई नीं आवण दी । कांटौ निकळतां ईं सिंघणी रा डील में ठाडोळाई वापरगी । आपै ई अरड़ावणौ बंद व्हैगौ । मुळकती थकी कैवण लागी — थें चलायनै सांप्रत मौत रै गोडै आया, थांरै हीयै दया रौ पार नीं । थें आय कांटौ नीं काढ़ता तौ म्हैं अठै ई रिब रिबनै मर जाती । थांरौ औ औसांण कीकर उतारूं ।

रंक कह्यौ — इण में औसांण री कांई बात । कांनां में अरड़ावणा रौ भणकारौ पड़्यां, कीकर टळनै जावणौ आवै । फेर सिंघ री जात कद कद अरड़ावै ।

रंक अर उणरी जोड़ायत घणौ ई ना दियौ पण सिंघणी नीं मांनी । आपरै अेक विचिया नै साथै करचौ जद ई उणनै पूरण सांयत मिळी । सिंघणी रौ विच्चियौ ई मोट्यार रौ रूप धार वां दोनां रै सागै व्हैगौ ।

तीनूं जणा साथै साथै मारग चालता हा । रंक नै सागेड़ी तिरस लागी । थोड़ी भांय जावतां ईं अेक वावड़ी आई । दोनूं जणा तौ मारग माथै ई ऊभा रह्या । वौ वावड़ी में वड़ियौ । उठै कांई रचना देखी के अेक सरप मींडका रौ गपळकौ करण सारू तकै ।

रंक देख्यौ के अवारूं देखतां देखतां ठाडा पांणी री जिना-

वर सरप रा पेट में जाय प्रांण मुगत व्है जावैला । जीवनौ थकौ तौ पांणी में छपळका मारै । मच्छरां करै । अे अवाल मौत रै गळै उतर जावैला । वौ तौ वकै कीं लांबौ-चौड़ौ विचार करियौ नीं । कटार सूं पींडी रौ मांस काट सांप रै सांम्ही वगायौ । सांप अेक ई गपळका में गिटग्यौ । भूख नीं मिटी तौ अेक लड़फौ वळै वगायौ । सांप तौ दूजा लड़फा में ई धापग्यौ । मुळकनै मोटयार सांम्ही जोयौ । बोल्यौ — सांप माथै दया करणियौ मिनख तौ आज ई मिळियौ ।

रंक बोल्यौ — मींडका रा प्रांण बचावण सारू माडै आ दया करणी पड़ी ।

अबै मींडका रौ ई डर मिटग्यौ हौ । टरर टरर करतौ कैवण लागौ — बापड़ा मींडका रै प्रांणां री कुण गिनरत करै ।

रंक कह्यौ — बावळा, प्रांण तौ सगळै जीवां रा अेक सरीसा व्है, कांई हाथी अर कांई डेडरौ ।

सरप अर मींडकौ दोनूं जणा उणरौ जांणै जित्तौ गुण मांन्यौ । पींडी सूं झरता लोई नै देख मींडकौ पांणी में फदाक मारी । अेक अैड़ी सिरै बूंटी लायौ के घिसनै लगावतां ई उणरौ घाव मिळग्यौ ।

बावड़ी रौ इमरत व्है जैड़ौ पांणी पीय जद रंक पाछौ पावड़िया चढ़ण लागौ तौ मींडकौ अर सरप दोनूं उणरै सागै सागै वहीर व्हिया । रंक पूछ्यौ तौ दोनूं जणा अेक ई बात बताई के औसांण उतारण सारू वै तौ साथै चालैला ई, किना ई बरजै तौ नीं मांनै ।

दोनूं ई मोटयार रा रूप धार उणरै साथै व्हैगा ।

पांचूं जणा में माहौमाह इत्तौ मेळ के सगळा ई अेक दूजा माथै जीव देवै । हालतां हालतां अेक लांठौ नगर आयौ । सगळा सला-सूत विचारनै उठै ढबग्या । सुगनचिड़ी रै सुगनां माथै सगळां नै ई अतूट भरोसौ हौ ।

सुगनचिड़ी कह्यौ तौ दूजै दिन रंक राज-दरबार में गियौ । राजाजी हीरा-मोती जड़्या सोना रा सिंघासण माथै बिराज्या हा ।

असेंधा मोटयार नै देख दीवांणजी उणरौ नांव-धांम पूछ्यौ तौ वौ ऊंधा माथा रौ रंक बेड़ा ई बेड़ा जबाब दिया । दीवांणजी पूछ्यौ के गांव किसौ । तद वौ कह्यौ — आखी धरती ।

पूछ्यौ — जात कांईं ?

जबाब दियौ — मिनख ।

अैड़ौ विलालौ मोटयार तौ सुणणा में ईं नीं आयौ । राजाजी जबाब सुण राजी व्हिया । आपरै पाखती बुलायौ । पूछ्यौ के वौ चाकरी करैला कांईं ।

रंक हांमळ भरी तद दीवांणजी पगार री बात पूछी । पगार रौ जबाब मिळतां ईं सगळां री आंख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़गी । भुज भुज रा लाख सूं कम पगार पोसावै कोनीं । दुनियां में अैड़ौ कोई कांम नीं, जकौ वौ नीं कर सकै ।

राजाजी सोच्यौ के सवा लाख रौ कांम करणिया ई लाख रिपियां री पगार मांग सकै । अेकर तूमार तौ जोवां ।

राजाजी तौ मूंडै मांगी पगार देवण सारू राजी व्हैगा । पण परधै रै गळै आ पगार किणी भाव उतरी कोनीं । पण राजाजी रै मांन्यां सगळां नै ई मन माडै मांनणौ पड़्यौ ।

बगीचा वाळी लांठी हवेली में पांचूं जणा आणंद सूं रैवण लागा। पण राज रा दूजा लोग मांय रा मांय रंक माथै भुटता हा। कदै ई वख लागै तौ हाथ बतावै। राज-खवास नै सावळ पाटी पढ़ाय उणरै लारै कर दियौ। कीकर ई करनै रंक नै पजावै तौ चैन मिळै।

नाई री घरवाळी हवेली में माथौ गूंथण सारू आई। सोनल वरणी रा सोनल केस देख उणरी तौ अकल चकरीजगी। नीं तौ आज पैली इण भांत रै रूप रा वखांण सुणणा में आया अर नीं अैड़ा सोनल केस देखणा में आया। गिरियां तणा सोनल केस, जांणै सूरज री किरणां री परजळती झूमकी। चांद री किरणां री चंवर।

सोना री कांघसी सूं नायण केस संवारचा। कांघसी रै दांतां में अटक्या केस भेळा करनै आपरी चीण तालकै करचा। घरै आय केसां नै धोय धोय उजाळिया।

सोनल रंग वळै वत्तौ भळकियौ। सिंझ्या रा खवास घरै आयौ तौ उणनै केस बताया। रूप रा वखांण करचा। नाई तौ अैड़ा ई मौका री ताख में हौ।

वौ राजाजी रै खास मूंडै लाग्यौ खवास हौ। मन में जचती ज्यूं खळकाय देतौ। विना व्याळू करचां ई पाछौ म्हालौ! राजाजी रै सांम्ही मूठी खोल कैवण लागौ—आं केसां री धणियांणी किणी दूजा सूं घरवास करै तौ आप राजा क्यूं बण्या। आ अपछरा तौ फगत राजा रै रंगमैलां में ई ओपै।

राजाजी उणरा मोर थापलनै कह्यौ—बात तौ थारी साव साची, पण आ अपछरा हाल म्हारी रांणी नीं है तौ नीं है।

कांई उपाव करां ।

नाई हाथ जोड़ कह्यौ — अंदाता री आदेस व्है तौ सूरज नै आभा सूं उखेड़ लाऊं, आ तौ बात ई कांई ! आपरै सोच कर्‌यां सूरज री उजास मगसौ नीं पड़ जावैला !

राजाजी अर नाई खासी ताळ तांई जुगत विचारता रह्या। राजाजी रै तौ कीं समझ बैठी नीं । खवास कैवतौ ज्यूं ई हांमळ भर लेता । सेवट लिलाड़ में सळ घाल खवास कह्यौ के भुज भुज रा लाख पधरावणिया नै मार्‌यां बिना आ सोनल अपछरा किणी भाव हाथै नीं आवैला । नीं चौड़ै डंड दियां बात बणै । छळ-बळ सूं घात री ऊंडी अटकळ लगावणी पड़ैला ।

अणछक खवास चुटकी बजावतां बोल्यौ — अंदाता, आपरैं तौ पाखती ऊभां ई अकल रा वतूळिया ऊठै । सूझग्यौ, नांमी उपाव सूझग्यौ ।

राजाजी कांन देय उणरौ उपाव सुण्यौ । सुणतां ई जचगी के जुगत भरै पड़ जावैला । खवास नै पांच मोहरां बगसीस में दी ।

दूजै दिन राजाजी दिन ऊगतां ई राज-दरबार में आया। थाट सूं राज-दरबार जम्योड़ौ हौ के अेक डावड़ी दौड़ी दौड़ी आई । हळफळाई होय रोवती रोवती बोली के रांणीजी री पेट अणूंतौ दूखै । कवूड़ा ज्यूं लुटै ।

राज-वेद कळाई रै डोरौ वांध नाड़ देखी तौ उणनै तुरत रोग रौ पतौ पड़ग्यौ । हाथ जोड़ अरज कीवी — अंदाता, आं मरोड़ां री फगत अेक इज औखद । खुद धंतर वेद दूजौ औखद नीं वताय सकै । सिंघणी री दूध गळै उतरतां ई जांणै मिस

करची ।

राज-वेद औखद बतायौ तौ सिरै व्हैला इज । पण सिंघणी रौ दूध लावणी कीकर आवै । कोई चार माथां रौ व्है नौ हांमळ भरै । सगळा मूंडौ ढेरनै ऊभग्या । राजाजी रीस रै पांण ऊभा व्हैगा । दांत पीसनै बोल्या — थें सगळा जणा म्हारी रांणी नै मारणी चावौ । कोई अेक जणौ हुंकारौ नीं भरयौ तौ सगळां नै तोप रै मूंडै कर दूंला ।

नाई खुणियां सूदा हाथ जोड़ नै कैवण लागौ — अंदाता सौ ई गुना माफी बगसावौ, भुज भुज रा लाख गटकावणिया ई जद मूंन धारयां ऊभा तौ म्हांरी कांई जिनांत । वांरै थकां दूजां री बारी ई कद आवै ।

रंक नै सिंघणी रा बोल याद आया । आज वां बोलां री मरम समझ में आयौ । राजाजी पूछ्यौ तौ वौ मुळकनै बोल्यौ: इण में पूछण री कांई बात । जकौ कांम कोई नीं कर सकै । म्हनै तौ वौ करणौ इज है । आप फरमावौ तौ सिंघणियां रै दूध सूं मूंणा भर दूं ।

राजाजी नाई रै सांम्ही देख्यौ अर नाई राजाजी रै सांम्ही देख आंख्यां ई आंख्यां में सांनी करी के आं फेंकां में कीं धरयौ नीं । दूध लावैला जद पतौ पड़ैला । राजाजी नै मन मार धीजौ करणौ पड़यौ ।

रंक तौ राज-दरबार सूं पाधरौ आपरी हवेली आयौ । सिंघ रै बिचिया वाळा मोट्यार रै सांम्ही देख बोल्यौ — भाईड़ा आज तौ अेक कावळ बात पजी, थनै ई निवेड़णी है ।

वौ कह्यौ — पछै म्हे किण दिन सारू हां ।

रंक रै मूंडा सूं आखी बात सुण सिंघ रै बिचिया वाळो मोट्यार मुळकियौ । कह्यौ—आ तौ साव नाकुछ बात है । आप कांई सोच करचौ । लायोड़ा दूध रौ वै भरोसौ करै के नीं करै । वन री सगळी सिंघणियां रौ झुंड रौ झुंड टोळ लाऊं । आप सांम्ही-सांम दूय लेजो ।

वौ तौ पछै लांबी-चौड़ी कीं बात करी नीं । सिंघणियां लावण सारू खाथौ खाथौ वहीर व्हैगौ । वन में जातां ईं वौ पाछौ सिंघ रौ रूप धारण कर लियौ । घड़ी दो घड़ी में अेक सौ अेक सिंघणियां भेळी कर राज दरबार सांम्ही मलापियौ । नगर रै पाखती जातां ईं अेकण सागै हौकारां गूंजण लागी सौ राज-दरबार तांई नीं ठमी । नगर में वौ कूकारोळौ अर खळवळ माची के जिणरी कोई मिसाल नीं । मौत रौ इण भांत खिलकौ तौ कदै ई सुणणा में नीं आयौ । लोगां रा धें छिलग्या । जिण में सिंघणियां किणी नै कीं हांण नीं पुगाई ।

जद सिंघणियां रौ टोळौ मलापतौ राज-दरबार में पूगौ तौ केई सूरमा भाला अर तरवारां समेत धैलीजनै हेटै गुड़ग्या । राजाजी नै जाफ आयगो । रांणियां अर डावड़ियां ही जठै ई वेचेतै होय गुड़गी ।

इत्ता में रंक आय सगळां नै धीजौ बंधायौ । सिंघणियां नै पंपोळ हौकारां भरती ढबाई । राजाजी नै छाबका देय उठाणिया । पूछ्यौ के सिंघणियां रौ दूध कित्तौ चाहीजै । गोवणिया आय जावै तौ फगत दुवारी करण री जेज ।

राजाजी नै नीठ धीजौ व्हियौ । अटकता अटकता बोल्या—सिंघणिया लावण रौ कुण कह्यौ । म्हैं तौ वांरै दूध री बात

करै ही ।

तद रंक कह्यौ के सेडावू दूध कदास वत्तौ गुणवांन व्है। कोरौ दूध लायां कोई भरोसौ करतौ अर नीं करतौ । इण वास्तै वौ तौ वेम जैड़ी वात इज नीं राखी । औखद साल्ह सै बातां रौ ध्यांन राखणौ पड़ै ।

पेट अर औखद रौ तौ मिस हौ । किणनै दूध चाहीजतौ । राजाजी लपेक दूध री सांनी करी तौ ई अेक ढुळ-ढुळती गोवणी भर दी । पछै सगळी सिंघणियां नै टोळ वन में लेयग्यौ ।

पाछौ राज-दरबार में आयौ तौ सगळां माथै दबदबौ छायगौ । औ कोई मिनख नीं अवस कोई अवतारी है । कुण मिनख रौ बंदौ इण भांत सिंघणियां नै टोळ लावै । अवतारी, औ तौ अवस् कोई अवतारी । देव-पुरख !

थोड़ा दिनां तांई तौ राजाजी अर खवास घात री वात नै अंगै ई भूलग्या । पण पछै वा री वा तळ-तळावण लागी । राजाजी नै हवेली वाळी अपछरा रा जागती आंख्यां सपना दीखण लागा । नींद उडगी । वा कीकर रंग मैल में आवै । सिंघणियां रै परचा सूं अैड़ी धस बैठी के सगळी परघै मांय री मांय डरण लागी । इणरी करामातां नै कुण पूगै । भुज भुज रा दस लाख लेवै तौ ई थोड़ा ।

राजाजी अस्टपौर नाई रै लायोड़ा वां सोनल केसां नै आपरै पाखती राखै । मौकौ मिळतां ई छांनै छांनै देखै । निसासां भरै । अेक दिन नाई कह्यौ — अंदाता, यूं हार मांन्यां कांम नीं चालै । रात रा अंधारा सूं सूरज हार मांनलै तौ

दिन कीकर ऊगै । आपरै धकै बापड़ौ कित्ताक दिन सजैला ।

राजाजी कह्यौ — मन में तौ म्हैं ई आ बात जांणूं, पण सिंघणियां री हौकारां याद आवतां ई नसां मांयलौ लोही पांणी वण जावै । औटाळ, क्यूं तौ थूं म्हनै अै सोनल केस वतावै अर क्यूं म्हनै हावूकौ सूझै । आ सोनल अपछरा म्हारै हिंगळू ढोलिये नीं रमै जित्तै जीवणा में धूळ । राज करणा में नौ चूल्हा री वांनी ।

नाई दोवड़ौ होय अरज कीवी — अंदाता, आपरी ठोकरां खायोड़ौ हूं, म्हारी अकल सिंघणियां रा टोळा सूं कम कोनीं । आपरी दया सूं म्हनै उपाव सूझ्यौ ।

उपाव सुण राजाजी रै जचगी के अवकी हवेली रौ धणी निस्चै मारचौ जावैला । उण नगर में अेक अनोखी ई नंदी ही । साव ऊभी भाखर सूं रड़कती, दो बांस ऊंडी । पांणी रा गरजता वेग आगै मंछियां रौ ई टिकाव दोरौ व्हैतौ । मिनख तौ गैंगाट सुणनै ई वगना व्है जावै । नंदी रौ वेग देख्यां भंवळ आवती । उणरै मांय गंटौ बीड़ियां हाडकियां रा नांव माथै फुतरकौ ई नीं लाधै । रांणीजी रै नवलखा हार रौ मिस वणाय पिंडां नै गंटौ बिड़ावौ । भुज भुज रा लाख यूं सोरै सास नीं पचै ।

वात राजाजी रै ई मांनणा में आयगी । दूजै दिन राजाजी वळै वेगौ दरवार वुलायौ । सोना रै सिंघासण विराज्या राजाजी रै चंवरां रा फटकारा उडता हा के अेक डावड़ी दौड़ती आई । समंचार दिया के घाटी वाळी नंदी में रांणीजी रौ नवलखौ हार खुलनै पड़ग्यौ । रांणीजी तौ तद सूं अंजळ रौ खण ले

लियौ । हार लाध्यां ईं खण तूटैला ।

राजाजी घणौ हठ झेल्यौ तौ हार नंदी रै मांय न्हाकणौ ई पड़्यौ । पांणी रै उण वेग सूं हार लावण रौ हुंकारौ कुण भरै । औ तौ मौत सूं ई डंयाळ मरण । मौत तौ अेकर प्रांण बगस दे, पण भंवरा खावती नंदी रै आंटां में झिलतां ई हाडकां रौ चूरौ चूरौ ।

सगळी परधै मूंडौ ढेरनै ऊभगी । राजाजी नै जांणै जित्ती रीस आई । दांत पीसता थका बोल्या — पावू रौ माल चरतां थां लोगां नै लाज को आवै नीं । म्हारी लाडल रांणी अंजळ री खण लियां सूती अर थें इण भांत मूंडौ ढेरयां ऊभा ।

नाई नै तौ वगत माथै जवाब देवणौ इज हौ । बोल्यौ : आपरै कांम मरां, म्हांरा अैड़ा तकदीर कठै ! पण भुज भुज रा लाख पधरावणिया ई जद बोला बोला ऊभा तौ पछै म्हां लोगां री बारी कद आवै । वै किणी कांम सूं नटै तौ म्हैं हांमळ भरां ।

रंक बिचाळै ई बोल्यौ —किणी कांम सारू नटणौ तौ म्हनै आवै ई नीं । फगत नंदी तांईं आवण जावण री जेज लागैला । आप हार लाध्योड़ौ ई समझौ ।

रंक नै डेडरा वाळी बात याद आई जद वौ बावड़ी में उणरा प्रांण बचाया हा । राजाजी सूं कौल करनै वौ पाछौ हवेली आयौ । डेडरा वाळा मोट्यार रै सांम्ही देखनै कह्यौ : भाईड़ा, बातड़ी कावळ पजी, थनै मदत करणी पड़ैला ।

वौ मोट्यार तौ औसांण चुकावण री वाट ई उडीकतौ हौ । सौ पूरी बात सुण्यां पैली ई हांमळ भर ली । पण बात

सुण्यां पछै मुळकतौ थकौ कैवण लागौ — औ तौ म्हारै वास्तै साव सैल कांम । आप बिरथा इत्तौ सोच करचौ ।

पछै वौ मोट्यार नंदी माथै गियौ । उठै जावतां ई मींडकौ वण टरर टरर करण लागौ । देखतां देखतां अणगिण डेडरा फदाकौ भरता भेळा व्हैगा । छपाक छपाक मांय कूदण लागा । नंदी नवलखौ हार कोई गिटणा सूं तौ री । हांकरतां हार री सोय करली ।

हार लेय पाछौ वळती वेळा वौ डेडरौ मोट्यार बणग्यौ ।

जद रंक राजाजी रा हाथ में नवलखौ हार झिलायौ तौ राजाजी रौ मूंडौ उतरग्यौ । रंक पूछ्यौ — कांई औ हार कोई दूजौ तौ नीं ।

राजाजी होळै-सीक कह्यौ — हार तौ वौ सागै इज है ।

'तद आप राजी नीं होय मोळा क्यूं पड़्या ।'

'नीं मोळौ कठै पड़्यौ, म्हैं तौ अणूंतौ राजी व्हियौ । इण वात रौ इचरज अवस व्हियौ के उण अबखी ठौड़ सूं आप औ हार लाया कीकर ?'

रंक कह्यौ — मिनख तेवड़ै तौ कोई कांम अबखौ कोनीं ।

राजाजी नै ई थोड़ौ-घणौ थावस मिळियौ के जद मिनख सारू कोई कांम दूभर कोनीं, तौ अेक दिन अवस वांरी तेवड़ियोड़ी मंसा ई अवस पूरण व्हैला ।

हार संभळाय रंक तौ आपरी हवेली आयग्यौ अर राजाजी सोनल केस हथाळी में लेय जोवण लागा । मन ई मन कह्यौ: आं केसां वाळी माथै हजार नवलखा हार वारनै निछावर कर दूं ।

रंक रै गियां पछै नाई आयौ । राजाजी मूंडौ उतार बोल्या —

नाईड़ा, वौ तौ हार वाळौ कांम ई पार घाल दियौ । अबै कांई करां । औ है तौ अवस कोई करामाती ।

थोड़ी ताळ ढबनै कैवण लागा — इण सोनळ अपछरा विना म्हारौ काळजौ धुकै । लागै के बळनै भसम व्है जावूंला । वळै कोई जुगत लड़ा । म्हनै तौ फगत थारौ भरोसौ है ।

नाई आंख्यां मींच थोड़ी ताळ तांई सोचतौ रह्यौ । अणछक फदाफद पग पटकतौ बोल्यौ — देखूं, अबकी कीकर बचै । घणा दिन व्हिया पोल री खावतां नै ।

आ जुगत तौ राजाजी रै ई अणूंती दाय आई । मांनणौ पड़्यौ के नाई है तौ अकलवांन । राजाजी री खायोड़ी ठोकरां ग्रैळी नीं गी ।

राजाजी रा बडेरा कई दिनां सूं सुरगलोक में साव निरणा-तिरसा बैठा । कोई हाथौ-हाथ पांणी री दीवड़ी अर भातौ देयनै आवै तौ राजाजी रौ फरज उतरै । बडेरा भूखा तड़फै तौ अठै राजाजी सूं खावणी नीं आवै । सुरग लोक में जावण री तरकीब नाई जांणतौ हौ । जावण वाळा री हीमत चाहीजै । सवा हाथ रौ काळजौ चाहीजै । इण तरकीब रै मिस रंक नै जीवतौ बाळण री तजबीज ही ।

राजाजी बुलायौ तौ रंक नै तुरत हाजर व्हैणौ पड़्यौ । राज-दरबार थटाथट जम्यौ हौ । परधै राजाजी रा पग खोळ खोळ पीवती ही ।

सुरग-लोक में हाथौ-हाथ भातौ पुगावण री वात सुण्यां पैला तौ रंक रौ माथौ ठणकियौ, पण दूजै ई छिण राजी व्हैगौ । औ फंद सरप काटैला ।

राजाजी सूं कोल-वाचा कर वौ पाधरौ आपरी हवेली आयौ । सरप वाळा मोट्यार रै उणियारा सांम्ही देख उणनै सुरग-लोक में भातौ पुगावण वाळी बात बताई ।

सगळी वात सुण सरप बोल्यौ—आपनै श्रै लोग मारण री तजवीज विचारै । म्हनै कीं न कीं माथौ लगावणौ पड़ैला ।

इत्ता में राजाजी रा आदमी लारै रा लारै बुलावण नै आया । सरप वाळौ मोट्यार तुरत रंक रौ रूप धार वांरै साथै व्हैगौ ।

रथौ खिड़कण सारू चन्नण री लकड़ियां रौ खिड़कौ लाग्योड़ौ हौ । चारूंमेर ओळूं दोळूं लोग अड़थड़ै । कीमिया रथी चुणण लागा । बत्तीस तेवड़ अर गंगाजळ री दीवड़ी रंक आपरै खोळा में लेय रथौ रै माथै बैठ्ग्यौ । रथौ चुणोजियां घी रा पींपा खळकाया । लांपौ देवतां ईं रथी धपळ धपळ सिळगीजण लागी । राजाजी अर खवास रै कह्या मुजब देखण वाळा लोग सोचण लागा के रथी रा धूंवां माथै बैठ रंक सुरगलोक भातौ लेय निस्चै पूग जावैला ।

पण वौ तौ रंक रै उणियारै मांय सरप बैठौ हौ । रथी सिळ-गतां ईं वौ सांप बणनै ऊंडौ विल रै मांय वड़नै पार निकळग्यौ ।

राजाजी अर नाई अणूंता राजी व्हिया के रंक तौ बळनै भसम व्हैगौ । सोनल अपछरा अबै तौ हाथ आई क आई । राजाजी खवास रा मोर थापलिया । इक्कीस मोहरां बगसीस में दी ।

अर उठी हवेली रै मांय जद सरप आप वाळौ रूप धरनै पाछौ आयौ तौ पांचूं जणा हंसण मंडिया सो खासी ताळ तांईं हंसता रह्या ।

करया साथै पाछौ नीं करै वौ खुद अकरमी । थोड़ा दिन आडा न्हाक नै अेक दिन रंक खड़ां खड़ां राज-दरबार में हाजर व्हियौ । राजाजी अर खवास री मूंडो अेक दम लच-कांणो पड़ग्यौ । कांई सोची अर कांई व्ही । किणी मिनख रै जीवता बचणा रौ इत्तौ संताप अर दुख आज पैली किणी मिनख नै नीं व्हियौ व्हैला । दूजा लोग तौ जांण्यौ के रंक रथी सूं निकळतां धूंवां माथै बैठ सुरग गियौ, पाछौ आयौ रैवैला । पण राजाजी अर खवास तौ आ सोचनै ई राजी व्हिया हा के वौ रथी रै मांय बळ नै भसम व्हैगौ । सोनल अपछरा थोड़ा दिनां तांई झुर-झुराय सेवट रंग-मैल में आय जावैला । भलां राजाजी री रांणी वणण सारू कुण अेड़ी लुगाई जकौ नटै । पण खड़ां खड़ां आवतौ औ रंक तौ सै मंसोबां माथै पांणी फेर दियौ । राजाजी रै सपनां रौ चूरौ कर न्हाकियौ ।

तौ ई राजाजी ऊपरला मन सूं सुरग-लोक रै बडेरां रा समंचार पूछ्या । रंक कह्यौ के सगळा ई बडेरा राजी-खुसी है । उठै ई थाट सूं राज करै । पण उठै अेक मोटी खांमी । खवास कोनीं । जिण कारण केस अर खत भूंडै ढाळै बधियोड़ा । खवास नै छेको भेजण री अणूंती भुळावण दी ।

पछै राजाजी रै सांम्ही देख कैवण लागौ — आपरी हर घणी करै । अेकर मिळण सारू घणौ घणौ कह्यौ । अेकर पधारौ तौ नांमी बात । मन धापै जद म्हैं आयौ ज्यूं पाछा पधार जाजो ।

सुरग-लोक री अपछरावां रा वखांण सुण राजाजी रै मूंडा में पांणी आयग्यौ । वै जावण नै त्यार व्हैगा । रंक नै घड़ी घड़ी खराय पूछ्यौ — रथी रै सिळग्यां पछै तप तौ नीं

आवै । म्हनै तप खारौ इज घणौ लागै ।

रंक कह्यौ — साचांणी, म्हनै तौ कीं ठा पड़ी नीं, जांणै गदरा माथै ई बैठौ । तप रौ तौ लवलेस ई नैड़ौ नीं लागौ ।

राजाजी रै जचियां पछै किसी ढील । आदेस व्हैतां ईं चन्नण रौ ढिगलौ लागग्यौ । रांणियां सूं मिळ भेंट, परधै नै राज रै कांम-काजां री भुळावण देय राजाजी नाई रै जोड़ै रथी माथै बिराजग्या ।

पण रथी रै सिळगतां ईं तप लागौ । राजाजी अर नाई मांय बैठ्या ई डाढ़्या — बळूं रे बळूं । रंक सगळां नै बरज दिया के कोई रथी नै नीं छेड़ै । वै तौ कोरा-मोरा वेहम सूं डरै ।

रंक रै बरज्यां पछै कोई पंचायती नीं करी । राजाजी अर राज-खवास दोनूं थोड़ी ताळ पछै कूकता ढबग्या । तद रंक कह्यौ — देखौ, म्हारी बात साची निकळी के नीं । वेहम मिट्यां अबै कठै कूकै । म्हारी जांण में ठांणै पूगगा दीसै ।

दोनूं जणा रंक रै कह्या मुजब ठांणै पूगा तौ नरक में ई पूग्या व्हैला । लारै तौ बळियां पछै बळियोड़ी हाडकियां बची ।

नगर रै लोगां नै सिंघणियां रै टोळा री डर बतायौ तौ सगळा जणा भेळा होय रंक नै राजा बणावणौ कबूल कर लियौ । अैड़ौ राजा मिळ जावै तौ चाहीजै ई कांई । धूंम धांम सूं गाजा-बाजां रै सागै अणूंतै कोड रया उणनै राज रा सिंघासण माथै बिठांणियौ । तीनूं वेली दीवांण बण्या । बरसां लग थाट सूं राज कर्‌यौ । रया नै सुख सूं राखी ।

भावना रा मोती

अेक हो बांमण । ग्यांन अर पिंडताई में तौ कीं खांमी नीं ही, पण घरै रोटयां रा फोड़ा पड़ता । इण उपरांत अैड़ी करकसा अर लपर-जीभी बांमणी सूं पांनौ पड़्यौ के दिन रात मोसा अर मेह्णियां रै तबोड़ा सूं बांमण रौ काळजौ वींधीजग्यौ । बांमण तिल्या वांधतौ के पूजा-पाठ करतौ जणा बांमणी अवस करनै वड़का-तड़का करती । बाड़ा बोल सुणावती—वासदी मैलूं थांरै आं पोथी-पांनड़ां माथै । टाबर-टींगर तौ भूखां मरता रोवै अर थांनै गीता रौ पाठ सूझै । देख लियौ थांरै भगवांन रौ तूमार । जीभ सूं रांम-नांव रा ळळका नीं देय हाथ पग हिलावौ तौ पेट री वळत मिटै ।

बापड़ौ बांमण मोटयारपणै ई जीवणा सूं कायौ व्हैगौ । आयै बरस बांमणी रै जापौ व्है जातौ । उण दिन किणी रै मरणा सूं ई वत्तौ टाबर जलमणा रौ दुख व्हैतौ ।

बांमणी धणी नै नित धोदावती के दिसावर जाय कीं हल्लौ करौ, कीं भाग अजमावौ । अेक दिन आंती आयोड़ौ बांमण दिसावर रौ हुंकारौ भरयौ । बांमणी मांग-मूंगनै वाजरी रौ आटौ अर गुळ लाई । भाता सारू पांच-सातेक सोगरा पोया । गुळ अर सोगरां रौ भातौ बांध धणी नै झिलाय दियौ ।

वांमण जांणतां थकां ईं सुगन अर दिसासूळ रौ कीं विचार नीं करनै, बोलौ बोलौ वहीर व्हैगौ। लाख सुगन बिगड़ै, इग सूं माड़ी जिदगानी तौ व्हैणा सूं री।

आखै दिन अर आखी रात हालतौ रह्यौ। जित्ती मोड़ी दोपारी करै उत्ती ई सावळ। थकै जित्तै धकावणौ। पाखती रोटयां तौ गिणती री। पैला खावौ के पछै। दूजै दिन मथारै दिन चढ़यां उणनै कड़कड़ाट करती भूख लागी। अबै नीं खायां तौ कायली आ जावैला। संपाड़ौ अर नितनेम करयां बिना वांमण मूंडै पांणी ई नीं घालतौ।

संजोग री बात के भीलण री बात सोचतां ईं अेक नाडी आई। पाळ माथै चढ़नै देख्यौ—टिप्पाटोळ भरयोड़ी। बांमण री निजर ठाडी व्हैगी।

वांमण नाडी सूं संपाड़ौ करनै बारै निकळियौ उण वेळा भूख चेतन व्हैगी। बड़ला री ठाडी छींयां में भाता रौ गमछौ खोलण लागौ के अणछक अेक कुत्ती जीभ काढ़यां पूंछ हिलावती आई। आज-कालै री ब्यायोड़ी।

मूंडा सूं लाळां भारती बांमण रै मूंडा सांम्ही देखण लागी। बांमण रै हीयै दया सांचरी। बिना खायां दूध नीं व्हैला अर दूध नीं व्हियां कूकरिया मर जावैला। वापड़ी मिनखां री गळाई बोल नीं जांणै। पण उणरी भूखी निजर अणदेखी कीकर करणी आवै। बांमण चार-पांच दिनां तांईं भूखौ रैवै तौ मरै कोनीं। आ बात सोच बांमण तौ अेक कवौ ई नीं लियौ। सगळा सोगरा अर गुळ कुत्ती नै कोड सूं खवाड़ दिया।

धाप्यां पछै कुत्ती बोली तौ कीं कोनीं पण निरीताळ तांईं

बांमण रा पगां में ऊंधौ पेट करनै लुटती री । औ नजारौ देख बांमण री भूख अगै ई मिटगी । साचांणी, भावना री कीमत रोटचां सूं कम कोनीं ।

सिरांणै गमछौ देय वौ भूखौ बांमण उठै ई जाडी छीयां देख सूयग्यौ । विखा अर फोड़ां रौ तायोड़ौ बांमण ऊमर में पैली वार सपना में सुख देख्यौ । आंख झपतां ई दूध भरचा धवळ सरवर में झीलण लागौ सौ झीलतौ ई रह्यौ । झीलियां पछै सोना रा थाळ में, सोना रै बाजोटियै बत्तीस तेवड़ पाळ-गोटी मार जीमण बैठौ सौ धापण रौ नांव ई नीं । जीमतौ ई गियौ, जीमतौ ई गियौ ।

पण आंख खुलतां ई भूखौ व्हैगौ । पेट में धपळका ऊठण लागा । नीं दूध रौ सरवर अर नीं सोना रौ थाळ ! फगत वा कुत्ती उणरै पाखती बैठी ही । उणरी आंख्यां सूं इमरत बरसतौ हौ । पूंछ हिलावती वळै बांमण रै पगां में लुटण लागी ।

बांमण कनै रोट्यां व्है तौ खुद भूखौ रैय वळै कुत्ती नै रोट्यां खवाड़ दे, उणनै इत्तौ हरख व्हियौ ।

बांमण पाछौ आपरै गांव आयग्यौ । बांमणी नै कुत्ती वाळी वात बताई तौ वा जांणै जित्ता दोसा-मोसा करचा । अनाप आवळ-कावळ बोली । गाळियां काढ़ी । माजनौ पाड़चौ के अैड़ा मोल्या मांटी कमाई करनै ले आवै तौ पछै सोच ई कांई बात रौ । लारलै भौ खोटा करम करचा सौ अैड़ौ अैदो भर-तार पांनै पड़चौ । बांमण तौ बोल्यौ नीं कोई चाल्यौ । छांनौ बोलौ घरवाळी री गीता सुणतौ रह्यौ ।

किणी भाव गांगरत बंद नीं व्हैती दीसी तौ वौ कह्यौ—ल्छिमी, अबै तौ माठ कर। आखै बरस भिकाळ करै तौ ई कुत्ती रा पेट सूं रोटयां पाछी आवै कोनीं। दया करी तौ म्हैं भूखां मरियौ। विरथा क्यूं कड़मड़ करै। थूं जांणजै के म्हैं ई वै रोट्यां खाई। काले पाछौ जावूंला। अेकर वळै भातौ बांध दै तौ पछै सैंठौ। थूं राजी व्है उत्ती कमाई करनै लावूंला।

बांमणी कह्यौ—म्हैं तौ मरियां राजी व्हूं सौ टूंपौ देय मार न्हाकौ। थांरी ई जिद छूटै, म्हारी ई मुगती व्है।

वा बडभागण बापड़ा बांमण नै जीभ जीभ सूं तळ न्हाकियौ। अेक पलक ई ढबी नीं। घरवाळी सूं उणरौ पूरौ मन फाटग्यौ। मूंडौ लेय ढळ जावै तौ सखरी बात। घरै आयां पछै ई करकसा नीं रोटी पुरसी अर नीं मनवार करी।

तड़कै वहीर व्हैती वगत बांमण भाता री बात करी तौ वा वासी मूंडै उणनै हजार गाळियां काढ़ी। वेवणी री वांनी बुहारती वगत रांम जांणै उणरै कांई जची सौ अेक धड़चा में घाल वांनी री पोट बांध दी। बांमण कमाई सारू वहीर होवण लागौ तौ उणनै वा पोट भिलाय बोली—बाजरी रौ औ आटौ साथै लेलौ। रोट्यां रा फोड़ा नीं पड़ैला।

बांमण पोट खांधै टेर वहीर व्हैगौ। मारग में कठै ई नीं ढवियौ। पाधरौ उण इज नाडौ माथै आय विसाई खाई। पाळ माथै केई जातरू भाटां रै चूल्हे टिक्कड़ सेकता हा। बांमण मन में सोच्यौ के औ ताखौ तौ नांमी सजियौ। के इत्ता में वा कुत्ती दौड़ती दौड़ती आई। बांमण रै पगां में लुटी। इमरत निजर सूं उणरै सांम्ही देखती री। बांमण बुचकारनै

बोल्यौ — थोड़ी नेठाव राख । रोट्यां पोयां पैला थूं अर पछै म्हैं ।

वौ पोट लेय अेक जातरू रै पाखती गियौ । कह्यौ — भाईड़ा, पांचेक टिक्कड़ म्हारै ई सेक दे । थारौ गुण मांनूंला । म्हैं जित्तै खंखोळी खाय पाछौ आवूं ।

जातरू कह्यौ के इण में कांई जोर पड़ै । तद बांमण पोट संभळाय नाडी में खंखोळी खावण सारू वहीर व्हैगौ । वा कुत्तो ई पूंछ हिलावती हिलावती तीर तांई साथै चाली ।

खंखोळी खाय बांमण उण जातरू रै गोडै गियौ तौ वौ उणनै देखतां ई रातौ-पीळौ व्हियौ । अरळ विरळ बकण लागो के उणनै ठगाई करण सारू वौ इज मिळियौ । दांनी री पोट झिलाय खुद तौ खंखोळी खावण सारू बळग्यौ । यूं किणी रै माथै झूठौ बजौ ढोळयां पार नीं पड़ै । सेवट तौ कमाई सूं पूरौ पड़ैला ।

दूजा ई जातरू बांमण नै जांणै जित्तौ आडै हाथां लियौ । भलौ-भूंडौ कह्यौ । बांमण तौ बोल्यौ ई नीं । नीचौ धूण करयां ऊभौ रह्यौ । घरवाळी रा लखण तौ जांणतौ हौ, पछै कांई बोलतौ ।

पण ओदसा नै आ कांई ऊंधी सूझी । मिनखां में सांन रा टका करवाय दिया । इत्तै मांन कोई ओड़ौ नीं दियौ । कैड़ोक भूंडो व्हौ । धरती फाटै तौ मांय धंस जावै ।

बांमण नै पैली वार बांमणी माथै इत्ती रीस आई । ग्रैड़ौ करकसा जीवनै ई कांई न्याल करैला । वौ बोलौ बोलौ दांनी री पोट लेय उठा सूं वहीर व्हैगौ । कुत्तो ई सागै चालन

लागी । वा वांमण रै मन री बात समझगी ही । बांमण वांनी री पोट श्रेक बांटका में झाड़ती सोचण लागी के आज तौ विना वात माथा में वांनी पड़गी ।

वांनी झड़कणा सूं श्रेक डूंमी सरप सळवळतौ बारै आयौ। वांमण री मीट उण माथै पड़ी तौ वौ मन ई मन बड़बड़ायौ— वापड़ी नै कमाई भावै ।

पछै रांम-जांणै कांई सोच वौ डूंमी सरप माथै धड़चौ न्हाक उणनै अपड़ लियौ । सेंठी गांठ लगाय काबू कर लियौ ।

कुत्ती खासी भांय तांई उणरै साथै आई । पछै बांमण वुचकारनै जावण री कह्यौ तौ वा बोली बोली मुड़गी ।

धणी नै आवतां देख्यौ तौ बांमणी सांम्ही आई । मेहणी देवती बोली—निसैवार कमाई करनै लाया, आरती उतार बधायनै लेऊं जैड़ी बात ।

वांमण कह्यौ—थूं तौ मोसा देवै, म्हैं सै समझूं, पण साचांणी वात तौ वधावै जैड़ी इज है । थारै वास्तै नवलखौ हार लायौ ।

वांमणी विस्वास करै जैड़ी बात ई नीं ही । बोली—थारै जैड़ौ कमाऊ धणी मिळचौ, नित हार बदळूं तौ ई थोड़ा ।

वांमण कह्यौ—गळा में पैरचां पछै तौ विस्वास करैला। पण आज करड़ौ वार है । वताऊं ई कोनीं । कालै दोय घड़ी रात थकां सिरै मौरत । म्हैं पोट में बंध्यौ हार मटका में घालनै घरूं, थूं मौरत सूं पैला खथावळ मत करज्ये । ऊमर में कदै ई कैणौ नीं मांन्यौ, पण म्हारी आ बात मत टाळजे, थनै हाथ जोड़ूं ।

वांमण वंध्योड़ी पोट वताई तौ मांय साचांणी हार ज्यूं

दीस्यौ । बांमणी नै खासौ-भलौ भरोसौ माडै करणौ पड़्यौ ।

बांमण श्रेक मटका में डूंमी सरप नै घाल मूंडौ बांध दियौ । ऊमर में पैली वार बांमणी धणी रौ कैणौ मांन्यौ । रात तौ ज्यूं त्यूं सोरी दोरी बिताई । फगत दोय घड़ी रात बाकी ही । बांमणी दीवौ भुपाय कोड सूं घड़ा रौ मूंडौ खोल्यौ । दीवा रै चांनणै देख्यौ तौ घड़ा रै मांय अणगिण मोती पळ-पळाट करै । धबसौ भरनै मोती बारै काढ़्या । श्रंधारी साळ सै-चन्नण व्हैगी । श्रेक श्रेक मोती अमोलक । तारां री गळाई चमकै । बांमणी रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । धणी नै श्रैड़ौ कमाऊ तौ नीं जांण्यौ हौ । दौड़ी दौड़ी बांमण नै जगावण सारू गी । इमरत भरचा सुर में हेलौ मारचौ—पिंडतजी अवै तौ अपोढ़ी व्हौ । मोत्यां रौ उजास तौ देखौ ।

पिंडतजी अगाढ़ ऊंघ में सूता मीठौ सपनौ जोवता हा । वांरै आंगण आंबा रै रूंख सोना री केरियां लूमै । टावर-टींगर ज्यूं तोड़ै त्यूं बधै । पिंडतजी घड़ो घड़ी गिणै तौ ई केरियां री गिणती नीं व्है ।

बांमणी रा हेला माथै हेला सुण पिंडतजी भिभकनै बैठा व्हिया । ऊठतां ई पूछ्यौ—घड़ा मांयलौ हार सोध्यौ के नीं । श्रैड़ी नीं व्है के मौरत टळ जावै

बांमणी पगां रै हाथ लगाय बोली—पिंडतजी, श्रैड़ी भोळी म्हैं कोनीं । इत्ता बरस म्हैं थांनै ओळखिया कोनीं । जिणरी माफी चावूं । श्रेकर चालनै देखौ तौ खरी । घड़ौ अमोलक मोत्यां सूं जगामग करै ।

पिंडतजी नै नीं तौ बांमणी रै कह्या रौ भरोसौ व्हियौ

अर नीं हथाळी में सांप्रत मोती देख्यां आपरी आंख्यां माथै पतियारौ व्हियौ। कदास हाल तांईं वौ सपनौ ई चालतौ व्है।

दिनूंगा नितनेम सूं निव्रत होय घड़ो संभाळियौ तौ वा री वा रचना। मांय अणगिण अमोलक मोती जगमगै। पिंडतजी री हवेली तद सूं कदै ई मोती नीं खूटा। ज्यूं खरचता त्यूं नित बधता जावता। वांरौ सपनौ साचौ व्हियौ।



ठाकर रौ भूत

किणी अेक छोटा गांव री ठाकर तौ छोटौ ई हौ, पण ठकराई लांठी ही। मोटा ठिकांणा री खोड़ खुड़ावणा में रया अर करसां री मौत ही। वेठ-वेगार, लाग-बाग अर लटाई अणूंती आकरी। रया भूंडै-ढाळै कळकळै आयगी तौ ई पीढ़ियां री खूंटौ छोडनै किणी दूजी ठौड़ जावण रौ नीं तौ कोई मारग ई हौ अर नीं हीमत ई ही। ठाकर आपरी कुवांणां पोखता रह्या अर बस्ती रा लोग-बाग वांनै बोला बोला झेलता रह्या। पण मौत आगै किणी री ठकराई नीं चालै तौ वां ठाकरां री कीकर चालती। घणा ई तरळा तोड़्या पण वांनै जवांनी थकां ई मौत रै मारग सिधावणौ पड़्यौ। देह रै भसम व्हियां जीव नै मुगति मिळी तौ ई वै ठिकांणा री सींव छोडनै बारै नीं गिया। ठाकरां रौ जीव केर, खेजड़ी, वड़, पींपळ, बेरा, बावड़ियां रै ओळूं-दोळूं चकारा देवतौ रह्यौ। आखा चौखळा में ठा पड़गी के ठाकर भूत बणनै ठिकांणा री सींव ठौड़ ठौड़ देठाळौ देवै।

उण ठिकांणै हजार भरणां री ताली रौ फगत अेक ई लांठौ करसौ हौ। पण ठिकांणा रा कणवारिया-कांमदार उणनै फोड़ा घालणा में पाछ नीं राखता। घरवाळा रात दिन धूजता

तौ ई नोठ वाकौ थकतौ । पीढ़ियां जमीं में रळगी पण कदै ई ऊपरलौ पांनौ नीं आयौ ।

आखातीज रा सुगन मनावण सारू वौ गांव-चौधरी खांधै कस्सी लेय सूड़ करण सारू आपरै खेतां वहीर व्हियौ । माथै खारोलिया में गळवांणी री कुलड़ी, पांच सोगरा, गवारफळियां री साग अर ठाडा पांणी री बुगती ही । खेतां री माठ आयौ ई ही के पलावू तीतर बोल्यौ । सुगन तौ माड़ा व्हिया । थोड़ी ताळ ढबनै अठी-उठी देख धकै वहीर व्हियौ । अबकी तीतर री बोली नीं सुणीजी ।

चौधरी नै सांमली खेजड़ी हेटै धोळा-धक गाभां री अेक मोट्यार निगै आयौ । पाखती गियौ तौ ई सावळ ओळखी-जियौ कोनीं । चौधरी जवारड़ा करनै पूछ्यौ — कुण व्है ई ?

धोळा गाभां वाळौ मोट्यार मुळकनै बोल्यौ — चौधरी ! आंट वैगी घणी आई रे ! गांव रा धणी नै इत्तौ वैगौ पांतर जावैला, म्हैं आ नीं जांणी ही । हाल तौ मरियां नै तीन पखवाड़ा ई नीं बीत्या ।

इत्ती वात सुणतां ई चौधरी झट लखग्यौ के औ तौ ठाकरसा रौ भूत । पण अबै डरियां कीं सांधौ लागैला नीं । हीमत करनै बोल्यौ — अंदाता, पैली वैम तौ म्हनै ई व्हियौ । पण पछै सोच्यौ के आप तौ सुरग बिराज्या राज करता व्हौला । अै तौ म्हैं गिवार लोग भूत-पलीत वणनै वांटकै वांटकै भटकां ।

चौधरी री नरमाई सूं भूत कीं ठाडौ पड़्यौ । सोच-विचारनै कैवण लागौ — चौधरी, राज तौ जीवियौ जित्तै घणौ ई कर्‌यौ । राज करण री अंगै ई मन में कोनीं । साची

बात सुण्यां थूं किसौ विस्वास करैला के थां करसां री भलाई वास्तै म्हैं सुरग रौ राज कवूल नीं करचौ । जीवियौ जित्तै थां लोगां नै घणा ई फोड़ा घाल्या । अबै भूत बण्यौ थारै खेतां री रुखाळी करूं । कीं न कीं तौ पाछौ फरजन उतारूं ।

चौधरी टिचकारी देय बोल्यौ — अंदाता, क्यूं कीड़ियां माथै टोळा थरकावौ । म्हे तौ धणियां रै आरांम सारू ई जलम लियौ । म्हे तौ रावळा हाथ-पग हां, आपरै खातर ई रात दिन आफळां, इण में फोड़ा जिसी कांई बात ।

ठाकर रौ भूत मीठी वांणी में कैवण लागौ — नीं रे चौधरी, जीविया जित्तै ठकराई दूजी ही, मरियां सै अकल ठांणै आयगी । थोड़ा जीवणा खातर थां लोगां नै कित्ता तळिया । मरियां मूठी दांणा ई साथै नीं चाल्या । ठिकांणा रै कोट रौ ठायौ छोडणौ पड़चौ । बांमण पिंडत नित पूजा पाठ करै, इण वास्तै के म्हैं कोट रै मांय नीं वड़ सकूं । कंवर ठकरांणी अबै म्हारा सूं क्यूं गनौ पाळै । सै स्वारथ रा रोवणा-धोवणा है । घणौ ई गढ़ में जावण सारू तड़फूं पण पग नीं धरण दे । अबै मांय रौ मांय पिछताऊं के आं लोगां री खातर क्यूं थनै इत्तौ दुख दियौ । कीकर ई करनै थां लोगां रौ फरजन उतारूं तौ सांयत मिळै ।

चौधरी रौ ई हीयौ पसीजग्यौ । धणियां रै मूंडै कदै ई अैड़ा मीठा बोल सुण्या नीं हा । हाथ जोड़ कैवण लागौ: आपरै स्री मुख सूं फरमावतां ई म्हारौ फरजन तौ उतरग्यौ ।

ठाकर रौ भूत विचाळै ई बोल्यौ — फरजन कोरी-मोरी बातां सूं नीं उतरै । म्हैं साचांणी उतारणी चावूं । बोल चौधरी,

थारै आयै साल कित्ता मण री ताली व्है ।

चौवरी कह्यौ—अंदाता, आ वात आप सूं कांई छांनी। जमांनो व्हियां कदै ई हजार मण सूं कम कूढ़ौ नीं व्हियौ ।

भूत वोल्यौ—पण थारै तौ सौ मण ई नीठ हाथै आवती। आज जीव कळपै के म्हैं थां लोगां माथै कैड़ा कैड़ा जुलम करया । म्हारौ कैणौ मांन, खेतां में ऊमरौ ई काढ़ण री जरूरत कोनीं । थूं आयौ ज्यूं पाछौ जा परौ । कातीसरै दोय हजार मण वाजरी निपजावण रौ जिम्मौ म्हारौ । ठिकांणै दांणौ ई मत लटाजै । आं लोगां रा लखण इज अैड़ा है ।

चौधरी माथौ धूणतौ कैवण लागौ—नीं अंदाता नीं, अैड़ी कमाई रांम टाळै । म्हे जिनावर आप वडभागियां री होड कोकर कर सकां । रावळै मूंडा सूं अैड़ी इमरत वांणी सुणतां ई म्हैं तौ दो हजार मण री ठौड़ लाख मण वाजरी भरपाई। पण अंदाता म्हे गिंवार पीढ़ियां सूं हाथां निपजाय खावण रै हेवा हां, विना कमाई रौ धांन म्हांनै पचैला भवै ई नीं । म्हांनै ठालो निकमौ वैठणौ मरणा सूं ई माड़ौ लागै ।

ठाकर रा भूत नै ई चौधरी री आ बात आहूंजी लागी । तौ ई रीस नै दवाय वोल्यौ—कांई, थूं आ वात कैवणी चावै के म्हां ठाकर-ठेटरां नै ई दूजां री कमाई रौ माल पचै । म्हे हरांम री कमाई खावां !

चौवरी खुणियां सूदा हाथ जोड़, दोवड़ौ होय लुळनै वोल्यौ—अंदाता, अैड़ी वात म्हारा मूंडा सूं नोज निकळै । मूंडौ भाड़ै थोड़ौ ई लायौ जकौ धणियां नै अैड़ा कुवोल काढूं। आप वडभागियां रौ तौ कांम ई आरांम फरमावणौ है, लारलै

भी अैड़ा ई करम करचा । म्हे म्हांरै करमां सूं ई इण भो आफळां अर थुड़ां । आप स्री मुख सूं फरमायौ, वा ई मया किसी कम है ।

भूत थोड़ौ पाखती आयौ । होठ चावतौ चावतौ ई कैवण लागौ—थोथी मया-फया सूं कीं नीं व्है, करनै बतावूंला । खेतां सांम्ही मूंडौ ई करण री जरूरत कोनीं । बैठां बैठां दोय हजार मण बाजरौ हाथै लागैला जद थनै म्हारी मया री सावळ जांच व्हैला । थें करसणी लोग ई अेकर आरांम री दुख झेलौ तौ खरी । म्हे तौ पीढ़ियां सूं औ दुख झेलां ।

चौधरी गतागम में पजग्यौ । नीं तौ बिना कमाई रौ बाजरौ लेवणौ चावै अर नीं भूत आगै घणौ बाद ई करणौ चावै । भूत ई वळै ठाकरां रौ ! खीज व्हियां गवाड़ी रौ उत्तन ई उठांण दे । थोड़ी ताळ तांई सोच-विचार नै बोल्यौ—अंदाता, आपरी मया व्है तौ आखातीज रा सुगन तौ पाल लूं ।

भूत धसळ भरतौ बोल्यौ—मरचां पछै थनै सांप्रत दरसण दिया, इण उपरांत ई वळै सुगन किसा बाकी रैगा । थारै दोय हजार मण बाजरौ तौ अखरे । घरै जा, नेगम रा ढोल घुरा । खेतां सांम्ही आवण रौ ई कांम नीं ।

ठाकरां रौ भूत किणी भाव नीं मांन्यौ तौ चौधरी मन में कस्सी रौ चिगदौ दियां बिना ई पाछौ वळग्यौ । भूत पलीतां री केई करामातां उणरै सांभळियोड़ी ही । वांरै वास्तै कोई कांम दूभर कोनीं । दोय हजार मण बाजरौ निपजावण रौ वादौ करचौ, अवस भरै पटकैला । पण तौ ई उणरौ मन पतीजौ नीं व्हियौ । बिना कमाई कीकर नेपै कबूल करीजै ।

घरै जाय वौ चौधरण सूं कीं चोज नीं राख्यौ । सगळी वात मांडनै वताय दी । चौधरण तौ बात सुणतां ई इण भांत भिमरी जांणै नागण री पूंछ माथै पग लागौ । बोली — नीं चाहीजै अपांनै विना कमाई री अेक ई कुदांणौ । सात पीढ़ियां लग सोलियाळ-पणौ नीं मिटैला । इण बिचै तौ भूखां मरणौ सखरौ ।

अणछक रीस रै विचाळै ई चौधरण नै हंसी आयगी । कैवण लागी — थांनै इत्ता भोळा नीं जांण्या हा । ठाकर जीविया जित्तै अपांनै कांई कम दुख दियौ, मरयां वांरौ भूत अपां माथै मेहर करैला ! थें भलां ई विस्वास करौ, म्हनै तौ सपनै ई विस्वास नीं व्है ।

चौधरी कह्यौ — भूत आगै कैड़ा धींग नै भोळौ व्हैणौ पड़ै । वातड़ी तौ म्हारै ई नीं झरी पण कांई जोर करतौ । खीझ चढ़यां मोटचार-काटी वेटां रै कीं जोखौ नीं व्है जावै, इण खातर म्हैं ई नीची न्हाकी ।

वेटां रै जोखा री बात सुण चौधरण ई डरपी । मौळी पड़ती थकी कैवण लागी — म्हनै भरोसौ तौ अंगै ई नीं है, सता कौल भरै पड़ जावै तौ अपांनै अेक ई दांणौ घरै नीं राखणौ । आधी बाजरी ठिकांणा तालकै अर आधी कवूड़ां नै । अपां जांणाला के निपट काळ पड़ग्यौ । इंदर-भगवांन कोप करयौ ।

धणी लुगाई ज्यूं त्यूं करनै आपरा मन नै समझायौ । पण उतरतै असाढ़ इंदर भगवांन री अैड़ी मेहर व्ही के पर-नाळां रै मूंडै पांणी पड़यौ । वादळा जांणै थमणौ भूल ई गिया व्है । जळवंब ई जळवंब ।

केई दिनां सूं जमीं वातै आई। वस्ती रा सगळा करसा अणूंतै कोड हळिया हांकतां आप आपरै खेतां वहीर व्हिया। गांव-चौधरी सूं ई ढबीजियौ कोनीं। नागौरी बळद जोत वहीर व्हियौ। वहीर व्हैती वेळा हाळियां नै भुळावण दी के वै समचौ मिळतां ई आठ हळ जोत पाधरा खेतां आ जावै।

ठाकरसा री भूत तौ उणीज खेजड़ी हेटै ऊभौ हौ। चौधरी रै जवारड़ा करतां ई अजेज पूछ्यौ — इतौ वरजियौ तौ ई हळ जोतनै क्यूं आयौ ? म्हारै कह्या माथै थनै कदास भरोसौ नीं व्हियौ।

बळदां नै ढाब चौधरी कैवण लागौ — नीं बापजी, इत्ती म्हारी कांई ठरकौ के आपरै कह्या रौ अभरोसौ करूं। म्हारी समझ-समझायां पछै अैड़ी विरखा नीं वूठी। म्हैं सोच्यौ के हाथां कमायनै खावां, वै दांणा ई तौ आपरै दियोड़ा इज है। साची अरज करूं के आज दिन तांई निकमौ वैठ्यौ कोनीं। वरसात व्हैतां ई कांम करण सारू म्हारी नाड़ नाड़ तूटै। टोटका रूपी ई खेतां में थोड़ी घणी लींगटियां खींचण दो अंदाता।

भूत घांटी हिलावतौ बोल्यौ — ऊं हूं, अैस अैस तौ थनै खेतां रै मांय पग ई नीं धरण दूं। थें लोग म्हांनै मांय रा मांय भांडता के म्है राव-उमराव हाथां माथै हाथ धरनै मछरां करां। अबै ठा पड़ी के ठाली मछरां करणी कित्ती दोरी है। थूं तौ इत्ता में ई आंती आयग्यौ। दाद तौ म्हांनै ई दे के म्है सिरायत म्हांरै वस पूगतां मूंडा री माखी ई नीं उडावता। आ तौ व्हिया करै, दुनियां रा किणी मिनख नै आपरौ दुख अर दूजा री सुख घणौ लांठौ लखावै। घणा रंग है म्हांनै

छाती नै के बोला बोला मछरां करण री दुख झेलता रह्या। अेक निस्कारो ई वारै नीं काढ़्यौ।

भूत आगै चौधरी री कीं दाळ गळी नीं। आयौ ज्यूं ई पाछौ जांणौ पड़्यौ। नीं सूड़-सवाड़ करण दियौ अर नीं अेक हळाई खींचण दी। बाकी सगळी कांकड़ मगद रै उनमांन जोत्योड़ी मुरंगी छिब देवती ही, पण गांव चौधरी रा खेत तालरा व्है ज्यूं जमियोड़ा पड़्या। गांव-चौधरी किणी नै कीं बात नीं बताई। जणा जणा रा खेत देखतौ फिरण लागौ। लोग-बाग खेती नीं करण सारू अठी-उठी री बातां पूछी पण वौ आळिया-टोळिया करतौ रैवतौ। दूजां रै खेतां में बाजरी री लील माचण लागी तौ उणरा मुरंगा खेत घणा अडोळा लागण लागा। अबै करै तौ कांई करै। भंवतौ भंवतौ वळै आपरै खेतां गियौ। म्हाटौ भूत तौ खेजड़ा री ठायौ छोडै ई नीं। भूत माथै निजर पड़तां ई चौधरी कूक्यौ — अंदाता, आखी कांकड़ में हरियाळी री लील माची, म्हारा खेत साव विरंगा। बिना ऊग्यां कीकर नेपै व्हैला।

भूत बिचाळै ई हंसनै बोल्यौ — बीजनै नेपै लेवणी, अै तौ थां मिनखां रा पंपाळ है। म्है देवजूंण रा तौ मन करतां ई लाख मण री ढिगलौ अेकठ कर सकां। थां लोगां नै कांई कणायली अर रोड़ली व्हियां बिना नहेचौ नीं व्है। इत्तौ पाल्यौ तौ ई आपरा लखण नीं छोड्या।

चौधरी मोळौ पड़नै कैवण लागौ — खेती रा सै कलाप कर्‌यां, दांणौ ई हाथ नीं लागै तौ म्हारौ मन आपै ई समझ जावै। पण बिना कमतर खेत अडोळा पड़्या, आ बात काळ-

जिया में तीर ज्यूं लागै । अंदाता हाळ ई पाछ नीं पड़ी, म्हनैं खेतां में हळिया जोतण दो । म्हनै लागै के ठाली बैठ्यां म्हैं कालौ व्हे जावूंला ।

भूत डग डग हंसियो । बोल्यौ — अबै ठा पड़ी थनै के आरांम सूं आंहजो कांम दुनियां में कीं कोनीं । पण थें लोग पैला म्हांनै देख भुटता, कळपता । चौधरी, थुड़णा सूं वत्तौ कीं सुख नीं ।

चौधरी अर भूत में घणौ ई विवाद व्हियो, पण भूत तौ नीं मांन्यौ सौ नीं मांन्यौ । चौधरी नै चांम ई नीं काढ़ण दी ।

लोगां री बाजरियां वगत माथै निदांण व्हियो । हळौ जो । बूंटै बूंटै बूंभी बंधी । बाजरियां छींका राळ्या । गांठां फूटनै कळियां छूटी । झोला लेवती बाजरियां जांणै धरती नै अधर उंचाय लेवैला । गांव चौधरी आपरा भुरंगा खेत देखतौ तौ काळजै धपळका ऊठता । बारम्बार भूत रै गोडै जाय हाथा-जोड़ी करतौ, लटापोरियां करतौ । पण भूत तौ कमतर रा नांव माथै अेक ऊमरी ई नीं काढ़ण दियो । चौधरी घणा कळभळ करया तौ वौ दांत पीसनैं कह्यौ — म्हनै तौ थां लोगां री धोड़ी तूमार जोत्रणौ हौ । हाल तौ बिना कमाई री नेपै हाथ ई नीं आई उण पैला, थूं हाय-त्राय हाय-त्राय करण लागौ । औ कांम सैल नीं है । आ तौ म्हां लोगां री वजर छाती हौ जकां पीढ़ियां सूं दूजां री कमाई खाई पण निस्कारौ ई नीं न्हाखियौ ।

चौधरी कह्यौ — हजार वळा कांन पकड़ूं अंदाता, हजार वळा । साचांणी ठाली बैठणा विचै तौ जोवतौ वळणौ चाखौ । म्हे आप सिरायतां सूं घणा सुखी हां । धिन है आप लोगां री

छाती नै के आप होयनै औ दुख झेलौ ।

भूत कह्यौ — जद थें लोग पीढ़ियां सूं म्हांनै ठाली बैठ अणगिणत कमाई खावण री दुख दियौ, म्हांनै जांणै जित्तै फोड़ा घालिया तौ अेकर म्हनैं ई दुख देवण दे । थूं तौ अेक वार में ई कूकारोळौ मचाय दियौ । नित बरजूं तौ ई न्हाट न्हाटनै आवै ।

चौधरी तौ कावळ चकरी चढ़्यौ । खेतां जावै तौ ठाकर री भूत दाद देवै नीं अर घरै आवै तौ झख पड़ै नीं । उणरै जीवतां जीवतां खेत कोरा रैग्या । लोगां रै खेतां अरगता व्है जैड़ो सिट्टियां लूंमै । ऊंट चढ़्यौ ओठी नीं दीसै अर गांव चौधरी रा खेत टाटिया रै माथा ज्यूं खरणाट करै । बस्ती रा लोग गांव-चौधरी री खिखरां करण लागा । चौधरी नै खेतां भटक्यां बिना सांयत नीं व्है । जावै जित्ती वळा ई भूत धकै त्यार । चौधरी पगां में पोत्यौ धरनै कंवण लागौ — अंदाता अबकी करसण करचां आं इज खेतां में ढाई हजार मण बाजरी व्हैती । पचास बरसां में ई अैड़ी जमांनी नीं व्हियौ । बाजरियां तौ जांणै पाताळ फोड़ ऊंची वधी । लोगां रै खेतां अैड़ा घांण मच्या के भालौ ई पार नीं व्है । म्हनै ठा नीं पड़ै के सूखा खणक खेतां सूं कोकर नेपै व्हैला । हाल ई आपरी इंच्छा व्है ज्यूं रचना व्है सकै । सगळां सूं ई सिरै म्हारै खेतां में बाजरी वधावण री मया फरमावौ । हाल ई गाईटा तांई थुड़ सकूं । कीं तौ कांम करण दो । म्हनै नीं तौ नींद आवै नीं रोटी भावै ।

भूत कह्यौ — नीं, इण वार तौ सीधी भखारियां भरी-

जैला । थूं म्हारी परचौ देख तौ खरी ।

चौधरी पगां में पोत्यौ धरनै बोल्यौ — बापजी, जे परचौ ई बतावणौ है तौ खेतां में ईं बतावौ । हाल ई बाड़्यां पछै ओळियां, पंचोळां, भूळा, ओगा, खूंटणी अर गाईटा तांई खासौ कांम बाकी । कीं तौ थुड़णा री आदत पोखूं । पसीना बिना री कमाई म्हारै वास्तै बिस रौ कांम करैला । दो री ठोड़ म्हैं तौ हजार मण में ई राजी-बाजी, पण कीं कांम नीं करयां तौ म्हनै छाती माथै भाखर ज्यूं लखावै ।

भूत आपरा बाद माथै अड़ियोड़ौ अर चौधरी नै कांम करण रौ बळौ लाग्योड़ौ । भूत कह्यौ — थूं राजी व्है तौ दोय हजार मण री ठोड़ चार हजार मण कर दूं, पण थनै कांम करण रौ तौ नांव ई नीं लेवण दूं । थूं जांणजै के चौमासै चौमासै मांदौ ई पड़ग्यौ ।

चौधरी गावड़ खुजावतौ बोल्यौ — साव साजौ-सूरौ, मांदौ होवण री बात कीकर सोच लूं ।

चौधरी घरै गियौ तौ आंमण-दूमणौ । किणी बात में मन नीं लागै । चौधरण बिलमावण सारू कोतक करती बोली — ठाकरां री भूत कांई खलकां रै लाटां सूं बाजरी उचकायनै आपरौ कौल पूरौ करैला ! परचौ बतावणौ व्है तौ पछै ढोल क्यूं । वांनै निपजावणी तौ पड़ै कोनीं ।

चौधरी रौ मन बिलमतौ नीं जांण वा पळै धकै फैवण लागी — थें बिरथा क्यूं कळपौ, थां रौ मन नीं व्हैला तौ म्हैं इण बाजरी रौ ग्रेक दांणौ ई हांडी नीं चाढूं । कचूड़ा नै उछाळणौ कबूल, पण थांरै मन परवारौ कीं कांम नीं करूं ।

चौधरी रै काळजियै अेक ई बात भाला री अणी ज्यूं खट-कती ही के आखै चौखळै इंदर-बाबा री अैड़ी मेहर व्ही अर उणरा खेत गिणगोरयां रा ताल ज्यूं सपाट पड़्या. । आज उणरै खेतां में छिवरियां रा भाखर लाग जाता । हिरण खोड़ा व्है जैड़ी बाजरियां निपजती ।

चौधरण घणी ई सखरी सखरी बातां करी पण धणी री मन नीं लागौ । दूजै दिन वौ वळै चितबावळा री गळाई खेतां में गियौ । ठाकरसा रौ भूत मुळकनै सांम्ही आयौ । पूछ्यौ—चौधरी, आज मूंडौ घणौ उतरियोड़ौ । बात कांई व्ही !

चौधरी कह्यौ—बापजी, आप तौ घट घट रा वासी हौ । म्हारा मन री लाय आप सूं कांई छांनी । हाथ जोड़ नै अरज करूं के आप बाजरी भखारियां लग नीं पुगाय अठै खेत में सिट्टियां रौ ढिगलौ करदौ । गाहणौ, उफणणौ अर दूं देणी, औ कांम तौ हाथां करूं । बिना कांम म्हारा हाडका कुळै ।

भूत कह्यौ—चौधरी सोच तौ खरी के गदरा माथै पोढ़तां पोढ़तां म्हांरै हाडकां रा कांई हवाल व्हिया व्हैला । म्है तौ कदै ई नाक में सळ नीं घाल्यौ । थूं इत्ता आरांम सूं ई आंती आयग्यौ ।

चौधरी कह्यौ—अंदाता, आप बडभागियां री वात न्यारी है, म्हैं तौ मरियां पछै ई कांम करणौ चावूं । आपरौ जीवूंला जित्तै गुण मांनूंला, धूंप खेवूंला, म्हनै कीं न कीं कांम करण री मया फरमावौ ।

ठाकर रौ भूत कह्यौ—अेकर नटियां, सागै मूंडै हुंकारौ

नीं भरूं । इत्ती बात नीं तणती तौ म्हां वडभागियां रै दुख री थांनै कांई जाच व्हैती। थूं दूजी तीजी बात री सोच मत कर, बाजरी परड़ रै डोळा जेंड़ी बगसूंला ।

चौधरी कांई जोर करतौ । बोली बोली गवाड़ी कांनी वहीर व्हियौ । चौधरण घणो नै राजी करण रो घणी ई बातां करती, पण सै अकारथ। तीन दिनां तांई चौधरी छांन में दुमनौ दुमनौ बैठौ रह्यौ। चौथं दिन वळै उणीज खेजड़ी रै ठायं पूगो। मथारै दिन चढ़्यां । ठाकर तौ ठायौ छोडै ई नीं ।

चौधरी जवारड़ा करनै लगतौ ई कैवण लागो — अंदाता म्हारी आ बात नीं मांनी तौ म्हैं आपघात करनै मर जावूंला। लोग-बाग तौ गाडियां रै मूंडै बाजरी लाय लाय थाकग्या । कांई जमांनी व्हियौ, जांणै बिरखा रै मिस मोत्यां रै संचै बाजरी ओसरी । आप अठै ई ताली मांड बाजरी री ढिगलौ करदौ। गाडियां जोतण रौ कांम तौ करलूं ।

अबकी ठाकरां री भूत चौधरी री आ बात सुणनै सिरी ताळ तांई डग डग हंसियौ । हंसता हसतां ई कैवण लागौ — चौधरी, इण दुनियां में बावळा तौ घणा ई दीठा, पण थारै जैड़ौ कालौ निगै नीं आयौ । थनै विस्वास व्हैगो कै कौल मुजब बाजरी परखाय दूंला । काला, जीवियौ जित्तै थां लोगां नै फोड़ा घाल्या, मरियां थां लोगां नै सुख देवूं तो अगत नीं जावूं। औ कौल नीं करतौ तौ थूं करसण करचां बिना मांनतौ थोड़ौ ई । चौखळा में सगळां सूं सिरै नेपै व्हैतो । आ बात म्हनै भरती भलां ! धणी लुगाई अबै सपना में बाजरी जोवी ।

पण भूत री आ बात सुणनै चौधरी सांम्हो राजी व्हियौ ।

कह्यौ — निहाल कर दिया अंदाता, अबै जावतां दुख रौ भाखर माथा सूं उतरयौ। दांणा हाथ नीं लागण रौ म्हनै अंगै ई सोच कोनीं। हाथै लागता तौ सोच जैड़ी वात ही। धरती अर म्हारै परसेवा रौ घणौ ई मेळ है, जीवता रह्या तौ घणो ई वाजरियां निपजावांलां। आवतौ आवतौ कुदांणौ बचग्यौ, पांच घड़ी गुळ वेंचूंला।

पछै चौधरी तौ जवारड़ा करनै फूल री जात हळकौ होय गवाड़ी कांनी वहीर व्हैगौ। चौधरण धणी रौ मूंडौ पळक पळक करतौ देख्यौ तौ जांणै जित्ती राजी व्ही। वूझ्यौ — ठाकरां रौ भूत तूठग्यौ दीसै, पण घरै तौ अेक दांणौ ई नीं आयौ।

तद चौधरी वोलां रै मिस मोती झाड़तौ व्है ज्यूं कैवण लागौ — औ हरख इण वात रौ तौ है इज के घरै दांणा नीं तौ आया अर नीं आवैला। ठाकर मरयां पछै ई आपरा लखण नीं भूल्या।

नेठाव सूं चौधरी वात मांडनै वताई। चौधरण ई अणूंती राजी व्ही। वोली — जीविया जित्तै लटाई रै मिस लूटता अर मरयां खेतां में दांणौ ई नीं निपजण दियौ। आंरा सूं दूजी वात कांई वण आवै! भगवांन खैर करी के हरांम रौ कुदांणौ टावरां रै गळै नीं उतरयौ।

चौधरी नै केई दिनां सूं उण रात सागेड़ो नींद आई। मीठा अर सुहांणा सपना आया। वौ सपना में घणौ ई थुड़ियौ, घणौ ई थुड़ियौ। थुड़णा सूं घणौ ई परसेवौ व्हियौ। उणरै परसेवा सूं घणा ई अमोलक मोती निपजिया।

डाकरा रा चाळा

डूंगर री चढ़ाई भूंडी
सांसी री लड़ाई भूंडी
घर में तो पड़ाई भूंडी

ऊंचलौ तो खेत भूंडी
साधू वाळो हेत भूंडौ
कुत्ती आळौ वेंत भूंडौ

खीचड़ा में लोदौ भूंडी
गायां मांय गोदौ भूंडी
घरै हिलियौ सोदौ भूंडी

कांन मांयली कोडी भूंडी
दाढ़ी विना थोडी भूंडी
घर में रांड मोडी भूंडी

तो रांमजी भूंडा नै तो भूंडा अर भलां नै भला दिन देवै के किणी ग्रेक गांव में सात वेली रैवता । ग्रेक दांत रोटी तूटती । हल्लौ सागै करता । सुख-दुख रा सीरी । अंवळी रा भीड़ी । वण आयां किणी रो कांम काढ़ता, पण संभाळता कोनीं । ग्रेकर वै खासी अळगी भांय ग्रेक मेळा में आवण

री मतौ करचौ । साकळियां, सक्करपारां रौ कढ़ीणौ कढ़ाय, निसैंवार भातौ बंधाय वै पाळा ई मेळै वहीर व्हिया ।

गांव री कांकड़ सूं बारै ढळिया तौ वांनै अेक खंघेड़ा में वणाव-सिणगार करयोड़ी अेक लुगाई दीसी । किणी री उडीक में व्है ज्यूं । सातूं वेली गळाकर धकै जावता दीस्या तौ वा हाथ रौ झालौ करचौ । तौ ई वै वेली आपरै हाल में मस्त वातां करता धकै हालता ई गिया । छिण वास्तै ई नीं ढबिया ।

रूपाळी लुगाई रौ झालौ विरथा गियौ तौ वा अेक नवौ चाळौ करचौ । सांयड वणनै मारग में चरण लागी । संज सजियोड़ी । पण माथै असवार नीं । सातूं वेली अठी-उठी भाळियौ । कठै ई ओठी निगै नीं आयौ । सगळा बेलौ आळोच में पड़ग्या । ओठौ कठै ई पड़ग्यौ के उणनै कोई मार न्हाकियौ । सांयड तौ सूघो अर टाळको दीसै । पीतळियौ पिलांण । लाल लांगी रौ घासियौ । पिचरंगी मोहरी । रूपा रा गिरवांण । कसूंबल कसणा । रूपा रा पागड़ा ।

अेक वेली मोहरी झाऊ झेकाई तौ सांयड तुरत हेटै बैठगी । माथै वैठ खासी अळगी भांय चकारा दिया तौ ई ओठी रा कीं वावड़ नीं व्हिया । तीन दिन अर तीन रात तांई वै उठै ई ढबिया । धणी आवै तौ सांयड संभळाय दे । कठै ई ऊजड़ ढळगी तौ वापड़ौ विरथा डाफा खावैला । देखां मेळा में कोई धणी-धोरी आवै तौ उठै ई हाथौ-हाथ सूंप दे — आ सोच वै सांयड नै साथै लेलौ । भाता दूजा री अबखाई माथै बांध दी । वारी वारी चढ़चा । अैड़ो सोरी सांयड तौ सुपणा में ई नीं आई । पेट रौ पांणी हिलगौ अळगौ, हलका री जात नीं ।

जांणै सांयड अेक ठोड़ ऊभी व्है ।

दिन वधग्यौ तौ वै मारग में ई रात-वासौ लियौ । सांयड नै नागर-वेल री चारौ चारयौ । रात रा छ वेली तौ सूयग्या अर अेक जणौ सांयड री रुखाळी सारू पोहरै वैठग्यौ । मोहरी तुड़ाय सांयड ढळ जावै तौ घणी नै कांई जवाब देवांला ।

पण वां में तौ वळै इदकी व्ही । सांयड तौ सागै ठोड़ ऊभी वागोलती ही, पण पोहरा वाळौ सातमौ वेलौ कोनीं । नीं जावता रा खोज ढूक्या, नीं वळता रा । कांई धरती गिटगी के आभौ खांच लियौ । वात कांई व्ही । कांनी कांनी हळफळाया होय हेरयौ, पण कीं सोय व्ही नीं । घरै कांई मूंडौ लेय जावैला । सगळां रौ साथै ई व्याव अर साथै ई मुकलावौ व्हियौ । अेक वरस ई नीं वीत्यौ । वीनणी री कोडायौ छांनै सोकड़ तौ नीं देयग्यौ । खोज मिटग्या व्हैला । अलंघां री खड़ियोड़ी आंधी आन्धी रात बीणौ बजावती ही । कैयनै जावतौ तौ इत्तौ गिरै अर तळ-तळावण तौ नीं व्हैती । पण कह्यां जावण देतौ कुण । लुगाई री मोह अैड़ौ इज आंधौ व्है । औ रस अेकर ई होठां लाग जावै तौ आदमी धकली लारली कीं नीं सोचै । वेली री हूर पाल वै छवूं जणा धकै वधिया ।

दिन वधियां कांकड़ में ई वळै रात-वासौ लियौ । अेक वेली सांयड रै पोहरै वैठग्यौ, वाकी सूयग्या । तड़कै वी रौ वौ खिलकौ । पोहरा वाळौ वेली अलोप । घणौ ई सोच्यौ । पण कीं वावड़ नीं व्हिया । वेली संसार में व्है तौ लाधै । पण साथीड़ा सोच्यौ के लुगाई रौ भूखौ वौ ई सोकड़ वनाई । पेट री भूख विचै सेज री भूख सौ गुणा वत्ती व्है । रात रा

पोहरै वैठा नै चूड़ा वाळी री हर आई अर वौ विना जतळायां ई न्हासग्यौ ।

दो जणा सेजां री स्वाद लेवण सारू न्हाटग्या तौ लारला क्यूं कम उतरै । मोव्यारपणौ तौ सगळां रै अेक सरीसौ ई आयौ हौ । घणी ई भुळावण दी पण कोई ध्यांन नीं दियौ । बख लागतां ईं सोकड़ मनाई । यूं करतां करतां पांच जणा छांनै न्हाटग्या तौ लारै वच्या दोय जणा नै अणूंतौ सोच लागौ । सांयड खावती तौ मूंडा रै ई लोई लागतौ । जमीं माथै ई छांटां निगै आवती । पण कठै ई कीं वेम जैड़ी बात नीं । सांयड रौ मूंडौ तौ लीलौ-चैर । वोली वोली ऊभी वागोलै । सांम्ही नागरवेल री नीरणी करचोड़ी । पांच जणा अलोप व्हिया तौ दोनूं वेलियां रै हीयै धूजणी वड़गी । दोनां नै अेक दूजा रौ भरोसौ ऊठग्यौ । अेकला न्यारा व्हैतां ईं पांचां री गळाई न्हास जावैला । अेक दूजा नै भुळावणा माथै भुळावणा दी । पगां रै भेळा दांवणा वांध अड़ीअड़ साथै ई सूयग्या । मोहरी पग रै वांध दी । बातां करतां करतां नैं ऊंव आयगी । थोड़ी ताळ पछै पग रै तणकारौ लागौ तौ अेक जणा री नींद उचटगी । पण आंख्यां खुलतां ईं जकौ रासौ वौ आपरी निजरां देख्यौ तौ उणरी पूतळियां अेकण ठौड़ ई चिपगी । सांस है जठै ई ठमग्यौ । सणण करता रूंगता ऊभा व्हैगा । पाखती रा वेली नैं सांयड ऊभी बगळ बगळ मठोठै । फगत माथौ माथौ वच्यौ । करै तौ कांईं करै । इण अणचींती माया सूं कीकर सलटणी आवै । निजोरी वात माथै मिनख रै जाया रौ जोर नीं चालै । वौ आंख्यां मींचनै मड़ा री गळाई सूयग्यौ ।

सांयड अेक नै खाय वोली वोली ऊभगी । ऊंचौ मूंडौ करनै वागोलण लागी । नीं लोई री अेक छांट हेटै पड़ी अर नीं दांतां रै लोई री कस ई लागी ।

घड़ी दिन चढ़चां अेकाअेक वच्योड़ौ सातमौ वेली नीठ डरतौ डरतौ वैठौ व्हियौ । सांयड रै देखतां देखतां छोडनै टळै तौ हांकरतां खाय जावै । अर टळै तौ ई वा टळण दे कद ! भूंडौ मायाजाळ में फंदियौ । सातूं वेलो सांढ़ौ करनै मेळौ जोवण सारू आया अर छवां रौ तौ दुनियां रै मेळा सूं ई अंजळ ऊठ-ग्यौ । मांय रौ मांय रोयौ ।

सेवट डरतौ डरतौ सांयड री मोहरी झाली अर टंवळियां खावतौ धकै वहीर व्हियौ । जावतां जावतां मारग में अेक लांठौ बगेचौ आयौ । भांत भांत रा रूंख अर भांत भांत रा फळ-फूल । हरियाळी अर सुरंगा फूल जांणै मूंडै वोलता । पण वच्योड़ा सातवां वेली रौ आ अनूठी छिब देखनै ई मन हरियौ नीं व्हियौ । उणरै काळजै तौ वळत लाग्योड़ी ही । हीयै धपळका ऊठता हा । मौत री मोहरी झाल सागै टोळचां भंवै । मौत विचै ई मौत रौ सोरकौ भूंडौ व्है ।

आंव रा गोड रै सेंठी मोहरी वांध वौ अठी-उठी फिरण लागौ । सांयड भड़ड़ भड़ड़ पाका आंव खावण लागी । उण आदमी सांम्ही भाळचौ ई कोनीं । पण उणनै तौ आदमी री वास आवती ही ।

सांयड रै सांम्ही भाळतौ वौ पाछ-पगल्यां लारै खिसकतौ गियौ । सांयड तौ भरड़ भरड़ आंवा चिगळती ही ।

वगेचौ सूं वारै निकळतां ई वौ जोजा टांक भरणाटै

उडियो । पंछियां री गळाई पांखां व्हैती तौ वौ मौत नै ई नीं पकड़ावतौ । यूं सांप्रत दौड़नै मौत सूं बचणौ ! कित्ता हरख री री वात ही । धकै जीवण अर प्रांण लारै मौत अर विणास । घड़ी घड़ी लारै भाळतौ अर दौड़तौ जावतौ । अणछक उणनै अेक लुगाई लारै री लारै दौड़ती निगै आई । हीरा - मोती जड़्या गैणा पळपळाट करता हा । गाभां रौ पळकौ गैणां सूं ई सवायौ । रिमझोळां री झमाझम सुभट सुणीजती ही । कांनां में जांणै कळकळतौ तेल झरण लागौ । रूपाळौ री उणियारौ वीजळी ज्यूं झबूका भरतौ हौ । दुनियां रूप रै लारै दौड़ै, वौ पवन रै वेग धकै दौड़तौ हौ । सेवट दौड़तां दौड़तां रूप उण मोटचार नै न्हावड़ ई लियौ । मोटचार रा धै छिलग्या ।

नाडी री पाळ माथै चढ़ वौ डूबण रौ विचार करयौ । इण मौत विचै पांणी री मौत उणनै कीं ठाडी लखाई । के इत्ता में लारै दौड़तौ रूप उणरै आडौ फिरग्यौ । झिरोखा में वैठा राजाजी औ तौतक देखता हा । वा लुगाई झिरोखा रै सांम्ही मूंडौ करनै ऊभी तौ राजाजी री आंख्यां चूंधीजगी । वीजळी सूं ई सवायौ पळकौ पड़्यौ । पछै राजाजी सूं उठै वैठणी नीं आयौ । चित - वावळा व्है ज्यूं हेटै उतर पाळ माथै आया । पगां में मोचड़्यां ई नीं पैरी । अैड़ौ रूप तौ फगत राजा सारू ई व्हिया करै ।

राजाजी नै देख्या तौ वा लुगाई छबरां छबरां रोवण ढूकी । रोवती रोवती ई बोली — भला मिनखां, लारै आई लुगाई नै इण भांत अेकली छोडनै न्हाटग्या । म्हारा कांई दोन व्हैता, थांनै थोड़ौ घणौ ई विचार को आवै नीं । लुगाई री जात

होय म्हैं तीन कोस सूं थारै लारै दौड़ती आई, थें कीं गिनरत ई नीं करी ।

आ कैय वळै डुस्कियां भर भरनै रोवण लागी । आदमी तौ म्हाटौ उणरै सांम्ही ई नीं जोयौ अर नीं कीं जवाब ई दियौ ।

तद राजाजी कह्यौ—भला आदमी कीं पडूत्तर तौ दे, बगना री गळाई यूं नीची धूण करयां कांई बैठौ । इण रूप री खातर सूरज आभा सूं खिरनै हेटै पड़ै अर थूं छोडनै न्हाटौ ।

वौ मोट्यार तौ ई कीं नीं बोल्यौ । जांणै उणरी घांटी कदै ई ऊंची व्हैला ई कोनीं ।

राजाजी कह्यौ—थूं कीं नीं बोलै तौ ई म्हैं थारै मन री बात समझग्यौ । थनै रूप बिचै धन रौ मोह वत्तौ है । इण अपछरा रै बिरौबर खजांना सूं मोहरां जोख दूं, पछै तौ वा !

मोट्यार कीं बोलणी चावै तौ ई उण सूं बोलीजियौ कोनीं । बात गळा रै मांय ई बिखर जावै ।

उण रूप नै देख राजाजी री तौ अकल ई चूंधीजगी ही । राजा बिना अैड़ा रूप नै कुण ढाब सकै । छ रांणियां व्हैतां थकां ई वांनै अैड़ौ लखायौ के वै आज दिन तांई किणी लुगाई री देह रौ परस ई नीं करयौ । वांनै अेक छिण रौ अबेळौ ई बरस जित्तौ लखायौ । मदछकियौ राजा कैवण लागौ—थनै बोलण री कीं जरूरत नीं, बिना कह्यां ई म्हैं थारै मन री बात समझग्यौ । थूं बिरौबर मोहरां में राजी-बाजी । अैड़ौ रूप थां निरधनियां नै नीं ओपै । थनै घणी ताळ उडीकण री जरूरत कोनीं, अबारूं मोहरां भुखाय भेजूं । थूं खुद जांणै के

सबूरी री फळ मीठो व्है ।

राजाजी खुद तौ सबूरी री सीख देय उठा सूं वहीर व्हिया, पण वांरा सूं अेक छिण री ई सबूरी नीं व्ही । अैड़ौ स्वाद तौ वै आज पैली कदै ई नीं चाख्यौ । आ तौ लुगाई री जात ई न्यारी । गुलाब रै फूलां सूं ई कंवळी । डील सूं सौरम री भभरोळां फूटै । जांणै पूनम री चांदणी सांचै ढळी । आंख्यां में समंदर थावा खावै । दांत जांणै साख्यात् मोती । होठ जांणै रेसम रा ताग । डील री छिब माथै जांणै निजर पितळै ।

राजा रै हरख री पार नीं रह्यौ । वौ खाथौ खाथौ उण मोट्यार गोडै गियौ । उणी भांत नीची धूण कर्यां बोलौ-बोलौ बैठो हौ । कीं कैवणी चावै पण बोल गळा रै बारै निकळै ई नीं । राजाजी अणूंता उमाया होय कैवण लागा — म्हैं थनै पैला ई नीं कह्यौ के सबूरी रौ फळ मीठो व्है । थनै कैवण री कीं जरूरत नीं । म्हारा आणंद नै म्हैं इज जांणूं । दोय वळा मोहरां झुकायनै देवूं तौ ई कम ।

आ कैय राजाजी तौ आया ज्यूं पाछा गिया परा । थोड़ी ताळ पछै वौ मोट्यार ई उठा सूं वहीर व्हैगौ । अेक मोहर ई नीं ली । काठ री पूतळो ज्यूं गुमधांम हालतौ रह्यौ, पाछौ लारै फुरनै ई नीं जोयौ ।

अर अठी राजाजी उण नवी अपछरा रै आणंद में अैड़ा बावळा व्हिया के पैला री छवूं रांणियां नै दुहाग दे दियौ । छवां रै ई पेट में आसा ही, घणी लटापोरियां करी पण राजाजी नीं मांन्या । सेर गुज्जी रा आखा दांणा झिलायां पछै वै जांणै

अर वांरौ कांम जांणै । हाथां पीवती, पोवती अर पांणी रा गुटकियां साथै टुकड़ा गिटती । राजा तौ भूल ई गियौ के वौ वांनै कदेई गाजां - वाजां साथै परणीजनै लायौ हौ ।

नवी अपछरा तौ वांनै अैड़ा वस में करचा के वै अेक छिण वास्तै ई रंग - मैल सूं वारै नीं निकळता । वा नवी अपछरा केई चाळा जांणती । राजा रै सांम्ही वोलती तौ अैड़ौ लखावतौ जांणै उणरौ गळौ कोयल रौ माळौ । अर जद वा छवूं रांणियां रै गोडै जाय लड़ती तौ अैड़ौ लखावतौ जांणै उणरौ गळौ नागण रौ विल । उणरा वोल जांणै विस वुझ्या तीर । सुणतां ई काळजा में मळीका ऊठण लाग जाता । छवूं रांणियां उणरी छींयां देख्यां ई थर थर धूजती ।

अेक दिन वा भिमरियोड़ी वांरै पाखती गी । अरळ - विरळ लड़ती कैवण लागी — थांरी आं ओभरियां नै धूंवा वणाय यूं मन में अंजसौ कांई हौ । थांरी ठौड़ कोई लजवंती लुगायां व्हैती तौ वै डूवनै मर जाती । राजाजी तौ डोढ़ वरस सूं थांरी छींयां ई नीं भेंटी, पछै फिरती फिरती अे किणरा लाई ! अैड़ी चंडाळ लुगायां नै घांणी में पीलावै तौ ई कम ।

आ कैय वा राजाजी रै पाखती भेद प्रगट करण सारू वहीर व्ही तौ छवूं रांणियां उणरा पग भालिया । रोई । घणा ई लालरिया लिया, तद जायनै वा धीमी पड़ी । वांनै सील री ऊंची ऊंची वातां वतावण लागी के कूख में डलिया नूं वत्तौ लुगाई वास्तै कोई दुस्मण नीं । वैरी नौ महीना तांई रगत पीय, कूख में वधै । पांखां वारै आयां पछै जीवै जितै मां री रगत पीवै । मन करै जणा ई हंगै, मूतै । गोदै ।

मरै । पींजरा रै पाखती आळा में तीन डाब्रियां । अेक में इमरत, वरसां रा मरचोड़ां रौ नांव लेय छांटा न्हाकै तौ जीवता व्हे जावै । दूजी में जलम री फूटोड़ी आंख्यां सूजती होवण रौ ओसौ । तीजोड़ी में साजी आंख्यां रै फूटण रौ ओसौ । इण ओसा सूं फूटचोड़ी आंख्यां पाछी किणी औखद सूं सावळ नीं व्है ।

डोकरी कंवर नै केई वातां री भुळावण दी । नवी रांणी वाळौ कागद फाड़, दूजौ लिख दियौ ।

कंवर तौ पछै डोकरी कना सूं कागद लेय काळिया भाखर री सोय हवा सूं ई धकै उडियौ । डोकरी भली भांत ठाया-पताया वताय दिया हा । वौ तौ पाधरौ मासी रै खास ठायै पूगौ । भाखर तौ साचांणी काळौ-भंवर । माथै हरियाळी री जात नीं । पंछी तौ अळगा, कोई कीड़ी-मकोड़ौ ई निगै नीं आया ।

वैन रौ कागद वांच वा डाकण अणूंती राजी व्ही । केई वरसां पछै समंचार मिळिया हा । वाई री आंख्यां रौ अवस थोड़ौ घणौ सोच करचौ । भांणजा नै साथै लेय वा सात ताळा खोल मांय वड़ी । सातवीं ओरड़ी में साचांणी सोना रौ पींजरौ । मांय लीली सूवटौ । पाखती आळा में तीन डावियां पड़ी । मासी डाब्रियां नै खोल देखण लागी के भांणजौ ताखौ राख सूवटा रै काळजै कटारी खसोल दी ।

डाब्रियां जोवती मासी तड़ाच खायनै हेटै गुड़गी । धकळ धकळ लोई छूटण लागौ । सूवटा री घांटी मरोड़तां ई मासी रौ सांस निकळग्यौ । पछै उठै ढवणा में कांई सार । तीनूं डावियां लेय वौ कुमारी सूं मिळतौ आपरै राज आयौ । राजा-

रांणी छिण-छिण उणनै उडीकता हा । नवी रांणी नै अणूंतौ इचरज व्हियौ के कंवर जीवतौ कीकर आयग्यौ । डावी देखतां ई उणनै ठा तौ पड़गी के वौ उठै जायनै तौ अवस आयौ ।

कंवर आंख्यां फूटण वाळौ औखद भिलायौ । नवी रांणी राजा रै देखतां सचवाई बणण सारू आंख्यां में ओसौ कांई घाल्यौ, जांणै बळबळता खीरा चेंटचा । आंख्यां री पूतळियां धुराधुर गळनै पांणी व्हैगी । नवी रांणी नै रीस तौ घणी ई आई, पण दरसाई कोनीं । बोली — म्हारौ नाहर बेटौ हीमत तौ घणी ई करी, पण आंचा-आंच में बैन दूजी डावी भिलाय दी । उण में आंख्यां फूटण रौ ओसौ हौ । घालतां ई आंख्यां फूटगी, पण सोच जैड़ी बात नीं । सिंघणी रौ दूध सात वळा घालतां ई आंख्यां पाछी सावळ व्है जावैला ।

मंत्रितण रांणी सोच नीं करण रौ कह्यौ तौ ई राजा अणूंतौ सोच करचौ । कंवर नै तुरत सिंघणी रौ दूध लावण रौ आदेस व्हियौ । वौ तौ लियां दियां ऊभौ हौ । मां सूं आसीस लेय वौ पवन-पंखी घोड़ा माथै बैठग्यौ ।

सिंघां रौ वन उणरै पिछांण्योड़ौ हौ । उठीनै ई घोड़ौ बगडायौ । मज्झ वन में आवतां ई उणनै सिंघ रौ अरड़ावणौ सुणीजियौ । सिंघ जैड़ौ अपरबळी जंगळ रौ राजा जद रोवण लागै तौ इण सूं वत्ता दरद री बात कीं नीं व्है । आखा वन में अरड़ावणा री दरद पाथरग्यौ । पांन पांन सूं आंसू टपकण लागा ।

कंवर अरड़ावण री सोय घोड़ौ मोड़्यौ । पाखती पूग्यां कांई खिलकौ देख्यौ के अेक सिंघणी धूळ में लुटै । अरड़ावै ।

चालं पंजां में तीखा अर ऊंडा कांटा खुबियोड़ा। कंवर तौ दूजौ विचार ई मन में नीं लायौ। टप घोड़ा सूं उतर सिंवणी रै पंजां सूं कांटा काढ़ण सारू बैठग्यौ। होळै होळै सुथराई सूं सगळा कांटा काढ़ लिया। सिंघणी नै लखावतौ के कांटा कांटा रै समचै जांणै पंजां सूं जगजगतौ खीरौ निकळै। कांटा री खटक सूं रूं रूं में वळत लागगी ही।

कांटा निकळतां ईं सिंघणी रै जीव में जीव आयौ। अर-ड़ावणौ मतै ई ढबग्यौ। मुळकण री चेस्टा करती जीमणा पंजा सूं उणरा मोर थापलिया। बोली — भाईड़ा, कांटां री उण वळत बिचै तौ मरणौ हजार वळा बत्तौ हौ। थूं परतख मौत रै मूंडा में माथौ खसोल म्हारै पंजां सूं कांटा काढ़ण री हीमत करी, घणा रंग है थनै अर थारी जरणी नै। भलांईं नौ महीना उदर में लुटियौ। थारौ औ औसांण में कीकर चुकावूंला।

राजकंवर तौ सिंघणी रा दूध सारू निकळियौ हौ। कैतां ईं मन री मंसा दरसाय दी। सिंघणी कह्यौ — आ तौ साव सैल वात है। दूध तौ म्हैं साथै चाल दुवाड़ दूंला। हजार वळा कैवै तौ हजार वार। कोई दूजौ वर मांगै तौ म्हारौ मन राजी व्है। कदै ई अवखी पड़ै तौ म्हनै चितारज्ये, है जैड़ी कांम आवूंला।

तद राजकंवर कह्यौ — अबारूं तौ म्हारै कीं नीं चाहीजै। फगत दूध री मया कर दिरावौ तौ जांणै आखी दुनियां रौ राज भरपायौ। कदै ई अवखी पड़्यां अवस चितारूंला।

पछै सिंवणी कंवर नै लेय आपरी थै माथै गी। विचिया

हैंज करनै बारै आया । पण दूध नीं चूंघायौ । विचियां सूं कंवर री ओळखांण कराई । मां रै पंजां सूं कांटा काढ़ण री वात सुण अणूंता राजो व्हिया । राजकंवर रौ जांणै जित्तौ गुण मांन्यौ ।

सिघणी दूध देवण सारू कंवर रै साथै चाली । राज-दरबार में हाका-हाक मचगी । कंवर नै अैड़ो करामाती अर अपरबळी नीं जांण्यौ हौ । खुद राजाजी सिंघणी नै देख धूजण लागा । कंवर घणौ समझायौ तौ नीठ वांरौ डर मिटयौ । सगळां रै सांम्ही सोना री चरी में कंवर सिंघणी रौ दूध काढ़यौ । नवी रांणी रै ऊभी-आडी नीं माई । कमसल री आ बात ई भरै पड़गी । राजा नै बतावण सारू आंख्यां में सिंघणी रौ दूध तौ घाल्यौ, पण मिस रा चभीका तौ मिटणा सूं रह्या । वा तौ फेर वत्ती लुटण लागी ।

राजाजी रै हीयै दुख उपजियौ पण उपजियौ । अस्टपौर रांणी रै पाखती बैठा रैवै । रांणी कबूड़ो लुटै ज्यूं लुटण लागी । हाय-त्राय करै । राजा दुमनौ होय बोल्यौ—रांणी, मांग्यां हाथै आती व्है तौ थारी पीड़ भुगतण नै त्यार हूं । थारी पीड़ सूं कम दरद म्हारै काळजै ई नीं है । पण जोर कांई करूं । मांदगी आगै राजा ई परबस व्हिया करै । वळै कोई औखद व्है तौ बता, राज रौ आखौ खजांनौ खरचण में ई पाछ नीं राखूं ।

रांणी लुटती लुटती ई बोली—औखद तौ है, साव सूंगौ, पण लावै कुण । कंवर दो वळा फोड़ा भुगतिया उण सिवाय किणी दूजा री हीमत कोनीं जकौ म्हारै बतायौ औखद लाय सकै ।

राजा कह्यौ — वावळी, थनै इग में संकौ करण री कांई वात ! अपांरौ कंवर है, फोड़ा नीं खावैला तौ दूजौ कुण खावैला। थूं वतावै जकी वात कर। थनै साजी-सूरी देखूं उण दिन म्हारौ जमारौ सुफळ व्है।

रांणी नै तौ वतावणौ हौ इज। वा तौ ज्यूं त्यूं राज-कंवर नै मरावणौ चावती। वौ ई सोना रौ सूरज ऊगै जिण दिन कंवर री सुणावणी आवै। उण दिन जीव हेम री जात ठरैला।

रांणी वतायौ के फलांणी फलांणी ठौड़ रगत री गळाई अेक लाल-चुट्ट नाडी है। नाडी रै विचाळै चौकड़दा माथै अेक अघोरी-वावा रौ आसण। अघोरी-बाबौ साठ बरसां सूं तपस्या करै। वौ रांणी रौ सगौ भाई। उण भाई गोडै तेरह सोसनी घोड़ा। वां घोड़ां री लाद कोई लावै अर वा तीन दिनां तांई पाटी वांधै तौ आंख्यां अेक दम सावळ व्है जावै। पैला सूं ई लिवणौ दीसण लागै। वौ दूध ग्यावण सिंघणी रौ हौ, इण वास्तै कार नीं करयौ। कंवर कागद लेयनै जावै तौ भाई तुरत सोना रा कळस में लाद भरनै हाथौहाथ पूगती कर देवै। केई वरस व्हैगा मिळियां नै।

कंवर तौ अणूंतौ कोडायौ होय उणी भांत रांणी रै हाथां लिख्योड़ौ कागद जाव्ता सूं खूंजिया में खसोल वहीर व्हियौ। घोड़ा माथै वैठौ भरणाटै उडियौ जावतौ हौ के उणनै मारग में अेक तपसी रौ आस्रम निगै आयौ। आस्रम री हरियाळी अर फूलां री सौरम नै छोड घकै वधण रौ मन नीं व्हियौ। कीं तिरस लखाई ! तपसी पंछियां नै दांणौ चुगावतौ हौ, सांपां

नै दूध पावतौ हौ अर केई दूजा जिनावरां नै चरावतौ हौ। कंवर नै देख राजी व्हियौ। कोड सूं पांणी पायौ। खांणा री मनवार करी। पूछ्यौ के वौ सिध जावै। कंवर ही जकी घात बताय दी। पण वौ तपसी तौ खोद खोदनै सवालां माथै सवाल पूछण लागौ के राजा इण रांणी सूं कद परणीजियौ, कैड़ी है। रंग-रूप कैड़ौ, सुभाव कैड़ौ।

कंवर बिना किणी चोज रै सगळी बातां साच साच बताय दी। सगळी बातां सुणियां तपसी नै पूरौ विस्वास व्हैगौ के आ रांणी वा इज सांयड वाळी डाकण है। छवूं वेलियां रै बदळा सारू तपसी बणनै जिण दिन सारू तपियौ, वौ दिन अबै नैड़ौ आयग्यौ दीसै। तापणौ ऐळौ नीं गियौ। पछै तपसी खुद कंवर नै आपरा मन री सगळी वात बताय दी के वै सात जणा इग्यारै बरसां पैली मेळौ जोवण सारू वहीर व्हिया अर वां में कांई कांई वांना बोतिया। कीकर वा सांयड छवूं वेलियां नै गट-काय अपछरा रौ रूप धारयौ। वौ तौ लारौ छुडाय लियौ, पण राजाजी हाल धोखा में है। डाकण सूं वदळौ नीं लेय बेलियां नै पाछा जीवता नीं करूं जित्तै गांव सांम्ही मूंडौ ई नीं करूंला। इत्ता बरसां में वौ केई केई संजीवणी विद्यावां सीखी। केई मंतर-जंतर सीख्या। भूत-प्रेतां री लीला सीखी। डाक-णियां री भासा सीखी। संजोग सूं कंवर री अणचींत्यौ साथ मिळग्यौ सौ बरसां री मनचींती अवस भरै पड़ैला।

तपसी कंवर कना सूं कागद लेय बांच्यौ। उणमें अजेज मारण री बात लिखी ही। तपसी कागद फाड़ दूजौ लिख दियौ। रगत री नाडी वाळौ अघोरी-बावौ, रांणी वण्योड़ी इण डाकण

रौ भाई है। दुस्टी हजारूं मिनखां नै खायग्यौ। हाल पोल नीं खुली। रांणी रौ जीव ई उणरै पाखती है। सात भंवारा रै मांय अेक गधौ अर अेक घोड़ौ वंध्योड़ा। दोनां रै पेट में पींजरा। गधा वाळा पींजरा में सूवटौ अर घोड़ा वाळा पींजरा में डोड-काग। डोड-काग में अघोरी-बाबा रौ जीव अर सूवटा में रांणी रौ। आंनै मारयां बिना दोनां नै मारणौ जमराज रै ई सारा री वात नीं।

तपसी ई आपरौ आस्रम छोड कंवर रै साथै व्हैगौ। दोनूं जणा अणूंता उमाया रगत वाळी नाडी पूगा। अघोरी-बाबौ उण वेळा कूंडा में कादौ घोळ-मथोळ नै पीवतौ हौ। नवा-मारगू आता देख्या तौ ही ही करनै हंस्यौ। घोळ पीवतौ ढवनै होठां माथै जीभ फेरण लागौ। दोनूं जणा पाखती आया तौ कैवण लागौ—थां गिरस्ती मिनखां में तौ औ धारौ के घर सारू पांवणौ व्हिया करै। पण म्हैं साधू लोग कैवां के पांवणा सारू घर व्है। म्हैं तौ कादा रौ घोळ पीवूं, पण थांनै पांच पकवांन खवाड़ूंला। डरज्यौ मती।

अेकण सागै दो मिनखां री ताखौ सजियौ देख वौ मन में अणूंतौ राजी व्हियौ। मिनख ई माता अर रूड़ा है, मांस खायां आणंद आय जावैला।

अघोरी-बावा रौ अनूठौ गसकौ देख दोनूं जणा इचरज सूं जोवण लागा। जटा डील सूं ई सवाई लांबी। जमीं माथै टिरै। पण आखा डील माथै माथा रै सिवाय दूजौ अेक ई रूंगतौ नीं। नी भंवारा, नीं भोपणा। नीं मूंछ्यां, नीं संवार। राता दांत। नखां री निसांण-पतांण ई नीं। आंख्यां ई ढालू जेड़ी

राती । नाक सूवटा री गळाई लुळियोड़ौ । नस रै चाळमेर नसां रा आंटा । बाकी डील हुस्तंड व्है ज्यूं मच्योड़ौ । बोली भांत भांत सूं बदळती । कदै ई लखावती के मिनकियां घोरका करै । कदै ई लखावतौ के गिंडक भुसै । अर कदैई लखावती के दो नोळिया माहौमाह खसै । अघोरी-बाबा रै मूंडै वांनै खावण सारू लाळां सळवळण लागी ई ही के कंवर खूंजिया मांय सूं कागद काढ़नै सांम्ही करयौ ।

अघोरी-बाबौ कागद खोलतां ईं पिछांणग्यौ के अै बैन रा आखर । केई दिनां सूं समंचार आया । लाळां नै मन माडै गिटणी तौ पड़ी, पण तौ ई वौ राजी अणूंतौ व्हियौ । इत्ता लांठा भांणजां रौ उणियारौ पैली वार देख्यौ । गालां माथै हाथ फेर भांणजां रौ लाड करयौ । मंतर सूं पांच पक्वांन मंगाय जीमाया । पंयाळ में बण्या कोट रै सै ठांवां री कूंच्यां झिलाय मांमौ मिनख-जिनावरां रै खज सारू बारै निकळयौ । पछै भांणजां रै लारै उत्तौ खटाव कठै ! वै तौ भचौभच सातवा भंवारा में जाय बरसां री साध पूरणी चावता ।

पैली भंवारौ खोलतां ईं वांनै छात रै कड़ां में अणगिण मूंडकिया टिरती निगै आई । पैला तौ सगळी री सगळी मूंडकियां अेकण सागै हंसी अर पछै सागै ई रोई ।

दोनूं जणां नै इण माया री खासौ इचरज व्हियौ । कंवर हीमत करनै पूछयौ के वै पैला क्यूं तौ हंसी अर पछै क्यूं रोई ।

मूंडकियां बोली—जीवता मिनख रौ उणियारौ देख्यां पैला तौ म्हांनै हंसी आवै, पछै आ सोच रोवणौ पड़यौ के थांनै ई

म्हांरी गळाई कड़ा रै टिरणी पड़ैला ।

दोनूं जणा थावस देय कह्यौ — थें रोयनै अपसूण मत करौ, म्हांरै वस पूगतां थांनै ई जीवता करनै छोडांला ।

मूंडकियां कह्यौ के आ तौ वेमाता रै ई वस री बात कोनीं, पछै वां दोनां री हस्ती ई कांई ।

"इणरी तौ वगत आयां ई जांच व्हैला ।" आ बात कैय वै धकै वधग्या ।

लगता ई छवूं भंवारां में इणी भांत मूंडकियां टिरघोड़ी ही । अर उणी भांत हंसणा अर रोवणा सागै संवाद व्हिया । दोनूं जणा वौ ई जवाव देय धकै वहीर व्हैता गिया । सातवा भंवारा रौ ताळौ खोलतां ई गधौ अर घोड़ौ भिभकनै पाछल फोरी । कंवर अर तपसी दोनूं जणा अेकण साथै ई तरवारां सम्हाई । तपसी अेक ई वार में गधा रौ पेट चीरयौ अर कंवर घोड़ा रौ । पेट रै चीरीजतां ई भंवारां में आंधी रा खेंखाड़ बाजण लागा । चिराळियां करतौ अघोरी-वाबौ वतूळिया रै वेग न्हाटतौ आयौ ।

दोनूं जणा झपकै पींजरा हाथ में झेल्या । तपसी तौ सूवटा वाळौ पींजरौ नीं खोल्यौ, पण कंवर अजेज डोड-काग वाळौ पींजरौ खोल्यौ । पांखां तोड़तां ई अघोरी-वावा रा दोनूं हाथ तूटनै खिरग्या । दंत अरड़ायौ — चंडाळां अवै ई मांन जावौ । थांनै धन रौ अखूट खजांनौ सूंपूंला ।

कंवर कह्यौ — मांमौजी म्हांरै धन चाहीजै कठै ।

आ कैय वौ डोड-काग री अेक टांग तोड़ी । दंत री डावी टांग तूटगी । तौ ई वौ अेक पग रै पांण फदाकां भरतौ

न्हाटौ । कंवर इत्ता में डोड-काग री दूजोड़ी टांग तोड़दी । देंत दोनूं टांगां तूट्यां ई अरड़ावतौ अरड़ावतौ गुड़ण लागौ । सातेक पांवडा अळगौ रह्यौ जणा कंवर डोड-काग री घांटी मरोड़ न्हाकी। देंत री ई मूंडकी खिरनै अळगी पड़गी। गुड़कणौ है जठै ई ठमग्यौ । सातूं भंवारां में सैचन्नण व्हैगौ । जांणै सातां में छोटा-मोटा सात सूरज ऊगिया ।

मांमौ मरचां पैली भांणजां नै सगळा भेद बताय दिया हा के इमरत री कूंपली कठै पड़ी, हीरा-मोती कठै गड्योड़ा पड़्या । भांणजां नै हीरा-मोत्यां सूं तौ कीं तल्लौ मल्लौ हौ कोनीं । वै तौ पाधरा जाय इमरत री कूंपली काबू करी । ढकणौ खोल भंवारां में टिरती मूंडकियां माथै छिड़कतां ई वै जीवती व्हैगी । छवूं भंवारां में मांनखौ ई मांनखौ भेळौ व्हैगौ। नाचै, गावै अर चोळ-जोसां करै । मरयोड़ा नै पाछौ जलम मिळणा सूं वत्तौ हरख वळै कांई व्है !

कंवर अर तपसी रा सगळा ई अणूंता गुण मांन्या । पछै आप आपरै घरवाळा सूं मिळण रा कोडाया पाळा ई आप आपरै गांव धकी न्हाटा ।

पींजरौ बारै आवणा सूं डाकण-रांणी रौ जीव घोटीजण लागौ । वा हाय-त्राय हाय-त्राय करण लागी । अबै राजमैल छोड़ जावै तौ ई कठै । कंवर नै मारयां पाछा सै थाट जम जावैला । अबकी आय जावै तौ रात रा सूता नै डकार जावैला ।

कंवर तौ सोसनी घोड़ां री लाद लेय आयौ । राजाजी खोळा में लाद लेय रंग-मैल सांम्ही न्हाटा । गंगाजळ में

अलोय हाथां पाटी वांधी। नवी रांणी रै हीयै तौ खावूं खावूं लाग्योड़ी ही, पण तौ ई वा राजा नै भरमावण सारू कह्यौ के पाटी बांवतां ईं खासौ फरक पड़ग्यौ। कालै तांईं सावळ व्है जावैला।

राजा प्रीत में वावळी होय रांणी माथै हुळसण वाळौ ई हो के अेक डावड़ी आय कह्यौ— अंदाता, दरबार में अेक विचित्र जोगी हाजर व्हियौ। उणरी झोळी में नीं नीं व्है जैड़ी माया वतावै। वौ खेल जोवण सारू आपनै तुरत बुलावै।

राजा साधू, संत, जोगी अर तपसियां री अणूंतौ आदर करतौ हौ। डावड़ी माथै किणी भांत री खीझ दरसायां बिना खाथौ खाथौ दरवार सांम्ही वहीर व्हैगौ।

राजाजी सिंघासण माथै बिराज्या। जोगी ऊभौ होय कैवण लागौ— अंदाता, आज पैली नीं कोई सुण्यौ अर नीं कोई सांभळियौ, अैड़ौ अजीब खेल वतावूं।

राजाजी रै आयां पछै जोगी अेक छिण री ई ढील नीं करणी चावतौ हौ। झोळी सूं पींजरौ बारै काढ़चौ। सगळा दरवारियां सांम्ही पींजरौ घुमाय पूछचौ— इण पींजरा में औ कांईं है?

दरवारी अेकण सागै वोल्या— सूवटौ, सूवटौ।

जोगी मुळकनै वोल्यौ— हां, थां गिरस्तियां री आंख्यां तौ औ सूवटौ ई दीसै, पण औ सूवटौ है नीं। आ थांरै राजाजी री नवी अपछरा है। थांरी भूल अर म्हारै साच रौ थांनै अवारूं पतौ पड़ जावैला।

राजाजी थोड़ा सा झिझकिया। जित्तै जोगी पींजरौ खोल

सूवटौ बारै काढ़चौ ।

सोना रा पिलंग माथै सूती रांणी रौ जीव फड़फड़ायौ। वा हळफळाई होय बैठी व्ही । उघाड़ै माथै ई राज-दरवार सांम्ही न्हाटी ।

जोगी रा हाथ में सूवटौ देखतां ईं नवी रांणी जोर सूं कूकी — मारौ, मारौ इण जोगीं नै, औ अफंडी है ।

रांणी री गसकौ देख्यौ तौ राजाजी उणरै सांम्ही न्हाटा । कह्यौ — म्हारी घण मांनेतण रांणी, बात कांईं व्ही । थूं इण भांत खुलै केसां दरबार में क्यूं आई ?

रांणी दोनूं हाथां सूं केस खांचती बोली — पैला इण जोगी रौ माथौ कलम करावौ तौ धकली बात बतावूं ।

राजा हथमारां नै सांनी करी । हथमार नागी तरवारचां लेय जोगी नै मारण सारू ताचकिया ।

पण म्हाटौ जोगी तौ डरचौ ई नीं । सागै ठौड़ ई ऊभौ रह्यौ । सूवटा री अेक टांग तोड़नै अळगी वगाई ।

बड़ा इचरज री बात के नवी रांणी री अेक टांग तूटनै अळगी जाय खिरी ।

हथमार औ खिलकौ दीठौ तौ वै है जठै ई काठ री पूतळियां ज्यूं हाथां में तरवार थांम्यां ऊभा रह्या । राजाजी री अकल ई चकरीजगी । औ कांईं खिलकौ व्हियौ !

नवी रांणी चंडी रौ विकराळ रूप धार अेक पग रै पांण ई जोगी नै मारण सारू न्हाटी । जोगी तौ चुळियौ ई नीं । वौ सूवटा री दूजोड़ी टांग तोड़नै वळै अळगी वगाई । लोग-बाग कांईं देख्यौ के सूवटा री तूटोड़ी टांग रै समचै ई रांणी

री टूजोड़ी टांग तूटनै अळगी जाय पड़ी । रांणी हेटै गुड़गी । तूट्योड़ी टांगां सूं लोई रा रेला बहण लागा । जोस में अठी-उठी उछळती-फांदती री । आंगळियां ऊंची करती थकी अरड़ाई — थारी मींडकी गाय हूं, कीकर ई म्हारा प्रांण बचा ।

जोगी बोल्यौ — म्हारा छवूं बेली अर राजा रा पांचूं कंवर जीवता करै तौ प्रांण बगसूं । नींतर इणी पलक थारी घांटी जावै ।

रांणी पड़ी पड़ी ई अरड़ाई — करूं, अबार जीवता करूं ।

आ कैय वा टुकियां सूं अेक कूंपलौ काढ़्यौ । ढकणौ खोल अठी-उठी छिड़कायौ के अणछक अेकण सागै इग्यारै जीव प्रगट व्हिया ।

जोगी आपरै देलियां नै ओळखिया । रांणियां आपरै राजकंवरां नै ओळखिया । न्हाटी । हांचळ चुंघावण लागी ।

जोगी कैवण लागौ — खेल सरू करचौ सौ तौ संपूरण करणौ पड़ैला ई । अवै बिना समझायां ई थां लोगां में इत्ती तौ अकल व्हैला के राजाजी री आ नवी अपछरा कुण ही । राजाजी रै समझ में नीं आवै तौ थें वांनै निरांत सूं समझाय दीजौ ।

राजाजी मोळा पड़नै कह्यौ — अवै किणी रै समझावण री जरूरत कोनीं, मतै ई समझग्यौ । इणरा रूप आगै तौ म्हैं साव आंधौ व्हैगौ ।

जोगी कह्यौ — इण में कीं नवादी बात कोनीं, राजा जलम सूं ई आंधा, बोळा अर अकलहीण जलम्या करै ।

राजाजी तौ चितवंगिया व्हियोड़ा हा । जोगी री आधी-

दूधी बातां सुणी अर आधी सुणी ई कोनीं । छवूं राणियां जोगी रा पग चांप्या । जोगी आसीस दीवी — दूधां न्हावौ अर पूतां फळौ ।

पछै जोगी जोर सूं बोल्यौ — हां, तौ अबै रांमत संपूरण व्है । सावळ देखज्यौ ।

आ बात कैय वौ सूवटा री घांटी मरोड़ी । डाकण री ई घांटी मुरड़ीजी । अरड़ावण री घणी ई कोसीस करी, पण बोल नीं निकळिया । गळा रै साथै बोल ई मरोड़ीजग्या । पछै जोगी सूवटा री गाबड़ तोड़ ऊंची वगाई के घांटी तूटनै मतै ई ऊंची उछळी ।

खेल संपूरण करचां पछै जोगी री उठै कांई कांम । वौ तौ घणा नेवरा करचा तौ ई नीं ढब्यौ । छवूं वेलियां रै साथै आपरै गांव सांम्ही वहीर व्हैगौ । मेळौ जोवण सारू आया हा अर औ कोई दूजौ ई मेळौ व्हैगौ ।

छवूं बेलो जोगी री खिखरां करता, मारग वेवता यूं ईं चाळ-चोळ में कैवण लागा — भाया, थूं निरभागी रैगौ । मरचां पाछौ जीवनैं, जीवणा रौ आणंद कीं न्यारौ ई है, जिणरौ साव थूं बिना मरचां नीं ले सकै ।

तद जोगी कह्यौ — म्हैं मर जातौ तौ दूजी वळा जीवणा रौ आणंद कोई दूजा ई लेवता । पण थें सगळा सभागिया हौ तौ म्हैं निरभागी कीकर व्हियौ ! म्हैं थां छवां रौ आणंद अेकलौ लेवूं ।

उणरै मूंडा सूं औ बोल निकळतां ईं आभा में सूरज रै जोड़ै अेक नवौ सूरज वळै भळकियौ । बिना बीज-बादळां रै

मोत्यां री विरखा व्ही पण सातूं वेली आपरा आणंद में इत्ता मगन हा के मोत्यां सांम्ही वांरी निजर ई नीं गी। पगां सूं मोत्यां रा थर नै कुचळता भरणाटै आपरै गांव री सोय हालता ई गिया। अर नीं वांनै आपरा आणंद रै आगै दूजोड़ो सूरज ई निगै आयो।



अनूठौ रूंख

अेक ही विधवा मां । उणरै ही अेक वेटौ । फूठरौ - फररौ । गोरौ - निछोर । पतळौ । छरहरौ डील । मोटी आंख्यां । तीखौ नाक । मोत्यां रै उनमांन धोळा दांत । गुलाबी मुरायां । मीठी बोली । लांबी नस । माथै काळा भंवर अर चीकणै केसां री मुगटाळौ झडूलौ । नित तड़कै ऊठतां पांण उणरी मां सात वार थुथकौ न्हाकती । काजळ काढ़ती । मूंडा रै काळी टीक्यां देवती, निजर नीं लागै इण वास्तै केई टूणा - टोटका करती ।

अेक दिन मां अेकासणौ करचौ । बेटौ जांण्यौ के अेकासणौ कीं उम्दा कांम व्है । मां री देखा - देख उणनै ई हर आयगी । वौ मां नै कह्यौ — मां, म्हैं ई अेकासणौ करस्यूं ।

मां कह्यौ — नीं बेटा, थूं अेकासणौ नोज करै । भूखौ रह्यां थारौ कंवळौ डील कुम्हळाय जावैला ।

बेटौ बिचाळै ई पूछ्यौ — जद थूं अेकासणौ क्यूं करै ? थूं तौ म्हारै बिचै घणी थाकोड़ी है ।

मां कह्यौ — म्हारौ कांई बेटा, म्हैं तौ वाळियोड़ौ खातौ हूं । थारौ उणियारौ देख जीवूं । औ जलम तौ विगड़ियौ जकौ बिगड़ियौ, धकलौ सुधारणौ चावूं ।

मां री देखा देख वेटौ कह्यौ के वौ ई धकलौ जलम सुधा-

रणी चावै ।

मां भुथको न्हाकनै वोलो — वेटा, थारो ओ जलम ई हजार जलमां जित्तो है, थूं धकला रो क्यूं सोच करै ।

वेटा नै गुलगुला खावण रो अणूंती भावड़ ही । अेकासणा रो आड़ो लेवतां देख्यो तो मां कह्यो — म्हारो राजो - वेटो डायो घणो, मीठा - गुट्ट गुलगुला वणायनै खवाड़ूं । भेळो आंगळियां नीं खाय जावै तो म्हनै कैजे ।

गुलगुलां रो नांव सुणतां ई वेटो अेकासणा री बात भूलग्यो । गुलगुलां री हर लागग्यो ।

कुलड़ी में माळवी गुळ गाळ पतळो घोळ करचो । कड़ावलिया में सूवा री पांख रै उनमांन तिल्ली रो तेल चाढ़चो । वेटा नै सात गुलगुला काढ़नै दिया । बेटा रै तो जांणै कुवेर रो खजांनो हाथ लागो ।

आंगणा में कूदतो कूदतो छ गुलगुला तो खायग्यो । अेक गुलगुलो खूंजिया में घाल घर सूं वारै निकळग्यो । पाधरो नाडो री पाळ आयो । हाथां ई धूळ उकराळ अेक थांणो वणायो । खुणचियां खुणचियां पांणी राळचो । गुलगुला नै वेंत ऊंडो रोपनै कैवण लागो — गुलगुला गुलगुला रे, कालै रो कालै ऊग जाजे, नींतर पाड़ - पूड़ गोरी गाय नै खवाड़ दूंला ।

गुलगुलो तो छोरा रो कैणो नीं लोप्यो । कालै रो कालै ऊगग्यो । छोरो वळै खुणचियां खुणचियां पांणी पायो । वोल्यो: गुलगुला गुलगुला रे, कालै गिरियां तांई डीगो नीं वध्यो तो पाड़ - पूड़ गोरी गाय रै मूंडागै न्हाक दूंला ।

दूजै दिन गुलगुलो गिरियां तांई डीगो वधग्यो । छोरो

अणूंतौ राजी व्हियौ । चाळ में भर भर पांणी पायौ । कह्यौ— गुलगुला गुलगुला रे, कालै गोडां तांई डीगौ नीं वध्यौ तौ पाड़-पूड़ गोरी गाय रै मूंडागै न्हाक दूंला ।

गुलगुलौ तौ दूजै दिन गोडा तणौ वधग्यौ । छोरौ राजी होय ऊंचौ कूदयौ । चाळां भर भर थांणा में पांणी राळयौ । बोल्यौ— गुलगुला गुलगुला रे, कालै तांई कड़ियां तणौ डीगौ नीं वध्यौ तौ पाड़-पूड़ गोरी गाय रै मूंडागै न्हाक दूंला ।

गुलगुलौ तौ कड़ियां तांई ऊंचौ आयग्यौ । लीलौ-चेर । गुमटी व्है ज्यूं गोळ-मटोळ । धोबां धोबां थांणा में पांणी सींच्यौ । कह्यौ— गुलगुला गुलगुला रे, गळा तणौ डीगौ नीं वध्यौ तौ जड़ां समेत पाड़-पूड़ गोरी गाय रा ठांण में चरण सारू न्हाक दूंला ।

गुलगुलौ तौ दूजै दिन गळा तांई डीगौ वधग्यौ । हरियल । कंवळौ । घेर-घुमेर । छोरौ तीन-चार वळा खाकां पिदावतौ ऊंचौ कूदयौ । अणूंतौ उमायौ धोबां धोबां थांणा में पांणी सींच्यौ । कह्यौ— गुलगुला गुलगुला रे, ताळौ-ताळ डीगौ नीं बध्यौ तौ पाड़-पूड़नै गोरी गाय रा ठांण में न्हाक दूंला ।

छोरौ तौ जांभरकै जांभरकै ई नाडी सांम्ही सोकड़ मनाई । गुलगुला रौ अनूठौ रूंख तौ ताळ तांई डीगौ वध्योड़ौ झोला खावतौ हौ । चित्रांम री भांत रूपाळौ अर सुहाणौ । चाळां भर भर पांणी सींच्यौ । छिवरौ अपड़नै बोल्यौ— गुलगुला गुल-गुला रे, डाळा सूं डाळौ नीं छोड्यौ तौ भोटा कवाड़िया सूं वाढ़ गोरी गायं रै मूंडागै राळ दूंला ।

गुलगुला रौ रूंख तौ दूजै दिन इत्तौ जंगी व्हैगौ के छोरौ

चारूं-मेर भळाका लगावतौ निरी-ताळ तांई जोवतौ रह्यौ। उणरौ मन हरियौ व्हैगौ। पछै दूकौ जकौ आंगळियां सूं उकराळ उकराळ थांणौ मोटौ करयौ। आखै दिन खुणचियां खुणयिचां पांणी सींच्यौ। सिझ्या रा घरै जावती वगत कह्यौ— गुलगुला गुलगुला रे, पांन सूं पांन नीं जुड़्यौ तौ जड़ां समेत खोद-खादनै, गोरी गाय रा ठांण में कूतर करनै चरावूंला।

दूजै दिन पांन सूं पांन जुड़ग्यौ। नाडी री छिब बधगी। मारगू थुथकी न्हाकता। छोरौ देखतां पांण मगन व्हैगौ। फुड़-कली व्है ज्यूं ओळूं-दोळूं परकमा दी। पांन पांन निरख्यौ। पछै दूकौ जकौ आखै दिन धोबां धोबां पांणी पायौ। सिझ्या रा वळती वगत कह्यौ— गुलगुला गुलगुला रे, खीचड़ सूं खीचड़ नीं लूंब्यौ तौ गोरी गाय रा ठांण में नीरणी करूंला।

दूजै दिन खीचड़ री सौरम सूं चारूं कूंटां मार भभरोळां फूटण लागी। लोग-बाग देखता जकौ ई हैरांन। अैड़ौ अनूठौ रूंख तौ आज पैली कोई देख्यौ ई नीं। छोरौ देखनै इत्तौ राजी व्हियौ जांणै दुनियां रौ चकवौ राज मिळग्यौ। खीचड़ सूं लड़ा-झूंम रूंख अैड़ौ लहरावतौ जांणै देखण वाळा सपनौ देखता व्है। छोरौ आखै दिन पांणी पायौ। सिझ्या रा वळती वगत कह्यौ: गुलगुला गुलगुला रे, कालै फूल सूं फूल नीं 'जुड़्यौ तौ जड़ियां सूदौ वाढ़ गोरी गाय नै नीर देवूंला।

फूल सूं फूल जुड़ग्या। लड़ाझूंम। अैड़ौ रूंख तौ पैला सुण्यौ ई नीं। छोरा रै हरख रौ पार नीं रह्यौ। पाळ माथै रा इण अनोखा रूंख रै पछै नाडी मूंडै बोलण लागी। फूलां कांनी देखतां देखतां छोरा री नस दूखण आयगी। चेतौ व्हैतां ई वौ

धोबां धोबां थांणौ भरयौ । सिझ्या रा वळती वेळा कह्यौ —गुलगुला गुलगुला रे, जे कालै भाग फाट्यां साचैला गुलगुला सूं गुलगुला नीं जुड़्या तौ तीखी कवाड़ी सूं छांग-छूंग अर वाढ़-बूढ़ गोरी गाय मूंडागै न्हाक दूंला ।

रात रा छोरा नै आखो रात नींद नीं आई । गुलगुलां रौ कोडायौ सूवण री घणी ई चेस्टा करी, पण नींद नीं आई जकौ नीं आई । पूनम री चांदणी रात ही । वौ तौ घड़ी रात थकां नाडी री पाळ माथै गियौ परौ । मां घड़ी घड़ी पूछ्यौ तौ वौ फगत अेक ई जवाब दियौ के वा भखावटा तांईं माठ राखै, पछै मतै ई जाच पड़ जावैला ।

पाळ चढ़तां ईं उणनै गुलगुलां री मीठी सौरम आई । गावा घी में तळियोड़ा व्है ज्यूं । गुलगुलां री सुवास सूं छोरा रै मूंडा में लाळां सळवळण लागी । गुलगुला सूं गुलगुलौ जुड़-योड़ौ हौ । खासी ताळ तांईं वौ चितबंगियौ व्है ज्यूं सौरम लेवतौ रह्यौ । चांदणी रात में गुलगुला फूलां सूं ईं इदक फूठरा लागता हा ।

सूरज री किरणां री परस व्हैतां ईं गुलगुला सोना री गळाई पळपळाट करण लागा । छोरा रौ मन अैड़ौ डुळियौ के पछै उणसूं अेक पलक री ढील नीं व्ही । फदाकां भरतौ रूंख माथै चढ़ग्यौ । दोनूं हाथां सूं तोड़-तोड़ गुलगुला खावण लागौ । जांणै माखण अर मिसरी री इज डळियां । वौ तौ गपाक गपाक बिना दांत लगायां ईं गिटण लागौ । मां तौ अैड़ा गुलगुला कदै ई नीं बणाया । तोड़ै ज्यूं गुलगुला पाछा लाग जावै । चार मोट्यार-काटी खावै जित्ता वौ अेकलौ गुलगुला खायग्यौ । आज

दुनियां में उण सूं वत्तौ सुखी दूजौ कुण व्है सकै !

घाप-धूपनै डकारां खावतौ हो के इत्ता में दो मां बेटियां उण अनोखा रूंख तळाकर नीसरी । मां अणूंती बूढ़ी खंखर ही । बेटी गुलगुला रा रूंख माथै बैठा छोरा रै साईनी ही । बैड़ी ई पतळी, गोरी ।

डोकरी दूबी ही । दोवड़ी कमर । हाथ में गेडी । दूब रा वूंबा सूं तीन हाथ डीगी । कड़ियां थोड़ी सीक पाधरी करनै, लिलाड़ माथै हाथ रौ छाजौ बणाय पूछ्यौ — बेटा, औ कंणौ रूंख है । सवा सौ वरसां रै नैड़ी पूगी, मुलकां भटकी, श्रैड़ौ रूंख म्हैं तौ म्हारी निजरां नीं तौ दीठौ अर नीं कानां सुण्यौ ।

छोरौ गुलगुला रा रूंख माथै बैठौ, टांगां हिलावतौ हिलावतौ ई बोल्यौ — डोकरी मां थूं हाल तांई देख्यौ ई कांई । औ है गुलगुलां रौ रूंख । म्हारै हाथां रुप्योड़ौ, म्हारै हाथां सींच्योड़ौ !

डोकरी कह्यौ — बेटा, मिसखरियां करण सारू म्हैं इज थनै मिळी । गुलगुला रौ ई कदै रूंख व्हिया करै ।

छोरौ कह्यौ — दीखै कोनीं, अणगिण गुलगुला ई गुलगुला टिरै ।

डोकरी बोली — म्हनै सावळ नीं सूझै, इण वास्तै ई तौ थनै बूझ्यौ ।

छोरौ विचाळै ई बोल्यौ — थनै नीं सूझै तौ थारी बेटी नै बूझलै । इणरी आंख्यां तौ प्याला जित्ती मोटी है ।

मां आपरी बेटी नै बूझ्यौ तौ वा कह्यौ के दीसै तौ

गुलगुला व्है ज्यूं है ।

डोकरी मूंडा सूं पड़ती लाळ नै पाछी खांचती थकी बोली— बेटा, थारी रांम हजारी ऊमर करै । थोड़ा गुलगुला मां-बेटी नै ई खवाड़, अेकलौ अेकलौ ई कांई खावै ।

छोरौ आज पूरौ मस्त अर पूरौ राजी हौ । कह्यौ— रूंख लाग्या गुलगुलां री कांई कमी । थूं कैवै जित्ता तोड़-तोड़नै न्हाक दूं । म्हारा अै गुलगुला तौ तोड़ै ज्यूं वधै ।

डोकरी रै माथै खारौलियौ हौ । मांय सूळां भरी । लांबी अर तीखी । छोरौ कह्यौ— म्हारै हेटै खारौलियौ मांड, म्हैं अबार गुलगुलां सूं भर दूं ।

डोकरी डिचकारी देवती बोली— नीं बेटा, खारौलिया में सूळां भरी । गुलगुला पड़्यां भाग जावैला ।

छोरौ कह्यौ— तौ कोई बोरी लेयनै आव ।

"म्हारै कनै बोरी कठै !"

"तौ पल्लौ मांड ।"

"पल्लौ चीकणौ व्है जावै ।"

छोरौ गुलगुलौ तोड़नै कह्यौ— चाल, हथाळी मांड । म्हैं पाधरौ फेंकूंला ।

डोकरी वळै उणी भांत डिचकारी देवती बोली— नीं बेटा, गुलगुला ऊंना घणा, हथाळी वळ जावै ।

छोरौ जूंझळ खायनै कह्यौ— तौ पछै इणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं । कोरी नटै ई नटै, कीं दूजौ उपाव तौ वता ।

डोकरी कह्यौ— बेटा दांत नुगरा व्है जावै, पण आंत नुगरी नीं व्है । मरियां पछै ई म्हारी आंतां थनै आसीस देवैला ।

पोत्या रा पल्ला में बांव गुलगुला टेर दे, थारो रांम भलो करै ।

कैतां ई छोरो लप मांनग्यो । गुलगुलां रा रूंख माथै बैठो, वो आं छोटी-मोटी वातां री कांई परवा करतो । अेक पल्लै तीन चारेक धोबा गुलगुला बांध हेटै टेर दिया । दूजोड़ा पल्ला रो हाथ रै काठो आंटो दियोड़ो हो ।

डोकरी टिरती पोटळी नै सेंठी पकड़ जोर सूं अणचींत्यो भटको दियो सो छोरो तो भटका रै पांण ई हांकरतां हेटै आय पड़्यो । पड़तां ई चेतो आयां पैली दोनूं मां-बेटियां उणनै उंचाय खारोलिया रै मांय पटक दियो । डोकरी खुदोखुद खारोलिया नै आपरै माथै उंचायो । छोरा नै चेतो व्हैतां ई वो अरड़ायो । ठौड़ ठौड़ तीखी सूळां गडगी ही । घणा ई नेवरा करया पण डोकरी नीं मांनी । दांत पीसती कह्यो—कूकतो ढबै के नीं ढबै, घणा तनपट करया तो काचो ई खाय जावूंला । जांणै म्हैं कुण हूं । डाकण !

छोरो रोवतो ढबनै कह्यो—थूं कैवती ही के दांत नुगरा व्है जावै पण आंतां नुगरी नीं व्है । म्हैं गुलगुला दिया जिणरो औ बदळो चुकावै ।

डोकरी किड़किड़ियां चावती बोली—अेक ओटाळ में तो घाटो नीं है । थारा गुलगुला रै तो दांत ई नीं लगायो, पछै आंतां रै नुगरा री तो बात ई कांई । पण औ किसो थारै बाप रो रूंख है । दाय पड़ै जित्ता गुलगुला खावूंला, थूं पालण वाळो कुण व्है ।

छोरो ई समभग्यो के अबै मूंडै भिकाळ करणी बिरथा ।

मौका री जुगत सूं ईं वात वणैला । अवार तौ इण अवखी वेळा लाळालोळा सूं धकावणौ सावळ ।

छोरौ कह्यौ — म्हनै खायां थारी आंतां राजी व्है तौ घणी आछी बात। मरियां बळणा विचै तौ किणी मिनख री खज बणणौ आछौ । म्हनै तौ म्हारा गरू नित आ इज सीख देवै ।

छोरा री बातां सुणनै डोकरी ई थोड़ी-घणी धीजगी । राजी होय बोली — अैड़ौ नांमी गरू कुण है रे ! सीख तौ नांमी दी ।

छोकरा रौ निसंकपणौ देख डाकण अणूंती राजी व्ही । नीं डरण वाळां रै मांस रौ स्वाद न्यारौ इज व्है। डरकण मिनखां रौ मांस लुकथुकौ व्है जावै । आज केई बरसां सूं मां-वेटियां नै मिनख रै भख रौ आणंद आवैला ।

मां-बेटियां री बात-चीत सूं सूळां माथै पड़्या छोरा नै इण बात री भणकारी व्हियौ के वै किणी नाडी री पाळ रै गळाकर निकळै । वौ कह्यौ — डाकण मां, म्हनै तिरस आकरी लागी । डील रौ सै लोई हकै ।

डाकण बेटी रै सांम्ही देखनै बोली — आ ई वात नांमी व्ही, धकै जायनै कैवतौ तौ गोता पड़ता। पाछौ आवणौ पड़तौ। वा तौ छोरा नै माथै उंचाय भरणाटै पाळ चढ़गी । तीर रै पाखती खारौलियौ उतार बोली — पीलै, धापनै पीलै, अैड़ौ निरमळ पांणी ऊमर में ईं नीं पीयौ व्हैला ।

छोरौ कह्यौ — म्हारा सूं सूळां रै कारण ऊठीजै कोनीं, थें लायनै पाय दो ।

डोकरी गेडी पटकनै घसळ भरती बोली — ओटाळ, म्हारै माथै ठोर जतावै। ऊठ, हाथां पीलै, नीं तो वा।

डाकण अर बेटी उणरा हाथ झाल ऊभौ करचौ। सूळां ठौड़ ठौड़ खुबियोड़ी। पण छोरौ नाक में सळ ई नीं घाल्यौ। बोलौ बोलौ पांणी पीवण सारू मांय बड़चौ जकौ बड़तौ गियौ। छाती तणौ पांणी आवतां ई लप छिमकी मारनै अलोप व्हैगौ। बेटी मां नै कह्यौ तौ वा खीझ करनै हेलौ मारचौ — देख, गुलगुलां वाळा छोकरा मांनजा, म्हारै जैड़ी भूंडी नीं है।

वा हाका करती री अर वौ मछळी रै उनमांन तिरतौ तिरतौ परली तीर निकळग्यौ। नाडी अणूंती लांठी ही। बारै निकळतां ई वौ तौ न्हाटौ। काठी आंगणौ आतां ई घोड़ा रै वेग न्हाटौ। वै हेलौ मारती री अर वौ पाधरौ गुलगुलां रौ रूंख नैड़ौ लियौ। थोड़ी ताळ बिसाई खायनै वळै गुलगुला रा रूंख माथै चढ़ग्यौ। तोड़ तोड़ गुलगुला खावण लागौ।

डाकण सूंघनै पतौ पाड़ लियौ के वौ तौ पाछौ उण इज रूंख माथै बैठौ मीठा मीठा गुलगुला खावै अर मछरां करै। बेटी नै घरै भेज वा रूप बदळनै उणीज रूंख तळाकर नीसरी। बुढ़ापौ अर डूब तौ नीं मिटी पण उणियारौ अर बोली खासी-भली बदळ ली। उणी भांत ऊंचौ मूंडौ करनै लिलाड़ माथै हाथ रौ छाजौ बणाय पूछ्यौ — बेटा, औ अैड़ौ नवादौ रूंख कैणौ। म्हैं तौ इत्तै मांन व्हैगो तौ ई अैड़ौ रूंख नीं देख्यौ।

छोरौ तड़कनै बोल्यौ — आंख्यां फूटोड़ी है कांई! दीसै कोनीं — गुलगुलां रौ रूंख है।

डोकरी कह्यौ — दीसै तौ ई कांई व्है बेटा, गुलगुलां रौ

रूंख तौ रांमजी ई नीं देख्यौ व्हैला । दो चार चखावै तौ साच आवै ।

छोरौ खमखरी खाय बोल्यौ — डाकण रांड, थारौ काळौ मूंडौ कर अठा सूं । अबै थारी फाकी में नीं आवूं । म्हारा मांस बिना मैली नीं खायलै ।

डोकरी अणजांण वणी थकी कांनां में आंगळियां घाल कैवण लागी — बेटा, थूं अै कांई रांम-बायरी वातां करै । म्हैं तौ इण नाडो री पाळ माथै आज ई आई । बकरी नै सोधण सारू अठी आई, थूं कैवै तौ बिना सोध्यां ईं जावूं परी । अेजां-बेजां क्यूं बोलै ।

छोरौ टकटकी लगायनै जोयौ । सान्नांणी उणरै खांधै दीवड़ी टिरती ही । उणियारौ ई दूजौ । दूजी डोकरियां तौ केई व्है ! थोड़ौ मोळौ पड़नै कैवण लागौ — वा डाकण हूबोहूब थारै जैड़ी ही ।

डोकरी हंसनै बोली — बेटा, थूं तौ साव इज भोळौ है । म्हारा अेवड़ री सगळी लरड़ियां दीखण में अेक जैड़ी दीखै, पण सगळां रा पिंड अर जीव न्यारा न्यारा । गाळचां क्यूं काढ़ै, थारी मरजी नीं व्है तौ म्हैं म्हारै गेळै जावूं । बकरी नीं लाधी सही ।

आ कंय डोकरी टुळक टुळक धकै वधगी । तद छोरा नै विस्वास व्हैगौ के आ पैला वाळी डाकण नीं है । हेलौ मारचौ — डोकरी-मां जा मती । गुलगुलां री कांई घाटौ । भावै जितरा खा ।

डोकरी सुभट सुण्यौ तौ ई धकै हालती री । छोरौ वळै

हेलो मारयों तद वा पाछी आई । छोरो बोल्यो — ओळखणा में भूल व्हेगी । वा डाकण म्हामें भूंडी घणी बिताई, जिणसूं रीस आयगी । दीवड़ी री मूंडी खोल, गुलगुलां सूं सेंठी भर दूं ।

"मूंडी छोटी घणी, गुलगुला वारै खिर जावैला ।"

छोरो गुमेज करतो बोल्यो — म्हारो निसांणो अचूक, अेक ई बारै नीं पड़ण दूं । मूंडो कित्तो ई छोटो व्है, गुलगुला सूं तो मोटो है ।

डोकरी कह्यो — दीवड़ी में गेरयां तो पांणी चीकणो व्है जावैला ।

"तो पल्लो मांड ।"

"ओढ़णी भीर भीर व्हियोड़ी, गुलगुला पड़तां ई फाट जावैला ।"

"हथाळी मांड ।"

"गुलगुला ऊंना, म्हारा हाथ बळ जावै ।"

"म्हारै दाई माथै चढ़नै खायलै ।"

डोकरी हंसनै कैवण लागी — थारै वरसां ही जद चांद अपड़ण री हूंस राखतो, पण अबै तो थहळी ई नीं लांघीजै, थूं रूंख माथै चढ़ण री बात भलां कही । मिसखरी करण नै म्हैं इज लाधी !

छोरो लचकांणो पड़नै बोल्यो — जद म्हैं ई कांई करूं । कोरो नटै ई नटै, कीं उपाव तो बता ।

डोकरी कह्यो — पोतया रै पल्लै बांधनै टेर दे, साचा मन सूं गुलगुला खवाड़णी चावै तो ।

छोरो पछै कीं जेज करी ई नीं । धोत्रा पांच-सातेक

गुलगुला बांध पोत्यौ हेटै टेर दियौ ।

पोत्या री गांठ खोलती खोलती डोकरी अणचींत्यौ अेक अैड़ौ झटकौ दियौ के छोरौ तौ झटका रै समचै ई लडीड़ करतौ हेटै आय पड़्यौ । चेतौ वावड़ियां पैली पैली डोकरी उणनै दीवड़ी में घाल सेंठौ मूंडौ बांध दियौ । खांधै टेर वड़-गड़ां बड़गड़ां घर कांनी न्हाटी ।

घरै आय किंवाड़ रै आगळ लगाई । जङ्गली खांच छोरा नै दीवड़ी सूं बारै काढ़्यौ । डाकण किड़कती बोली — तिरस रौ मिस करनै न्हाटग्यौ । बोल अबै कठै जावैला ? थोड़ी ताळ सबूरी राख, अबार अैड़ौ भू पावूं के पाछी कदै ई तिरस नीं लागै ।

छोरा माथै पूरौ आफरौ झाड़्यां पछै डाकण आपरी बेटी नै भुळावण दी के वा गुलगुला वाळा छोरा नै ऊखळ में मंड्यौ कूट हांडी में मुसालां रै मांय रांध न्हाकै । वा कलाळ री हाट सूं चाडौ भरनै दारू लावै । आज केई दिनां सूं ताखौ सजियौ ।

कलाळ री हाट पांच कोस आंतरै ही । डोकरी तौ डांगड़ी लेय हचां हचां वहीर व्हैगी । डोकरी रै जातां ई गुलगुलां वाळौ छोरौ अणूंतौ राजी होय हंसण लागौ सौ निरी-ताळ तांई हंसतौ रह्यौ । डाकण री बेटी गताघम में पजगी के औ बावळौ मरण री वेळा इण विध हंसै क्यूं ? छोरी उणरै मूंडा सांम्ही जोवण लागी — मोती ज्यूं पळकता दांत । काळा भंवर केस । निजर पितळै उण भांत चीकणा । डाकण री बेटी रा दांत पीळा-पट्ट हा । उणरा केस ई लूखा अर झपूरिया व्है ज्यूं हा । घणा ई कळाप करचा पण नीं तौ दांत ऊजळा व्हिया

अर नीं केस चीकणा अर काळा। उणनै छोरा सूं ईसकौ व्हियौ। पाखती आय पूछ्यौ — थारा दांत इत्ता ऊजळा कीकर? केस इण भांत काळा कीकर?

छोरौ हंसतौ हंसतौ कह्यौ — हाल कांई व्हियौ, अबार दांत वळै ऊजळा व्हैला। केस घणा काळा व्हैला। म्हारी मां नित औ इज टोटकौ करै। म्हारी मां अर थारी मां दोनां रौ अेक सरीसौ सुभाव। वा नित म्हारौ माथौ ऊखळ में घाल खीचकांणा सूं नीं कूटती तौ म्हारा दांत इत्ता धोळा नीं व्हैता अर नीं म्हारा केस इत्ता काळा व्हैता। पैला म्हारा दांत थारा सूं ई घणा पीळा हा। केस तौ जांणै नाळेर री जट!

छोरी इचरज करती बिचाळै बोली — कांई बात करै थूं! थारा दांत म्हारै दांतां सूं ई......।

छोरौ ई बिचाळै बोल्यौ — हां, हां, घणा पीळा हा, नींतर कांई म्हैं भूठ बोलूं।

छोरी खाथी पड़ती थकी बोली — तौ पछै जेज कांई बात री। म्हारै वास्तै ई टोटकौ करदै।

छोरौ कह्यौ — म्हैं लुगाई रा अर थूं मोट्यार रा गाभा नीं पैरै तौ औ टोटकौ व्है कोनीं।

डाकण री बेटी कह्यौ — तद इण में इत्ती सोचण जैड़ी कांई बात। म्हारा गाभा-लत्ता थूं पैरलै, थारा म्हैं पैरलूं।

छोरी इण बात नै इत्ती सैल नीं जांणी ही। छोरौ तौ दांत अर केसां री कोडाई लपौलप गाभा बदळ लिया। आपरी सगळी गैणौ-गांठौ उणनै पैराय दियौ। पछै छोरौ कह्यौ — माथौ ई गूंथणौ पड़ैला।

डाकण री बेटी जूंझळ खावती बोली — थूं तौ नकरा घणा करै। हेटी बैठ, अबार माथौ गूंथ दूं।

वा माथौ गूंथण बैठी। रेसम री जात कंवळा केस। सबर राखण सारू छोरी वास्तै अेक अेक छिण भारी व्हैगौ। आंचाआंच में माथौ गूंथ टाळ काढ़ दी। मूंडौ देखनै कह्यौ — मां तौ कांई म्हैं ई नीं ओळख सकूं के थूं उणरी बेटी कोनीं। दांत अर केस अेक सरीसा व्है जावै तौ किणी नै कीं ठा नीं पड़ै के थूं कुण अर म्हैं कुण !

तठा उपरांत वा दौड़नै खीचकांणौ लाई। छोरा रै हाथ में संभळाय वा मतै ई ऊखळ में माथौ घाल दियौ। छोरौ वगू ढील करतौ। अैड़ौ मौकौ मिळतां ई वौ तौ माथा रै बिचाळै खांचनै जोर सूं खीचकांणौ मचकायौ के अेक चिराळी रै समचै छोरी प्रांण-मुगत व्हैगी। डाकण दारू री चाडी लेयनै आई जित्तै सावळ कूट-काटनै हांडी चढ़ाय दी। पूजता मुसाला अर घी न्हाक दियौ।

डाकण कीं तौ कलाळी रा घर सूं धत होयनै आई, कीं घरै आय डकळ डकळ बूक देय पीवण लागी सौ आधी पारी खाली कर दी। नसा में झूमण लागी। रागां करण लागी। अणछक याद आतां ई बेटी नै पूछ्यौ — ओटाळ रौ बाळर सीझग्यौ।

बेटी रै हांमळ भरतां ई मां कूंडौ लेय बैठगी। गटळ गटळ कैवण लागी — दोय कूंडा भरनै खावूंला। केई दिनां सूं आज पेट रा सळ निकळैला।

बेटी हांडी खळकाय कूंडौ भर दियौ। मां चळ-चळतौ

ई खावण ढूकी जकी देखतां देखतां सगळौ मांस डकारगी । दूजौ कूंडौ खावण लागी के हिलियोड़ी मिनकी आई। बोली :

हायरे हाय, मां बेटी नै खाय
थोड़ी बोटियां म्हनै ई चखाय

पण मां नसा में घतौधत व्हियोड़ी ही, मिनकी री बात सुणी तौ ई सावळ समझ में नीं आई ।

खावतां खावतां अेक चिटूड़ी आंगळी धकै आई । चार आंगळ लांबौ नख । मां कीं गताघम में पजगी । औ नख तौ उणरी बेटी रौ । पण बेटी तौ सांम्ही ऊभी परूसै । उण छोरा रै ई अैड़ौ नख व्हैला !

मां तौ मांस खाय है जठै ई गुड़गी । आधी रा बेटी नै जगाय कह्यौ के तड़कै उणरा सासरिया आवैला । वा मोड़ी जागै तौ वांरी सरवरा में खांमी नीं राखै । भलां ईं डाकण ई क्यूं नीं व्है, मां नींद में ईं बेटी रै आंणा री बात नीं बिसरै ।

साचांणी बेटी रा सासरिया तेड़ण सारू आया । रात रा सीख देदी । बेटी रै बिछड़चां डाकण रौ काळजौ ई कंठां आयौ। वा छांनै-ओलै रोई ।

मारग में बींदणी री वेल सूं डिचकारी सुणी तौ सागड़ी वेल ढावी । बींदणी बोली-बोली वेल सूं हेटै उतरी । कोई कीं नीं बूझ्यौ । बूझै जैड़ी बात ई नीं ही । पण बींदणी दो घड़ी तांई पाछी नीं आई तौ सासरियां रै खळ-बळ माची । कांनी कांनी सोधण न्हाटा । सेवट सोधतां सोधतां अेक केरड़ा रै पाखती बींदणी रा गाभा पड़चा लाधा, पण बींदणी कठै ई निगै नीं आई । कांई जोरावरी करता । दिनूंगा पांच-सात बूढ़ा-ठाडा डाकी

पाछा मां रै घरै गिया । पूछ्यौ के वींदणी अठै आई कांई ।

डोकरी जई देवतां बोली — ओळियाकड़ां म्हनै कांई पूछौ, म्हैं थांरै सागै सीख देय वहीर करी ही, म्हारी वेटी नै मार तौ नीं न्हाकी ।

डोकरी रा कांन ई जद उणरै मूंडा री आ वात सुणी तौ सगळा डील में सणण सणण करती धूजणी वड़गी । नसौ उतरतां ईं रात वाळी वात समझ में आयगी । मिनकी रा वोल तुरत समझ में आयग्या । चिटूड़ी आंगळी रौ नख जांणै मां रा डोळां में खुवण लागौ । निस्चै वा आंगळी वेटी री ही ! चंडाळ वेटी रौ मांस मां नै जीमाय न्हासग्यौ ।

डाकण नै ओक्या सूं होवरड़ा आवण ढूका । गुलगुला वाळा छोरा नै नीं खावै जित्तै काळजा री वळत नीं मिटैला । कमसल दूजी वळा वळै छळ करग्यौ । सागै वेटी नै मारग्यौ ।

डाकण नै पूरौ विस्वास हौ के छोरौ गुलगुलां रौ रूंख छोड कठै ई नीं जावैला । थोड़ौ घणौ रूप वदळ, दोनूं हाथां में गेडियां लेय वा पाधरी उठै पूगी, तळाकर निसरती वेळा उण अनोखा रूंख सांम्ही जोयौ । कीं समझ नीं वैठी तौ पूछ्यौ: वेटा, औ कैणौ रूंख है ? आंख्यां देखणौ तौ अळगौ म्हैं तौ कांनां ई नीं सुण्यौ ।

छोरौ रीस नै दवाय मीठा सुर में वोल्लौ — मां, औ गुलगुलां रौ रूंख है ।

डोकरी टुग टुग जोवती बोली — तौ कांई इणरै गुलगुला लाग्या करै ।

"हां, मां, गुलगुला ई कोई अैड़ा वैड़ा नीं, गावा घी

में तळियोड़ा व्है ज्यूं। थारी मंसा व्है जित्ता खाव।"

डाकण कह्यौ — बेटा, रांम थारी हजारी ऊमर करै। म्हैं तौ गुलगुलां रौ फगत नांव ई सुण्यौ, मूंडै नी चाख्या। नित बीस गुलगुला खवाड़ै तौ नित थारै नांव री माळा फेरूं।

छोरौ कह्यौ — बीस री भलां कही, थारै दाय पड़ै तौ नित रा हजार गुलगुला खाव, थनै ना थोड़ी ई है।

डोकरी बोली — नीं बेटा, म्हनै हजार नीं चाहीजै, बीस ई घणा; अणूंतौ लोभ कांई कांम रौ।

छोरा री निजर डोकरी रै खांधै टिरता बुगचा माथै गी। कह्यौ — ला थारौ बुगचौ मांड, सेंठौ भर दूं।

डोकरी अटकती अटकती बोली — नीं बेटा, म्हारौ अबोट बुगचौ चीकणौ व्है जावै।

"तौ ओढ़णा री पल्लौ मांड।"

"ओढ़णौ मैलौ सौ म्हारा गुलगुला सूगला व्है जावै।

"तौ हथाळी मांड।"

डोकरी डरती थकी कैवण लागी — गुलगुला ऊंना सौ म्हारी हथाळी में छाला पड़ जावै।

छोरौ तौ डोकरी रा सै लखण जांणतौ हौ, तौ ई अणजांण बणनै पैला री भांत पूछ्यौ — औ ई नीं, वौ ई नीं तौ पछै गुलगुला कीकर खवाड़ूं।

डाकण मन में जांण्यौ के औ नांढ़ छोरौ तौ जांण करनै फंदै। अबकी छूट जावै तौ उणरी जात माथै जूती। झट बोली — बेटा, जे गुलगुला खवाड़णा ई है तौ पोत्या रै पल्लै बांधनै उराय दे। म्हैं मतै ई स्वाद चाख लूंला। चोखा व्हिया

तौ थारै घणौ ई बिकरौ करावूंला ।

छोरौ कह्यौ — मां, थारी आसीस सूं वत्तौ पोत्यौ थोड़ौ ई है । साव हेटै आयनै ऊभजा । पाका पाका गुळगुळा तोड़ूं ।

छोरा री इत्तौ कैवणौ व्हियौ अर डोकरी दोनूं गेडियां टेकती हेटै आयनै ऊभगी । छोरौ तौ उणनै गुळगुळा खवाड़ण सारू त्यार हौ इज । जोर सूं बोल्यौ — ले डोकरी ।

डोकरी छोरा सूं ईं इदक कड़पांण निकळी । दूणा जोर सूं बोली — ला ।

अर 'ला' रै समचै ई मोटी सिलाड़ो ऊपर सूं थरकीजो जकौ डाकण री ढिगली व्हैगो । चुस्कारौ ई नीं व्हियौ । हेटै आय छोरौ वळै उणरौ चिगदियौ कर न्हाकियौ । ठिरड़ नै अेक अळगा खंधेड़ा में जाय थरकाई । हाथ धोय पाछौ रूंख माथै चढ़ग्यौ ।

थोड़ी ताळ में छोरा री मां उठै आई । बेटा नै रूंख माथै बैठौ देख जांणै जित्ती राजी नीं व्ही । बोली — अे लंगूर थूं तौ अठै बैठौ मछरां करै अर म्हारै पगां में सोध-सांध पांणी पड़ग्यौ । वगत माथै टुकड़ौ तौ खायलै ।

बेटौ चाळ भरनै गुळगुळा लायौ । बोल्यौ — गावा घी रा अैड़ा गुळगुळा छोड टुकड़ा किणनै भावै । अबै थनै सीदौ करण री कीं जरूरत कोनीं । देख, थारौ बेटौ गुळगुळां रौ कैड़ौ अनोखौ रूंख लगायौ ।

मां बोली — लगाया रे लगाया बावळा, गुळगुळां री ई कदै रूंख लाग्या करै ।

मां रा मूंडा में अेक निंवायौ गुळगुळौ देवतां बेटौ बोल्यौ—

मां रै हाथ रा गुलगुलां री तौ होड नीं व्है, पण बेटा रै हाथां रुप्या रूंख रा अै गुलगुला साव माड़ा तौ नीं व्हैला।

गुलगुलौ खावतां खावतां ईं मां बोली—-अैड़ा मीठा गुलगुला तौ म्हैं आज दिन तांईं नीं खाया।

तठा उपरांत मां-बेटौ नित धापनै गुलगुला खावता। आखा गांव वाळां नै खवाड़ता। ज्यूं खवाड़ता त्यूं बधता। अैड़ौ ही गुलगुलां रौ वौ अनूठौ रूंख।



गुणावंती

अेक हौ जाट । अमल रौ वंधांणी । अेका-अेक वेटा रै पछै जाटणी री कूख ई नीं उघड़ी । छोरौ ई साव अंगां भोळौ । पण हीयौ उणरौ बादळां रै अबोट पांणी रै उनमांन निरमळ । झूठ बोलणी चावतौ तौ ई उणरै मूंडै निकळतौ कोनीं । निरापेखी ऊजळौ मन । माईत अस्टपौर सोच करता के गूदड़ां रौ रुखाळौ अेक ई जलमियौ पण साव अबूझ । इण चात्रंग दुनियां में इणरौ वाकौ कीकर धकैला । माईतां री जमारौ कोई सुधरियोड़ौ नीं हौ, पण तौ ई वै छोरा रौ जमारौ बिगड़ण रौ सोच करता । सोच सोच में अमल रौ मावौ बधतौ गियौ अर हलीली घटतौ गियौ । गवाड़ी ठेट सूं ई थाकल ही, पण पछै साव ई ढोळै वैठगी ।

केई दिनां लग छोरा रौ सोच करतां करतां अेक दिन माईत बेटा री भलाई सारू अेक नांमी जुगत विचारी । रांम जांणै कीकर वांरै हीयै आ बात ढूकगी के वै मरग्या तौ छोरौ कंवारौ ई मर जावैला । बडेरां रौ नांवगौ ऊठ जावैला । जीवता थकां परणाय दां तौ मरयां मुगातर पावै । सौ खुद रौ आगली जलम सुधारण सारू छोरा रौ बाळपणै ई व्याव कर दियौ । आंख्यां रा आंधा नै हीया रौ फूटोड़ौ मिळ ई जावै । होस आयां पैली पैली हथळेवौ जुड़ग्यौ । सात बरसां रौ वींद अर

आठ वरसां री वींदणी कोडाया कोडाया ढूला-ढूली रै व्याव ज्यूं परणीजग्या । वींदणी गड्डा रमण सारू पीहर ई ढवगी अर वींद जांन रै साथै आपरै गांव आयग्यौ । पण संजोग री रांमत ई न्यारी । उणी बरस होळी रै सैं दिन बाप अर दीवाळी रै सैं दिन मां मरगी । रोवणा सूं वत्तौ बेटा रौ कीं दूजौ जोर हौ नीं । छांनै-चौड़ै, धारै-मांय रोवतौ ई रोवतौ । न्यात कडूंबा रा बूढ़ा-वेडरा समझायौ के कोरा-मोरा रोवणा सूं नीं सरै । माईत केर, खेजड़्यां छिपला खावै, मौसर करयां बिना गत नीं व्है । सो बूढ़ा-वडेरां री समझ बच्योड़ी खुरचण ई डकारगी । दो खेत, अेक बाड़ौ, अेक जोड़ी बळद अर पांच गायां बोहरौ विना लगावण ई पचरायग्यौ । छोरा नै अडांणै मांड गांव चौधरी अनाथ बेटा रै माईतां रौ मौसर सुधार दियौ । चौधरी रै हीयै थोड़ी दया-माया ही । मौसर में छोरा रा सासरिया ई आया हा । सुभट चौड़ै री बातां वांरा सूं कीकर छांनै रैती । मना-ग्यांना विचार कर लियौ के इण छोरा रै लारै भेजणा सूं तौ बेटी नै वेरै-बावड़ी थरकावणी सावळ, हबिदौ तौ बोलैला । मौसर सूं निवड़ियां सासरिया आपरै गांव जाय डिढ़ विचार कर लियौ के ऊमर आयां छोरी री नातौ करणौ कबूल, पण उण निरभागी निधणिका लारै नीं भेजणी । ठा पड़्यां छोरी री साथण्यां उणनै चिड़ावती तौ वा आड़ौ लेवती के वा नातौ नीं करै, परण्या सूं ई घरवास करैला । पण वौ नासमझ अर अबूझ-पणा रौ आड़ौ हौ । बाळ हठ हौ । पण नित चिड़ावतां चिड़ावतां छोरी रा मन में आ इज धत झिलगी ।

दुख रा ई दिन वीतै, सुख रा ई दिन वीतै, चौधरी रै

अठै हाळीपणौ करतां करतां आठ बरस वीतग्या । अनाथ छोकरौ डील परबारौ थुड़तौ । खोटाई तौ उणरै नेड़ी-आगी ई ही कोनीं । डांगरा चारतौ, दुबारौ करतौ, हळ खड़तौ अर ढेरौ कातततौ । अेक पलक ई विसाई नीं खावतौ । जागतौ जित्तै कांम, सूवतौ जित्तै नींद । पांच आदमियां जित्तौ अेकलौ कांम करतौ । गांव-चौधरी उणरा सुभाव अर कांम सूं अणूंतौ राजी हौ । अेक दिन ई ओळबा जैड़ौ कांम नीं करचौ । गंगाजळ सूं ई वत्तौ निरमळ, निगोट सोना सूं ई वत्तौ खरौ ।

साईना साथीड़ां सूं उणनै इण बात री ठा पड़ी के उणरा सासरिया हथळेवै परण्योड़ी री नातौ करणौ चावै । अबूझ अर भोळौ व्हैतां थकां ई आ बात उणरै होयै साल्ही । पांच सात वळा गांव-चौधरी नै कैवण री वौ हीमत करी, पण उणरा होठ नीं खुल्या । अेक दिन पूरी तेवड़नै वौ चौधरी रै पाखती गियौ । होठ थोड़ा सा खुल्या अर उणी पलक पाछा चिपग्या । चौधरी समझग्यौ । पूछचौ — बात कांई है, थूं कीं कैंवणौ चावै कांई ?

मन परबारी ई छोरा रै मूंडा सूं हांमळ भरीजो । तद चौधरी थावस देयनै मीठी वांणी में बोल्यौ — व्है जकी बात बता, बावळा म्हारा सूं कैणौ चोज । थूं तौ म्हारै जायोड़ा बेटां सूं ई वत्तौ है ।

छोरा री हीमत रै जांणै पांण लागो । अपूठौ फुरनै बोल्यौ— म्हैं अेकर सासरै जावणौ चावूं ।

चौधरी हंसणौ तौ नीं चावतौ हौ, पण तौ ई उणनै माडै हंसी आयगी । बोल्यौ — आज ठा पड़ी के थूं दोय कालां री

गरज सारै । थनै विस्वास है के सासरिया थारी सरबरा करैला । लाड-कोड करैला ।

वौ होळै सीक बोल्यौ — म्हैं सरबरा सारू नीं जावूं । नीं लाड-कोड रौ ई म्हनै भरोसौ है ।

चौधरी पूछ्यौ — तौ पछै... ?

उण सूं अजेज कीं जबाब नीं दिरीजियौ । ज्यूं कैवणी चावै त्यूं बोलीजै नीं । चौधरी धीरप सूं उणनै लारली सगळी बात बताय कह्यौ के उणरा सासरिया बेटी रौ नातौ करैला । उणरै लारै भेजणा बिचै तौ बेरा में पटकणी सावळ समझै ।

छोरौ बोलौ बोलौ सगळी बातां सुणतौ रह्यौ । चौधरी ढब्यौ तद वौ अटकतौ अटकतौ कैवण लागौ — म्हनै ठा है, सगळी बातां री ठा है । तौ ई अेकर जावणी चावूं । घरवाळा तौ नातौ करणौ चावै पण जीवता धणी नै छोड वा ई इण बात सारू राजी-बाजी है कांई ! जे वा राजी-बाजी है तौ म्हनै कीं नीं कैवणौ ।

चौधरी हंसनै कह्यौ — बावळां रा सिरदार, घरवाळां सूं उणरी न्यारी मती व्है सकै कांई । वै तौ बेटी री भलाई री खातर ई औ कांम करणो चावै ।

चौधरी घणौ ई समझायौ पण उणरै समझ नीं बैठी । भोळा रै धत झिलगी है तौ अेकर सासरै गियां ई मांनैला । तद वौ कह्यौ — माजनौ पड़ावण जावै तौ थारी मरजी, म्हारी ना कोनीं । पण चोखा गाभा-लत्ता, गळा रौ डोरौ अर म्हारी माठियां तौ लेतौ जा ।

चौधरी तौ चिपतां ई कह्यौ ही के वौ दो बावळां री

गरज सारै । घांटी हिलावतौ कह्यौ—नीं नीं, अैड़ौ स्वांग करनै जावण री कांई जरूरत । फाटोड़ा गाभा अर बूढ़ा माईतां री कैड़ी लाज ! म्हारी हालत तौ है जैड़ी म्हैं जांणूं इज हूं, पछै दूजां री आंख्यां ठागौ क्यूं करूं । कोई गिडक सात डोरा बांधनै जावै तौ कोई उणरै लारै बेटी कर देवैला कांई !

सासरै नीं जावण सारू हाळी राजी नीं व्हियौ तौ चौधरी उणनै अडोळौ मैलण सारू राजी नीं व्हियौ । मांन्यौ ई नीं । सेवट हाळी नै धणी रौ कैणौ मांनणौ पड़्यौ ।

सासरा रौ गांव अर सासरियां रा नांव-पता तौ वो जांणतौ हो, पण माईतां रै मौसर पछै वौ किणी नै देख्या कोनीं । सासरिया तौ जंवाई री तिथ ई छोड दी ही । सास तौ नित ऊठतां पांण जंवाई नै गाळ्यां काढ़ती के ठालोभूलौ उणरी बेटी रै भाग री कठा सूं जीवतौ रैगौ । माखो खुद ई मरै अर दूजा नै ई मारै ।

उणरै सासरा री जाडी गवाड़ी ही । सुसरौ गांव चौधरो हौ । कातीसरौ निवेड़्यां पछै बेटी रौ नातौ करणौ चावतौ । सांतरी गवाड़ी अर साळस मोट्यार मिळतां ई चटपट कांम कर देवैला । मुकलावा री दत्त-दायजौ ई संभळाय देवैला । बेटी रौ धन नीं चाहीजै ।

आसोजां रौ धूंम तावड़ौ तपतौ हौ । ताळां-छेक बाजरियां ऊभी झोला खावती ही । मन में भांत भांत री वातां घड़तौ-भांगतौ वौ अनाथ छोकरौ सासरा री कांकड़ में वड़्यौ । मारग में कठै ई पांणी नीं पीयौ । सासरा री कांकड़ में वड़तां ई उणनै अणूंती तिरस लागी । अणछक माठ रा खेजड़ा हेटै उणनै

घड़ो पड़चो निगं आयो । उणरा पग मतै ई उण धकी मुड़्या ।

कोरो घड़ो । माथै करवो । ठाडो पांणी । अेक करवो पीवनै वो दूजोड़ो भरतो हो के उणनै खेजड़ी रै माथा सूं किणी लुगाई री वोली सुणीजो — कुण व्है ई ?

आ अणचींती बोली सुणनै वो थोड़ो चिमकियो । चिमक रै सागै ई उणरा मूंडा सूं आपै ई बोल रळक पड़्या — मिनख हूं !

औ कंय वो अठी-उठी भाळचो के मथारा सूं किणी री मीठी हंसी सुणीजी । वो ऊंचो जोयो । माळा माथै अेक डावड़ी ऊभी । खांधै गोफण टिरै । पांणी पीवण वाळा मोट्यार साम्ही देख हंसै । परी रो नांव सुणता जको आज आंख्यां दीठो । सांवण री तीज, आभा री बीज । सोना री पूतळी । ओरणो खांधै आयोड़ो । काळै केसां री घटा लूंमै । हंसती हंसती ई वा आभा री बीज कैवण लागी — मिनख है जको तो म्हनै ई दीसै, म्हैं कोई आंधी कोनीं । गांव किसो ? किजातियो ? किसै गांव जावै ? बणाव तो अैड़ो ठसायो जांणै सासरै सिधायो !

बोली अैड़ी मीठी अर सुहांणी, जांणै माळै ऊभी डावड़ी रै गळा रै मांय कोयल वैठी बोलै । सासरा री बात सुणी जणा वो ई थोड़ो मुळकियो । कह्यो — बात तो साची, आयो तो सासरै ई हूं ।

पछै वो आपरो गांव अर नांव-धांम बताया । जात बताई । सासरियां रा नांम-धांम बताया । माळै ऊभी वा डावड़ी तुरत समझगी के वो उणरो धणी है । पण वा जांण करनै उण सूं कीं लाज नीं करी । उणी भांत माथै उघाड़ी ई माळा सूं हेटै

उतरी। उतरतां ई उणरी निजर गळा रा पळकता डोरा माथै अर हाथां री माठियां माथै गी। बोली — म्हे तौ सुणी के थांरी गवाड़ी साव ढोळै वेठोड़ी है। गाभा-रोटी साटै हाळीपौ करौ। पछै औ बणाव कठा सूं करचौ। के तौ ग्रै डोरा-माठियां खोटी के मांग्योड़ी।

वौ छोरी तौ इण वात रौ कीं भूंडौ नीं मांन्यौ। निसंक भाव सूं कह्यौ — गैणौ बौ खोटौ कोनीं, खरौ है। पण है दूजां रौ। म्हैं तौ साचांणी घणौ ई ना दियौ, पण चौधरी मांन्या ई नीं।

पछै वौ डोरा-माठ्यां वाळी सगळी बात वताय दी। जित्तै वा उणरै मूंडा सांम्ही ई देखती री। समझगी के औ मोट्यार ई है तौ खरौ। साचौ। छळ-कपट जांणै ई नीं। वौ बोलतौ ढब्यौ तौ वळै पूछचौ — लोग कंवै के थांरै तौ दांणा-पांणी रौ ई सरतन कोनीं, पछै इत्ता वरस कीकर तोड़्या।

वौ कीं लाग-लपेट नीं राखी। माईतां रै मौसर सूं लेय हाळी-बाळदी तक री सगळी गांगरत गाय दी। वौ कित्तौ कांम करै, कित्तौ थुड़ै ग्रै वातां ई नीं छिपाई। वा गोफण सूं खेत री रुखाळी ई करती जावती अर उणरी वातां ई सुणती जावती। गोफण में कोपरियौ पजावती पजावती वळै पूछचौ — तौ अबै थांरै पाखती माईतां री सैलांणी कीं नीं वची!

"ग्रेक ढूंढा री छोटौ सौ थाळौ तौ अवस है, वाकी कीं कोनीं। वौ कीं कांम रौ व्हैतौ तौ वोहरौ कद छोडतौ।"

जाटां री वा डावड़ी तीन चार वळा चिड़ियां रा ग्रेक टूल कांनी गोफणिया वगाया, पण वै तौ आवेटै ई नीं पूगा।

वाजरी खावता ढूल नै तणकारौ ई नीं सुणीजियौ । है ज्यूं इं वाजरी माथै वैठौ रह्यौ । तद वौ भोळौ छोरौ उण डावड़ी रै हाथ मांयला गोफणिया कांनीं हाथ करतौ बोल्यौ — म्हनै गोफण रौ वख ठीक है, लावौ दौ, म्हैं उडाय दूं ।

उणरै कैतां ई वा गोफण झिलाय दी । अेकर ई भंवायनै फटकारौ दियौ के गोफणियौ तौ ठेट ढूल रै माथै जाय पड़चौ । हरड़ाटौ करनै अेकण सागै चिड़ियां उडी । डावड़ी रै इचरज रौ पार नीं रह्यौ । उणनै लखायौ के चिड़ियां जांणै उणरी टुकियां सूं उडी । गोफण रौ अैड़ौ ववारौ तौ देख्यौ ई नीं । वा जांणै जित्ती राजी व्ही । पण डावड़ा रौ मन राजी नीं व्हियौ । गोफण पाछौ झिलावतौ कैवण लागौ — आं चिड़ियां रै किसी तालियां लटै के अै दांणा हाट-बजारां वपरावण नै जावैला । म्हैं तौ हाळी हूं, सौ धणी रै कैणा सूं उडावणी पड़ै, पण थांरा तौ घर रा खेत है, आंरै खावणा सूं बधापौ इज व्हैला ।

डावड़ी कह्यौ — म्हनै ई माईतां रौ कैणौ मांनणौ पड़ै ।

डावड़ौ इण जबाव पछै कीं नीं बोल्यौ । मन में रांम जांणै कांई सोचतौ रह्यौ । अणछक पूछचौ — अरे, थें तौ म्हारा घर री सै वातां जांणली, म्हनै कीं नीं बतायौ । जद इज तौ म्हनै वस्ती रा सगळा भोळौ कैवै ।

वा फगत इत्ती इज वात बताई के वा जाटां रै घर री है, उणरै सासरा री है । उणरी बहू री खास साथण । पछै वा कह्यौ — थें लाड-कोड रा भूखा आया तौ हौ, पण सास-रिया घरेळै नीं तौ मोटी वात । थांनै ठा कोनीं के वै तौ उणनै नातै मैलणी चावै ।

वौ मोळौ पड़नै कह्यौ — ठा तौ है, पण अेकर उणरी मंसा जांणणी चावूं । वा नातौ करणी चावै तौ म्हनै कीं उजर कोनीं ।

जाटां री वा धीवड़ी थोड़ी ताळ तांई तौ उणरै मूंडा सांम्ही टुग-टुग जोवती री । बोली — थांनै गांव रा भोळा कैवै सौ भूठ कोनीं । उणरी मंसा, घर वाळां सूं किसी न्यारी है । पण उणरी मंसा थांरै लारै जावण री व्है अर थें अेकर उणरौ उणियारौ देखलौ तौ जीवौ जित्तै उणरौ नांव नीं लौ । तवा सूं वत्ती काळी । लांबा दांत । अेक आंख में फूली । पागा जित्ती डीगी । हाड-बोली ।

वौ बिचाळै ई बोल्यौ — भलांई व्हौ ! बेटी बाप रै घरै नीं खटै । किणी न किणी सूं तौ फेरा व्हैता इज । बाळपणै हाथ भाल्यौ, पण अबै समभ-समभायां फगत कोजी होवण रै कारण हाथ खांच लूं, आ बात तौ ठीक कोनीं । लुगाई में खास बात तौ गुण व्हिया करै ।

"पण उण में तौ रूप अर गुण कीं कोनीं । साथण व्हैतां थकां ई थांरै जैड़ा भोळा आदमी नै भरम में तौ कीकर राखूं ।"

वौ उणरै मूंडा सांम्ही देखतौ बोल्यौ — इण में भरम री कांई बात ! म्हारै पांती आई सौ सिरै । रूप अर गुणां री कोई माठ तौ है कोनीं, पछै कठै ई न कठै तौ मिनख नैं संतोख करणौ पड़ै । आदमी मरणौ नीं चावै, पण मौत आयां राजा नै ई मरणौ पड़ै । फगत मिनख रै चावणा अर नीं चावणा सूं कांई व्है ।

मोट्यार री वातां सूं उणरै कांनां में जांणै इमरत घुळण लागी। तौ ई वा ऊपरला मन सूं बोली — आं भोळी अर निपगी वातां में कीं धरचौ नीं, उठै माजनौ गमावण नै क्यूं जावौ, म्हारी अेक साथण है — रूपाळी अर गुणवंती, कैवौ तौ कालै ई परणाय दूं।

छोरी कीं जवाब नीं दियौ, तौ ई वा उणरै मन री बात सुण ली। वळै घोदावणौ ठीक नीं समझ्यौ। अबकी वा उणरै मूंडा सांम्ही जोयौ तौ उणरौ मूंडौ कीं उतरचोड़ौ निगै आयौ। पूछ्यौ — रोटी खाई के नीं। म्हनै भूखा दीसौ।

वौ लाजां मरतौ बोल्यौ — हां, हूं तौ भूखौ। म्हामें औ अेक इज मोटौ औगण के भूख घणी लागै।

पछै तौ वौ घणौ ई पाल्यौ, पण वा अेक छिण ई उठै नीं ढबी। हाथ मांयली गोफण झिलाय गांव सांम्ही न्हाटी। न्हाटती न्हाटती ई बोली — म्हैं अबार रोट्यां लेय नै पाछी आवूं, जित्तै रुखाळी करज्यौ।

घर तांई अेक सांस दौड़ती गी। फूंदी रै उनमांन हळकी। मां बारणा माथै ऊभी दीसी। पाखती जातां ई बेटी कड़मड़ करण लागी — मथारै दिन चढ़ग्यौ तौ ई भातौ नीं भेज्यौ। म्हारा सूं इत्ती ताळ भूखौ नीं रैहीजै। कालै म्हैं रुखाळी माथै नीं जावूं।

मां चूक में ही। इण वास्तै बोली कोनीं। बेटी दोसा-मोसा करनै ढबी जद कह्यौ — ऊंना ऊंना सोगरा रौ चूरमौ करनै लावती इज ही के थूं आयगी।

बेटी आंमनौ जतळावती बोली — म्हारा हाथ भागोड़ा कोनीं,

म्हैं मतै ई कर लेस्यूं ।

आ कैय वा छांन में वड़गी । दोय लांठा सोगरां रौ कचकचतौ चूरमौ करचौ । सांगरियां रौ साग अर सोगरा लेय भातौ बांधण लागी जद मां छांन में आई । पूछचौ — खांवूं-खांवूं करती वतूळिया री गळाई आई, अवै भातौ क्यूं बांधै। अठै ई खायलै ।

भातौ लेय, वहीर व्हैती व्हैती ई बोली — खेत में डांगरां अर चिड़ियां रौ बिगाड़ घणौ, काका लड़ै ।

मां होठां ई होठां में बोली — बेटी कांई बीजळी है बीजळी !

गांव रै फिळा सूं ढळतां ई वा तौ वतूळिया रै वेग न्हाटी ।

छोरौ इचरज करतौ देखतौ रह्यौ जित्तै वा भाता रौ गरणौ खोल हेटै बैठगी । बोली - अवेळौ व्हियौ जकौ ई मोकळौ, अवै तौ जीमलौ ।

बाटका में कचकचतौ चूरमौ देख्यौ तौ वौ मोटचार कह्यौ — इत्ता बरस चूरमा रौ फगत नांव ई सुण्यौ हौ । आज पैली वार खावूं, म्हारी आंख्यां री सोगन भूठ बोलतौ व्हूं तौ। सासरा री कांकड़ में वड़तां सुगन तौ नांमी व्हिया ।

खावण सारू हाथ घाल्यौ ई हौ के उण रूपाळी गिणगौर रै मूंडा सांम्ही देखनै कह्यौ — आधौ भातौ न्यारौ काढ़लौ, थांरै ई तौ खांणौ व्हैला ।

वा खायोड़ी नीं ही, तौ ई कह्यौ — नीं, नीं म्हैं तौ खायोड़ी हूं । थांरै वास्तै ई लाई ।

नीची धूण करचां वौ बोलौ बोलौ खावतौ रह्यौ । थोड़ी

ताळ पछै ऊंची मूंडी करनै जोयौ — वा सांम्हीसांम वैठी ही। वोल्यौ — आज तौ साचांणी सपना जैड़ी वात व्ही। जांण नीं पिछांण नीं, थें म्हारै वास्तै कित्ता फोड़ा खाया। मन में केई वातां रा वतूळिया ऊठै पण म्हैं दरसा नीं सकूं। आज जैड़ौ आणंद म्हनै कदै ई नीं आयौ। आज तौ राजा ई म्हनै छोटौ लागै, थांरौ ओ औसांण कद उतारूंला।

सांम्ही वैठी वा डावड़ी लप उणरै मूंडा री वात झांपली। कह्यौ — जे साचा मन सूं औसांण उतारणौ चावौ तौ म्हैं साव सैल उपाव वतावूं, अर नीं उतारणौ चावौ तौ थांरी थें जांणौ।

हाथ मांयलौ कवौ हाथ में ई रैग्यौ। कह्यौ — म्हैं भोळौ अवस हूं, पण नुगरौ कोनीं। म्हारै मरयां ई वदळौ चूकतौ व्है तौ नटूंला नीं। आज तौ कीं अैड़ौ अैड़ौ लखावै के जांणै मिनख-जमारौ आज इज मिळ्यौ।

डावड़ी रा मन में जांणै अेकण सागै हजार कंवळ खिलग्या। हंसी नै रोकती वोली — कैवतां संकौ आवै, पण थांरै जैड़ौ भोळौ आदमी विना कह्यां समझै ई तौ कोनीं। उण काळी-कांणची रै लारै धूळ वगावौ। म्हैं थांरै साथै चालण नै त्यार हूं। औसांण चुकावौ तौ ओ मौकौ है। हाथोहाथ फारगती व्है।

वात सुणतां ई जाट रै वेटा रौ पळकतौ मूंडौ काळौ-मिट्ट पड़ग्यौ, जांणै दीवौ वडौ व्हियौ। कवौ हेटै पड़ग्यौ। वोल्यौ — नटियां थें म्हारै मन री वात नीं समझौला। आ म्हारै हाथ री वात कोनीं। इण विचै संखियौ लायनै देवता तौ म्हैं चूरमा सूं वत्तौ स्वाद लेयनै खाय लेतौ। थोड़ी ताळ वास्तै भूंडौ मत मांनज्यौ, सोचलौ के म्हैं थांरी वात मांनली।

पण कदै ई थांरा सूं फूठरी लुगाई इत्ता ई कोड सूं म्हनै भरभरती सीरौ खवाड़ आ इज वात पूछै तौ म्हैं उणनै कांई जवाब दूं, थें ईं बतावौ । थांनै छोड उणरी वात मांनूं तौ नुगरापणौ व्हैला के नीं मांनूं तौ नुगरापणौ व्हैला ।

बात सुणतां ईं डावड़ी री आंख्यां में आंसू छळक आया । वै हरख अर गुमेज रा आंसू हा । उणरा धणी नै भोळौ अर निरभागी कैवै वौ निपट मूढ़ अर नांढ़ । आंसुवां माथै निजर नीं पड़ै इण वास्तै भचकै ऊठनै अपूठी ऊभगी । गोफण भंवाती धकै वहीर व्हैगी । तद वौ हळफळियौ होय बोल्यौ — म्हैं जांणतौ के थें भूंडौ मांनौला, म्हनै सावळ बोलणौ ई तौ नीं आवै । थें तौ म्हारी गळाई अबूझ अर भोळा कोनीं, सावळ नीं कैय जांणूं तौ ई सावळ साची वात नै समझ सकौ । अेड़ी ठा व्हैती तौ म्हैं अठी आवतौ ई कोनीं । तिरस अणूंती लाग्योड़ी ही, पांणी रौ घड़ौ देख्यौ तौ पग मतै ई अठी नै मुड़ग्या ।

धणी नै यूं ईं चिड़ावण री खातर वा कैवण लागी— थां में चूक काढ़णौ बिरथा, मरदां री जात ई अेड़ी व्हिया करै । तिरस लाग्यां मतै ई परबारा पग किणी रै घड़ा सांम्ही मुड़ जावै ।

हाल वौ धाप्यौ तौ नीं हौ, पण आ बात सुण्यां पछै अेक कवौ ई खावण री मन नीं व्हियौ । भातौ छोडनै ऊभौ व्हैगौ । उणरै लारै जावतौ कैवण लागौ—के तौ हाथां लायनै चूरमौ खवाड़ियौ अर के अबै तिरस लाग्यां घड़ा रौ पांणी पीवण में ई म्हारी भूल बतावौ । म्हनै तौ थांरी बातां कीं समझ आवै नीं ।

वा उकणती हंसी रै माथै खांम देवतां बोली — जद इज तो गांव वाळा थांनै अबूझ अर गिंवार कैवै ।

आ कैय वा पाछी मुड़ी । खाथी खाथी आय देख्यौ के भातौ आधौ बच्योड़ौ । खड़ां खड़ां आय निसंक उणरौ हाथ झाल्यौ । हुकम देवती व्है ज्यूं बोली — बिना धाप्यां ईं ऊठगा, लारै अेक भोरौ ई छोडियौ तौ म्हनै मारनै खावौला ।

जाट री छोरी गताघम में पजग्यौ । आ किण गत री लुगाई । डिचकारौ देवतौ बोल्यौ — अैड़ी सौगन नीं दिरावता तौ ई म्हैं थांरी कैणी नीं टाळतौ ।

वा मूंडौ मस्कोर बोली — म्हारौ कैणौ कैड़ौक मांनौ, म्हनै ठा पड़गी । मूरख रै सांम्ही बिरथा मन री बात दरसाई !

वौ मोळौ पड़नै कह्यौ — उण बात नै छोड, थें म्हनै सूळी चढ़ण री कैवौ तौ ई नीं टाळूं । कदै ई तूमार देख लेजो ।

"गाडी धांन री मूठी बांनगी, म्हैं तौ अेक वळा में ईं सैं तूमार देख लिया । रोटी खायनै पाधरा सासरै ढळ जावौ । असेंधी लुगाई सूं अेकांत में इत्ती ताळ बातां करणी, अे मिनखी-चारा रा लोतर नीं है । घरै आया मंगता नै ई रोटी तौ घालणी पड़ै, इण में कीं औसांग री बात नीं ।

चळू करतां करतां उणनै अैड़ौ लखायौ के मूंडा में जांणै आकड़ौ घुळग्यौ ।

पछै वा बिना कीं कह्यां सुण्यां ईं माळै चढ़नै बैठगी, वौ होळौ होळौ गांव सांम्ही टुळग्यौ । वा माळै बैठी मीट गडाय उणनै देखती रो । मगरै ढळियां अदीठ व्हियौ जद हेटै उतरी । लगनी व्है ज्यूं खेत रै च्यारूं मेर भळाका देवती री ।

दो तीन जणा नैं पूछतौ पूछतौ वौ सेवट होमत करनै सासरियां री गवाड़ी पूगौ । मारग में छोटी साळियां री पत्ती पड़ग्यां वांनै बतायौ के वौ वांरौ बैनोई है । साळ्यां न्हाटी । मां नै जाय बधाई दी के फलांणै गांव वाळा बैनोईसा आया, बैनोईसा आया ।

बधाई री बात सुणतां ईं मां पैला तौ दोनूं बेटियां रै दो दो लपड़ां मैली । इण अणचींती गैलाई री उणनै सपना में ईं वेरौ नीं हौ । उणरी नसां री तौ जांणै लोई उफणण ढूकौ । पांवणा री लाज-सरम अळगी बगाय वा भिमरियोड़ी पाखती आई । पूछ्यौ — अठै कांईं बाप री हेमांणी गड्योड़ी सौ लेवण सारू आया ।

पांवणा तौ अै सगळी बातां सोचनै ई आया हा । बोल्या: बाप री गड्योड़ी हेमांणी व्हैती तौ आज म्हनै पोत्या रा वारणा रै बदळै अैड़ा बोल सुणणा नीं पड़ता । हथळेवा री परणी नै लेवण सारू धणी आवै, इण में नवादी कांईं बात ।

सासू तड़कनै बोली — फाटोड़ा गाभा रै कारी लागै, पण फूटोड़ा करम रै कारी नीं लागै । मुलक में कोई वेरौ-बावड़ी कोनीं, जकौ थारै लारै करूं । पेट भरण रा जांदा पड़ै अर बापड़ा नै लुगाई भावै । घरै आया गिंडक नै ई टुकड़ौ न्हाकणौ तौ पड़ै, म्हांरी गवाड़ी रौ औ ई धारौ है । कालै रोटी गिटनै माजना सूं बोलौ बोलौ जातौ रैजे, नींतर हाथोहाथ जवारी मिळ जावैला ।

लोगां रै मूंडै पांवणा रै अै सगळी बातां सुण्योड़ी ही । बोल्यौ — सासरा री इण सरबरा अर लाड-कोड री म्हनै पूरी

वेरी ही । थें सास-सुसरा अर साळा जूता मैलौ तौ ई म्हनै रीस नीं आवै, पण अेकर जिण रौ हाथ झाल्यौ उणरै मूंडा सूं दो बोल सुणणी चावूं ।

सासू नै ई थोड़ी हंसी आयगी। बोली—काला रै तौ काला ई जलमै । अक्कलहीण ठूंठ, बेटी री बात माईतां सूं न्यारी व्है कांई ! म्हैं कह्यौ सौ अखरै ।

अवै कांई करै अर कांई नीं करै, उणरै कीं समझ बैठी नीं । सासू मांय जायनै छोटी साळी रै सागै जवार री घाट अर खाटी छाछ री करवौ करनै भेज दियौ । घोवयोड़ो व्है ज्यूं बोली—ब्याळू करनै अेवाड़ा में जाजौ परा, उठै अेक डुखलियौ अर रालौ पड़ी है ।

वैनोई कांई जवाब देवतौ । कह्यौ—ब्याळू ई अेवाड़ा में करूंला ।

रोटी तौ उणरै खायोड़ी ही इज । कुत्ता री लेहणी में करबौ उंधाय, डुखलिया माथै फाटोड़ौ गूदड़ौ न्हाक आडौ व्हैगौ । ऊभौ रैय सोचण री उण में करार नीं हौ । सूनी सूनी आंख्यां ऊंचौ भाळ्यौ । गुळौ वरणा आभा में झवाझव तारा खिवता हा । उणनै लखायौ के दुनियां तौ आखी उण माथै हंसै ई हंसै, गिगन रा अै तारा ई हंसै । इण अगाढ़ दुख री वेळा आज तौ नींद ई साथ छोड दियौ । काळजा रै मांय तौ जांणै कोई भट्टी चेतन व्ही ।

अर उठी खेत री रुखाळी करनै बेटौ घरै आई तौ उणनै देख मां कह्यौ—वेटौ, आज अवेळो वणो करचौ । इत्ती ताळ कठै रैगौ ।

औ सवाल पूछ मां तौ मतै ई धकै कैवण लागी। बेटी रै जबाब री बाट ई नीं जोई। उणरा पेट में तौ वातां रा ढीम पाकोड़ा हा। बेटी नै अैड़ौ लखायौ जांणै मां रा गळा में बैठी कोई नागण बोल काढ़ै। जंवाई-रांणा रै पधारण री बधाई देय मां धकै कैवण लागी—म्हैं कणाकली सोचूं के सगळी बातां जांणतौ थकौ वौ कालौ अठै क्यूं उखलियौ ? आतां ई म्हैं लाड-कोड तौ अैड़ा करया के मरयां पछै ई नीं भूलै। इत्तौ आडै हाथां लियौ, जांणै जित्तौ माजनौ गमियौ तौ ई निसंडौ कैवै के अेकर थारै मूंडै रा दो बोल सुणणी चावूं। औ तौ ढांढ़ा सूं ई साव गयौ-बीतौ निकळियौ।

मां रौ कैवणौ तौ धकै उणी भांत चालू हौ, पण बेटी नै आगै रा बोल कीं नीं सुणीजिया। काठ री पूतळी ज्यूं ऊभी बोली बोली सुणती री, जांणै अेक ठौड़ आंगणा में खूंटा री गळाई रुपगी व्है।

गळा रै मांयलौ सगळौ विस उजाक मां अणछक बात बदळी। बोली—देखौ देखौ, म्हारा हीया फूटा जकौ बातां ई बातां में थारै ब्याळू री बात भूलगी। खासौ अवेळौ व्हैगौ, ले ब्याळू करलै।

मां दो तीन वळा झंझेड़ी जणा उणनै चेतौ व्हियौ। चिम-कनै बोली—हैं ......

थोड़ी ताळ डबनै कह्यौ—म्हनै तौ अंगै ई भूख कोनीं।

आ कैय वा धमधम करती मेड़ी री नाळ चढ़गी। बगनी री गळाई चारूंमेर अठी-उठी भाळयौ—कठै ई कोई चांनणौ निगै आवै! पण उणरी आंख्यां सांम्ही तौ तरतर वत्तौ काळौ-

ओळी अंधारो पाथरतो गियो । ऊभी रैय सोचण री उण में सगती नीं ही । आंगणै ई सूयगी । ऊंचो भाळ्यो । झबझब खिवता तारा ई विकराळ अंधारा में गोटीजग्या हा । उणनै अैड़ो लखायो जांणै खायोड़ा मतीरा री खुपरी रै उनमांन उणरो मायो ई साव खालो व्हैगो । कांई करै अर कांई नीं करै, कीं सूझै ई नीं । अैड़ो तो वैरी नै ई सपनो आयोड़ो खोटो, पण वा तो साचैला जाळ में अळूझगी । आखी रात उणनै नींद नीं आई । बुलायोड़ी तो मौत ई नीं आवै, तद थोरा करयां नींद कद आवती !

जांझरकै दोय घड़ी रात थकां वा मतै ई रांम - जांणै कांई सोचनै ऊभी व्ही । कदास सूतां सूतां सोचण रो उण में करार ई नीं व्है । दूजो कीं उपाव नीं सूझ्यो तो वा खेत री रुखाळी सारू वहीर व्हैगी ।

भातो लेवण सारू वा दौड़ती दौड़ती आई अर दौड़ती दौड़ती पाछी गी — जांणै डील रै पांखां लागगी व्है । पण इण वगत तो जांणै पगां रै हजार भाखर लटूमग्या । कालै आखै दिन भूखी रही । उणनै लखायो के कदै ई कदै ई इण भांत भूखी रैवणा सूं वत्तो खावण रो आणंद ई नीं व्है ।

मिनख रा जीवण में केई वातां तो अैड़ी व्है, जको बरस वीत्यां पछै ई अैड़ो लखावै के जांणै कालै ई वीती अर केई वातां अैड़ी व्है के दूजै दिन ई अैड़ो लखावै जांणै उण वात नै वरस वीतग्या । माळा हेटै आतां ई उणनै अैड़ो लखायो जांणै जुगां पैला वा अठै कोई मीठो सपनो देख्यो हो ।

गताघम में अळूझियोड़ी वा माळै चढ़ी — जांणै ऊंचो

चढ़्यां कीं सूझै तो ! पण कीं नीं सूझ्यो ।

बाळपणै साथणियां रै नित चिड़ावणा सूं माडै ई अजांण में उणरै हीयै आ घत भिळगी ही के वा मरद्यां ई नातो नीं करैला । परण्यां री ई घर मांडैला । पण वै तो बाळपणै री वातां ही । चिड़ावणा रो ग्रांमनो हो । लांठी व्हियां थोड़ी घणी समझ वापरतां ईं माईत अर भाई नित ग्रेक दो वळा नातो करण री वात करता , परण्या री भूंडाई करता तो अजांण में वांरी वात मन में काठी जमगी । काला घणी सूं पूरो मन फाटग्यो । माईतां सूं वत्तो बेटी रो भलो दूजो कुण सोच सकै ! मन में डिढ़ विचार कर लियो के मरद्यां ईं उण ढोळै वैठोड़ा ढोर रै लारै नीं जावैला । ग्रेक ई जूंण में दो वळा कीकर मरणो आवै । पण कालै पछै तो सै वात ई बदळगी । बाळपणा री जूंनी वातां भोभर में दटगी ही , पण भोभर उकराळतां ईं परजळतो सूरज भळकियो । आंख्यां मींच इण चांनणा नै ग्रंधारो कीकर मांनीजै ।

उगूण दिस सूं जंळहरतो सूरज ऊगण वाळो हो । चारूं कूंटां सैचन्नण ई सैचन्नण । सूरज घरती री गोद छोड़ तर-तर ऊंचो चढ़ण लागो । उजास रो समंदर थावा मारण लागो । आंख्यां मींच्यां ईं सूरज तो इणी भांत दमकतो रैवैला , फगत मींचण वाळा री आंख्यां ग्रंधारो व्हैला !

के इत्ता में उणरी मीट कालै वाळा मोटचार माथै पड़ी । टुळक टुळक मारग बेवतो हो ।

माळा वाळी खेजड़ी रै गळाकर नीसरयो तो वो ग्रेकर मुड़नै उठी जोयो । कालै वाळी डावड़ी माळा माथै ऊभी ही ।

अेकर हवण रौ मन तौ व्हियौ, पण ढब्यौ कोनीं। पग मतै ई धकै ववण लागा। डावड़ी उणरै मन री बात समझगी। हेलौ नीं मारचौ तौ थोड़ी ताळ में ईं खासौ आंतरै निकळ जावैला। वौ कीं खाथौ खाथौ हालण ढूकौ ई हौ के वा हेलौ मारनै हाथ रौ झालौ देवती बोली — यूं टळिया टळिया कीकर जावौ! कालै तौ म्हारै कह्यां सूळी चढ़ण नै त्यार हा, आज हेलौ मारयां ईं आवौ कोनीं।

आ बात सुण्यां पछै उण सूं अेक पावंडौ ई धकै नीं भरीजियौ। वोलौ वोलौ माळा हेटै आय ऊभग्यौ। थोड़ी ताळ तांई दोनूं ईं चुप रह्या। पछै वौ छोरौ नीचो धूण करयां ईं वोल्यौ — खासी अळगी भांय ज़ांणौ ही। सगळा कांम ऊंधै माथै छोडनै आयौ, चौधरी बावौ चिड़तौ व्हैला। कालै ई थांनै खासा फोड़ा घाल्या। तिरस नीं लागती तौ म्हैं सीधौ ई निकळ जातौ।

वा वोली बोली सुणती री। कीं जबाब नीं दियौ। तद वौ वळै धकै कैवण लागौ — अेकर आवण रौ मन तौ व्हियौ, पण दिना कांम पग अठी मुड़्या कोनीं।

अबकी डावड़ी रा होठ खुल्या। वोली — गरज मिट्यां गूजरी छाछ ई कद घालै! सासरै रा तेवड़ जीमनै आया हौ, अबै आखी ऊमर भूख थोड़ी ई लागैला। म्हारा लूखा टुकड़ां नै कुण वूझै। थांनै अैड़ा मतलवी तौ नीं जांण्या हा!

सासू रा वै अंवळा वोल उणरै काळजै नीं खटकिया। पण आ वात सुणतां ईं उणरा काळजा माथै जांणै वळवळती हळ-वांणी रौ डांम लागौ। घांटी रै झटकौ देय वौ ऊंचौ देख्यौ।

माळै ऊभी डावड़ी रै होठां माथै हंसी री बीजळियां खिवती ही । मोट्यार री आंख्यां में आंसू छळक आया ।

डावड़ी अजेज माळा सूं हेटै उतरी । छळकती आंख्यां सांम्ही देखनै कैवण लागी — थें तौ साव इज भोळा हौ, मिस-खरी री बात में ई नीं समझौ । साचांणी म्हैं तौ मिसरखो करी ही । थें भूंडौ मांनग्या ।

वौ गळगळा कंठ सूं बोल्यौ — थांनै मन री थोड़ी घणी ई जाच व्हैती तौ इण भांत मिसखरी नीं करता ।

पछै वा घोद घोदनै पूछ्यौ तौ सासरा री सगळी वातां वताय दी । सुणनै बोली — धणी रो होमत नीं व्है जद यूं इज व्हिया करै । चूक तौ थांरी, पछै दूजां में दोसण क्यूं काढ़ौ ।

वौ टाबर री गळाई पूछ्यौ — इण में म्हारी कांई चूक !

गोफण रो सटीड़ौ उडावतां बोली — नींतर कांई म्हारी चूक है ? सात फेरां री परण्योड़ी नै मोल्या री गळाई छिट-कायनै जावौ, थांनै लाज को आवै नीं । थोड़ी घणी ई करार व्हैतौ तौ यूं खाली हाथ नीं आवता ।

किणी अेक असैंधी लुगाई रै मूंडै जोस रा अै बोल सुण्यां पछै ई उण मोट्यार नै जोस नीं आयौ । ठाडा सुर में बोल्यौ : थांरी बात मांनूं, जे उणरौ थोड़ौ सौ मन व्हैतौ, तौ म्हैं मरचां ई खाली हाथ नीं आवतौ । म्हैं घणौ ई कह्यौ, पग वै तौ उणनै जांणै सात ताळां में लुकाय दी ।

"उणरौ मन नीं व्है तौ कांई व्है, थांरो तो पूरो मन हो, चुट्टी ठिरड़नै साथै ले आवता । गांजरा धणी री लुगाई यूं ई नातै जाया करै, इण में की अनोखी बात नीं ।"

वो डिचकारी देवतां कह्यो — नीं, नीं आ बात नीं, म्हैं तौ मन परबारा बळद ई हळ में नीं जोतूं । जको वा तौ म्हारी लुगाई है । उणरौ मन नीं करै तौ म्हैं अेकर ई बाद नीं करूं ।

छिणेक ढबनै कैवण लागौ — थांरी तौ साथण है, थांनै तौ वा मन री बात दरसाई व्हैला, थें ईं तौ कीं बतावौ ।

वा अपूठी घिरनै बोली — उणरौ मन तौ नीं है, जद इज तौ घरवाळा उणरै बिळू बंधै ।

अेक ऊंडो निसास भरनै वो कैवण लागौ — म्हैं आ इज बात जांणण सारू आयौ हो । उणरौ मन नीं है, जणा कीं बात नीं ।

वा अपूठी ऊभी ऊभी ई पूछ्यौ — अबै तौ म्हनै साथै ले जावण री हीमत है थांरी । म्हारौ मन तौ है, थांरौ मन व्है तौ अबारूं ऊभी ऊभी बहीर व्है जावूं । सासरा री बाफ तौ निकळगी ।

उणरी देह रौ रूं रूं कांन बणनै सुणण सारू त्यार व्हैगौ । अेक अेक छिण उणनै वरस जित्तौ लखायौ । थोड़ी ताळ सोच-विचार नै वो बोल्यौ — थांरी बात माथै अभरोसौ तौ कीकर करूं, पण मिसखरी करण री आदत होवणा रै कारण कैवतां डर लागै । रांम जांणै क्यूं म्हारा मन में औ पक्कौ विस्वास है के अेकर म्हारा सूं मिळ लेवै तौ उणरा मन नै बदळणौ पड़ैला । साचा मन री बात अेळी नीं जावै ।

उणरा रूं रूं में जांणै तारा जड़ग्या । बोली — थें कैवौ तौ अेकर थांनै मिळाय दूं ।

वौ लपकनै सांम्ही आयौ । कह्यौ — यूं ई थांरौ औसांग कम नीं है, पण आ बात कर दो तौ जीवूं जित्तै थांरौ गुण नीं भूलूं ।

वा मुळक रै माथै होठां री ढकणी देवती बोली -- कोरौ-मोरौ गुण मांन्यां कांई व्है !

"तौ थें कैवौ ज्यूं करूं ।"

गोफण नै भंवावती भंवावती थोड़ी अळगी जाय कैवण लागी — अै तौ बिना कह्यां समझण री वातां है, पण थें हो साव भोळा, कह्यां ई थांरै समझ में नीं आवैला । पछै कैवण में कांई सार । आज सिझ्या रा ई मिळायनै नक्की करूं ।

अणछक उणरै कांई जची सौ पाखती आय कैवण लागी: थांरा सासरिया खूटोड़ा व्हिया तौ कांई, आखौ गांव तौ खूटोड़ौ नीं व्है सकै । वे थांनै भूखा नै ई धुरकार नै काढ़ दिया, पण सासरौ तौ जंवाई नै भूखा कीकर जावण दे । काले री भांत खेत री रुखाळी करज्यौ, म्हैं इणी सायत दौड़ी दौड़ी भातौ लेयनै आवूं ।

वौ ना देतौ रह्यौ अर वा गांव कांनी दौड़ती गी । माळै चढ़नै देखतौ रह्यौ । मगरै ढळियां अदीठ व्ही जद लगता ई दो तीन ऊंडा ऊंडा सांस खांचनै मन ई मन बोल्यौ — कैड़ी अजीब लुगाई है !

ही तौ वा साचांणी अजीब ई । मां सोगरा पोवती हां के वा हळफळाई छांन में आई । रिसांणा री आंमनी जतावती कैवण लागी — भूखां मर मर म्हारा सूं रुखाळी नीं व्है । ग्रावां रै लारै दौड़ दौड़ म्हारै तौ पगां में पांणी पड़ग्यौ । तणाव

भरीजग्या । भाता नै उडीक उडीक काई व्हैगी – अबै ई आवै, अबै ई आवै । सेवट म्हनै आवणौ पड़चौ ।

मां सोगरौ थापती थापती ई बोली — थारा पेट में जम तौ नीं वड़ग्या, हाल तौ भाता री वेळा ई नीं व्ही । आज तौ थूं अंधारै अंधारै ई वहीर व्हैगी । कलेवौ नीं करचौ जणा भूख तौ लागैला इज ।

कालै री भांत वेटी आज ई हाथां चूरमौ करचौ । गवार फळियां रौ साग लेय गरणा सूं बांधण लागी जणा मां कह्यौ: अठै ई खायलै, इत्तौ कांई मोड़ौ व्है ।

"खेतां में विगाड़ नीं व्है जावैला !" आ कैय वा तौ भातौ लेय वहीर व्हैगी ।

आज ई वौ दो तीन वळा थोरा करचा पण वा खावण सारू राजी नीं व्ही । पैला कह्यौ के घरै खायनै आई । घणौ वाद करचौ जणा बोली — मिनख रै खायां लुगाई रौ पेट आपै ई भर जावै । पछै थें तौ इण गांव रा पांवणा हौ ।

"वातां में थांरा सूं कोई पड़प नीं सकै ।" चूरमा रौ स्वाद लेवतौ लेवतौ बोल्यौ — अेक बात पूछूं ?

"दस पूछौ तौ कुण ना दे !"

कैवण लागौ — सासरियां रै अठा सूं वहीर व्हैती वेळा सेवट म्हनै कैवणौ पड़चौ के वांरी काळी, कांणची अर बावनी वेटी नै म्हारै टाळ कोई सूझतौ मिनख नीं ले जावैला । तद सासूजी नै अणूंती रीस आई । वै कह्यौ — चांनणा जैड़ा भाग व्हैता तौ रातिंदौ क्यूं व्हैतौ । आयौ वापड़ौ उणियारा रौ चोर म्हारी वेटी नै कोजी कैवणियौ । उणरी पगथळी में मूंडौ देखै तौ दीख

जावै । अै दोनूं वातां म्हारी समझ में नीं आई।

"औ तौ थांरी समझ रौ दोस है, जिणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं ! निजरां देख्यां पछै तौ जाच व्है जावैला। म्हैं वळतो वेळा थांरै सासरै जायनै आई, साथण ई नीठ मांनी। छिझ्या रा म्हारै साथै पाछा चालजौ। अेकर थांरी लाडी नै मिळावण सारू सगळा ई राजी व्हैगा।"

"कांई वात करौ!" वौ इचरज सूं पूछ्यौ।

वा खिखरां करती वोली — इत्ता कोडाया मत व्हौ। आखी दुनियां ई परणीजै।। थां अेकलां रौ ई पैली वार व्याव नीं व्हियौ। लाडी उडनै जावै कोनीं।

रोटी जीम्यां पछै अठी-उठी री वातां-विगतां व्ही। थोड़ी ताळ पछै वा कह्यौ — सासरियां नै समझावण सारू म्हैं पैला जावणी चावूं। जित्तै थें अठै ई रैजौ। दिन आथमतां ई वहीर व्है जाजौ। साथण नै मनाय छोडूंला।

आ कैय वा तौ खड़ां-खड़ां उठा सूं वहीर व्हैगी। घरै जाय माईत अर भाइयां नै कीकर समझाया सौ वा ई जांणै। घणी झोड़ करयां पछै समझिया। वेटी री भलाई री खातर नातौ करता, सौ जद बेटी ई परण्यां सूं घरवास करण रौ वाद करै तौ उणरी मरजी। धणी नै मूढ़ अर गिवार कह्यौ जणा वा मांईतां रौ खासौ-भलौ माजनौ पाड़्यौ। मूंडै मूंड कह्यौ — गिगन रा सूरज री जोड़ रौ कोई आखौ ऊमर हेरनै दूजौ सूरज बतावै तौ वांरी जोड़ रौ दूजौ उणियारौ लाधै। कोरा धन सूं कांई व्है। सांप री मिण सवा लाख री व्है, इण सूं ई कोई उणनै घर में नीं पाळै।

मोटोड़ौ साळौ दोय घड़ी दिन थकां खेत में गियौ । नांमी टाळका वळदां रौ रथ जुताय वैनोईसा नै आव आदर सूं बिठांण नै लायौ । ढोली वारणै ढोल घुरावतौ हौ । ढोलणियां जंवाई नै गाळ्यां गावती ही । कडूंबा री लुगायां भेळी व्ही । जंवाई रा लाड-कोड करया । जंवाई री तौ अकल ई कह्यौ नीं करयौ । अेक ई दिन में औ काई कांमण व्हियौ । चूरमा वाळा सुगन माड़ा तौ नीं व्हैणा चाहीजता हा । पण इण भांत रा करचोड़ा औसांण सात जलम में ई उतरया नीं करै । जे माळा वाळी वा सुगणी डावड़ी नीं मिळती तौ उणरा कांई भूंडा हवाल व्हैता

रात रा सासू आपरा हाथ सूं बत्तीस तेवड़ करनै जीमाया । साळियां बायरौ घालियौ । सासू आधौ घूंघटौ उंचाय बोली — पांवणा अेक बात पूछूं, साच बताजौ ।

भोळौ पांवणौ अजेज जवाब दियौ के झूठ तौ वौ बोलणौ चावै तौ ई नीं बोलीजै । तद सासू पूछयौ — म्हारी सोनल वरणी बेटी री कुण थांरै मुंडागै कुरा करी के वा तवा सूं ई वत्ती काळी, कांणी अर बावनी है ।

पांवणौ ही जकी बात मांडनै बताय दी । सगळी बात सुण्यां मां रै समझ आयगी के बेटी दोय वळा चूरमौ करनै किणनै जीमायौ । खेत में खासी बातां-विगतां व्ही दीसै । जद बेटी इत्तौ चोज राख्यौ तौ मां ई भेद परगट नीं करयौ । आ जांणनै के बेटी नाराज व्हैला । सगळा जणा उण सूं मांय रा मांय डरता हा ।

नवलख तारां जड़ी रात आधी ढळण आई ही । साथ-णियां बींदणी नै धक्कौ देय मेड़ी मांय रोड़ दी । वारा सूं

आगळ जड़ दी । गावा घी रा साल दिवा झुपता हा । मेड़ी में उजास मावतौ नीं हौ । वींद वींदणी नै देखी तौ मन ई मन सोच्यौ के वा बावनी तौ कोनीं । पिलंग सूं ऊठनै पावती गियौ । वींदणी आपरा हाथ सूं ई घूंघटौ अळगौ करयौ । जांणै चांद माथा सूं वादळौ आगौ व्हियौ । आ तौ माळा वाळी डावड़ी !

इचरज अर हरख री होडाहोड में वौ तौ आपरौ चेतौ ई बिसरग्यौ । कोई अंधारी साळ रौ आडौ खोलै अर उणनै खुणा में सूरज पड़्यौ निगै आवै, उण वगत जकी उमंग उणरा मन में व्है, वैड़ी उमंगां रा वतूळिया उण भोळा जंवाई रै मन में ऊठण लागा । बापड़ी भासा री कांई गसकौ जकौ मन रा उण उजास नै काळी स्याही सूं जगमगा सकै ।

वींदणी खिल-खिल हंसी । कोयल रा मोठा सुर में बोली: हाल ई थांरौ इचरज नीं मिट्यौ। म्हैं तौ पैलपोत देखतां ई थांनै पिछांण लिया हा ।

अबै जावतां भोळा जंवाई रै सगळी वात सावळ समझ में आई ।

पछै तौ आखी रात गिगन रा नवलख तारा अर चांद आपरौ ठायौ छोडनै उण मेड़ी रै मांय आपरौ वासौ करयौ । अेक अेक तारा रौ उजास सूरज सूं ई सवायौ हौ ।

पांच दिनां तांई सासरिया जंवाई रा घणा ई लाड-कोड करया । अणूंतौ दायजौ दियौ । जंवाई नै सीख में सौ मोहरां दी ।

मुकलावा री गाडी जद उण माळा वाळी सेजड़ी रै गळा-कर निकळी तौ धणी माळा सांम्ही हाथ री सांनो करनै पूछ्यौ:

उण माळा माथै म्हनै वौ सांप्रत सूरज ज्यूं ऊगियोड़ौ कांई दीसै ।

तद वींदणी उणी भांत खिल-खिल हंसनै जवाब दियौ — अबै तौ थांनै उठै ई कांईं ठौड़ ठौड़ सूरज ऊगता निगै आवैला ।

खेजड़ी हेटै पांणी रौ घड़ौ भरयौ हौ । धणी कह्यौ — अेकर दोनूं जणा सागै उण घड़ा रौ इमरत पीयनै पछै धकै चालांला ।

दूजै दिन आधी रा वै आपरै गांव पूगा । हाळी तौ पाधरौ आपरा धणी री गवाड़ी रै सांम्ही जाय गाडी ठांमी । घरवाळी पूछयौ — औ किणरौ घर है ?

"गांव चौधरी रौ ।"

"जद अठै लायनै गाडी क्यूं ठांमी । अपांरै घरै चालौ । जैड़ौ है, वौ ई कांम आवैला ।"

धणी समझाई तौ ई वा नीं मांनी । अंटी री जोर व्है तौ घर वसतां कांईं जेज लागै । दूजै दिन ई जादू रै उनमांन सै चीजां वपराइजगी । जूंना ढूंढा में नवौ घर वसग्यौ । हाळी दिन ऊगतां पांण आपरा धणी नै गाभा, डोरौ अर माठियां संभळाय दी । नवी ठौड़ अेकली वींदणी नै लेय वसण सारू चौधरी कड़मड़ तौ खासा करया पण हाळी ही जकी बात साच साच वताय दी के लुगाई किणी भाव नीं मांनी, वौ खुद तौ घणौ ई कह्यौ ।

चौधरी डोढ़ में कह्यौ — आज सूं ई धावळिया रौ हाळीपणौ साजण लागग्यौ तौ ऊमर कीकर पार पड़ैला । गाडी रौ पाचरौ अर लुगाई रौ टाचरौ कुटयोड़ौ ई कांम देवै । पगरखी मिनख रा पग में अर लुगाई रा माथा माथै ई छाजै । पछै

थारी भोळी समझ सूं कुण माई रौ लाल पड़पै ।

पण औ हाळी धणी री आ सीख नीं मांनी। आपरी गुण-वंती लुगाई माथै उणनै इत्तौ भरोसौ हौ के वा रात नै दिन अर दिन नै रात कैवती तौ ओकर उणनै मांनणौ पड़तौ ।

संजोग री बात के ओकर ओड़ी ई परख री घड़ी आयगी। दसरावा रै दिन असवाड़ै-पसवाड़ै री सगळी रया राजाजी रा दरसण करण सारू जावती । खम्मां-घणी खम्मां-घणी री घोखां उडती । वौ जाट रौ वेटौ ई दरबार में जावण सारू वहीर व्हियौ जणा उणरी बहू कह्यौ — थें राजाजी रा दरसण करण सारू जावौ तौ हौ, पण ओक कैणौ तौ म्हारौ ई मांनणौ पड़ैला ।

धणी कह्यौ — थें घड़ी घड़ी म्हनै आ कांई बात पूछौ, थांरौ कैणौ म्हैं सपना में ई टाळ सकूं भलां ।

तद जाटणी कैवण लागी — बाकी सगळी रया तौ राजाजी रै दरसणां सारू जावैला, खम्मां-घणी खम्मां-घणी करैला । पण थें तौ घोड़ा माथै वैठा थका ई दड़बड़ां दड़बड़ां पाधरा दरबार में जाजौ । पगरखी खोल राजाजी रा माथा में आवेस खाहड़ा री जंतराय वांरौ पोत्यौ अळगौ वगायनै धक्लै ई छिण घोड़ा माथै वैठ ओपारै गांव आय जाजौ । लारै मुड़नै ई मत देखज्यौ ।

वौ वद वदनै कह्यौ हौ के लुगाई रा कैणा सूं वौ सूळी माथै चढ़ण नै त्यार । औ सांप्रत सूळी माथै चढ़णौ इज है । उण गुणवंती लिछमी रै सागै वौ नवलख तारां जड़ी ओक ओक रात में हजार जलमां जित्तौ आणंद पायौ, अबै मर जावै तौ

ई वेजा वात कोनीं । वौ तौ म्यांनौ पूछ्यां विना ई दरबार कांनी घोड़ौ वगडायौ ।

दरबार रै मांय ई वौ हेटै नीं उतर्यौ । परघै आ सोचनै पाल्यौ कोनीं के कदास राजाजी रौ कोई खास परवांणौ व्है सकै । वौ तौ उतरतौ ई खड़ां खड़ां सिंघासण माथै बिराज्या राजाजी कांनी वहीर व्हियौ । अड़ौअड़ पूगतां ईं भंवायनै जूता री जंतराई अर पोत्यौ अळगौ वगाय दियौ । लोग-बाग विचार करै जित्तै जित्तै वौ तौ घोड़ा माथै बैठ आपरौ गांव नैड़ौ लियौ ।

राजाजी री आंख्यां आडी अंधारी आयगी । दीवांण मारौ-मारौ रौ आदेस देय पोत्यौ उठाय राजाजी रै माथै धरण वाळौ ई हौ के उणनै पोत्या रै मांय अेक डूंमी सरप लटपट लटपट करतौ निगै आयौ । थोडी किचरीजगी ही । खुद राजाजी जद आपरी निजरां पोत्या रै मांय डूंमी सरप देख्यौ तौ वै जांणै जित्ता राजी व्हिया । धकला दिन तौ इण भोळा असवार रै इज दियोड़ा है । डूंमी सरप रै डस्यां पांणी मांगण रौ ई कांम नीं हौ । अेक मौत में तौ घाटी नीं हौ । औ असेंधौ असवार ई आज तौ प्रांण बचाया । राजाजी आदेस कर्यौ के व्है जठा सूं ई सोधनै लावै । मूंडै-मांग्यौ इनांम देवैला । राज मांगै तौ राज री ना कोनीं ।

धणी पूगनै रह्यौ उण सूं थोड़ी ताळ पछै ई राज रा असवार उगरौ घर बूझता बूझता आया । लुगाई बारणा माथै ई ऊभी ही । जांणै रूप री इज कोई लांठौ चित्रांम !

धणी घर रै मांय हौ तौ ई वा साव नटगी । कह्यौ—

वै तड़कै ई खेतां गिया सौ हाल तांई आया कोनीं। पण कांम कांई है ।

तद असवार कह्यौ के पोत्या रै आंटां में चापळियोड़ा डूंमी सरप नै मार थारौ धणी राजाजी रा प्रांण बचाया, सो वै राजी होय मूंडै-मांग्यौ इनांम देवण नै त्यार । मांगै तौ आधा राज री ई ना कोनीं । भाग खुलै जद यूं खुल्या करै !

असवारां री निजरां में उणनै मैल निगै आयौ । वांरी सूगली भूखी आंख्यां उणरा डील में खुबती ही । अेक आडा री आड़ में ऊभ कंवण लागी — हाथां में करार है जित्तै भाग री कमाई री भरोसौ नीं करां ।

आ कंय वा तौ भड़िद करती रौ आडौ ओडाळ दियौ । असवार मूंडौ ढेरनै आया ज्यूं ई पाछा ढळग्या । राजाजी रै सांम्हो हाथ जोड़नै कंवण लागा — अंदाता, घर रौ पतौ तौ लगाय ई लियौ, पण घर री धणियांणी कह्यौ के वौ तौ राज-दरबार में अणूंता कोड-मोद सूं गियौ सो काले तांई नीठ ढूकैला ।

डूंमी सरप रै मरणा री अर आधौ राज देवण री वात सुणी तौ ई वौ आपरी घरवाळी नै किणी वात रौ मांन्यौ नीं पूछ्यौ । पूछै जैड़ी आज दिन तांई बात ई नीं करी ही । उणरै देखतां देखतां गवाड़ी देव रमै जैड़ी व्हैगी । सगळी वातां रा थाट जमग्या । खूंटै भंवातड़ा री भैंस्या, नागौरी वळद, खेत अर बाड़ा ! किणी वात री खांमी नीं ।

राजाजी सोच्यौ के अबै दीवाळी किसी आंतरै । उण दिन दरसण करण सारू आवैला जद मांगै सो मंसा पूर दूंला ।

बापड़ौ डरतौ लुकग्यौ दीसै ।

दीवाळी रै अेक दिन पैला जाटणी आपरा धणी नै कह्यौ के वौ आज उणी भांत घोड़ा माथै बैठ दरबार में जावै । राजाजी झिरोखा में बैठा दरसण देता व्हैला । निसंक पाखती जाय, लप वांरी टांगड़ो झाल अळगा गदरा माथै लाय पटकै। पछै उणी भांत घोड़ा माथै बैठ पाधरौ घरै । लारै मुड़नै ई नीं जोवै ।

पैला ई नीं पाल्यौ सौ दूजी वळा किण री हीमत जकौ पाळै । घोड़ा सूं हेटै उतर वौ धमधम नाळ चढ़तौ इज निगै आयौ। राजाजी रै पाखती जातां ईं लप टांगड़ी झाल वांनै ऊंधा लटकाय बारै लायौ । राजमैल सूं आंतरै अेक गदरा माथै लाय पटकिया । राजाजी रै साथै साथै आखी परधै ई बारै आयगी । औ कांईं खिलकौ है !

पागड़ै पग देतां ईं हड़ड़ हड़ड़ करतौ मैल धुड़ियौ। देखतां देखतां ढिगलौ व्हैगौ । राजाजी अर घणकरी परधै रौ चिग-दियौ व्है जातौ । माईत तौ अेकर ई जलम देवै, औ खेळौ राजाजी रा दोय वळा प्रांण बचाया । राजाजी आदेस करयौ के ज्यूं-त्यूं उणनै आव-आदर सूं अठै लावौ । राज सूंप्यां बिना वै अंजळ ई नीं लेवै ।

आदेस मिळतां ईं असवार न्हाटा । घोड़ां री पोड़ां सूं धूळ रा गोट उडावता पाधरा उणी इज ठायै पूगा । कह्यौ के राजाजी तौ उणनै भगवांन सूं ईं वत्तौ मांनै । टांगड़ी झाल बारै नीं पटकतौ तौ राजाजी रै साथै केई दरबारियां री ढिगली व्है जाती । राज नीं सूंपै जित्तै राजाजी अंजळ ई नीं लेवैला।

जाटणी कह्यौ — पण राज चाहीजै किण रै ? थांनै दीजै औ राज ! म्हैं तौ थांरा राज री चिमटी वांनी जित्ती ई कदर नीं करूं । जे राज वत्तौ व्है तौ थांरा राजाजी प्रांण वत्तणा री खुसी में राज देवण री वात नीं करता ।

पछै धणी नै मांय ले जाय कह्यौ — जांणौ तो थांनै है, पण राजाजी कीं धांमै तौ ई हुंकारौ मत भरज्यौ । नीं राज रौ अर नीं खजांना रौ ।

धणी कह्यौ — थारै आयां पछै म्हारै कांई वात री कमी । थारी अेक मुळक माथै सौ राज वारनै फेंक दूं ।

लुगाई कह्यौ — आ बात तौ म्हैं जांणूं, घड़ी घड़ी दरसावण री जरूरत कोनीं । म्हैं कैवूं सौ अेक वात मांगणी है । राजाजी घणौ ई वाद करै तौ कैजौ के दीवाळी री रात आखा राज में अपांरै घर सिवाय नीं कठै ई दीयौ वळै अर नीं कठै ई चांनणौ व्है । राजमैल में ई नीं । वस, दूजी कीं चीज मत मांगज्यौ ।

असवार उणनै साथै लेय राज - दरबार में पूगा तौ राजाजी उरबांणै पगां सांम्ही मिळण नै न्हाटा । वाथां भर भर मिळ्या । सिंघासण माथै जोड़ै विठांणियौ । राज सूंपण री वात करी तौ वौ साव नटग्यौ । नटतौ ई गियौ ।

दीवांण कह्यौ — अंदाता, राज तौ करण वाळा ई करै । अै गिंवार लोग तौ धन अर सोना - चांदी सूं राजी व्है सौ खजांनौ सांम्ही कर दां ।

पण वौ गिंवार तौ नीं धन लेवण सारू राजी व्हियौ अर नीं हीरा - मोती लेवण सारू । जांणै नटणा सिवाय ऊमर में

कीं दूजी वात सीखी ई नीं । राजाजी घांम धांम काया व्हैगा अर वो नटतां नटतां कायो व्हैगो । सेवट वो कह्यो — आप देवण सारू इत्ती ई तेवड़ली व्हो तो अेक वात मांगूं......

राजाजी आखता होय बिचाळै ई बोल्या — वा कांईं, झट वतावै तो म्हनै कीं नेहचो व्है ।

तद वो कह्यो — काले दीवाळी रै दिन, म्हारी छांन रै सिवाय आखा राज में नीं कठै ई दीवो बळै अर नीं दूजो ई किणी भांत रो चांनणो व्है ।

राजाजी कह्यो — वावळा, मांग नै ई कांईं नाकुछ चीज मांगी। म्हनै देवतां ईं लाज आवै । थूं कैवै तो धकली दीवाळी तांईं किणी नै दीवो नीं बाळण दूं ।

"नीं, फगत इणी अेक दीवाळी, इण सिवाय म्हनै कीं दूजी वात नीं चाहीजै । काले आपरा राजमैल में ईं दीवो नीं झुपैला ।"

राजाजी कह्यो — हां रे हां, इत्तो कांईं खरावै, म्हैं तो अेक वार में ईं समझग्यो ।

वो पैली मोट्यार हो सो लेवण सारू नट्यो । राजाजी उत्तो वाद कर्‌यो तो ई वांरी वात पार नीं पड़ी । बिना कीं लियां ईं वो तो खुसी खुसी आपरै गांव आयो, पण राजाजी नै विना कीं दियां चैन नीं पड़ी । देवणा सूं वांरा मन में सांयत रैती ।

राजाजी अेकण सागै हजार घोड़ां माथै असवार दोड़ाया जको आखा राज में गांव गांव डूंडी पीटीजगी के सिंझ्या पड़्यां पछै कोई दीवो झुपायो के दूजो ई चांनणो कर्‌यो तो घांणी

में पीलावण री आदेस है ।

दूजै दिन अमावस री काळो-बोळी रात विरंगी दीवाळी आई । नीं आभा में चांनणो अर नीं उण राज री धरती माथै अेक ई दीवो । दो घड़ी दिन थकां लोग-बाग सीदो कर लियो । सिझ्यां पड़ियां पछै कोई चिलम ई नीं भरी ।

अंधारा रै सागै ई देवलोक सूं धरती माथै लिछमीजी अवतरिया । हीरा-मोत्यां रै गैणा सूं लड़ाभूंम । झम-झम करतां धरती माथै पग दियो पण कठै ई चांनणा री तिणग ई निगै नीं आई । लिछमी री आंख्यां तौ फगत चांनणा रै हेवा ही । अंधारा में तौ उणनै अंगै ई सूझणो बंद व्हैगो । अेक ठौड़ ढबण री आदत नीं । अंधारा में चालै तौ ठोकरां खावै । भचीड़ा खावै । म्रितलोक रा वासी लिछमी सूं धापग्या दीसै । हजारूं बरसां में अैड़ी दीवाळी तौ नीं देखी ।

ठोकरां खाय खाय पग लोहीझांण व्हैगा । कांटा अर सूळां सूं पगथळियां वींधीजगी । बांटकां री झाटियां में अळूझ अळूझ गाभा झीर झीर व्हैगा । हमेसां तौ जगामग करती दीवाळी आवै । लोग बुलावण सारू तरजन तरजन करै । फोरा-पतळां री तौ वा मूंडो ई नीं देखती ।

राजमैल में गी, उठै ई निरंध अंधारौ । बरसां री सेंध-पिछांण वाळा सेठां री हवेलियां कांनी गी, उठै ई घोर अंधारौ । आखौ राज छांन मारयौ पण कठै ई उजास री रेखा निजर नीं आयौ । गिगन रा तारां नै छोड धरती माथै कठै ई, किणी भांत रौ उजास नीं हौ ।

सेवट भटकतां भटकतां, ठोकरां खावतां खावतां लिछमी

उण जाट वाळै गांव आई। आखी गळियां में घणा ई भचीड़ खाया पण कठै ई चांनणौ नीं दीस्यौ। अेकर तौ खंधेड़ा में पड़गी। हाडका जरकीजग्या। गोडा अर खुणियां छुलगो। पण जीव में जीव हो जित्तै वा बिसाई नीं खाई। टसकती टसकती उण जाट री छांन रै गळाकर नीसरी। मांय जगामग चांनणौ निगै आयौ। पण आडौ दियोड़ौ। पाखती जाय भचेड़ियौ। मांय सूं लुगाई री बोली सुणीजी — कुण व्है ई? डाकण, भूतणी के स्यारी!

लिछमी गिरणावती बोली — नीं म्हैं डाकण हूं अर नीं भूतणी। लिछमी हूं। राज में कठै ई चांनणौ निगै नीं आयौ। थारी छांन रै मांय चांनणौ देख अठै आई।

लिछमी रौ नांव सुणतां ई जाटणी तड़कनै बोली — डाकण, भूतणी रै आडौ खोल देती, पण थारै नीं खोलूं। आगी बळ अठा सूं। आखा घर रौ घरकूलियौ कर न्हाकियौ अर अबै रुळती रुळती आई। जावै के दो चार जातूड़ां री जंतराऊं।

लिछमी रा आखा डील में चभीका ऊठता हा। कठै ई जावण री सरधा नीं ही। भीणा सुर में बोली — थूं ई बता कठै जावूं! आखा राज में कठै ई चांनणौ कोनीं।

"थूं किणी नै चांनणा जोग राख्या व्है तौ!"

"अंधारा रै मांय म्हारी पगथळियां लोहीझांण व्हैगी। बांटकां सूं अळूझ अळूझ गाभा तार तार व्हैगा। बारै ऊभी नै भंवळ आवै, हाडका तूटै। थारै गांव रा अेक खंधेड़ा में तौ मरती मरती बची।"

जाटणी दांत पीसती बोली — मर जाती तौ पापौ कटतौ।

दुनियां नै सोरौ सास तौ आवतौ। रुळियार रांड, अ्राज अठै तौ कालै उठै । थारी कीं साख पैठ ई है! खूड़ - पग्गी, क्यूं आधी रात रा माथौ पचावै, उवळै क्यूं नीं । म्हैं तौ थारी छींयां ई नीं भेटणी चावूं ।

लिछमी आडा रै माथा रो भचीड़ देवतां वोली — अ्रै तौ वगत वगत री वातां है । मोटा मोटा टणकेल पगां पोल्यौ मैलै, हाथ जोड़ै, नेवरा करै तौ ई गिनरत नीं करूं । म्हारी छींयां पड़ीं कठै है ! आज तौ थूं मोसा देवै जित्ता ई छाजै। खोल वाल्हा, अ्रेक रात में म्हारौ आखौ डोल वंधग्यौ । ठौड़ ठौड़ लोई रिसै ।

जाटणी तौ ई नीं मांनी । किवाड़ रै सेंठौ होड़ौ देवती बोली — थूं तौ सोल्याळ अ्रेक रात में ई काई व्हैगी, थारा हाडका कुळै। जका पीढ़ियां सूं इण भांत आफळै, ठोकरां खावै, भटकै वांरा कांई हवाल व्हैता व्हैला, वता तौ खरी ।

"हवाल तौ भूंडा इज व्हैता व्हैला । पण म्हैं अ्रेकली कठै कठै सांधौ लगावूं ।"

"थारै सांधा सूं गरीवां रौ कीं भलौ नीं व्हैला, पीढ़ियां रा ठाया छोडनै थूं गळियां में भटकै ई क्यूं । राजावां रै, ठाकर - ठेटरां रै गढ़ - कोटां में जा, सेठ - साहूकारां री हवेलियां में मछरां कर, म्हां गरीवां रै अठै कांई घरचौ है! "

लिछमी लोभ देवतां वोली — म्हारौ पग - फेरौ व्हियां पूं गरीब रैवैला कोनीं । सै वातां रा थाट व्है जावैला ।

"पण थारौ भरोसौ कांई । मन करै उठी नै ढळ जावै। आज तौ विखा री मारी आसरौ मांगै अर कालै चभीका

मिटतां ई खिसक जावै, इण विचै थूं आंतरै ई चोखी।"

लिछमी नैं जूंभळ आयगी! आखा राज में अेक ई ठौड़ चांनणौ मिळचौ, पण घर री धणियांणी साव ऊंधा माथा री। सेठ-साहूकार, राजा-माराजा पगां में आंख्यां बिछावै, पण अेक आ ओदसा है जकी कणाकली धुरकारै। गरळावती बोली—खोल, वाल्हा खोल। वेळा टळै। इत्ती करड़ावण मत कर। आज पैली म्हैं किणी री इत्ती लटापोरियां नीं करी। थनै हाथ जोड़ूं मांनजा, वेळा टळै। कठै ई दूजी ठौड़ चांनणौ निगै आवती तौ म्हैं थारी छांन रै गळाकर ई नीं निकळती, पण जोर कांई करूं।

जाटणी बीजळी रै उनमांन किड़कती बोली—फागड़दी रांड, म्हारै ई बारणै ऊभी म्हनै ई भांडै। म्हैं कांई करड़ावण करी। लोतर-बायरी री कुण गरजां करै। कित्तो ताळ व्हौ, माथौ खावतां नै, कठै दूजी ठौड़ उखलै तौ कोनीं। मिनकी डाकनै आई दीसै!

कैड़ी कावळ पजी। पण तेड़ां में चांनणौ दीसै जित्तै दूजी ठौड़ जावै ई कठै। राजमैल अर हवेलियां ई काळा-बोळा अंधारा में बूरीजगी, जकौ छांन-टपरियां री कांई जिनात। गिगन रा तारां नै छोड आखा राज में कठै ई चांनणौ कोनीं। अबै करै तौ कांई करै! रोवण-काळी होय बोली—खोल वाल्हा खोल, थारै पगां पड़ूं। म्हारी वेळा टळै। जे आज री रात दिवा रै चांनणा रौ परस नीं व्हियौ तौ म्हैं सूरज री झाळ सूं भसम व्है जावूंला।

अबकी जाटणी सादा सुर में बोली—दीवां रै चांनणा

रौ म्हारी छांन में कीं तोटौ कोनीं। गावा घी रा सात दीवा झुपै । थोड़ा दिनां री माया विचै, म्हांरी औ तोटौ घणौ भलौ । थूं अेक कोल़ करै तौ आडौ खोलूं ।

आज तौ लिछमी किणी कौल - वाचा में बंधण सारू त्यार ही । हारचोड़ी व्है ज्यूं बोली — वाल्हा, थूं मूंडा सूं बोलनै कीं दरसा तौ खरी । थूं कैवै सौ ई बात मांनण नै त्यार !

"वचनहार नीं व्है तौ बतावूं ।"

"अबै कठा तांई म्हारौ छेह लेवैला । बतावणौ व्है सो जल्दी बता, रात अबै थोड़ीक बाकी है ।"

किंवाड़ रौ होड़ौ खोलतां बोली — सात पीढ़ी तांई इण गवाड़ी रौ ठायौ छोडनै नीं जावै तौ आगळ खोलूं ।

लिछमी आखती होय बोली — कठै ई नीं जावूं वाल्हा, कठै ई नीं जावूं । अबै तौ आडौ खोल, घणी क्यूं तावै ।

"वचन देवै ।"

"हां, वचन देवूं ।"

तद जायनै घर री घणियांणी आगळ खोली । आडौ खुलतां ई हप्प करती लिछमी मांय आई । गावा घी रा सात दीवा जगमगाट करता हा । वा दीवां रै चांनणै बावळी होय घणी ई नाची । घर में लिछमी री पगफेरी व्हैतां ई हीरा - मोत्यां री बिरखा व्ही, सोना - चांदी रा थट लागग्या । नौखंडियौ मैल़ चुणीजग्यौ । अन्न - धन री भखारियां भरीजगी । बाड़ा में गायां री छांग तांबाड़ण लागी । खुद वेमाता उण मैल रै आंगणै कोडू दळण बैठी । देस रै धणी सूं ई बत्तौ चौधरी री गवाड़ी रौ ठरकौ जमग्यौ । गांव गांव हाकौ फूटग्यौ ।

पण घर रा घणी रै मूंडै आब नीं पळकी । वौ दुमनौ-दुमनौ रैवण लागौ । घरवाळी तौ छींयां देखनै बात भांपण वाळी ही । पूछ्यौ — राजाजी थांरौ कुरब-कायदौ राखै, माया रा भंडार भरचा, हीरा-मोती कांकरा ज्यूं बिखरचोड़ा पड़्या, कांई बात री कमी कोनीं । म्हैं केई दिनां सूं देखूं के थांरौ मूंडौ उतरचोड़ौ । बात कांई है । बतावौ तौ खरी ।

घणी कैवण लागौ — म्हनै आज दिन तांई ठा नीं पड़ी के इत्ती माया रौ कांई कांम ! घणौ ई सोच्यौ तौ ई समझ में नीं आई । दोय जूंण रोटी, अेक टपरी, पैरण जोग गाभा-लत्ता, इण सूं वत्ता धन री जरूरत कठै । साच पूछौ तौ उण खेजड़ी हेटै रा चूरमा वाळौ आणंद म्हनै इण नौखंडिया मैल में कदै ई नीं आयौ, थें मांनौ म्हारी इण बात नै ।

घरवाळी बोली — मांनूं क्यूं नीं, थांरी बात हजार वार मांनूं । पण मां रा वै बोल, जवार री घाट अर खाटी छाछ री वौ करबौ, अेवाड़ा रौ वौ तूटौ डुखलियौ, अर वौ फाटोड़ौ गूदड़ौ, म्हैं भूलणी चावूं तौ ई भूलीजै कोनीं । फगत गरीबी रै कारण थांनै वै बोल सुणणा पड़्या, अेवाड़ा री वा रात भुगतणी पड़ी । फगत गरीबी रै कारण थांनै सात फेरां री परण्योड़ी छोडणी पड़ती । मिनखां री इण दुनियां में सूरज बिचै ई माया रौ वत्तौ चांनणौ है । भगवांन वैड़ी रात वैरी-दुस्मी नै ई नीं भुगतावै । मेड़ी रै बारणै सूती म्हैं वा रात दोरी घणी बिताई ही !

घणी कह्यौ — अेवाड़ा रा डुखलिया माथै म्हैं किसौ सुख सूं सूतौ हो, पण इण में अपांरौ कांई चूक !

घरवाळी कह्यौ — थें अलबत मोटयार हो, अेवाड़ा रा उण दुख नै भूल सकौ, पण म्हैं लुगाई री जात मेड़ी रै आंगनै सूती उण रात नै मरयां पछै ई भूल नीं सकूं ।

धणी कह्यौ — म्हैं भूलण री कद कैवूं, पण अेक बात री सावचेती राखज्यौ के जकौ दुख अपां भुगतियौ, वौ अपांरै हायां किणी दूजा नै नीं मिळै । इण माया में सगळा निरभागियां रो सीर है । सागै रो सागै आ बात ई मत भूलज्यौ ।

"आ कोई भूलण जैड़ी बात है कांई ।"

थोड़ी ताळ तांईं दोनूं ई बोला बोला ऊभा रह्या । अण-छक लुगाई रै मूंडा सांम्हो देखनै धणी कह्यौ — मांनो तो अेक बात कैवूं ।

"थांरी किसी बात टाळी जकौ आज इण भांत पूछण री जरूरत पड़ी ।"

नीचो धूण करनै कैवण लागौ — अेक रात उण खेजड़ी वाळा माळा माथै बीतावणो चावूं । थें समझ तो गिया म्हारै मन री बात ।

"थांरै मन री बात नीं समझती तो आज अै दिन देखाळो नीं देवता ।"

संजोग री बात अैड़ी बणी के दूजै दिन ई मोटोड़ी भाई बैन नै आंणै आयौ । छोटोड़ी बैन रै ब्याव रा टांणा माथै । सास जंवाई नै घणै मांन सूं बुलाया । अैड़ी नीं व्है के म्हां गरीबां री सुध नीं लेवै ।

तेरस री मंगळ घड़ी वे गाडी जोत वहीर व्हिया । बैनोई छोटी साळी सारू घणौ ई धन अर गैणौ-गांठौ लियौ ।

चवदस रौ निरमळ चांद ऊगौ ई हौ के वांरी गाडी उण खेजड़ी रै पाखती आई। साळा नै गांव भेज वै उठै ई ढब्या। तड़कै आवण रौ कह्यौ।

दोनूं जणा खेजड़ी रै उण माळै चढ़्या। चांद मुधरौ मुधरौ इमरत बरसावतौ हौ। वायरै रा ठाडा भोला। खुलौ आभौ। अणगिण तारां रौ भवाभव खिवणौ। खेजड़ी रै लूंगां रौ हरियळ चंवर। नवलख तारा उण माळा में जड़ण सारू तड़फा तोड़ण ढूका।

चांद री इमरत पीवतौ धणी बोल्यौ — इण सुख आगै सुरग रा राज अर कुबेर रा खजांना रै ई हजार वार ठोकर मारूं। वापड़ी लिछमी री कांई जिनात जकौ इण सुख नै पूगै!

भोळौ धणी अेक भोळौ सवाल वळै करयौ — आ चांदणो गिगन रा चांद री है के थांरा उणियारा री।

माळा रौ चांद आंख्यां मींचतौ बोल्यौ — थें जांणौ, म्हनै ठा कोनीं।



वीरौ म्हारौ भाई !

अेक हौ बांमण । तिणरै हा दो टाबर । बेटौ सोळै बरसां रौ अर बेटी दस बरसां री । बांमण चाळीसां पूगौ जद बांमणी मरगी । बरस डोढ़ेक तौ टाबरां री खातर काठौ रह्यौ, पण पछै सेवट पोसणौ पोवणौ अर रोट्यां रौ छाती-कूटौ देख्यौ तौ लुगाई सारू मन डुळाय लियौ । अधबूढ़ रौ ब्याव नीं होय नातौ व्हियौ । पचीस बरसां री नातायत रै साथै दसेक बरसां री लाड़वाड़ आई । वा लाड़वाड़ छोरी काळी अर विडरूप ही । कांणी । दांतली । खटरी । ओजायली । खोटी । तन री गळाई उणरौ मन ई काळौ हौ ।

बांमणी फूठरी तौ अणूंती ही, पण मन री साव वोदी । मळीच । धोयली । खोड़ीली । वड़का बोली । धूतर-गारी । ओछी । धापनै पोची । घर में पग देवतां ई सावका बेटा-बेटी रौ खेरौ ई पकड़ लियौ । खुद री छोरी रौ तौ लाड राखती पण वां दोनूं भाई बैनां माथै धसळा करती । कूटती । दुभांत राखती । अस्टपौर कांम करावती ।

नवी लुगाई रै सिखायां सिखायां बांमण तौ अेक पिटनाई रै अलावा घर रौ सै हल्लौ छोड दियौ । तद सोळै बरसां रा बेटा नै रमणौ छोड घर रौ सगळौ कांम संभाळणौ पड़ग्यौ ।

खेती-पाती । दुवारी । सूड़-सवाड़ । वाड़ा री फूस-वाईदौ । ढोर डांगरां नै चरावणो ।

पांणी सींचण नै जावती तौ बांमणी लाड़वाड़ बेटी नै छोटी छुकलियौ देवती अर सावकी बेटी नै लांठी मटकी । बेटी नै सोरो कांम भुळावती अर सावकी बेटी नै दोरौ, अवखौ । खुद री बेटी नै छांणा चुगण सारू छोटौ खारोलियौ देवती अर सावकी बेटी नै कैवती के वा लकड़ियां रौ मोटौ भारौ लावै । बेटी थेपड़ियां थापती । अेंठवाड़ा बासण मांजती । पीसती । दळती । लाड़वाड़ ठौर जतावती । चुगली-चकारी करती ।

इण पछै ई रोट्यां में दुभांत । वासी, लूखा, ठाडा अर वळियोड़ा । दूध, दही अर घी गुळ रौ वास्तौ ई नीं । बाकी तीनूं जणां सांतरी रोट्यां जीमता । दोनूं भाई बैन थोड़ा ई दिनां में काठा आंती आयग्या । छांनै-ओलै रोवता । मां रै मरयां मा रीं ममता पिछांणी ।

अेक दिन री वात के दोनूं छोरियां खेत में वळीतौ लावण सारू गी । बेटी हळ खड़तौ ही । वौ आपरी बैन नै तौ लकड़ियां री छोटी अर हळकी भारी उंचाई । कांणची छोरी रा खारोलिया में छांणां री ठौड़ धग्गड़ भरनै माथै जोर सूं पटकियौ । कांणची रै इत्तौ खटाव कठै । भूं भूं रोवती घरै आई । अेक री इक्कीस मेळी । भांटां रौ खारोलियौ आंगणै पटक भूंडै ढाळै रोवण लागी । माथा रौ गूमड़ौ वतायौ । पछै क्यूं पूछौ ! छिड़ियोड़ी नागण रा पूंछड़ा माथै पग लागौ । लटिया विखेर, काजळ टीकी मिटाय, गैणा विलिया उतार रिसांणौ करनै आंगणै सूयगी । चूल्हा में पांणी उंधाय माथै तवौ ऊंधौ धर

दियो । कांणची पाखती वैठ रोवण लागो । इण पैला बांमणी सावकी वेटी नै घरेळ घरेळ हाथां रौ वट तो काढ़ ई लियो ही ।

वेकरड़ी री फेरी लगाय बांमण घरै आयो । आ रचना देखी तौ हाक्यौ - बाक्यौ रैगौ । घणा थोरा अर लटापोरियां करी तद जाय बांमणी वेसवार अर छमका लगाय सगळी बात बताई । बीच बीच में लाड़वाड़ ई बोलती जावती कै वौ राख - उडियो आपरी ब्रैन नै तौ भेळी जीमाड़ै अर उणनै बुरकारै । नित चिड़ावै अर कूटै तौ ई वा इत्ता दिन चुगलो नीं करी । आज माथा में खोपरा जित्तौ लांठो गूमड़ौ व्हैगौ । माथौ धोवतां मां नै ठा पड़ी जद सगळी वातां बतावणी पड़ी ।

सगळा रोवणा रोय अंत में बांमणी अेक अैड़ी निछेची बात करी, जिण सूं बाप रा मन में आकड़ो ऊठग्यो । वा आंख्यां मींचनै कह्यौ — जवांनी अेक थांरै वेटा में इज आई कांई, जको वौ मां नै ई भूंडी निजर सूं देखै । म्हैं तो लाजां मरती थांनै कह्यौ कोनीं । सौ खतां री आ अेक इज फारगती है के थांरा इण लाडला बेटा नै मारो तौ म्हैं घरवास राखूं, नींतर म्हारी छोरी नै लेय पीहर जावूं । थांरा घर रौ पांणी ई नीं पीवूं ।

बात सुणतां ई बाप रै माथै भूत सवार व्हैगौ । कह्यौ— अैड़ा वेटा जीवनै ई कांई निहाल करैला । थैं कसणी छोडौ, म्हैं आज ई उणनै ठांणै लगाय दूंला ।

पाखती बैठी वैन डुसक्या भरती ही । बाप रै मूंडा रा बोल सुणतां ई उणरा आंसू सूखग्या । वा पांन रै उनमांन थरथर कांपी । काळजो धुक धुक करण लागो । नीठ ऊभी व्ही । बोली

बोली घर सूं वहीर व्ही । भाई नै समंचार देवण सारू न्हाटी ।

वहू री हाथ झाल धणी बोल्यौ — लौ अबै बैठा व्हौ । थांरै रूसणौ करयां म्हारै अेक दिन ई सरै भलां ।

बांमण नै अेक नवी ई वात री अेलम व्हियौ के अडोळी, रूसीजियोड़ी लुगाई वणाव - सिणगार करयोड़ी बिचै घणी वत्ती फूठरी अर सुहांणी लागै ।

साळ री औडौ उघाड़ दोनूं लोग - लुगाई बारै आया । लाड़वाड़ तिवारी में बैठी रोवती ही । ओरणा रा पल्ला सूं आंख्यां पूंछ बुचकारनै कह्यौ — रो मत, अबै थनै कदै ई कमसल दुख नीं देवैला ।

बांमण हाथ में जातूड़ौ लेय वहीर होवण लागौ जणा, बांमणी कह्यौ — थांरै तौ आंचौ इज घणौ । अबार रोट्यां पोवूं, जीमनै जाजौ ।

धणी कह्यौ — अबै तौ पाछौ आयनै ई जीमूंला । थें रसोई वणायनै त्यार राखौ ।

बांमण री आंख्यां में काळ भंवतौ निगै आयौ । जगजगती आंख्यां सूं वौ आखतौ होय बारै निकळग्यौ ।

हळ खड़ता भाई नै जद बैन उणरै मारण रा समंचार दिया तौ भाई कह्यौ — बाप मारणी तेवड़ै तौ पछै बेटा रै जीवणा में धूळ । थूं रो मत । मरतां ई वन री कागलौ वणूंला । थनै मीठा मीठा आंम खवाडूंला ।

बैन कीं कैवणौ चावती के उणनै बाप आवतौ निगै आयौ । बोल गळा में ई चिपग्या । हळफळाई होय गांव सांम्ही न्हाटी ।

बेटौ हळ री गांगड़ो पजावतौ हौ । बाप नै आतां देख

ऊभी व्हियो । कह्यो — आप भातो लावण रा फोड़ा क्यूं भुग-
तिया म्हैं खुद घरै आय जातो ।

बाप तो सांप्रत काळ रो रूप वणनै इज आयो हो । उणरै मूंडा सूं जगजगता बोल निकळिया — आखी ऊमर री रोट्यां आज थनै अेकण सागै ई खवाड़ दूं । अधवेरड़ा यूं मां रो गनो ई नीं टाळचो ।

आ कैय वो भंवायनै वेटा रा माथा माथै जातूड़ा रो मेलो सो वेटो तो तड़ाच खायनै हेटै पड़तो इज निगै आयो । कुपाळी रा दो फाड़ा व्हैगा । लोई री परनाळ ज्यूं वहण लागी । गर-ळावतो गरळावतो कीं वोल्यो पण सुभट कीं ठा पड़ी नी । वो गरळावतो ढब्यो तो आंम रा अेक रूंख माथै कागलो कांव कांव बोलण लागो ।

दोनूं धणी-लुगाई कोड सूं भेळा वैठ रोट्यां जोमी । वैन आखै दिन भूखी री ।

दूजै दिन दोनूं छोरियां कांकड़ में वळीतो लावण नारू गी । आंम रा अेक रूंख माथै कागलो कांव कांव री मीठी वोली बोलतो हो । वैन नै भाई रा वोल याद आया । वा दौड़ी दौड़ी उण आंम रा रूंख हेटै पूगी । कांणचो ई लारै रो लारै दौड़ती आई । कागलो आपरी वैन नै पाका अर मीठा आंम तोड़ तोड़नै दिया । कांणची रा माथा में गुठलियां पट-कतो ।

वा रोवती रोवती घरै गी । मां नै कागला वाळी वात वताई । वांमणो समझगी के उण कागला में मरयोड़ा बेटा रो इज जीव है । वा तो उणी भांत आंगणै रूसणो करनै सूयगी ।

घणी घणा ई थोरा अर नेवरा करचा तौ ई वा नीं मांनी । सेवट मन री ही जकी बात दरसाई । कह्यौ — उण कागला नै मारौ तौ थांरौ - म्हारौ घरवास रैवै । नींतर म्हैं आ पीहर वहीर व्ही ।

बांमण कह्यौ — जद बेटा नै ई हाथां मार दियौ तौ पछै इण कागला नै मारणौ किसी बड़ी बात । इण नाकुछ बात सारू थें बिरथा क्यूं रूसणौ करचौ ।

पाखती बैठी बैन आ बात सुणती ही । पींपळी रा पांन ज्यूं वा थरथर कांपी । काळजौ धुक धुक करण लागौ । नीठ ऊभी व्ही । पछै भरणाटै उण आंम वाळा कांकड़ री दिस सांम्ही न्हाटी ।

रोवतां रोवतां सेवट आंम रा रूंख हेटै पूगी । कागलौ बैन नै आवतां देखी तौ वौ कांव कांव री मीठी बोली में बोलण लागौ । पाका अर मोठा आंम तोड़ तोड़नै फेंक्या, पण बैन ग्रेक ई नीं खायौ । बोली — वा कांणची घरै जाय वळै चुगली खाई । मां आटी - पाटी लेय सूयगी । काका खुदौखुद थनै मारण सारू आवै । म्हनै ग्रै तीनूं जणा भूखी राख राखनै मार न्हाकैला ।

भाई बैन नै थावस बंधावतां कह्यौ — थूं ग्रंगै ई इण बात री सोच मत कर । म्हैं मरनै वागां री सूवटौ बणूंला । थनै पाकी पाकी केई नवी नवी रसाळां खवाड़ूंला । ग्रंगूर, दाड़म, सेव, जांमफळ, नारंगी, इरंड - काकड़ी, सीताफळ इत्याद केई मीठा मीठा फळ । थूं क्यूं सोच करै । म्हैं जीवूं जित्तै थनै किणी भाव भूखां नीं मरण दूं ।

बैंन राजी राजी उठा सूं वहीर व्हैगी । मारग में बार सांम्ही घकियौ । बेटी माथै लकड़ियां री लांठो भारो देखनै कोनी पूछताछ नीं करी । पाधरी आंम रा रूंख गोडै आयी । कागलो उणी भांत कांव कांव करतौ हौ । तांणनै तीर वायौ तौ कागलो तौ बिंध्योड़ा तीर समेत आंगणै आय पड़्यो ।

कागला रै मरतां ई पाखती रा बाग में अेक हरियल सूवटौ मीठी वांणी में बोलण लागौ ।

दूजै दिन दोनूं छोरियां बळीतौ चुगण सारू कांकड़ में आई । बाग रै गळाकर नीसरी तौ सूवटा री बोली सुणीजी । बैंन नै भाई रा बोल याद आया । दौड़ी दौड़ी बाग में गी । कांणची छोरी ई लारै री लारै न्हाटी न्हाटी आई ।

सूवटौ बीरौ आपरी बैंन नै तौ नीं नीं व्है जैड़ी रसाळा खावण नै दी । बैंन तौ मीठा मीठा फळ खाय धापनै धुड़ व्हैगी । कांणची री मन तौ घणौ ई डुळियौ पण जोर कांई करती । बोली — सूवटा बीरा म्हनै ई पाका पाका फळ खावण नै दे रे ।

तद सूवटौ तड़ातड़ उणरा माथा माथै गुठलियां वगाई । माथा में ढीम ई ढीम उपड़्या ।

वा रोवती रोवती घरै गी । मां नै सूवटा री बात बताई । मां समझगी के सूवटा में कागला रौ जीव रमग्यौ । वा तौ इणी भांत आटी-पाटी लेय आंगणै सूयगी । घणी घणा ई लालरिया लिया पण वा उणरी बात नीं मांनी । कह्यो — उण सूवटा नै मारौ तौ थांरै साथै घरवास राखूं । नीतर म्हैं तौ रात रा ई म्हारै पीहर वहीर व्है जावूंला ।

वांमण कह्यो — जद बेटा नै हाथां मार थांरो कैणो मांन्यो तो पछै इण सूवटा नै मारणो किसी बड़ी बात । इण नाकुछ बात सारू थें बिरथा क्यूं रूसणो करचौ ।

पाखती बैठी बैन आ बात सुणती ही । थरथर कांपी । काळजो धुक धुक करण लागो । नीठ ऊभी व्ही । बाग सांम्ही न्हाटी । रोवतां रोवतां सेवट बाग में पूगी । सूवटो बैन नै आवतां देखी तो मीठी वांणी में बोलण लागो । पाका अर मीठा फळ तोड़ तोड़नै न्हाकिया पण वा ग्रेक ई नीं खायौ । बोली — वा कांणची घरै जाय वळै चुगली खाई । मां वळै आटी-पाटी लेय सूयगी । काका खुदोखुद थनै मारण सारू आवै । म्हनै ग्रै तीनूं दुस्टी भूखी राख राखनै मार न्हाकेला ।

भाई बैन नै थावस बंधावतां कह्यो — थूं किणी बात री चिंता मत कर । म्हैं मरनै जळ री डेडरो बणूंला । थनै पांणी सूं अमोलक मोती लायनै देवूंला । मोती बेच बेचनै इंछा व्है सो खाजै । म्हैं जीवूं जित्तै थनै किणी भाव भूखां नीं मरण दूं ।

बैन राजी राजी उठा सूं वहीर व्हैगी । मारग में बाप सांम्ही धकियो । खांधै तीर-कबांण टिरतो हो । बेटी रै माथै लकड़ियां रो लांठो भारो देख्यो तो कीं पूछताछ नीं करी । पाधरो बाग में आयो । सूवटो उणी भांत मीठी बोली में बोलतो हो । तांण नै तीर वायो सो सूवटो तो बिध्योड़ा तीर समेत धरत्यां आय पड़चौ ।

सूवटा रै मरतां ई पाखती रा सरवर में ग्रेक मींडको टरर टरर री मीठी बोली बोलण लागो ।

दूजै दिन दोनूं बैनां सरवर री तीर पांणी भरण सारू

आई । मींडको वैन नै आवतां देखी तौ वो तीर रै वारै आय टरर टरर रौ मिठास घोळण लागो । वैन नै भाई रा बोल याद आया । दौड़ी दौड़ी उण मीठी बोली री सोय न्हाटी । कांणची लाड़वाड़ ई लारै री लारै दौड़ी आई ।

मींडको आपरी वैन नै तौ अमोलक मोती लायनै दिया । निरमळ नीर सूं भरनै माटौ उंचाय दियौ । कांणची रौ मन ई मोत्यां सारू घणौ ई डुळियौ पण जोर कांई करतो । बोली: म्हारा डेडर वीर, म्हनै ई अमोलक मोती लायनै दै रे ।

तद मींडको उणरै सांम्ही जिळोखां अर जळसांप वगाया । ठौड़ ठौड़ जिळोखां चिपगी । वा घणी ई अरड़ाई । पांणी नै गिदोळ उणरा छुकलिया में कादौ भर दियौ । जिळोखां उणरी लोई चूस चूस टेटा व्है ज्यूं व्हैगी ।

वा रोवती रोवती घरै आई । डेडरा रौ मळीचपणौ बतायौ । मां समझगी के डेडरा में सूवटा रौ जीव वड़ग्यौ । वा तौ उणी भांत आटी-पाटी लेयनै आंगणै सूयगी । लटिया विखेर काजळ टीकी मिटाय, गैणा-ठिलिया उतार साव अडोळी व्हैगी । चूल्हा में पांणी खळकाय माथै ऊंधौ तवौ पटक दियौ ।

वेकरड़ी री फेरी लगाय बांमण घरै आयौ तौ वळै वा री वा रचना । घणी ई लटापोरियां करी । तद कह्यौ — डेडरा रौ चिगदियौ करौ तौ थांरै सायै घरवास राखूं नीतर म्हारी डीकरी नै लेय पीहर जावूं । जीवूं जित्तै पाछी नीं आवूं ।

बांमण तौ पाछा वै रा वै बोल कह्या — जद बेटा नै हाथां मार थांरो कैणौ मांन्यौ तौ पछै इण डेडरा नै मारणौ किसी बड़ी बात । नाकुछ बात सारू बिरथा रूसणौ करणौ ।

पाखती बैठी बैन आ बात सुणती ही । थरथर कांपी । काळजौ धुक धुक करण लागौ । नीठ ऊभी व्ही । सरवर सांम्ही न्हाटी । रोवतां रोवतां सेवट तीर माथै पूगी । डेडरौ बैन नै आवतां देखी तौ टरर टरर रौ मिठास घोळण लागौ । अमोलक मोत्यां रौ तीर माथै ढिगली लाय करयौ, पण वा अेक ई नीं उठायौ । बोली वा चंडाळ कांणची वळै आंटौ साजियौ । मां रूसणौ करनै सूयगी । काका तौ उणरी अेक ई बात नीं टाळै । थनै मारण सारू खुदौखुद काका मोटी टोळ लेयनै आवै । म्हनै अै तीनूं दुस्टी भूखी राख राखनै मार न्हाकैला ।

भाई बैन नै थावस देवतां कह्यौ—थूं किणी बात री चिंता मत कर । मोत्यां रौ वळै लायनै ढिग कर दूं । माटौ भरनै लेयजा । नित अेक अेक मोती घरै देजै, वै कुलालची थनै सोरी राखैला, थारौ लाड करैला । चार जूंणा बदळी तौ ई अै धारचा कोनीं । राजा रै अठै आंरौ वख नीं लागै । निपूती रांणी रै पेट जावूंला । नौ महीना सोरा-दोरा काढ़णा है । रांणी री पांखां वारै आवतां ई म्हैं पळाय पळाय रोवण ढूकूंला जकौ छिण वास्तै ई नीं ढबूं । किणी रै राख्यौ नीं रैवूंला । थूं आयनै हालरियौ गावैला जद रोवतौ ढबूंला । रांणी थनै उठै ई राख लेवैला । रै जाजै ।

पछै वा माटा में मोती भरनै उठा सूं वहीर व्हैगी । पाळ माथै बाप सांम्ही धकियौ । माथै लांठी टोळ ही । तीर माथै बैठौ डेडरौ टरर टरर करतौ ई हौ । बाप तौ पाखती जाय माथै टोळ थरकायौ । मींडका रौ चिगदियौ व्हैगौ । अेक लांठी हिलोळ आई सौ मरचोड़ा डेडरा नै मांय लेयगी ।

उणी रात निपूती रांणी रै आसा मंडी ।

नित अेक अेक मोती देय वा अभागी वैन कुलालची नाईतां रो मन राख्यौ । इण भांत नौ महीनां तांई वा आपरै दिनां रा दिन तोड़्या ।

नवमै महीनै रांणी रै कंवर जलमियौ । पांखां वारै आवतां ई पळाय पळाय रोवण मंडियौ सौ छिण वास्तै ई नीं ढबै । राजा - रांणी हैरांन । घणा ई औखद करया, टूणा - टोटका करया पण कीं कारी लागी नीं ।

राजा डूंडी पिटाई के जकौ ई राजकंवर नै रोवतौ ढाबैला उणनै मूंडै मांग्यौ इनांम । आखा राज री रया हालरिया गाय गाय, रमाय रमाय हार थाकी पण कंवर रोवतौ नीं ढब्यौ ।

सेवट उण बांमण रै घर री वारी आई । बाप, मां अर कांणची छोरी तीनूं इनांम रा लोभ सारू घणा ई खपिया, पण वांरी मनचींती नीं व्ही । सावकी वेटी डरतां डरतां कह्यौ — म्हैं कंवर नै रोवतौ ढाब दूंला ।

माईत तौ ना देवण वाळा ई हा पण राज रा हाजरिया आ बात सुणली । उणनै साथै लेय वहीर व्हैगा ।

कंवर नै खोळा में लेय रमावती कैवण लागी :

पैला बांमण रै पेट
पछै वन रौ कागलौ
पछै बागां रौ सूवटौ
पछै जळ रौ डेडरौ
पछै रांणी रै पेट
सूजा रै वीरा अेक घड़ी

कैवतां ई कंवर रोवतौ ढबग्यो । पाछौ रोवणौ तो अळगौ सांम्ही हंसण लागौ । रांणी नै उणरा जलम सूं ई वत्तो खुसी व्ही । राजकंवर नै रमावण सारू उणनै उठै ई राखली । इनांम लेवण सारू घणा ई थोरा करया, पण वा कीं नीं मांग्यौ। घड़ी घड़ी अेक इज आंकड़ी कैवती के वीरा नै रमावण सूं वत्तो कीं इनांम नीं ।

हरदम राजकंवर नै खोळा में रमावती फगत वौ अेक इज हालरियौ गावती :

पैला बांमण रै पेट
पछै वन रौ कागलौ
पछै बागां रौ सूवटौ
पछै जळ रौ डेडरौ
पछै रांणी रै पेट
सूजा रै वीरा अेक घड़ी
थनै मंगाय दूं चांदा री दड़ी

वैन नै छोड राजकंवर किणी रै ई पाख़ती नीं रैवतौ । राजकंवर तिल वधतां जव वधतौ अर जव वधतां तिल वधतौ, पांच वरसां रौ व्हैगौ । बोलणौ सीखतां ई वौ राजा नै पैल-पोत बाप रै हाथां जातूड़ा सूं मरण री बात सूं जळ डेडरा रै चिगदणा तांई री वात बताई । उणरै चार वळा मरणा सूं निपूती रांणी रौ पेट मंडियौ । अबै आं तीनूं दुस्टियां नै मारयां विना वौ जीवतौ नीं बचैला ।

अकरम अर पाप री इत्ती वात सुण्यां तौ राजा री खीझ रो पार नीं रह्यौ । हथमारां नै भेज तीनूं दुस्टियां रा मूंडा

काळा गाभा सूं ढकनै बुलाया, अैड़ा पापियां रो मूंडो देख्यां ईं पाप लागै। तीनां नै ई काळा जामा पैराय जीवता भींत में चुणावण रौ आदेस व्हियौ। राजा रा आदेस पछै कांई ढील। भींत रै मांय घणौ दोरौ वांरौ सांस निकळियो।

राजकंवर मोटौ होय राजा बण्यौ। धूमधांम सूं बैन रो ब्याव कर्‌यौ। दायजा में हीरा-मोत्यां रा सात कळस भरनै दिया। दोनूं भाई-बैन बरसां लग जीविया। सुख अर थाट सूं आपरौ जीवण बितायौ। दुख रौ तौ पाछौ सपनौ ई नीं आयौ।

इत्ती रात अर आ इज म्हारी बात। दाय नीं आई तौ खोपरा में घाल पाछी भिलाय दीजो।



कबूड़ी रांणी

अेक हो डोकरी । बाळ दुहागण । घर घर मांग-तांग, गोलीपौ करनै घणा दोरा ऊमर रा दिन ओछा करचा । खाली हाथ मूंडा सांम्ही नीं जावतौ, सो पेट रा अथाग खाडा नै भरण सारू वा मौत सूं ई वत्ता कळाप करचा जणा बुढ़ापा री माठ लग पूगी । बुढ़ापै वस्ती रै लोगां सूं उणरौ पूरौ मन फाटग्यौ । सूनी-सून्याड़ में जाय हाथां ई अेक छोटी सी टपरी मांडली । कंद-मूळ खाय पेट री लाय बुझाय लेती । पण थोड़ा ई दिनां में अेकलपणौ साल्हण लागौ । बीत्योड़ै विखा री याद मिटी नीं ही । विखा नै भुगतणा बिचै ई उणरी याद घणी आंहजी व्है । डोकरी नै अेक छिण ई आसिगतौ नीं । खुद री याद सूं खुद ई आंती आयगी । अेकला मिनख सूं नीं तौ हंसीजै, नीं रोईजै । कोई बावळौ व्है तौ बात न्यारी । हंसण जोग तौ बात समझ-समझायां पछै ऊमर में ई नीं व्ही, बाळ-पणा साथै हंसी ई छूटगी । डोकरी उण सून्याड़ रोही में रोवण सारू घणी ई खपी, पण रोईजियौ ई नीं ।

विखा री लाय-पाय में वा रांमजी रौ नांव ई बिसरगी ही । सेवट हीमत हार अेक दिन पैली वार वा रांमजी नै सिंवरचा के किणी जीव-जिनावर रौ ई विसरांम दे । कीड़ी,

मकोड़ौ, सांप, विच्छू, पंछी भलांई कोई व्हो । म्हरा अर गाना मन री ऊंडी अरदास ही । ग्रैळी कीकर जावै । हयाळो में जौ हाली । आंख्यां खोलनै जोयौ — मोती रै उनमांन छालो पळ-पळाट करै । मांय कोई काळौ काळौ जीव ज्यूं निगै आयो । छालौ तरतर वधनै फूटग्यौ । राद, पांणी रै साथै मांय सूं कवूड़ी रौ ग्रेक छोटौ सौ विचियो निकळियो । डोकरी रै हरख रौ पार नीं रह्यो ।

कवूड़ी रा विचिया नै आपरा जीव सूं ई वत्तौ राखती । गुटरगूं गुटरगूं करती वा कवूड़ी तौ सात दिनां में पूरो लांठो व्हैगी । छोटी अर गुलाबी टूंच । सांवळा पंजा । पळकतो कवूतरिया रंग । माथै काळी धारियां । डोकरी आपरी हयाळी में चूंण चुगावै, पांणी पावै । पंजां रै चौरासी रा घूघरा बांध्या । छमछम नाचै । गुटरगूं रा गीत सुणावै । डोकरी री टपरी में जीवतां सुरग उतरग्यौ ।

टमरक टमरक रिमझिम रिमझिम डोकरी रा दिन नाचता गावता सुख सूं वीतण लागा । सूरज, चांद, तारा, हवा, रूंख बांटका, फूल अर वेलड़ियां इत्याद आखी कुदरत डोकरी सूं वंतळ करण लागी । कुदरत रौ कण कण उणरी साता पूछती जद डोकरी मुळकनै कैवती के अवै उणरै सुख रो कांई पार, वा इण दुनियां में सब सूं सुखी है । घड़ी घड़ी कांई साता पूछौ ।

सिळियां तिणकलां रौ सांतरौ पींजरौ वणाय टपरी में टेर दियौ । तपतौ तौ हवा करती । ठाडौ वायरौ वाजतौ जणा माथै ओरणौ ढकती । रात रा छाती माथै सुवाणती । पछी

डोकरी नै मां सस्तै जांणती । डोकरी आपरी बेटी नै इमरत घोळ मीठा सुर में वतळावती — कण खांणी, मण निपजांणी; आ अे म्हारी कवूड़ी रांणी ।

इण भांत छमरक छमरक भमरक भमरक डोकरी रा दिन सुख सूं रळकता हा के समाजोग री बात अैड़ी बणी के अेक दिन अेक राजकंवर डोकरी री उण टपरी रै गळाकर सिकार करण सारू निकळियौ तौ टपरी रै मांय किणी नै बोलतौ सुण वौ अणछक ढब्यौ । कोई इमरत रै उनमांन मीठा सुर में कैवतौ हौ — कण खांणी, मण निपजांणी; नाच अे म्हारी कवूड़ी रांणी ।

कवूड़ी रांणी छमछम नाचण ढूकी । राजकंवर रै कांनां में जांणै सुरग लोक रौ कोई अणहद नाद घुळण लागौ । वौ नाद सुण उणरौ जीवण सुफळ व्हियौ । राजकंवर री नस-नस में इमरत सांचरग्यौ । राजकंवर मस्त होय भूमण लागौ । घोड़ौ ई पाखांण रौ पूतळौ व्है ज्यूं ऊभौ रह्यौ । थोड़ी ई ताळ में राजकंवर तौ आपरी सुध-बुध पांतरग्यौ ।

टपरड़ी रै मांय सूं वळै किणी री मीठी बोली सुणीजी । कण खांणी, मण निपजांणी; सो जा अे म्हारी कवूड़ी रांणी ।

आं बोलां रै समचै ई सुरग-लोक रौ वौ अणहद नाद ठमग्यौ । नाच थमियां रै खासी ताळ पछै कंवर नै चेतौ वावड़ियौ । कवूड़ी-रांणी सूयगी दीसै । कंवर रा रूं रूं में फगत औ अेक ई विचार जाग्यौ के वौ ब्याव करैला तौ इण कवूड़ी-रांणी सूं ई, नींतर अंजळ रौ खण लेय वौ प्रांण छोड देवैला । जे राजकंवर रै मन री साध ई पूरी नीं व्है

तौ रांणीं री कूख में विरथा ई जलम लियौ ।

राजकंवर तौ पछै उठै कीं पूछ-ताछ ई नीं करी । सिकार री मतौ छोड वौ पाछौ री पाछौ घोड़ौ मोड़्यौ । परणीजैला तौ उण नाचण वाळी नै ई । जद नाच इत्तौ वेजोड़ व्है पछै नौ नाचण वाळी कैड़ी व्हैला !

पायगा में घोड़ौ बांध वौ रातब वाळी अंधेरी ओरी में आंगणै ई पड़ग्यौ । जद तीन दिनां तांईं राजकंवर रा कीं वावड़ नीं व्हिया तौ राजमैल रै मांय हाय-त्राय माची । कांनी कांनी घोड़ा बगडाया । सगळा ई मूंड़ौ ढेरचोड़ा पाछा आया । राज-कंवर रौ कीं पतौ नीं लागौ । तौ ई सूरज तौ आपरी वेळा माथै ऊगतौ अर आथमतौ । सात दिन ढळग्या । घोड़ा रा खोज पाछा पायगा लग ढूकै अर कंवर रौ कीं पतौ नीं ! जंगळ रा जीव-जिनावर कुमौत मारचौ व्हैला । राजा-रांणी पाखती बैठा फगत रोवै ई रोवै । नीं पांणी पीयौ अर नीं थाळ सांम्हौ मूंडौ ई करचौ ।

सातवै दिन मेहतरांणी घोड़ां रै रातब वाळी अंधारी ओरी बुहारण सारू गी । पग रै निंवायौ परस व्हियौ तौ वा चिमकी । लुळनै जोयौ । कोई मिनख व्है ज्यूं दीसै । पूछ्यौ — कुण व्है ई ?

कीं जबाब नीं मिळचौ । दीवौ भुपायनै जोयौ — राजकंवर सूता ! इचरज अर हरख रौ पार नीं रह्यौ । बोली — अंदाता, आप अठै कीकर ? सात दिनां सूं राजाजी अर रांणीजी नीं दांतां टुकड़ौ तोड़्यौ अर नीं बूंट ई पांणी पीयौ । मरै ज्यूं व्हैगा । अर आप अठै पोढ़्या ।

राजकंवर बैठौ व्हियौ । झीणा सुर में धाकल करनी

बोल्यौ — थनै जिणरी पंचायती ! मूंडै कैय बतायौ तौ जीभ वाढ़ लूंला । आंगळी सूं सांनो करी तौ हाथ वाढ़ लूंला । आंख सूं म्हारी सोय बताई तौ आंख्यां फोड़ दूंला । थूं अठै क्यूं बळी ?

भंगण हाथ जोड़ती बोली — अंदाता, म्हैं तौ सातमैं रै सातमैं इण ओरड़ी रौ फूस-बाईदौ काढ़ूं । पण आप अठै कीकर, बात कांई व्ही ?

'फेर बा ई बात ।' कंवर चिड़नै कह्यौ — किणी नै भणकारौ ई दे दियौ तौ थारी मौत है ।

मेहतरांणी ई चात्रंग ही । डोढ़ में बोली — नीं अंदाता, हाल तौ म्हारौ ब्याव ई नीं व्हियौ, मरचां पोसावै कोनीं । म्हैं तौ किणी नै नीं बतावूं ।

'थूं जा परी अठा सूं, म्हनै म्हारै मतै छोड दै ।' आ कैय राजकंवर तौ पाछौ आडौ व्हैगौ ।

मेहतरांणी न्हाटी न्हाटी पावरी राजा-रांणी गोडै पूगी । होळै-सीक बोली — बधाई, अंदाता बधाई !

रांणी पूछ्यौ — बधाई री बात है तौ डरती होळै होळै क्यूं बोलै । ढोल घुरावती क्यूं नीं आई, बोल राजकंवर रा कीं बावड़ व्हिया !

मेहतरांणी खुणियां सूदा हाथ जोड़नै बोली — बतावूं तौ राजकंवर म्हनै घांणी में पीलाय दे । वै ना दियौ ।

रांणी भचकै ऊभी व्ही । भंगण रौ हाथ झाल पूछ्यौ — बता, वैरण म्हारौ लाडलौ कंवर है कठै ? म्हांनै आ बधाई दियां थारै सांम्ही कोई आंगळी ई कर सकै भलां । अबै नीं बतायौ तौ थारी मौत है ।

मेहतरांणी पगां पड़ती थकी बोली — बतावूं तो मौत अर नीं बतावूं तो मौत ! जीवण री तो मारग ई कोनीं !

सेवट सगळी बात बताय वा रोवती रोवती बोली — बापजी, म्हारो पतो नीं पड़ै, वै म्हनै घणो ना दियो। अेक जुगत बतावूं ज्यूं करो। आप म्हारो चुट्टो पकड़नै गाळियां काढ़ता चालो के रांड अठै फूस राख दियो, अठै ई झाड़ू नीं लगायो, थूं करै कांई है ? यूं करतां करतां रातव वाळी ओरड़ी में कंवरां रै पाखती पूग जावांला। घकै आप समझ लीजो।

रांणी बधाई री पांच मोहरां देय कह्यो के वा बधाई री वेळा रोयनै अपसूंण नीं करै। पछै रांणीजी भंगण कह्यो ज्यूं ई करयो। चुट्टो झाल गाळियां काढ़ता काढ़ता ठेठ कंवर रै पागती पूगगा। उणरो चुट्टो छोड़ इचरज सूं पूछ्यो — अरे आंगणै औ कुण सूतो, कोई चोर तो नीं है।

आ कैय रांणीजी उणियारो जोवण सारू नीचै लुळिया। 'हें, औ तो म्हारो लाडलो कंवर। पण अठै कीकर ?'

राजकंवर रै वाल्हा दिया। मूंडा माथै हाथ फेरयो। कह्यो: आ थारै सूवण री ठौड़ है कांई ! व्है जकी बात निसंक बता। कुण थनै ओड़ो दियो, गाळ काढ़ी के मोसो बोल्यो, जीभ अर आंतड़ियां कढ़वाय चीलां नै चुगाय दूं। जल्दी बता।

राजकंवर सात दिनां में साव ढोळै वैठग्यो। गाल पिचकग्या। आंख्यां धंसगी। साद चिपग्यो। नसां निकळगी। भूंडो हवाल व्हियो। रांणी री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू वहण लागा।

मां नै रोवतां देख कंवर री आंख्यां ई डब डब भरीजगी।

कह्यौ — म्हनै कुण ई कीं नीं कह्यौ । किण में चूक काढूं, म्हारा भाग इज अंड़ा है । मौत टळै नीं ।

रांणी घणौ वाद करयौ तौ कंवर कण खांणी मण निपजांणो कवूड़ी रांणी री सै बात बताय अंत में कह्यौ — कबूड़ी रांणी साथै म्हारौ ब्याव नीं करौ तौ म्हैं अंजळ ई नीं लूं।

रांणी आंख्यां पूंछनै बोली — म्हारा काला बेटा, इण नाकुछ बात सारू थूं इं दुख पायौ अर म्हांरै ई तळतळावण करी । अेक छोड आठ बीसी कवूड़ी-रांणियां परणाय दूं । चाल ऊठ !

लारै रा लारै राजाजी आयग्या । दोनूं जणा वचन दियौ जद राजकंवर ऊभौ व्हियौ । कह्यौ — कालै ई जांन चाढ़ौ तौ अंजळ रौ खण-पण छोड़ूं ।

राजाजी कह्यौ — थूं कवै तौ आज ई जांन वंहीर कर दूं । इण में इत्तौ कांई खरावै !

राजा-रांणी कौल-वाचा में पूरा बंध्या जद कंवर वांरै साथै थाळ जीम्यौ । चळू करतां करतां ई कह्यौ — म्हैं आपरी बात मांनी, अबै आप ई म्हारी मांनौ । इणी सायत जांन चढ़ै जैड़ी बात करौ ।

सो इण भांत अणछक अणचींती सौ घोड़ां, सौ हाथियां, नौवत-नगारां, गाजां-बाजां कंवर री जांन चढ़ी ।

टपरी में बैठी डोकरी हाका-हळवळ सुणी तौ वारै आई । आ रचना देखी तौ उणरी आंख्यां अर अकल दोनूं चकराइजगी । ओ कांई तोतक ! रंजी सूं टपरी ढकीज गी । कंवर खुदोखुद आगै आय वोल्यौ — डोकरी-मां डर मत, थनै किणी बात री

हांण नीं पुगावांला । आ जांन थारै अठै ई आई है ।

पछै कंवर उण दिन रै अणहद नाद, अंजळ रै नान-पण अर जांन चढ़ण तक री पूरी वात मांडनै वताई । परनो-जणनै आयी तौ संकौ कांईं वात रौ ।

सगळी वात सुणनै डोकरी खासी ताळ तांई हंसी । हंसती हंसती ई बोली — वेटा, जे थूं उण दिन ई टपरी में आय थारी आंख्यां नाच वाळी रचना देख लेतौ तौ इत्ता फोड़ा नीं पड़ता । वा तौ साचांणी अेक कवूड़ी है ।

कंवर इचरज करतां पूछ्यौ — कांईं अेक कवूड़ी उण भांत नाच सकै !

“नींतर कांईं म्हैं झूठ बोलूं । विस्वास नीं व्है तौ निजरां देखलौ ।”

आ कैय डोकरी पींजरौ वारै लाई । साचांणी मांय अेक कवूड़ी वैठी ही । पगां में घूघरा । डोकरी बोली — कण जांणी, मण निपजांणी; नाच अे म्हारी कवूड़ी रांणी ।

कैतां ई कवूड़ी-रांणी छमरक छमरक नाचण लागी । सगळा जांनिया मगन व्हैगा । घोड़ा अर हाथी ई मस्त होय सुणण लागा । नसौ छायग्यौ । सगळा ई सुध-बुध पांतरग्या । अैड़ौ नाच तौ आज पैली कदै ई नीं देख्यौ । घूघरां री छम-छम कांनां में इमरत घोळती ही ।

नाच संपूरण व्हैतां ई कंवर जांणै नसा में व्है ज्यूं ई बोल्यौ — छौ व्ही कवूड़ी, म्हैं तौ इण सूं ई व्याव करांला ।

डोकरी पैला तौ कंवर नै घणौ ई समझायौ । वो नीं मांन्यौ तौ खुद मतै ई समझगी । कंवर री लगन अर सचाई

देखनै परणावण सारू मांनगी ।

कूख सूं जाई वेटी रै उनमांन लाडां - कोडां कबूड़ी रौ व्याव करयौ । अेकली ई गीत गाया । अेकली ई रोयनै सीख दीवी । कंवर साथै चालण सारू घणौ ई कह्यौ, पण वा नीं मांनी ।

सोना रा रथ में वैठ कबूड़ी रै वहीर व्हैतां ईं डोकरी रौ हंसलौ उडग्यौ, जांणै उण कबूड़ी में ईं उणरा प्रांण व्है ।

राजकंवर सगळा जांनियां नै न्यारा न्यारा सुभट समझाय दिया के वै घरै जाय किणी नै ई औ भेद परगट नीं करै । राजा - रांणी धुराधुर नै ई नीं बतावै के वौ अेक कबूड़ी सूं व्याव करनै लायौ । जकौ घांणी में पीलींजण सूं नीं डरै वौ भेद परगट कर सकै ।

जांन आधी रात रा ठायै पूगी । कंवर आपरी वींदणी नै लेय पाधरौ रंगमैल में गियौ परौ । दूजै दिन रांणीं बहू नै देखण आई तौ कंवर ताव रौ मिस बताय टाळ दियौ ।

रंगमैल री कूंची आपरै पाखती राखतौ । कबूड़ी नै हाथां चूंण चुगावतौ, हाथां पांणी पावतौ । पाखती रा कमरा में वैठ रांणी अेक दिन बहू रौ नाच सुण्यौ तौ वा अणूंती राजी व्ही । पण कंवर वींदणी री मूंडौ नीं बतायौ । लजवंतौ घणौ ।

रांणी नै वेम व्हियौ के आ बात कांईं । कंवर वहू नै मिळावै क्यूं नीं । के तौ कोजी घणी के अणूंती रूपाळी । अेक दिन कंवर नै कह्यौ — वेटा, मां री निजर नीं लाग्या करै, अेकर वहू रा दरसण तौ करा ।

वेटै कह्यौ — म्हैं वणी ई समझावूं, पण वा मांनै कोनीं ।

हाल टाबर है, संको घणो आवै ।

थोड़ा दिनां पछै रांणी कीं जुगत विचार अेक दिन ठकै कंवर नै कह्यौ—वेटा, थारी वहू नाचै तो घणी सजरी, पण हाथां री खांमचण कैड़ी है, आ तो वता । मूंडो नी बतावै तो थारी मरजी । कीं न कीं कांम तो करवा ।

वेटौ विना समझ्यां-वूझ्यां ईं कांम री हांमळ भर दी । कह्यौ — कांम री कैड़ी ना, वतावै सो कांम करवाय दूं ।

रांणी तौ सोच्यां वैठी ही । वोली — देखूं थारी नुगगी वहू धांन कैड़ौक सळियौ करै । पूछनै आव के काले रो काले पांच मण धांन सळियौ कर देवैला कांई !

कंवर रंग-मैल में आयौ । पण मूंडौ उतरचोड़ौ । कवूड़ी देखतां पांण समझगी । तुरत पूछ्यौ — कांई वात व्ही, आज आपरौ मूंडो उतरचोड़ौ क्यूं ?

कंवर सावी वात वताय दी । तद कवूड़ी कह्यौ — आछौ सोच करचौ, पांच मण री ठौड़ सौ मण धांन सळियौ कर दूं । छात माथै सौ मण धांन री ढिगलौ कराय दो ।

रांणी तौ वहू री परख करणी चावती ही । वेटा रै कैतां ई सौ मण धांन रौ ढिगलौ करवाय दियौ । रात रा कवूड़ी छात माथै वैठ वोली — आवौ अे म्हारी लाख सहेलियां, सायण री धांन सळियौ करावौ ।

कैतां ई गिगन में हरड़ाटो माच्यौ । अणगिण कवूड़ियां आय घड़ी-पलक में धांन सळियौ कर दियौ । तड़कै रांणी देखो तो देखती री । वहू तो लाखां में टाळकी । कांई फूटरौ धांन सळियौ करचौ ! अैड़ी गुणवंती वहू नै वेटौ मिळावै पदूं नीं ।

दूजै दिन रांणी वळै कह्यौ — वेटा, धांन सळियौ करणौ तौ कीं वड़ी वात नीं। वहू दाळ कैड़ी दळै। पांच मण दाळ दळवांणी।

वहू तौ वळै पांच मण री ठौड़ सौ मण मूंगां रौ ढिगलौ करण री वात करी। रात रा भींडी माथै वैठ बोली — आवौ अे म्हारी लाख सहेलियां, साथण री दाळ दळावौ।

कैतां ईं गिगन में हरड़ाटौ माच्यौ। अणगिण कबूड़ियां छात माथै हुळस पड़ी। घड़ी-पलक में टूंचां सूं अेक सरीसा फाड़ा कर न्हाकिया। अेक ई दांणा रौ बिगाड़ नीं व्हियौ।

तड़कै दाळ हथाळी में लेय देखी तौ रांणी रै इचरज रौ पार नीं रह्यौ। वहू कोई कांमणगारी है। बेटा माथै ई कांमण कर दियौ। वा कैवै जित्ता पावंडा भरै। कैय कैय हारी पण उणियारौ ई नीं वतावै।

रांणी कह्यौ — वेटा अै तौ मांमूली कांम भुळाया। अवै अेक झीणौ कांम भुळावूं। मण चीडां री कंठियां पोवाड़ै तौ खांमचण जांणूं।

कंवर रंगमैल री आडौ खोल मांय वड़्यौ तौ उणरौ मूंडौ उतरचोड़ौ। कवूड़ी पूछ्यौ — आज वळै अैड़ी कांई नवादी बात व्ही, जकौ आप दुमना दीसौ।

कंवर सूं वात सुणी जद कवूड़ी कह्यौ — आछौ सोच करचौ, मण चीडां री ठौड़ सात मण चीडां रौ छात माथै ढिगलौ करावौ। अैड़ी कंठियां पोवूं के आज पैली कोई देखी ई नीं व्है।

रात रा भींडी माथै वैठ कवूड़ी वोली — आवौ अे म्हारी

लाख सहेल्यां, साथण री कंठियां पोवाड़ो।

कैतां ई आभा में हरड़ाटो माच्यो। अणगिण कवूड़ियां छात माथै उतरण लागी। घड़ी-पलकां में भांत भांत री कंठियां पोय न्हाकी। दो भांत री अेक ई कंठी नीं ही। सगळी कंठियां री पोवाई न्यारी न्यारी।

रांणी अेक कंठी देखनै दूजी देखै — अेक अेक सूं सवाई! इचरज अर हरख री छेह नीं रह्यौ। मां घणा ई नेवरा कर्‌या पण कंवर् वहू री उणियारौ वतावण सारू राजी नीं व्हियौ।

तद रांणी वळै परख करणी चाही। वोली — वेटा, थारा व्याव माथै मैल में मांडणा नीं मांडिया, वहू नै कैय फूठरा मांडणा तौ मंडाय दे। आखौ मैल विरंगौ लागै।

रंग-मैल री आडौ उघाड़ कंवर मांय वड़्‌यौ तौ मूंडौ मगसौ पड़्‌योड़ौ। कवूड़ी वात सुणनै वळै हंसी। वोली — सात रंगां रा माटा भरनै छात माथै धराय दिरावौ, पछै तड़कै देखजौ के कैड़ाक मांडणा मांडूं।

रात रा भींडी माथै वैठ कवूड़ी वोली — आवौ अे म्हारी लाख सहेलियां, साथण नै मांडणा मंडावौ।

कैतां ई अणगिण कवूड़ियां छात माथै उतरी। टूंच अर पंजां में रंग भर भरनै चित्रांम मांडणा चालू कर्‌या, सौ छात, आंगणौ, छाजा, मोड़ा अर गुमटियां माथै सगळै सुरंगा मांडणा मांड दिया। राज-मैल री छिब ई अनोखी व्हैगी। सगळा मांडणा न्यारा न्यारा। रांणी री अकल चकरीजगी। घणा ई थोरा कर्‌या पण वेटौ वहू री उणियारौ वतावण सारू राजी नीं व्हियौ।

समाजोग री वात अैड़ी वणी के रांणी रै गोडै भाई रै व्याव री कूंकूं-पत्री आई। कंवर नै आवण रो घणै मांन लिख्यौ। रांणी जावण रौ कह्यौ तौ कंवर आळिया-टोळिया तौ घणा ई करचा पण वा नीं मांनी। सेवट वेटा नै हांमळ भरनी पड़ी। कंवर रंगमैल रै मांय पांच दिनां री चुग्गौ अर पांणी रौ वेड़ियौ भरनै मांमा री व्याव साजण सारू वहीर व्हियौ। ताळी लगाय कड़ियां रै कूंची बांधली।

वारियां, वारणा अर ताक सै जाब्ता सूं बंद कर दिया। कवूड़ी नै पूरी पूरी भुळावण देय सेवट उणनै सिधावणी ई पड़्यौ।

दूजै दिन चुग्गौ करचां पछै कवूड़ी-रांणी ठंडेळी माथै बैठ पांणी पीवती ही के अणछक ठंडेळी गुड़गी। सींधी करण री जुगत में साव ऊंधी व्हैगी। छांट रौ छांट पांणी ढुळग्यौ। कवूड़ी दो दिनां तांई तौ सेंठी री। पण तिरस आगै उणरौ गळौ अर काळजौ दाझण लागौ। फड़फड़ी खाय अठी-उठी उडी, पण रंगमैल में पांणी व्है तौ हाथ आवै। दो दिनां तांई टूंच सूं खोद खोद अेक ताक वणायौ। पंजां में खाली ठंडेळी लेय उडी। सरवर री तीर जाय धापनै ठाडौ अर निरमळ पांणो पीयौ। पछै वेड़ियौ भरनै पंजां सूं उठावण लागी तौ ऊठै ई नीं। झट छूट जावै। आफळ-आफळनै कायी व्हैगी। वेड़ियौ तौ भरनै लेजावणी ई पड़ैला। कंवर वहीर व्हैती वेळा कित्ती भुळावग दी ही।

कवूड़ी पंजां में वेड़िया नै अपड़ै, उडण री चैस्टा करै उण वगत छूट जावै। वळै अपड़ै अर वळै छूट जावै। संजोग री वात के उण वगत संकर पारवती नांदिया माथै वैठा

जावता हा । पारवती री निजर वेड़िया वाळा उण किरला माथै पड़ी । वा खासी ताळ तांई देखती री । बापड़ी कबूड़ी रौ वख नीं लागौ सौ नीं इज लागौ । पारवती रा मन में दया सांचरी । भांग रा नसा में भूमता संकर नै दो तीन वळा हेलौ मारचौ जणा वै आंख्यां खोली । आधी आंख्यां उघाड़ पूछचौ — कांई बात है ?

पारवती वेड़िया वाळी बात बतायनै कह्यौ — इण कबूड़ी रौ औ विखौ म्हारा सूं नीं देख्यौ जावै । इणनै रूपाळी लुगाई रौ रूप दिरावौ तौ रिमझिम रिमझिम करती वेड़ौ उंचाय लेवै ।

महादेवजी ऊंघता ऊंघता बोल्या — पारवती औ त्रिलोक है, पावंडा पावंडा माथै विखौ निगै आवैला, म्हैं किण किण रौ विखौ मेटूं । वेड़िया नै लुगाई वणायां कांई सार निकळैला ।

पारवती नै रीस आई । बोली — औ कोई नवौ है के वजराक है, भांग में टिप्पा देवौ । वेड़िया री लुगाई बणा-वण रौ म्हैं कद कह्यौ । म्हैं तौ कबूड़ी रै दुख री बात करी ही ।

कबूड़ी वळै आफळी अर वळै ठंडेळी छूटगी । पारवती री हीयौ पसीजग्यौ । संकर री हाथ तगतगावतां बोली — आ तौ म्हैं होयनै थांरै जैड़ा भंगेड़ी सूं घरवास राखूं, कोई दूजी व्हैती तौ कदै ई ऊथळ जाती । बणावौ तौ बणावौ नीतर म्हैं तौ खुद अबै थांरा सूं काठी काई व्हैगी, गुगन सिड़ी बनमें कांकड़ में जावूं । संभाळौ थांरा डंड-कमंडळ ।

पारवती री आ बात संकर नै ई आछी लागी । वौ तीन

अर कीं नसा में गचळको काढ़ दियो — काले जावै तो आज जा परी । नित री औ छाती कूटो तो मिटै ।

पारवती रै इत्तौ खटाव कठै ! सुगनचिड़ी बणनै उडगी । उडतां ई संकर रौ नसौ उतरग्यौ । कांई कांई चीज संभाळै । झोळी राखै तौ कमंडळ ढुळ जावै । कमंडळ रौ ध्यांन राखै चीमटौ खिसक जावै । सूतां-बैठां गिरै व्हैगी । हेलौ मारचौ — आजा पारवतां ; म्हारा सूं औ पंपाळ नीं संभै । थूं कैवै ज्यूं करण नै त्यार ।

पारवती सुगनचिड़ी बणनै ओळू-दोळू ई उडती ही । टिवटिव करती बोली — थें तौ कैता नीं के नित री दैण मिटै, अवै तरळा क्यूं तोड़ौ । पैला इण कवूड़ी नै लुगाई बणावौ तौ आवूं । भंगेड़ियां री वात री कांई पतियारौ ।

संकर भगवांन कमंडळ सूं चुळौ भरनै कवूड़ी रै छांटौ दियौ के वा रूपाळी लुगाई बणगी । गैणा गांठा में लड़ाझूंम । अपछरा नै सौ वळा पांणी भरावै अैड़ी फूठरी । गुलाब रौ फूल । आभा री बीज । पूनम रौ चांद । हीरां-मोत्यां जड़ो छब-काळी ईढ़ांणी । वेड़ियौ माथै उखण रिमझिम रिमझिम करती वा हंसा-हाली रंगमैल सांम्ही वहीर व्ही । आडी उघाड़ सोना रै पिलंग माथै सूयगी ।

सिझ्या रा ई कंवर ताळौ खोल मांय आयौ । खुणै खुणै गावा घी रा दिवा झुपै । अठी-उठी देख बोल्यौ — कण खांणी, मण निपजांणी ; आ अ‍ै म्हारी कवूड़ी रांणी ।

के इत्ता में कवूड़ी रांणी री ठौड़ सोना रा पिलंग सूं वा अपछरा वैठी व्ही । कंवर इचरज करनै लारै सिरकियौ । तद

वा अपछरा पाखती आय बोली — म्हैं ई हूं आपरी कहूली-रांणी । दूजौ कीं वेम मत करौ ।

पछै मांडनै वा विगत वार सगळी वात बताई । आखी दुनियां रौ आणंद कंवर रा मन में समायग्यौ । हथाळी मार्थ सूरज लेय हेरै तौ ई इण जोड़ री रूपाळी लुगाई नीं मिळै ।

के अणछक उणनै रांणी री वात याद आई । बोल्यौ — मां नित घोदै के बींनणी नै नीं मिळावै, अबै क्यूं जेज करूं । हाथ झालनै लावूं । वा ई कांई जांणैला के बहू लायौ तौ ई अरबां-खरबां में टाळवी ।

बींनणी बारणा माथै आयनै ऊभगी । सासू रै पगां लागी । उणियारा माथै निजर पड़तां ई रांणी बोली — मावड़ी, इण रूप नै निरखण सारू दोय री ठोड़ दोय हजार आंख्यां व्है तौ ई थोड़ी ! जद इज म्हारौ बेटौ, इत्ता दिन बहू नै नीं मिळाई । छींयां देख्यां ई इण रूप नै तौ निजर लागै !

आ कैय रांणी सात वळा थुथकी न्हाकी ।



कांन्ह गुवाळ

दो हा सगा भाई । ज्यांरै गायां अर बाछड़ियां री कमाई । छोटोड़ौ भाई गायां रौ गुवाळ । बारूं मास कांकड़ में गायां चारतौ । धरती माथै जांणै कोई नवौ ई कांन्ह अवतरियौ । केरड़ा-केरड़ी जलमणा रै तीजै दिन ई मां सूं वत्तौ उण गुवाळिया सूं हेज करण लाग जाता । सांनी में समझता । चार पखवाड़ां तांई लवारियां नै धपावू दूध पीवण देतौ । छांट ई नीं काढ़तौ । पछै हाथां कोळिया खवा-ड़तौ । लीलो ध्रोव, कुररा छोंकी, बाटा बेल अर चिड़ी मोठिया रा कंवळा कंवळा काचा कोळिया दूध जैड़ा मीठा लागता । लवारिया अस्टपौर गायां रै साथै रैवता तौ ई व्हाड़ा रै थाबा मारणा तौ अळगा उणरै सांम्ही ई नीं जोवता । मां रै पावसतां ई चौथी पांती रौ दूध चूंघ मतै ई अळगा व्है जाता ।

कीं तौ डोढ़ में अर की साचांणी गांव रा लोग उणनै कांन्हा रा नाव सूं वतळावता । कांन्हौ दोनूं टंक दुवारी री वेळा आखी छांग गवाड़ी ले आवतौ । लारै कांकड़ में कोई जिनावर हांण नीं पुगाय दे, इण डर सूं सुवाड़ी गायां रै सागै वाखड़ी गायां नै ई छांग रै भेळी टोळनै लावतौ । हाथां दुवारी करनै पाछौ कांकड़ सांम्ही वहीर व्है जातौ । जांणै गाय गाय अर वाछड़िया वाछड़िया में उणरौ जीव रम्योड़ौ व्है । वौ लोगां

नै कैवतौ के दुनियां में सुरग कठै ई है तौ उणरौ छांग रै च्यारूं मेर इज ।

घाट, स्वाळख, सांचौरी अर अजमेरा री टाळकी गायां। धोळी, सीणी, सांवळी, गोरी, पीळी, सेरी, हिरणा-गोरी, चंवरड़ी अर लाखी। फवता सींगड़ा। हिरणां रै उनमांन छोटी मूंनाळां, पतळी चांम। ढेरवाळ लियोड़ा पतळा पूंछ, भरया व्हाड़ा कतरणी कोरयोड़ा व्है ज्यूं, च्यारूं थण सरीसा, ओछी कांवळ अर छोटी तारां। गाय गाय री न्यारी नांव—छाजर, बुगली, झूमर, लेवरी, कोयली, सिणेर, गेगरी, रैंडी, भींडळ, किलंगी, रोजी, वाजोटी, तोडी, काळेरी, नाळेरी, मोगरी, भालड़ी, भींडी अर लाखेड़ी, इत्याद। वाछड़िया वाछड़िया री न्यारी बतळावण— लिछमण, भरत, पैलाद अर संकर इत्याद।

आखी छांग में सांड फगत अेक इज हो। तिणरी नांव इंदर। धड़ूकतौ जणा लोग समझता के वादळा घावड़ै। धोळी रंग। डावी थुई। गूंथवा मांस री। मया हाड री। छोटी मूंनाळ। छोटा कांन। लांबी नस। ओछी कांवळ। संवै पगां। अग्गर चोड़ी। चौड़ी माकड़ी। भुजां करारी। सांट कांई ही, जांणै सूरज री इज डळी। वेंगण खुरा अर काळी कायां रा वाछड़िया जांणै हिरणां रा इज उणियारा। वां सगळां रै बिचाळै अेड़ी ई फवतौ अर रूपाळौ गुवाळ जांणै तारां रै बिचाळै पूनम केरौ चांद। कसूंवल पोत्यौ। कस्योड़ी अंगरखी। फूंदाळी पगरखी। पगां सुड़पी। हाथां में नाहर-मुखा कड़ोलिया। कांना मुरकियां अर सांकळियां। गळै फूल। लांग्यां मुरकी। लारै पट्टां में चन्नण री कांघसियौ। हाथ में गैंगन री फावड़ी।

खांवै दीवड़ी । मूंडै अलगोभो । मीठी टेर सुण्यां कांकड़ रौ पांन पांन माथौ धूणतौ । पांणी में लैरां ऊठती । नदियां, वाळ्हा, खाळा अर भरणा नाचण लाग जाता । वादळा गरजता । भवाभव वीजळियां खिवती । फूल मुळकता । अैड़ी ही उण कांन्ह गुवाळ रै अलगोभा री मीठी धुन, मोठी टेर !

छोटो भाई जित्तौ ई कमगर अर सीलवंत हो, मोटोड़ो भाई उत्तौ ई अैदी अर चिड़चिड़ौ हो । जागतौ जित्तै के तौ थोगी रमतौ के खलकां सूं कजिया करतौ । रात रा नींद में वेलतौ ।

मोटोड़ो भाई घरबारी हौ । छोटकियौ कंवारौ । भाग री वात के अैदी भाई रै लारै लुगाई स्यांणी, भोळी, समभणी, खांमचण अर अणूंती कमगर पांनै पड़ी । धीणौ-धापौ, रोठो-वाटी, वांटा-चूंटौ अर फूस-वाईदौ अैड़ौ केवटती जांणै उणरी हाजरी में पांच-पचीस डावड़ियां अड़ीजंत ऊभी व्है । हाथां री ठोड़ जांणै उणरी निजर सगळा कांम सलटावती व्है । वेटी रै साथै देवर रा भाता में किणी टंक अेक छिण रौ ई मोड़ौ नीं करचौ ।

पण सीख देवणिया भूंडा व्है । अेक दिन री बात के भौजाई देवर सारू भातौ वांधती के पाड़ोसण बासदी सारू आई । पूछचौ के अैड़ौ भातौ धणी टाळ किण रै व्है सकै । पण जवाब सुणियां पाड़ौसण रै लिलाड़ में सळ पड़ग्या । भंवां तणीजी । मूंडौ मस्कौर खासी ताळ तांई इचरज करचौ । बोली — भोळा अर वावळां रै कोई सींगड़ा तौ व्है कोनीं । लोग भूठौ भरम धरै तौ ई साचौ लखावै । लखणां वायरी,

धणी टाळ किणी दूजा रै अैड़ौ भातौ सतवंती लुगायां नीं बांध्या करै ।

आ ऊंची सीख देय पाड़ौसण मूंडा री लाळां नै [illegible] में राखती थकी भाता सांम्ही टुग-टुग जोवण लागी — बाटका में घी गुळ रौ कचकचतौ चूरमौ, खड़पा पड़तौ दही, खीर सूं भरी कुलड़ी, गवारफळियां रौ साग अर लीली मिरचां रौ कूटौ। टिचकारी देवती बोली — थामें चूक कोनीं, देवर रौ बाळपणजोगौ रूप इज अैड़ौ है। भाटा री पूतळी रौ ई मन डिग जावै। पण बावळी छांनै री बातां नै इण भांत चौड़ै करणा में कांई सार।

भौजाई गरणा नै झाटकती बोली — भाता में कांई तौ छांनै अर कांई चौड़ै। देवर तौ मोटी बात, रोट्यां में तौ हाळी सूं ई दुभांत नीं राखणी चाहीजै। जकौ म्हारौ देवर तौ घर रौ सगळौ भार संभाळै। दस मिनखां जित्तौ कांम करै। लिछमण रै उनमांन इग्याकारी। आज दिन तांई वांनै किणी बात सारू ओड़ौ नीं दियौ। रोट्यां में दुभांत राखूं तौ म्हनै कोढ़ नीं निकळ जावै। पछै औ धोखो-धापो है किण वास्तै! म्हैं तौ इत्तै मांन होय सपना में ई दुभांत नीं बरतौ।

पछै भौजाई पाड़ौसण री सांम्ही माजनौ पाड़्यौ। पण पाड़ौसण हार नीं मांनी। सीखत में क्यूं कोताई राखै। नित कीं न कीं डंक मारती रैवती। सेवट भौजाई री नसां में ई विस घुळण लागौ। लप जावण मणा-वंद दूध रौ बिगाड़ौ करदै। पाड़ौसण री अमोलक सीख भौजाई रा रंग में रिसगी। अेक दिन वा आपरा धणी नै कह्यौ — थांनै तौ पैला

अर कजियां आगै कीं दूजी वात सूझै ई नीं । मोटचार-काटी भाई रै सगपण री वात सोचण रौ वगत ई कठै ! अेक सरीखी रोटयां घालणा सूं लोग झूठा झूठा भरम धरै ।

धणी कह्यौ — हां, बात तौ साचांणी भरम धरै जैड़ी इज है, पण म्हैं ईं इत्ता दिन कह्यौ कोनीं ।

भोळी लुगाई वोली — जे थांरा मन में किणी बात री खुड़कौ हौ तौ म्हनै कैता तौ खरी । परणीजियां पछै लुगाई दोनूं टंक सीरौ घालै तौ ई थोड़ौ । अपांरै पाखती धीणा-धापा री कमी तौ है कोनीं । पण लोक-लाज सूं तौ डरणौ पड़ै इज ।

लुगाई रौ पतियारौ नीं व्हैतां थकां ईं धणी नै आपरा भाई माथै इक्कीस आंना विस्वास हौ । सपना में ईं वेम जैड़ी वात नीं ही, पण मौकौ हाथ लाग्यां क्यूं चूकणौ । वौ दूजै दिन ई दुवारी करता भाई रै पाखती ऊभ पाधरी खळकाई— थारा व्याव री गरज थनै है के म्हनै । अधबूढ़ व्हियां ब्याव करण री विचार है कांईं ।

भाई चरी में दूध री सेडां छोडतौ छोडतौ ई बोल्यौ — म्हनै तौ व्याव री अंगै ई गरज कोनीं । थें तौ इण जलम री वात करौ, म्हैं तौ सात जलमां तांईं व्यांव री हर नीं करूं । औ सुरग री राज छोड क्यूं नरकवाड़ा में कळूं । थांनै कदैई ओड़ौ दियौ व्है तौ वतावौ ।

भाई तुरत जवाव दियौ — औ ओड़ौ देवणौ नीं तौ कांईं है । माथा में जूत फटकारणा वाकी रह्या । ध्राव चारतां-चारतां थारी तौ साव ध्राव जैड़ी अकल व्हैगी ।

कांन्हा री मन तौ सेडावू दूध जैड़ौ निरमळ हौ। कह्यौ—मिनख में आवां जैड़ी अकल व्है जावै तो चाहीजै ई कांई। सपनै ई सुरग री लाळसा नीं करै।

भाई घणौ ई आडी अंवळी लियौ, पण चीकणं घड़ै री छांट लागी नीं। सेवट कायौ होय लुगाई रै पालनी जाव कह्यौ के उण सूं कुण माथौ लगावै। मिनख नै तौ समझा-वणी ई सोरी।

पछै भौजाई समझावण सारू गी। किणी भाव नीं मांन्यौ तौ बड़का-तड़का करती बोली—म्हारा सूं आखो ऊमर गोतीगो नीं व्है। कांम करतां करतां म्हारा तौ हाडका गळग्या।

गोवणी में दूध री चरी खळकावतौ देवर कैवण लागौ—निकमौ तौ म्हैं ई बैठौ नीं रूं, इती लांठी छांग री अंडौ संभाळ दस गोरी करलै तौ म्हारौ मायौ अर थारौ मोचड़ौ। ब्याव करनै कुण डींगरौ गळै बांधै। गायां चारूं, अलगोझौ बजावूं अर... !

भौजाई बिचाळै बोली—तौ म्हैं थांरा भाई रै गळै डींगरी हूं। टंकौटंक चूरमौ अर खीर खावणा सूं माथा में वादी भरी-जगी दीसै। लूखा अर बासी टुकड़ा भेजती तौ कदेई अलगोजौ ठांणै लाग जातौ। म्हैं हाथ खांच लियौ तौ नै तनका टूट जावौला।

भाई-भौजाई री कांई मंसा है, कांन्हा रै कीं समझ बैठी नीं। ऊमर में ई आकरा अर लूखा बोल सुणिया नीं हा। आज सुणतां ई काळजा में जांणै डांम लागौ। बोल्यौ—मैं ठाली बैठौ थोगौ नीं रमूं जकौ लूखा टुकड़ा खावूं। [illegible]

दूध किण री भुजावां रै पांण मिळै, आखौ चौखळौ इण वात नै जांणै। छालर अर झूमर री साळ-संभाळ आगै म्हनै तौ छिण री ई वेळा कोनीं, पछै ब्याव रा घांदा में कुण पड़ै।

देवर रा अंवळा बोल सुणनै भौजाई जांणै जित्ती खंभी। ओटाळ रा मन में अवस कीं न कीं काळस दीसै। डोढ़ में बोली—जे थांरौ वाप ब्याव रा इण घांदा में नीं पजती तौ आ छांग भूखां मरनै ई मर जाती। कुण साळ-संभाळ करती! आज तौ म्हे धणी-लुगाई थांरा नेवरा करां, गिणियां दिनां में ब्याव सारू पगां नीं पड़ौ तौ म्हारा नांव माथै जूती।

आ वात कैय वा तौ भड़िंद करती री आडौ ओडाळ मांय वड़गी। देवर रौ गुमेज लुळै जद जाय भौजाई रौ जीवण सुफळ व्है। उण दिन सूं ई भौजाई रा मन में आकड़ौ ऊगग्यौ। इत्ता वरस धणी रै जेड़ो रोटचां घाली जद इज तौ उणनै आज अै चीकणा अर निंवाया बोल सुणणा पड़चा। सांप रै गळै उतरचां दूध रौ ई विस वण जावै।

दूजै दिन ई पाड़ौसण सूं सला-सूत विचारनै वा देवर सारू तुमां रा वाटचा, जवार री कुयोड़ी घाट अर खाटा री कुळड़ी भरनै भातौ घाल दियौ। देवर आ रचना देखी तौ उणनै अेका-अेक आपरी आख्यां माथै भरोसौ नीं व्हियौ। भतीजी नै ई दुख अर इचरज व्हियौ। पण वा जोर कांई करती।

कांन्हा री आंख्यां सांम्ही घरतो वूमण लागी। अणछक सुरग रै किण खुणा सूं आ लाय ऊठी। भाई अर भौजाई नै अेड़ा मळीच तौ नीं जांण्या हा। भतीजी सूं छांनै वौ सगळौ

भातौ वगाय दियौ । अेक कवौ ई नीं तोड़चौ ।

इण भांत सात दिनां तांई वौ भूखां मरचौ । दोनों टंको दुवारी करनै पाछौ कांकड़ में आय जातौ । गायां चारतौ अर अलगोझौ वजावतौ ।

आठवै दिन छालर गाय उणरै पाखती आय कैवण लागी: अलगोझा री आ टेर सुण्यां तौ घांन री पांन वळ जावैला । पांणी तौ कांई भाटा ई सूख जावैला । आज सात दिन व्हिया म्हारा सूं त्रण ई नीं खाईजियौ । अैड़ी कांई बात व्हो । म्हारा सूं इण भांत री चोज तौ कदै ई नीं राख्यौ ।

गाय रै मूंडा रा अै बोल सुणतां ई कांन्हा री आंख्यां सूं झर झर आंसू वहण लागा । सागै री सागै छालर री आंख्यां ई बरसण लागी ।

यूं तौ छांग री अेक अेक गाय सूं उणरी प्रीत ही । आपरा जीव ज्यूं जांणतौ । पण छालर उणनै मां री गळाई लागती । सगळी गायां री वा रांगी ही । कांन्हा रै मन री बात मतै ई समझ जाती । कांन्हौ उणनै व्याव री बात बतार कह्यौ — सात दिनां तांई टुकड़ी ई नीं तोड़चौ । मांय नूं काळजौ फगत धुकै ई धुकै । औ अलगोझौ नीं व्हैतौ तौ कदै ई मिळ जातौ ।

आंसूड़ा ढुळकावती ढुळकावती ई छालर बोली—पैलै दिन अलगोझा री बळत म्हारै कांनां पूगगी ही । जांणतौ के सदैं ई म्हनैं मन री दरद बतावौला । सेवट आठमैं दिन म्हनैं ई पूछणौ पड़चौ । म्हारा व्हाड़ा में इमरत भरचौ, पछै भूखां मरण री कांई जरूरत । थांरौ आदेस व्है तौ छांग री छेव ई ...

अवै छांट ई नीं दुवाड़ै ।

कांन्हौ बोल्यौ — नीं, श्रैड़ी वात तौ थें सपना में ई मत सोचज्यौ । भाई-भौजाई सूं छांनै इत्ता वरसां में श्रेक सेड ई नीं चूंघी । अवै आ नवी वात कीकर करूं । कदै ई न कदै ई तौ वांनै म्हारी पाछी सुध आवैला ।

छालर गाय बोली — जैड़ी रावळी मरजी !

पछै श्रेक कदंब रा रूंख सांम्ही मूंडौ करनै कैवण लागी : उण रूंख रै तळै श्रेक चाट है, उण चाट हेटै थोड़ो ताळ तांई वाटकौ राखनै पाछौ खांचीला उण वगत मंसा परवांण पक्वांन उण में परोसियोड़ा लावैला । भावै जित्ता अरोगज्यौ । म्हारी आ वात नीं मांनी तौ म्हैं जीवूं जित्तै त्रण सांम्ही मूंडौ ई नीं करूं ।

कांन्हौ छालर गाय री वा वात तुरत मांनग्यौ । वात कही सौ साव साची निकळी । तद सूं वौ नित मंसा परवांण मन चाया भोजन करतौ । कदै ई लापसी, कदै ई खीर-मालपूवा, कदै ई चूरमौ, कदै ई सीरौ, कदै ई मोतीचूर रा लाडू तौ कदै ई झरझरता घेवर ।

पछै तौ अलगोझा री टेर सुणनै सूखा अर बळिया पांन पाछा लीला होवण लागा । कांकड़ री सुरग वळतौ वळतौ वधग्यौ ।

उण दिन पछै कोई पाछी व्याव री वात नीं चलाई । भौजाई सोच्यौ के श्रैड़ी रोटचां खावतां खावतां कदै ई न कदै ई तौ देवर आंमनौ झाड़ैला । तद वा खरी खरी सुणावैला के श्रैड़ी ई पतळी पतळी रोटचां अर जीमण भावै तौ लाडी परणी-

जनै लावै । उण सूं अैड़ा तोख नीं उठाईजे । पण देवर तो कदै ई आफरौ नीं झाड़्यौ। वा नित देखती के देवर कित्तोक थाकौ । पण वौ तौ दिन दिन वत्तो माचण लागौ । घणो लुगाई मांय रा मांय गोटीजण लागा । कांन्हौ तो टंकोटंक दुवारी करनै बोलौ बोलौ जातौ परौ ।

अेक दिन वौ कांसी रा बाटका में मोतीचूर रा लाडू अर घेवर खावतौ हौ के भतीजी हमेसां वाळौ भातौ लेयनै आई । उण टाबर सांम्ही वौ बाटकौ लुकावणौ ठीक नीं समझ्यौ । आंमनो अर राड़ ही तौ भाई भौजाई सूं ही, भोळी-डाळी सवासणी रौ इण में कांई दोस । वौ लाड सूं भतीजी नै लाडू अर घेवर खवाड़िया । बच्योड़ा लाडू अर घेवर वा बाटका में घाल घरै लेयगी । मां नै जाय बताया तौ उणरै मन रौ विस वत्तौ आवटियौ । अैड़ा पक्वांनां री सौरम लियां तौ मुड़दौ ई जीवतौ व्है जावै । पछै जीवतौ मिनख दिन दिन माचै तौ इण में कांई बड़ी बात । औ अफंडी गायां रौ दूध वेचनै नित अै पक्वांन मोलावै । जद इज गायां रौ दूध साव उतरग्यौ ।

लुगाई रा पेट में कित्ता दिनां तांई ढीम पाक्योड़ौ रैवतौ । लाडू घेवर माथै निजर पड़तां ई पच लियोड़ौ ढीम फूटग्यौ । लुगाई नै सबसूं मोटौ आसरौ उणरै छळ-प्रपंचां रौ । लुगाई चावै तौ पड़्या भाटां नै लड़ाय दे, अळगा भाखरां नै भिड़ाय दे। पछै मिनख नै उफाणणौ उणरै डावा हाथ रौ खेल । चंडी रौ विकराळ रूप धार वा बीजळी रै उनमांन किड़कती धणी रै गोडै आई । झरणाट करती रौ वाटकौ पटकनै बोली — देख्या थांरै लाडका भाई रा लखण ! भौजाई साल लाडू अर

वर भेज्या । कांईं जांणनै उण कमसल री आ हीमत व्ही । म्हैं अैड़ा लाडू घेवरां रैं सात वळा ठोकर मारूं ।

पछै रोवतां रोवतां वा धूतर-गारी धणी नै अैड़ी बात समझाई के उणरै समझ में आतां ईं पाधरौ फररी माथै हाथ पड़्यौ । सागेड़ो धार लगाय वौ बोलौ बोलौ कांकड़ सांम्ही वहीर व्हैगौ । लुगाई बिना कह्यां ईं उणरै मन री वात समझगी ।

धणी रै बारै निकळतां ईं वा सेंठी आगळ जड़नै आंगणै बिखरयोड़ा लाडू घेवर चुग चुगनै खावण लागी जकौ लारै अेक भोरौ ईं नीं छोड्यौ ।

कांन्हौ अर छालर गाय कदम्ब रूंख रै तळै ऊभा बंतळ करता हा के कांन्हा री मौट अणछक सांम्ही आवता भाई माथै पड़ी । आज दिन तक भाई कदै ई कांकड़ में नीं आयौ हौ । उमायौ होय मिळण सारू सांम्ही न्हाटौ । पण छालर गाय री निजर भाई री आंख्यां माथै पड़ी तौ उणनै डोळां रैं मांय काळ रमतौ निगै आयौ । वा जोर सू तांबाड़ी । अठीनै छालर गाय रौ तांबाड़णौ व्हियौ अर उठीनै सगळी गायां पूंछड़ा ऊंचा कर करनै न्हाटी । भाई नै च्यारूं मेर सूं घेर लियौ । फररी वाळौ भाई मौत रौ औ घेरौ देखं थरथर धूजण लागौ । आयौ तौ मारण नै हौ पण खुद मौत री बखड़ी में फिलग्यौ । बचण रौ तौ कोई मारग ई नीं रह्यौ । कांन्हौ सांनी करनै सब गायां नै ढाबी । भाई रै पाखतीं आय बोल्यौ — अै गायां न्हाटनै इण विध घेरौ नीं घालती तौ म्हनै सपना में ईं बेरौ नीं व्हैतौ के थें मां जाया भाई नै मारण सारू आया हौ । पण खबर-

दार फररी ऊंची करतां ई गायां सींगड़ां सूं थांरी फींदी फींदी विखेर देवैला। भाई रै हाथां मौत आवै, इण सूं वत्ता नभाग री कांई बात। मारणी ई तेवड़ लियौ तौ पछै म्हैं क्यूं वरजूं। नंदी रै ढावै अेकांत में चालौ अर थांरी मन चींतौ करलौ।

खांधै फररी लियां भाई कांन्हा रै लारै टुळक टुळक वहीर व्हैगौ। नंदी रै ढावा तांई आतां आतां कांन्हौ मन में केई बातां विचारली। तीन वळा गेंगण री चिटियौ घुमाय वौ तीन ई वळा छालर छालर कैयनै जोर सूं हेलौ मारयौ अर चिड़ी बणनै उडग्यौ। भाई वगनौ होय लारै भाळयौ तौ उणनै उणी पलक जोर सूं हरड़ाटौ सुणीजियौ। छांग री सगळी गायां चिड़ियां बणनै लारै री लारै उडगी। सांड मोरियौ वणनै कें कें करनै उडयौ। भाई रै देखतां देखतां चिड़ियां री डूल अदीठ व्हैगौ। नंदी में फररी वगाय वौ मूंडौ ढेरयोड़ौ पाछौ घरै आयौ।

कांन्ह गुवाळिया रै लारै चिड़ियां री वौ डूल उडतौ उडतौ उजीण नगरी रै घाटा तांई पूगग्यौ। बावना जोड रै मांय सांतरौ चारौ देखनै सगळी चिड़ियां उठै ई उतर गी। उतरतां ई कांन्हौ पाछौ साचेलौ मोटयार वणग्यौ। चिड़ियां रौ डूल ई पाछौ गायां री छांग वणग्यौ। मोरयौ सांड वणतां ई घडूकण लागौ। बावना जोड रै मांय भांत भांत री चारौ— धांमण, भेरणियौ, करड़, माखणियौ, वरवाड़ी, गंदोल, रातड़ियौ, संवौ, मोथियौ। कांन्ह गुवाळ रा अलगोभा साथै उण वावना जोड में सुरग उतर आयौ।

दोनूं टंक पांचूं पक्वांन जीमै। गायां चारै। मद्यरां करै।

कैड़ा ई विखा में तीन वार गेंगण रौ चिटियौ घुमाय हेलौ मारचां छालर गाय हवा रै वेग दौड़नै पाखती आवै। कांन्हा री मंसा पूरै ।

इण बावना जोड में आयां पछै अेक बात वळै सवाय में व्ही । कांन्हा रै माथा रा केस सरब सोना रा बणग्या । माथौ परळाट करण लागौ । पोत्या सूं ढक्योड़ौ नीं राखतौ तौ दिन रा सूरज अर रात रा चंदरमा रौ भरम व्हैतौ ।

कांन्हौ नित तड़कै नंदी रै कांठै ई गायां नै पीवण सारू ले जातौ अर खुद उठै ई झीलतौ । औ उणरौ नित-नेम । अेक दिन री बात के नंदी में संपाड़ौ करती वगत सोना रौ केस तूटनै अळगौ बहण लागौ, उण वगत वौ झांपळी मारनै पाछौ आपरै काब्रू कर लियौ । काच लाग्योड़ी अेक डाबी में जाब्ता सूं घाल डाबी तीर माथै धर दी । पाछौ झीलण लागौ ।

संपाड़ौ करचां पछै डाबी अठी-उठी हेरी तौ ई लाधी कोनीं । तिथ छोडनै गायां रै लारै नचीतौ होय वहीर व्हैगौ । मगन होय अलगोझौ बजावण लागौ ।

बातां री बेजौ कोई बीजळियां रै पळकै नीं बणीजै, वौ तौ अस्टपौर सूरज रा उजास में, अंधारी रातां में अर चंदरमा री चांनणी में बणीजतौ रैवै । संजोग री माया अपरंपार के उण वगत दो राजकंवरियां उण इज नंदी माथै झीलण आई । नंदी रै मांय पग धरतां ई वांनै पांणी ऊपरां अेक चिळ-कती चीज निगै आई । मोटोड़ी राजकंवरी आखती होय बोली— आ चिळकै सौ चीज म्हारी । छोटोड़ी राजकंवरी कह्यौ— इणरै मांय सौ चीज म्हारी ।

थोड़ी ताळ में चिळकती चीज पाखती आई तौ मोटोड़ी राजकंवरी आगै होय उणनै लप झांपलो। अरे, आ तौ काच री डाबी ! खोलनै देख्यौ तौ मांय सोना रौ पळपळाट करतो केस !

छोटोड़ी राजकंवरी री मीट केस माथा सूं खासी ताळ तांई अळगी नीं व्ही। अळगो व्हैतां ईं मोटोड़ी राजकंवरी रै मूंडा सांम्ही देखनै बोली — परणीजूंला तौ इण केस वाळा मोट्यार नै ई, नींतर अकन कंवारी रैवूंला।

मोटोड़ी राजकंवरी उणनै समझावतां कह्यौ — अैड़ौ प्रण मत कर। कांई ठा औ केस मोट्यार रौ है के किणी लुगाई रौ।

छोटोड़ी राजकंवरी ठीमर सुर में जबाब दियौ — इणरी जाच म्हनै व्हैगी। लुगाई रै केसां री सौरभ ई दूजी व्हिया करै। लुगाई रौ केस इण विध करड़ौ अर आकरौ नीं व्है। बादळां छूट्यौ पांणी अर मूंडै छूट्या बोल पाछा नीं गिटीजै।

छोटोड़ी राजकंवरी तौ पछै संपाड़ौ ई नीं करचौ। आलं गाभां ईं राजमैल में आयगी। रिसांणी करनै सूयगी। राजा-रांणी घणौ बाद करचौ तद वा मन री बात दरसाई के ब्याव करैला तौ इण सोना रै केस वाळा सूं ईं।

राजा कह्यौ — थूं बावळी तौ नीं व्हैगी, सोना रै केसां वाळौ नीं तौ कोई कांनां सुण्यौ अर नीं आंख्यां दीठौ, पछै थारौ औ प्रण कीकर निभैला।

राजा-रांणी घणी ई माथाफोड़ी करी तौ ई वा नीं मांनी। कौल-वाचा करै तौ अंजळ रौ खग-पण तोड़ै। बेटी तिरसी-भूखी रैवै तौ माईतां सूं कीकर खाईजै। राजा-रांणी दोनूं जणा वचन दियौ तद वा रूसणौ छोड्यौ।

पचासूं असवार कांनी कांनी दौड़ाया तौ ई सोना रै केस वाळा री पतौ नीं लागौ । अैड़ो अनोखी वात लाधै तौ ई कीकर । सेवट राजा कायौ होय राज री चार टाळकी चात्रंग दूतियां बुलवाई । अेक कह्यौ के वा अम्बर रा तारा तोड़ लावै । राजा जबाब दियौ के उणरै अम्बर रा तारा नीं चाहीजै । दूजी कह्यौ के वा हथाळी में सिरसूं उगाय दे । रांणी जबाब दियौ के उणरै हथाळी में सिरसूं नीं उगावणी । तीजी कह्यौ के वा जच्चा रै पेट सूं टाबर चोर लै तौ ई उणनै पतौ नीं पड़ण दे । रांणी जबाब दियौ के उणरै अैड़ौ नीकूच कांम नीं करावणौ । चोथोड़ी कह्यौ के किणी अेक सेलांणी सूं बिना नांम-धांम, पतै-ठिकांणै वा उणरौ पतौ लगाय ले । आंगळी रौ नख के दूखणिया री उखलियोड़ौ खुरंट कठै ई मिळ जावै तौ वा उण मिनख रौ पंयाळ-लोक में व्है तो ई पतौ लगायां बिना नीं छोडै ।

राजा-रांणी नै चोथोड़ी दूती दाय आई । तीनूं जणियां नै टकौ टकौ सीख देय वहीर करी ।

काच री डाबी उघाड़ वा दूती सोना रा केस नै देखतां ई बोली — इण केस रौ धणी बावना जोड में गायां चारै । जांणै सांप्रत किसन भगवांन रौ इज अवतार । उणरी छींयां में ई रूप नीं मावै ।

सोळै घोड़ां री रथ जुताय राजा दीवांण भेज्यौ तौ ई नीं आयौ । सुभट नटग्यौ के जिण गांव नीं जाणौ उणरौ मारग ई क्यूं पूछणौ । जद उणनै सपना में ई ब्याव नीं करणौ तौ पछै राजाजी रै पाखती चालणा में कांई सार । वौ तौ अेक पलक

वास्तै ई आपरी गायां नीं छोडै । बुलावण सारू घणा ई लोग आया, पण वौ तौ मांन्यौ ई नीं । सेवट राजा कायौ होय उण दूती नै ई बुलावण रौ कांम भुळायौ । दूतियां रा तौ कांम ई अनोखा व्है । वा पूंछड़ां कांनो सूं बळद जोत्या । ऊंधा बळदां री गाडी खड़ती खड़ती बावना जोड में पूगी । कांन्हौ औ खिलकौ देखनै हंसियौ । हंसतौ हंसतौ ई बोल्यौ — ऊंधा बळदां री जुति-योड़ी गाडी तौ आज ई देखी । बावळी, थूं तौ म्हनै साव ऊंधा माथा री दीसी ।

दूती कह्यौ — वीरा, थूं संवा माथा रौ है तौ संवा बळद जोतनै बता, म्हारै गांव में तौ यूं ई बळद जोत्या करै ।

कांन्हौ बळद खोलनै संवा करया । खांधै जवाड़ौ धरनै जोत कसिया । तद दूती कह्यौ — वीरा, अै बळद कीकर चालैला । म्हांनै थोड़ी भांय खड़नै बता ।

कांन्हौ कोडायौ कोडायौ गाडी माथै बैठौ । टिचकारी देय पूंछड़ां रै हाथ लगायौ तौ करारा नारकिया तोप रै गोळा रै उनमांन छूटा । उतरणौ सारै री बात नीं रौ । दूती मोसौ मारती बोली — थूं तौ राजाजी रै बुलायौ ई को आयौ नीं, अबै उतरै तौ जांणूं ।

अबै जावतां कांन्हा रै सगळी चाल समझ में आई । तीन वेळा गेंगण री चिटियौ घुमाय हेलौ मारयौ—छालर...छालर... !

हेला रै समचै छांग री सगळी गायां छालर रै लारै री लारै दौड़ती आई । भेटियां सूं बळदां नै मार-मूर, रेकळिया नै भांग-भूंग आपरा धणी नै साजौ-सूरौ पाछौ ले आई । दूती तौ बची ज्यूं बचो । पण राजा तौ बळै दूजो वार उणनै ई

भेजी । नटै तौ घांणी में घाल पोलावण रौ आदेस । दूती जावै तौ मौत अर नी जावै तौ मौत ।

अबकी वा मरदांनौ भेख धार, ऊंट माथै ऊंधौ पिलांग मांड, पूंछ रै मोहरी बांध उण बावना जोड रै मांय पूगी । कांन्हौ औ खिलकौ देख वळै उणी भांत हंसियौ । हंसतौ हंसतौ ई बोल्यौ — ओठी तौ घणा ई दीठा, पण अैड़ा ऊंधा माथा रौ नीं तौ निजरां देख्यौ अर नीं कांनां सुण्यौ । बावळा, पूंछ रै मोहरी बांध यूं ऊंधी सजाई कीकर करी । नसा में तौ नीं है ।

ओठी कह्यौ — भाया, म्हारा गांव में तौ सगळा इणी भांत सजाई करया करै । थूं संवी जांणतौ व्है तौ बताय दे, थारौ गुण मांनूंला ।

कांन्हौ ऊंट झेकाय संवौ पिलांण मांड्यौ । गिरबांणा रै मोहरी बांध ओठी नै झिलाई । ओठी अबूझ बणतौ थकौ पूछ्यौ : औ ऊंधौ ऊंट कीकर चालैला म्हनै बता तौ खरी ।

कांन्हौ टप पागड़ै पग देय धकलै आसण बैठग्यौ । अेडी री ठरकावतां ई ऊंट भचकै ऊभौ व्हियौ । वतूळिया रै वेग न्हाटौ । लारै बैठौ ओठी डोढ़ में बोल्यौ — अबै थारी छालरी गाय नै भलां ई हेलौ मार । बापड़ी कित्ता नखरा करया, राजाजी रौ बुलावणौ पड़्यौ कठै है !

कांन्हौ तुरंत सगळी चाल समझग्यौ । तीन वार गेंगण रौ चिटियौ घुमाय निसंक जोर सूं हेलौ मारयौ — छालर... छालर............ !

हेला रै समचै ई छालर गाय तूटता तारा रै वेग उडी । लारै आखी छांग न्हाटती आई । हांकरतां ऊंट नै न्हावड़ लियौ ।

भालेड़ा सींगां सूं ऊंट री ओजरी चीर उणरी फींदी फींदी बिखेर दी। दूतो मौत रै जबाड़ा सूं छूटतां ई न्हाटी। हांफतो रोवती सगळी बात बताई। राजा-रांणी सुणनै घणौ ई अचूंभौ करयौ। सोना रै केसां वाळौ मोट्यार तौ प्रचंड करामाती दीसै। राजकंवरी कैड़ौ ऊंधौ हठ भेल्यौ।

सेवट राजा-रांणी लाचार होय खुद उण मोट्यार नै बुलावण सारू पाळा ई वहीर व्हिया। बावना जोड में पूगा उण वगत कांन्हौ मगन होय अलगोभौ बजावतौ हौ। ओळूं-दोळूं गायां ऊभी ही।

राजा-रांणी दोनूं मस्त होय झूमण लागा। भूलग्या के वै कांई कांम आया! अलगोभा री धुन सुणता रह्या जित्तै वांनै कीं चेतौ नीं रह्यौ। रूं रूं में जांणै कांमण री बाव बहग्यौ। बिसरग्या के वै राजा-रांणी है, देस रा धणी है। अलगोभौ बजावण वाळौ मोट्यार वांनै घणौ ऊंचौ लखायौ।

अलगोभौ ठम्यां रै खासी ताळ पछै ई वै बगना व्है ज्यूं ऊभा रह्या। घणी मोड़ी वांनै सुध-बुध वापरी। दो असेंधा मिनखां नै उण भांत बोला-बोला ऊभा देख्या तौ कांन्हौ वांरै पाखती आयौ। पूछ्यौ के वै कुण है अर अठै कांई कांम आया!

तद राजा-रांणी हाथ जोड़ण री विफळ चेस्टा करी, पण वांरा सूं सावळ जोड़ीजिया कोनीं। औ कांम तौ परजा रौ हौ। हाथ जोड़ण लागता तौ बोलणौ भूल जाता अर बोलणौ चावता जणा हाथ जोड़णा भूल जाता। ज्यूं त्यूं करनै अटकता अटकता बोल्या — म्हे इण देस रा राजा-रांणी हां। थांरै पाखती कीं कांम आया।

आ कैय वै थोड़ी ताळ तांई ढब्रग्या । पछै राजकंवरी रै प्रण री बात बताई ।

सगळी बात सुण्यां कांन्हा नै हंसी आयगी । बोल्यौ — इण ब्याव रा घांदा में तौ घर छोडनै परदेस आंणौ पड़चौ । अठै आयौ तौ धकै आ री आ गिरै । जोग अर भाग री बात । आप देस रा धणी हौ । बैर बांध्यां सज नीं आवै । म्हैं ब्याव तौ मरचां ई नीं करूंला । म्हारी गायां में फोड़ा पड़ जावै । म्हैं आज ई म्हारी छांग टोळ धकै वहीर व्है जावूंला ।

बात सुणतां ई राजा-रांणी रा मूंडा उतरग्या । दूतियां रै मूंडै दो वळा रै परचा री बात सुण्योड़ी ही । औ मोटि-यार अवस कोई न कोई मोटौ सिद्ध पुरख के करामाती है । राजा रै मूंडै-मूंड नटणा री दूजौ कुण हीमत कर सकै ! अेकर भगवांन नै विचार करणौ पड़ै के राजा री बात रौ ओड़ौ देवै के नीं देवै । औ तौ कोई अवतारी, पूरौ अवतारी ! देवतावां रौ ई मन डुळै जैड़ी राजकंवरी नै परणीजण सारू नटग्यौ ।

राजा-रांणी घणा ई नेवरा करचा, पण वौ तौ नटियां पछै दूजो बात करी ई नीं । राजा अन्नकी हाथ जोड़चा तौ सावळ जुड़ग्या । गरीबी रा सुर में बोल्यौ — म्हे तौ आपरी बात समझग्या । अेकर राजकंवरी नै समझायदो तौ फंद कटै । वा मांन जावै तौ म्हांनै कीं उजर कोनीं । अेकर राजमैल तांई चालण रा फोड़ा तौ खावणा ई पड़ैला ।

कांन्हौ तौ सुभट नटग्यौ । कह्यौ — राजमैल री भलां कही । इंदरलोक रौ राज मिळै तौ ई म्हैं गायां नै अेक पलक वास्तै ई सूनी नीं छोडूं ।

राजा - रांणी कांई जोर करता । जोर तौ घणौ ई हौ, पण अठै साव लाचारी ही । कुमांण राजकंवरी फैड़ौ ऊंधौ प्रण झेल्यौ, जकौ राजा - रांणी नै हाथा - जोड़ी करणी पड़ी अर वा ई अैळी गी । बोला - बोला मूंडौ ढेरचोड़ा पाछा आया ज्यूं ई वहीर व्हैगा ।

राजा - रांणी रौ राजमैल में पग धरतां ई माथौ ठणकियौ के अेक नाकुछ गवाळिया रीं कित्ती हाथा - जोड़ी करी, गरीबी दरसाई । सै टणकाई माथै पोतौ फिरग्यौ । राजा - पणा रौ मठ मरग्यौ । आ तौ मरणा सूं ई भूंडी व्ही । चापळियोड़ौ गुमांन खमखरी खाय वतूळिया रै उनमांन गरणाटी खावण लागौ । उण री खीज बेटी माथै काढ़ी । रांणी कह्यौ — थारी ठौड़ भाटौ जलमतौ तौ म्हनै आज आ लाचारी तौ नीं करणी पड़ती । राजा कह्यौ के उणरै कारण वौ जीवतौ ई मरचा बिरौबर । पैली वार गरीबी रा बोल काढ़चा । सिंघ लरड़ी रै सांम्ही हाथ जोड़ै अर मिमियावै तौ पछै उणरी हौकारां में धूळ ।

चिड़ता चिड़ता ई वै राजकंवरी नै सगळी बात बताय दी के वै कित्ती लाचारी दरसाई अर वौ अेकर नट्यौ सौ पाछौ हुंकारौ ई नीं भरचौ ।

राजकंवरी सोच विचारनै कह्यौ के उणनै इण बात रौ गुमेज है के वा बिरथा प्रण नीं करचौ । प्रण रै जोग ई वौ सोना रै केसां वाळौ मोटचार मिळियौ । अैड़ा मिनख जुगां में अवतरै । वा खुदौ - खुद जायनै मिळैला । नटग्यौ तौ ई अकन कंवारी रैवैला ।

रांणी इचरज अर रीस करती बोली — लखणा - वायरी

थनै आ कांई कावळ सूझी । म्हे तौ माजनौ पड़ाय नै आया ई, अबै थूं नाक बढ़ावण नै जावै ! नटण वाळा रै माडांणी गळै पड़ैला ।

दोनूं अेक ई माजना रा । नीं तौ वौ गायां रौ गुवाळ ई मांन्यौ अर नीं आ राजकंवरी ई मांनै । राजा सोळै घोड़ां रौ रथ जुतावण रौ आदेस करचौ तौ राजकंवरी कह्यौ के वा पाळी अर अेकली ई जावैला । दरजै लाचार होय राजा-रांणी नै राजकंवरी री बात मांनणी पड़ी ।

राजकंवरी मन में उमंगां रा बादळा बरसावती बरसावती बावना जोड में पूगी । उण वगत अलगोझा रै अणहद नाद सूं कांकड़ रौ त्रण त्रण हरियाळी में डूबोड़ौ हौ । पंछी काठ रा रमेकड़ां रै उनमांन जिण डाळी माथै बैठा हा, उठै ई जांणै चिपग्या । सिंघ, चीता, बाघ, रींछ, जरख, सियार, हिरण, बांदरा, लूंकी, खिरगोस, अजगर, काळिंदर, गोरचा-वर, बोगी, परड़ इत्याद केई जीव जिनावर गायां रै लारै अड़ता ई बैठा हा । के तौ भाटा रा घड़ियोड़ा के निरजीव ! सरप पूंछड़ी माथै पाधरा व्हियोड़ा ऊभा हा । सिंघ, चीतां रै आजू-बाजू हिरण अर खिरगोस ऊभा हा । किणी नै अेक-दूजा रौ चेतौ नीं हौ । निजर पड़ी तौ ई चेतौ व्हियौ कोनीं ।

कदम्ब री डाळ माथै बैठौ मोटचार अलगोझौ बजावतौ हौ । चारूंमेर गोळ-कूंडिया में गायां ऊभी ही । राजकंवरी ई अेक बब्बर सिंघ रै पाखती आय ऊभगी । अणछक उमड़ घुमड़नै सोळै ई कूंटां सूं बादळां रा गोट ऊंचा चढ़ण लागा । जांणै माहोमाह होड़ माची । देखतां देखतां काळा बादळां रौ अेक

नवौ ई आभौ तणग्यौ । बादळा गरजण लागा । वादीवाद बीजळियां भळाभळ करण लागी । परनाळां पांणी ओसरण लागौ । तौ ई कोई पंछी के जीव जिनावर नीं हिलियौ । राजकंवरी पाखांण री पूतळी रै उनमांन अेक ठौड़ ऊभी उण इमरत बिरखा में भीजती री । आ कांईं माया ! आ कांईं लीला !

खासी ताळ तांईं वौ अणहद नाद गूंजतौ रह्यौ । बादळा बरसता रह्या । पण नाद ठमतां ईं बादळा अलोप व्हैगा । बिरखा ठमगी । सोसनी आभौ चिमकतौ परगट व्हियौ, जांणै समंदर में खंखोळी खाय आयौ व्है ।

पंछी टिव टिव करता बोलण लगा । कोई कोई उडिया । गायां मतै ई कांकड़ में चरण सारू वहीर व्हैगी । जीव जिनावर अेक अेक करनै आप आपरै मतै टुळक्ग्या । फगत राजकंवरी उणी भांत ऊभी री । कांन्हा री निजर उण माथै पड़ी तौ उणरै इचरज रौ पार नीं रह्यौ । रूप री आब आखा कांकड़ में ईं मावै नीं । आ अपछरा के तौ अणहद नाद सूं प्रगटी, के बादळां सूं पांणी साथै ओसरी । गिगन अर कांकड़ री रंगत हजार गुणा बधगी । सूरज रौ उजास बधग्यौ ।

दोनूं जणा खासी ताळ तांईं अेक दूजा री रूप निरखता रह्या । राजकंवरी मन ई मन ओळबौ दियौ — म्हैं थांरी राधा, म्हनै इण भांत बिसराई क्यूं ? गायां रौ गुवाळ मन ई मन ओळबौ दियौ — म्हैं थारौ कांन्ह, म्हनै इण भांत बिलमायौ क्यूं ?

गायां रौ गुवाळ कांन्हौ लुगाई रै इण रूप री तौ सपना में ईं कल्पना नीं करी ही । अणछक राजकंवरी बोली । गळा रै मांय बोल निकळता दीस्या — "ब्याव करण सारू नटिया

क्यूं "

कान्हा रै मूंडा सूं परबारा ई बोल मतै रळक पड़्या—थूं नीं मिळी जित्तै तौ नटणौ इज हौ । पण थारै साथै तौ म्हारी जलम जलम री प्रीत , पछै परणीजण रौ प्रपंच क्यूं करां ।

राजकंवरी कह्यौ — नीं , अबै थांरी बात नीं मांनूं । थें म्हनै जुगां तांई इण भांत छळी । अबै तौ परणीज्यां ई थांरी म्हारी प्रीत फळैला ।

कान्हौ बोल्यौ — थूं औ नवौ हठ क्यूं झेल्यौ । म्हारौ कैणौ मांन राधा , प्रीत रै चंवरीं रौ धूंवौ मत लगा । काळस उघड़ैला । इणनै तौ सूरज रा उजास अर चंदरमा री चांदणी में झीलण दे ।

कान्हौ घणौ कह्यौ तौ ई राजकंवरी नीं मांनी । बोली—दुनियां हाल तांई मोसा देवै । हथळेवौ जोड़्यां बिना प्रीत री कांई पत ।

कान्हौ वळै समझावण री चेस्टा करी । कह्यौ — राधा , औ ऊंधौ वाद मत कर । अपांरी प्रीत नंदिया में बहै, झरणां में खळकै, फूलां में मुळकै , चांदणी में तिरै , तारा में खिवै , बादळा में बरसै , बीजळियां में पळकै , अर पांन पांन में सरसै — इणनै बांध मत । प्रीत रै पेंखड़ौ घालतां ई सूरज आथमैला, चंदरमा खांडौ व्हैला ।

राधा वळै वाद करती बोली — कोई बात नीं , सूरज छौ आथमतौ , चंदरमा छौ खांड़ौ व्हैतौ , म्हैं तौ प्रीत नै हथळेवै बांधूंला ।

सेवट कान्हा नै मांनणौ पड़्यौ । जोर सूं कह्यौ — तौ

थारी मरजी !

पछै गाजां-बाजां, नौबत नगारां हीरा-मोत्यां रै पळकै राजकंवरी रै साथै कांन्हा रौ ब्याव व्हियौ। उण दिन सूं ई प्रीत रा चांद रै काळस लागी, चंदरमा खांडौ होवण लागौ, सूरज नित आथमण ढूकौ।

ब्याव री लाखीणी रात कांन्हौ रंग-मैल में सूतौ तौ अेक छिण में रात ढळगी। पण कांकड़ में गायां सारू वा रात अेक बरस सूं ई लांठी व्हैगी। कांन्हौ कोल करनै गियौ हौ के चंवरी सूं ऊठतां पांण वौ पाधरौ जोड में आवैला। कांई बात व्ही, कोई विखौ तौ नीं पड़ग्यौ ! छालर समेत सगळी गायां हींजर हींजरनै मरगी। कांन्हौ ब्याव री पैली रात ई वांनै बिसराय दी ! लुगाई रै रूप अर जोबन री बखड़ी में झिलियां पछै मिनख नै दूजी कीं बात सूझै ई नीं। गायां अेक छिण रौ ई बिछोव नीं झेल्यौ हौ। पछै आखी रात कीकर ढळती ! सूरज ऊग्यां पैली पैली ई सै गायां री आंख्यां अंधारौ पाथरग्यौ।

इण भांत अेक अेक छिण री रंगमैल रै मांय तीन काळी रातां ढळगी। अर उठी बावना जोड में गिरज-कागलां रै मनचींती गोठा व्ही। अेकण सागै साढ़ा सात बीसी गायां रौ वाखर। मुलक रा गिरज कागला भेळा व्हैगा। बोटी री बोटी टूंच टूंच खायग्या। फगत किड़कोड़ बाकी बच्या। सांड रा किड़कोड़ टाळ कीं ठा नीं पड़ती के किसी गाय रौ किसौ किड़-कोड़। मरयां पछै सै अलगाव अर न्यारा-पणौ मिटग्यौ।

चौथी रात रंगमैल में आधी ढळियां राजकंवरी सात वाटां

री पिलजोत में आंख्यां गडाय बोली — साचांणी, अै रातां तौ भलां व्ही। प्रीत री साचौ उजास तौ रात रा ई जगमगै। तीन दिन तौ तीन छिण ज्यूं बीतग्या अर पतौ ई नीं पड़्यौ...।

कांन्हौ बिचाळै ई चिराळी करतौ बोल्यौ — कांई कह्यौ, अठै आयां नै तीन दिन बीतग्या? नीं नीं, म्हैं तौ जांणतौ के हाल तीन पलक ई नीं बीत्या। म्हैं प्रीत में अैड़ौ आंधौ अर सिरग्या-बायरौ व्हैगौ! म्हारी गायां रा कांई हवाल व्हिया व्हैला।

आ कैय वौ तौ भचकै पिलंग सूं बैठौ व्हियौ। बारणौ उघाड़ छालर छालर अरड़ावतौ बारै निकळग्यौ। राजकंवरी ई लारै न्हाटी।

बावना जोड में पूग कांन्हौ उरबांणै पगां घणौ ई भटकियौ पण गायां री तांबाड़ नीं सुणीजी। किड़कोड़ां में केई वळा अळूझियौ, पण पतौ नीं पड़्यौ के वै गायां रा ई किड़कोड़ है। दिनूंगा सूरज रा चांनणा में जकौ नजारौ उणनै देखणौ पड़्यौ तौ वौ देखतां पांण बेचेतै होय गुड़ग्यौ। घड़ी घड़ी अेक ई आंकड़ौ वेलण लागौ — इण वास्तै ई तौ म्हैं ब्याव सारू इत्तौ नटतौ। म्हारी गायां हींजर हींजरनै मरगी अर म्हैं रंग-मैल में मछरां करतौ रह्यौ।

मूठी में उणरै गेंगण रौ चिटियौ अपड़्योड़ौ हौ। बेचेतै पड़्यौ पड़्यौ ई वौ तीन वळा चिटियौ घुमाय तीन वळा छाळर रौ नांव लियौ। नांव लेवतां ई सगळी गायां जीवती व्हैगी। पूंछां पाधरी करनै अेकण सागै तांबाड़ी। कांकड़ रौ कण कण सारथक व्हैगौ।

कांनां में गायां रै तांबाड़ण री भणक पड़तां ई कान्हौ अजेज हळफळायौ होय बेठौ व्हियौ । बाछड़िया चूंघै अर गायां मस्ती में हुंकारै । हरख अर दुख रा भेळा आंसू उणरै नैणां सूं ठळाक ठळाक बहण लागा । आखी गायां ई आंसू ढुळ-कावण लागी । कान्हौ आपरी भूल रौ घणौ ई पिछतावौ करयौ ।

राजकंवरी बगनी व्है ज्यूं सगळी माया देखती री । के इत्ता में राजा-रांणी सोना रा रथ माथा सूं उतर वांरै सांम्ही आंवता दीस्या ।

उजीण रौ राजा पाखती आय कह्यौ — म्हारौ जंवाई इण भांत गायां चारतौ भूंडौ लागै । दायजा में आधौ राज सूंपूं, थाट सूं राज करौ । गायां में अेक री ठौड़ वीस गोहरी राख दूं । म्हैं इणी वास्तै सोना रौ रथ जुताय थां दोनां नै लेवण सारू आयौ ।

कान्ह गुवाळ मुळकतौ थकौ बोल्यौ — जद तौ आप बिरथा फोड़ा खाया । म्हारी गायां रै अेक अेक खुर में उजीण रौ राज बसै । म्हनै कांई राज रौ छिग बतावौ । थांनै दोखै औ राज । इंदर-लोक रै ई सात वळा ठोकर मारूं ।

रांणी बोली — म्हारी राजकंवरी गायां चारैला, कांकड़ में बसैला !

राजकंवरी बिचाळै ई जबाब दियौ — मां, इण में सोच करै जैड़ी कांई बात । लारला भौ री पुन्याई जकौ म्हनै अैड़ौ धणी अर गायां री आ छांग मिळी । म्हैं तौ इण कांकड़ रौ वासौ छोड सुरग री ई आस नीं करूं ।

राजा-रांणी आधौ राज देवण सारू घणा ई थोरा करया

पण वै तौ यारै ई नीं करी। सेवट लाचार होय आया ज्यूं ई पाछा वहीर व्हिया।

कदम्ब रा रूंख तळै छांन बणाय दोनूं जणा थाट सूं रहण लागा। सागै ई गायां चारता। कांन्हौ अलगोझौ बजावतौ अर राधा सुणती। आखौ कांकड़ ई सुणतौ। इंदर-लोक अर सुरग-लोक रा वासी उण कांकड़ सूं ईसकौ करता। उठै बसण सारू तड़फा तोड़ता।

छालर गाय रै दियोड़ा बाटका में मंसा परवांण पकवांन तौ आवता ई हा। पछै कांई बात री कमी। अनाप धीणौ-धापौ। घी दूध री मूणां भरी। अलगोझा री टेर सूं बंध्या दिन सुख सूं रळकता हा के अेक दिन दो लोग लुगाई माथै लांठा लांठा भारा उखणियां उजीण नगरी रौ मारग भूलग्या सौ पूछण सारू आया। दोनां रा ई गाभा झीर झीर व्हियोड़ा। लटिया बिखरियोड़ा। होठां कटाई आयोड़ी। डील माथै ठौड़ ठौड़ फूलण रा मांडणा मंड्योड़ा। धणी रै दो दो आंगळ खत बधियोड़ी। नख बधियोड़ा। कांन्हौ वा दोनां रै सांम्ही थोड़ी ताळ तांई टुग-टुग भाळतौ रह्यौ। सुभट पिछांण करली के लकड़ियां रा भारा बेचणिया उणरा भाई-भौजाई है। सेवट इण भांत करम पाका। उणरा दूध जैड़ा मन में वळै दया सांचरी। धांमाधूंमी करचां बिना ई दूणा-तिवणा दांम देय वौ दोनूं भारा उठै ई उतरवाय लिया। दूणा दांम बटिया अर गोता बचिया सौ सवाय में, भारा बेचणिया अणूंता राजी व्हिया।

वै दोनूं धणी-लुगाई नित भारा लावता अर कांन्हौ नित उणी भांत वपराय लैतौ। कांन्हौ वांनै पैरण सारू सांतरा

गाभा दिया । खवास नै बुलाय मोट्यार री खिजमत बणवाई । अेक दिन बाटका में लाडू अर घेवर खासा बचग्या तौ वौ कठियारां नै खावण सारू दे दिया । पण इचरज री बात के लाडू अर घेवर माथै निजर पड़तां ई कठियारां री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू बहण लागा । कांन्हौ तौ वां आंसुवां रौ मरम तुरत समझग्यौ, पण राजकंवरी अचूंभौ करती पूछ्यौ के लाडू घेवर देखतां ई वै इण भांत रोया क्यूं ।

दो तीन वार तौ कठियारा आळिया-टोळिया कर्‌या, पण राजकंवरी सेवट घणौ वाद कर्‌यौ तौ लुगाई रोवती रोवती बोली — म्हारै अेक देवर हौ । अेकर वौ अैड़ा ई लाडू-घेवर भेज्या हा । उण दिन पछै घणौ ई विखौ पड़्यौ । रांम जांणै अबै वळै कांई विखौ पड़ैला ।

कांन्हौ वांनै धावस बंधावतां कह्यौ — थें डरौ मत । किणी बात रौ सोच मत करौ । थां में कीं विखौ नीं पड़ैला । पण अबै वौ देवर है कठै ?

अबकी कठियारौ जबाब दियौ — उण दिन चिड़ी बणनै उडियौ सौ आज दिन तांई पतौ नीं पड़्यौ ।

पछै वौ कठियारौ लुगाई रै सांम्ही देखनै बोल्यौ — आ हित्यारण नीं भिड़ावती तौ आज कांई बात री कमी ही ।

पछै कांन्हा सूं ई चोज नीं राखीजियौ । हौ जकौ साचौ गनौ बताय दियौ । भाई भाई गळै मिळ्या । भोजाई माफी मांगी । आपरा अकरम माथै घणी ई पिछताई । जैड़ा कर्‌या सौ भुगत लिया । बेटी नै परणाय दर दर भटकण लागा सौ इत्ता दिनां तांई भटकता रह्या ।

उण दिन सूं ई दांरौ भटकणौ बंद व्हैगौ। भाई रै जोड़ै दूजी छांन मांड च्यारूं जणा सुख सूं रहण लागा। पछै कदै ई माहौमाह कजियौ नीं व्हियौ।

अेक दिन भौजाई कांन्हा सूं मिसखरी करती बोली — देवर जी, जे उण दिन ब्याव सारू हुंकारौ भर लेता तौ अपांरी भरी-तरी गवाड़ी रौ विणास क्यूं व्हैतौ।

मिसखरी रौ जबाब पाछौ मिसखरी में ई देवतौ देवर बोल्यौ — ब्याव रै मिस जे उण दिन म्हारा करम फूट जाता तौ राधा सूं हथळेवौ कोकर जुड़तौ। म्हैं तौ जलम जलम इण रै साथै ई प्रीत करूं। ब्याव तौ फगत इण जलम में ई कर्‌यौ।

राधा अपूठी होय घूंघटा रै मांय मुळकण लागी तौ कांकड़ रौ उजास सवायौ बधग्यौ।



आक धतूरौ

अेक ही राजा अर अेक ही रांणी । ज्यांरै हा दो टाबर । बडौ रजकंवर अर छोटी राजकंवरी । राजकंवर नैं चौपड़-पासा रमण री अणूंती कोड । थाळ अरोगण सारू डावड़ियां दस वार बुलावती तद राजकंवर नीठ चौपड़ भेळी करतौ । राजकंवरी रै अेक मोरचौ पाळियोड़ौ । अस्टपौर उणरै साथै रमतौ । मोरचौ राजकंवरी रै कैतां ईं छतरी तांणतौ । घूम-चकरी खाय नाचतौ । पगां में सोना रा घूघरा बाधोड़ा ।

राजकंवर चौपड़-पासां में अैड़ौ प्रवीण के कदै ई किणी नै जीतण नीं दियौ । अेक दिन अेक थोरी चौपड़-पासा रमण सारू आयौ । माहोमाह होड आया के जीतणियौ हारंचोड़ा री बैंन परणीजैला । राजकंवर नै आपरी जीत माथै तौ अडिग विस्वास हौ इज । पछै होड करणा में क्यूं पाछौ सिरकतौ । पण घणा तेरू री रांड व्है । राजकंवर रौ विस्वास गुळांच खायग्यौ । वौ लगतौ ई थोरी सूं सात वाजी हारग्यौ ।

थोरी राजकंवरी नै परणीजण री आंचौ करचौ तद राजकंवर तीन दिनां री मोलगत मांगी । थोरी आपरै ठायै गियौ अर सात वळा हारयोड़ौ राजकंवर रूसणौ करनै आंगणै सूयग्यौ । बोलै-चालै नीं, खावै-पीवै नीं । राजा-रांणी लडाय लडाय हार

थाकगा पण वौ तौ मूंडौ ढांप्यां सूतौ रह्यौ । सेवट आधी ढळियां घणौ घोदायौ जद कह्यौ के कौल-वाचा करै तौ बतावै । राजा वचन दियौ ।

कंवर मूंडौ ढांप्यां ढांप्यां होळै सीक बोल्यौ — कालै राज-कंवरी नै म्हारै साथै सिकार भेजौ तौ रूसणौ छोडूं । म्हारै साथै कोई तीजौ असवार नीं व्हैणौ चाहीजै ।

रांणी छाती सूं चिपाय बोली — वा रे काला वा ! इण नाकुछ वात सारू ब्रिरथा इत्तौ तळतळावण करी । थूं कैवै तौ नित राज-कंवरी नै थारै साथै भेज दूं । वा ई सिकार रमणौ सीख जावै ।

राजकंवर रूसणौ तौ छोड दियौ पण मूंडा माथै आब नी आई ।

दूजै दिन राजकंवरी मोरचा नै लालां चुगाय भाई रै साथै सिकार रमण सारू वहीर व्हैगी । मोरचौ कुरळावतौ रह्यौ, पण सिकार री कोडाई राजकंवरी तौ लारै मुड़नै ई नीं जोयौ । दिन रै वधांण दोनूं भाई बैन श्रेक हिरण रै लारै घोड़ा बगडावता बगडावता श्रेक बावड़ी री पाज माथै बिसाई खावण सारू बैठा । राजकंवर लिलाड़ री परसेवौ पूंछतौ पूंछतौ ई बोल्यौ — तिरस आगै प्रांण निकळै । दौड़ी दौड़ी बावड़ी में जाय दीवड़ी तौ भर ला ।

राजकंवरी कैतां पांण अजेज धमधम बावड़ी री नाळ उतरण लागी । बावड़ी में कमोद व्है जैड़ौ निरमळ पांणी हौ । वा दीवड़ी रौ मूंडौ खोल पांणी भरण सारू नीची लुळी ई ही के उणनै श्रेक गुलाब रौ फूल तिरतौ दीस्यौ । पूरौ खिल्योड़ौ । तर गुलाबी । तिरतौ तिरतौ राजकंवरी रै साव पाखती आय-

ग्यौ। राजकंवरी उणनै लेवण सारू हाथ धकै करयौ तौ हिवोळा सूं फूल अळगौ सिरकग्यौ। राजकंवरी झांपळी मारी तौ उणरौ पग पितळग्यौ। पछै तौ उणरा पग टिक्या ई नीं। मांय ऊंडी थरकीजती गी। बिना पींदा री अथाग बावड़ी! राजकंवरी निरी ताळ तांई मांय उतरती गी, उतरती ई गी। सागै री सागै आंख्यां सांम्ही वौ फूल ई निचै उतरतौ गियौ।

पंयाळ-लोक में वड़तां ईं राजकंवरी आंगणै पड़्या फूल नै उठावण सारू हाथ अड़ायौ ई हौ के उण फूल रौ अेक मिनख बणग्यौ। राजकंवरी आ अनोखो माया देख थरथर धूजण लागी। तद वौ मिनख उणनै धावस देवतां बोल्यौ— डर मत, म्हैं थारौ धणी हूं। राजकंवर थनै होड में हारचौ। अेक दूजा री बैन परणावण रौ ई कौल हौ।

राजकंवरी उण पंयाळ-लोक में कांई जोर करती। घणी ई रोई-रींकी। पण थोरी नीं मांन्यौ। माडांणी उणरै साथै घरवास करणौ पड़्यौ। रोवती जावती अर थोरी रै साथै चौपड़-पासा रमती जावती।

राजकंवर सिकार सूं पाछौ अेकलौ ई आयौ तौ राजा-रांणी रौ काळजौ धुक-धुक करण लागौ। रांणी हळफळाई होय पूछ्यौ के राजकंवरी कठै। तद भाई आंख्यां पूंछतौ बोल्यौ— बाई नै तौ अेक केसरी सिंघ बाळां सूदो डकारग्यौ।

राजा-रांणी रोय रोय माठ झेली। पण मोरचा रौ मन नीं मांन्यौ। सात दिनां तांई भूखौ रह्यौ अर आंसूड़ा ढळका-वतौ रह्यौ। सै पांखां झड़गी। किलंगी खिरगी। मोरचौ निपट भुरंगौ अर अडोळौ व्हैगौ। राजकंवरी बिना जीवणौ अबस दूभर

व्हैगी, पण बिना सोय करयां मरणौ ई कीकर व्है।

टहूकतौ टहूकतौ वौ मोरचौ उण बावड़ी री पाज माथै आय आंसूड़ा ढुळकावतौ कैवण लागौ — बाईजी ओ बाईजी, लाल चुगंती, हीरा चुगंती, थांरौ लाडल मोरचौ रुळतौ ई फिरै, रुळतौ ई फिरै।

बावड़ी रै पांणी मांय बुड़बुड़िया ऊठया। अणछक किणी री बोली सुणीजी — म्हारा लाडल मोरचा, जाय बाभौजी नै यूं कैजै के भाई दीधी जद थोरी लीधी। मायड़ सूं मिळण रीं तूटगी आस। म्हारौ थोरी रै साथै घरवास।

टहूकतौ टहूकतौ मोरचौ पाछौ राजमैल में गियौ। राजा-रांणी नै सगळी बात बताई। राजाजी रौ आदेस व्हैतां ईं बावड़ी माथै दुढ़ांणौ मंडियौ। हांकरता बावड़ी रौ पांणी तोड़यौ। सिलाड़ी भांग केई असवार नागी तरवारियां लेय मांय वड़या।

थोरी अर राजकंवरी चौपड़-पासा रमता हा। थोरी संभ-ळियौ जित्तै जित्तै असवार उणरी कापी कापी कर न्हाकी। अस-वार राजकंवरी नै लेय बावड़ी सूं बारै आया। तद असवारां रै साथै उडतौ अेक कागलौ कांव कांव करतौ बोल्यौ — माडै ले जावौ तौ भलांई, आ राजकंवरी है तौ म्हारी।

राजा-रांणी राजकंवरी नै देख अणूंता राजी व्हिया। ढील करयां वळै कीं रांभौ पड़ सकै। पिंडत रै साथै राजकंवरी रौ सावौ भेज्यौ। जद भींडी माथै बैठौ कागलौ कांव कांव करतौ वळै बोल्यौ — सावौ भेजौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी।

कागला नै मारण सारू घणा ई तीर वगाया, पण उणरै अेक ई नीं लागौ। डावड़ियां राजकंवरी रै पीठी करण लागी

तद वौ कांव कांव करतौ वळै बोल्यौ — पीठी करौ तौ भलांई, आ राजकंवरी है तौ म्हारी ।

राजकंवरी कागला री बोली रै समचै ई थरथर धूजती । मेंहदी लगावती वेळा वौ छाजा माथै बैठ कांव कांव करतौ बोल्यौ — मेंहदी लगावौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

काळा हाडा री काळी बोली सुणनै राजकंवरी री मेंहदी ई नीं राची । वा सांवळी पड़गी । तेल उतारती वेळा वौ कागलौ झिरोखा माथै बैठ कांव कांव करतौ बोल्यौ — तेल उतारौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

घी पावती वेळा कागलौ मेड़ी माथै बैठौ कांव कांव करतौ बोल्यौ — घी पावौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

परणीजण सारू वींदराजा तोरण आयौ तौ गुमटी माथै बैठौ कागलौ कांव कांव करतौ बोल्यौ — रायवर तोरण आयौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

कागला नै मारण सारू अेकण सागै इक्कीस तीर छोड्या पण वौ चात्रंग कागलौ तीरां री उण ब्रिरखा में ई कोरौ बचग्यौ ।

राज-पिंडत चंवरी मांडण लागौ तद वौ कागलौ तोरण माथै बैठौ कांव कांव करतौ बोल्यौ — चंवरी मांडौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

सगळा जणा आ सोचनै कागला लारै धूळ वगाई के यूं ई पड़्यौ बकै । होणी जांणी तौ कीं नीं । पिंडत पाट्यौ बोलण लागौ तद वौ वळै आंब रा रूंख माथै बैठौ कांव-कांव करतौ बोल्यौ — पाट्यां वोलौ तौ भलांई, राजकंवरी है

तौ म्हारी ।

औ कागलौ कोई ऊंधा माथा रौ दीसै । कुपाळी में लट लागगी व्हैला । फेरा री वगत वौ रांणी रा मैल माथै बैठ कांव कांव करतौ बोल्यौ — फेरा खवाड़ौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

सुणण वाळा कीं गिनरत नीं करी । रात रा राजकंवरी नै डावड़ियां मैलां चाढ़ण लागी तद वौ कागलौ रंग-मैल रा छाजा माथै बैठ कांव कांव करतौ बोल्यौ — मैलां चाढ़ौ तौ भलांई, राजकंवरी है तौ म्हारी ।

मैलां चढ़ती राजकंवरी रा पग थरथर धूजण लागा । वा अेक डावड़ी रा कांन में डरती डरती कीं सुर-पुर करी तौ रांणी उणनै सात ओरियां रै मांय सात ताळा जड़नै जाब्ता सूं सुवांण दी । राजकंवरी रौ रूं रूं कांन बणनै सुणण लागौ ।

आधी ढळियां थोरी कागला सूं पाछौ मिनख बणनै पैलौ ताळौ खोल आगळ सिरकावण लागौ के राजकंवरी नै पतौ पड़ग्यौ । वा पिलंग माथै सूती सूती ई अरदास करी — पैली आगळ खोलै, वाभौजी म्हारा जागौ तौ खरी ।

थोरी दूजोड़ौ ताळौ खोल आगळ सिरकावण लागौ तौ वळै अरदास करी — दूजी आगळ खोलै, मायड़ जाग तौ खरी ।

पण कोई नीं जाग्यौ । थोरी तीजौ ताळौ खोल आगळ सिरकावण लागौ जणा वा पिलंग माथै बैठ वळै अरदास करी — तीजी आगळ खोलै, काकौजी म्हारा जागौ तौ खरी ।

पण कोई नीं जाग्यौ । सगळा ई अगाढ़ ऊंघ में सूता हा । थोरी चोथौ ताळौ खोल, आगळ सिरकावण लागौ जणा

वा पिलंग सूं हेटै उतर वळै अरदास करी — चौथी आगळ खोलै, काकीजी म्हारा जागौ तौ खरी ।

पण कोई नीं जाग्यौ । सगळा ई आप आपरा रंग-मैल में सूता हा । थोरी पांचवौ ताळौ, खोल आगळ सिरकावण लागौ जणा वा आडा रै पाखती आय वळै अरदास करी — पांचवी आगळ खोलै, फूंफौजी म्हारा जागौ तौ खरी ।

पण किणी रै कांनां भणकारौ ई नीं पड़्यौ । थोरी छठौ ताळौ खोल आगळ सिरकावण लागौ तद वा आपरा आडा नै भचेड़तो वळै भीणा सुर में अरदास करी — छठी आगळ खोलै, भूआजी म्हारा जागौ तौ खरी ।

पण कोई नीं जाग्यौ । सगळा ई आप आपरा रंग-मैल में सूता हा । सातवौ ताळौ खोल जद वौ आडौ खोलण लागौ तौ राजकंवरी पाछी पिलंग सांम्ही न्हाटी । वींद राजा नै झंझेड़ती बोली — सातवी आगळ खोलै, सायबजी म्हारा जागौ तौ खरी ।

पण सायबजी तौ पसवाड़ौ ई नीं फेरचौ । के इत्ता में थोरी नागी तरवार लेय हप्प करती रौ मांय वड़्यौ । अेक ई सपाका में पिलंग माथै पोढ़्या वींदराजा रौ माथौ वाढ़ न्हाकियौ ।

अेक हाथ में नागी तरवार अर दूजोड़ै खांधै वेचेतै व्हियोड़ी राजकंवरी नै उंचाय थोरी तौ राज-मैल सूं बारै निकळग्यौ अर किणी नै कीं पतौ नीं पड़्यौ ।

तड़कै तूटोड़ा ताळा अर सातूं ई आडा खुल्योड़ा देख्या तौ मार हाय-त्राय माची । राजमैल में कूकारोळौ मचग्यौ । डावड़ियां छातो-माथा कूटती कूकी के जंवाई-रांणौ पिलंग माथै वढ़्योड़ा पड़्या । राजकंवरी रौ पत्तौ ई नीं ।

जांन री बाट उडीकता राजा नै जद बेटा रै मरण रा समंचार पूगा तौ उण राज में ई जांणै जित्तौ कूकारोळौ मच्यौ। रांणी तौ छाती-माथा कूटनै बेचेतै होय पड़गी।

राजा व्हौ भलांई रंक, मरयां पछै तौ मसांण ई वासौ देवै। राज री परघै रोवती रोवती वींदराजा नै दाग देवण सारू आई। थोरी रौ घर वां मसाणां सूं साव नैड़ौ हौ।

रथी खिड़कनै जद दाग देवण लागा तद थोरी रै घर में रोहड़ियोड़ी राजकंवरी मिन्नी बणनै बारै आई। रथी रै चारूं-मेर परकमा देय वा रोवती रोवती बोली — इण रथी रै भेळौ म्हनै दाग देवै जका नै पग री नेवरी देवूं अर बळियां पछै आसीस!

नेवरी अर आसीस रा लोभ में खांधिया मिन्नी नै सिळगती रथी रै मांय थरकाय दी। वींदराजा अर राजकंवरी दोनूं ई भेळा बळग्या।

थोरी आ रचना देखी तौ उणरा मन में ई वैराग ऊठ्यौ। हाथां ई लांपौ देय माथै बैठग्यौ। थोरी री बहू सोच्यौ के अबै जीवणा में कांई सार। उणरै हीयै ई वैराग रौ गोट ऊठ्यौ। वा ई धणी वाळी सिळगती रथी में कूदगी। दोनूं धणी लुगाई बळनै भसम व्हैगा।

दूजै दिन ई राजकंवरी री रथी माथै केळ-केवड़ौ ऊग्यौ अर थोरी री रथी माथै आक-धतूरौ।

मसांण सूं धुरावू राज रौ बाग हौ। माळी तड़कै तड़कै ई बाग सींचण जावतौ। वौ आक-धतूरा रै गळाकर नीसरचौ तौ अणछक किणी री बोली सुणीजी — बनमाळी, बनमाळी,

आक-धतूरौ सींच अर केळ-केवड़ौ बाळ ।

माळी चिमकियौ । अठी-उठी जोयौ । कठै ई कीं निगै न
आयौ । वळै दूजी वार वा ई बोली सुणीजी — बनमाळी, व
माळी, आक-धतूरौ सींच अर केळ-केवड़ौ बाळ ।

माळी रा है जठै ई पग चिपग्या । थोड़ी ताळ पछै नी
होमत करनै धकै हालियौ । केळ-केवड़ा वाळी रयौ रै पाख
आयौ तौ वळै उणी भांत आवाज सुणीजी — बनमाळी, बन
माळी, केळ-केवड़ौ सींच अर आक-धतूरौ बाळ ।

माळी चिमकनै अठी-उठी जोयौ । कठै ई कीं निगै नीं आयौ
केळ-केवड़ा रै सांम्ही भाळयौ तौ, वळै वा ई आवाज सुणीज
बनमाळी, बनमाळी, केळ-केवड़ौ सींच अर आक-धतूरौ बाळ

माळी तौ डरनै न्हाटौ । राजा रै पगां पड़नै धूजती वां
में बोल्यौ — अंदाता, म्हैं तौ बाग सींचण नै नीं जावूं ।

राजा म्यांनौ पूछयौ तौ वौ डरती डरती सगळी बात बताई

राजा माळी नै सोना री कवाड़ी दी । कह्यौ के अब
वळै वैड़ी आवाज सुणीजै तौ केळ-केवड़ा नै लप वाढ़ न्हाकै
आक-धतूरा रै टींचियौ ई नीं देवै । छी ऊभौ ।

राजा रौ कह्यौ टाळै तौ मोत । माळी डरतौ डर
पाछौ मसांण में आयौ । केळ-केवड़ा रै गळाकर नीसरतां
वळै वा ई आवाज सुणीजी — बनमाळी, बनमाळी केळ-केव
सींच अर आक-धतूरौ बाळ ।

बनमाळी तौ अेक झटका में केळ-केवड़ौ वाढ़ न्हाकियौ
वढ़तां ई उण मांय सूं आभा री बीज अर सांवण तीज
उनमांन अेक रूपाळी अपछरा परगट व्ही । सेंजोड़ै ई चांद सू

रै उणियार अेक रूपाळौ मोट्यार परगट व्हियौ । अरे ! अै तौ राजकंवरो अर वींदराजा । बनमाळी हरख में बावळी होय उठा सूं न्हाटी । गुड़तौ-पड़तौ राजमैल में पूगौ । जोर सूं हाक लगाई — बधाई, अंदाता बधाई ।

अैड़ी अजोगती बधाई सुणतां पांण रांणी माळी नै नवलखौ हार बगसीस में दियौ ।

राजा-रांणी उरबांणा ई मसांणां तांई न्हाटा । बात तौ साव साची । आज तौ मसांण में जीवण जाग्यौ ।

वींदराजा सीख देवण रौ आंचौ कर्यौ तौ सोळै घोड़ां रौ सोनळ रथ जुताय सीख दे दीनी । क्यूंके राजकंवरी रै सासरै ई कूकारोळौ मच्योड़ौ हो ।

सरवर री पाळ चढ़तां पणियारयां सोनल रथ नै आवतां देख्यौ तौ सांम्ही दौड़ी । रथ रै मांय राजकंवर अर राजकंवरी बैठा । घड़ा-बेवड़ा पटक पिणियारयां रौ झूलरौ राजमैल सांम्ही न्हाटौ । मांय वड़तां ई खुसी में ताळियां बजावती अेकण सागै बोली — बधाई, अंदाता बधाई ।

आ अजोगती अणचींती बधाई सुणतां ई रांणी आपरौ गैणौ-गांठौ उतार पिणियारयां नै बगसीस में दे दियौ । मोत्यां रा थाळ भरनै वींद-वींदणी नै बधाया । आखा राज में गावा घी रा दीप झुपाया ।

राजकंवर बरसां लग सुख सूं राज कर्यौ अर उठी मसांण में बरसां लग वौ आक-धतूरौ उणी भांत ऊभौ रह्यौ । लोग मांय थूकता, खोळाखाळौ कूदता, बळबळता पांणी सूं सींचता अर भाटा वगावता ।

बातां री विगत

नाहरसिंघ बच्छराजसिंघ — आ वात म्हनै निसार अहमद कुरैशी सुणाई। गांव बोरुंदो। जात वौपारी। वौ इण वात नै घेटा वपरावण सारू बाड़मेर रै पाखती रा गांवां में गियौ जणा किणी सूं सुणी। ऊमर छव्वीस बरस।

दुमात री दारू — आ वात म्हनै दीपकंवर सुणाई। गांव बोरुंदो। जात चारण। बाळपणै इण बात नै आपरी मां सूं सुणी। ऊमर पैंतीस।

विस्वास री वात — सुणाई चतरवाई। गांव बोरुन्दो। जात चारण। आपरै पीहर कालवा में सुणी। अबारूं वांरी ऊमर सित्तर बरस।

सातां नै गटकाय जावूं अर केळू री कांव — सुणाई संतोख कंवर। पीहर बोरुंदो। जात चारण। सासरै देवरिया में अेक नायण सूं सुणी। ऊमर चौईस बरस।

गुटियौ राजा अर सूळां हंदी सेज — सुणाई वालूवाई। पीहर देसनोक, बीकानेर। सासरो बोरुंदै। जात चारण। ऊमर चाळीस बरस। बाळपणै आपरै पीहर सुणी।

कमाई रौ जोग अर मसांण री मया — सुणाई विरजू बाई। पीहर वडो गांव, बीकानेर। सासरो बोरुंदै। जात चारण। ऊमर अड़तीस बरस। बाळपणै आपरै पीहर सुणी।

राजी-खुसी — सुणाई परबतसिंघजी। गांव वान्सी, उदयपुर। जात राजपूत। अठै पांवणा रूपी आया जणा वांरा सूं सुणी। ऊमर पच्चास बरस रै लगैटगै।

नाग-राजकंवर — सुणाई मोहन कंवर। पीहर सींथळ। सासरो बोरुंदै। बाळपणै आपरै पीहर सुणी। ऊमर पैंताळीस बरस।

रंक बण्यौ राजा अर भावना रा मोती — सुणाई भंवर बाई। पीहर बोरुंदै। सासरो कूंपड़ास, जोधपुर। जात चारण। दोनूं बातां सासरै सुण्योड़ी। ऊमर पच्चास बरस।

ठाकर रौ भूत — सुणाई जगरांमसिंघजी। गांव बोरुंदो। जात राजपूत। ऊमर बयाळीस। वै आ बात बोरुंदै गांव रा इज भोळाराम दरोगा सूं सुणी।

डाकरण रा चाळा अर कान्ह गुवाळ— अै वातां म्हैं सीता सूं सुणी। पीहर पूलू, तहसील मेड़तै। सासरौ खारियै, तहसील मेड़तै। जात भांवी। ऊमर पच्चीस वरसां रै लग-टगै। वाळपणै आपरी नांनी सूं सुणी।

अनूठौ रूंख अर कवूड़ी रांणी — अै वातां म्हनै गवरी सुणाई। वेटी हरजीरांम भांवी री। गांव वोरुंदौ। ऊमर सत्तरै वरस। वाळपणै आपरी मां अर नांनी सूं सुणी।

गुणवंती अर वीरौ म्हारौ भाई — अै वातां म्हनै जवांनराम भांवी री वेटी गेंदा सुणाई। गांव वोरुन्दौ। ऊमर तेरह वरस। वाळपणै आपरी दादी सूं सुणी।

आक-धतूरौ — आ वात म्हनै मंगनीराम भांवी री वेटी मकूड़ी सुणाई। गांव वोरुन्दौ। ऊमर सतरै वरस। आपरी भौजाई सूं सुणी, जिणरौ पीहर सोवणियै, तहसील विलाड़ौ।

लेखक

